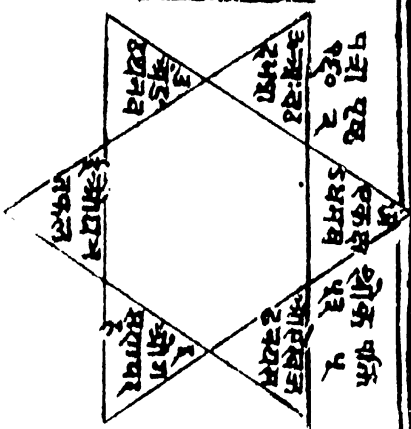


[illegible]

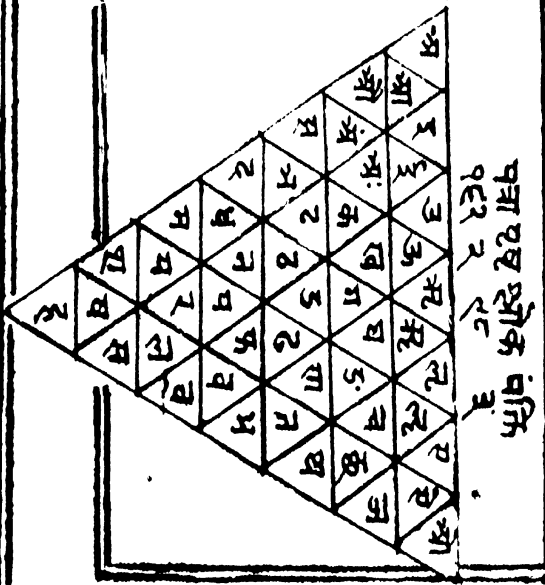
पञ्चा पृष्ठ श्लोक पंक्ति १५८ २ ३ ७

१४	२०	२	१२	१५	६	४	३	५	८	९
अ	३	३	क	ल	प	र	ओ	ओ	अ	कः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
व	उ	ढ	ण	न	य	द	ध	न	प	फ
१०	१	७	४	८	३	७	५	४	१	७

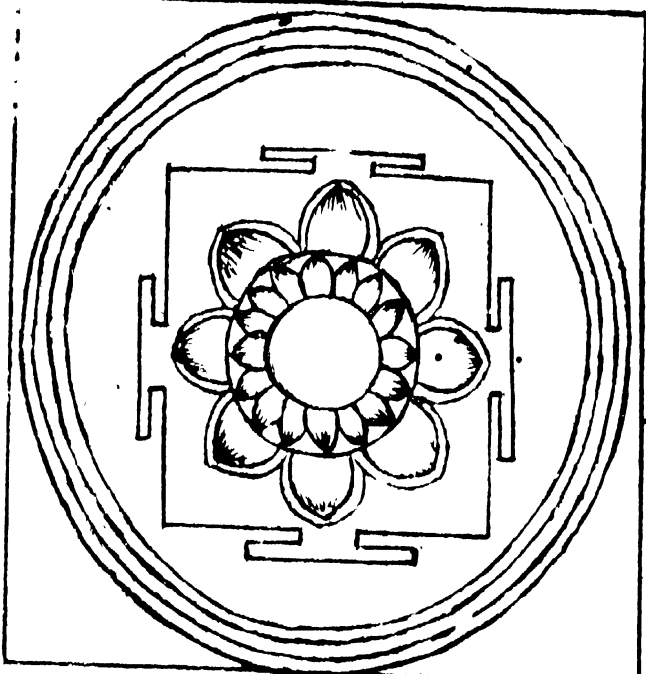


पञ्चा पृष्ठ श्लोक पंक्ति १६१ २ ८ ७

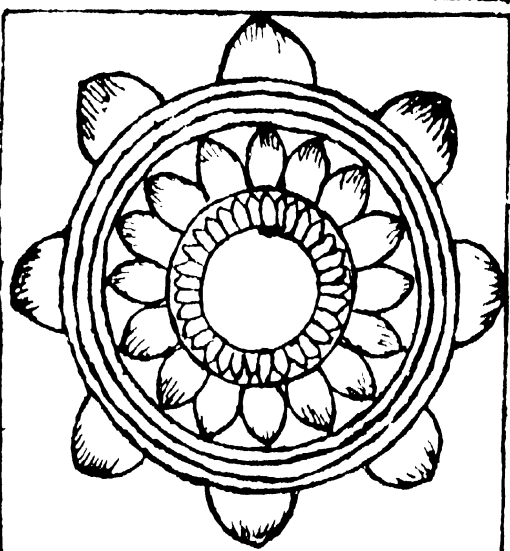
पृथिवी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
३	४	५	६	७
उ	क	अ	ओ	उ
ओ	ग	न	५	७



पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
१५४ १ ११ १०



पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
१५६ १ ५३ १



पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
१५८ १ ३ ६

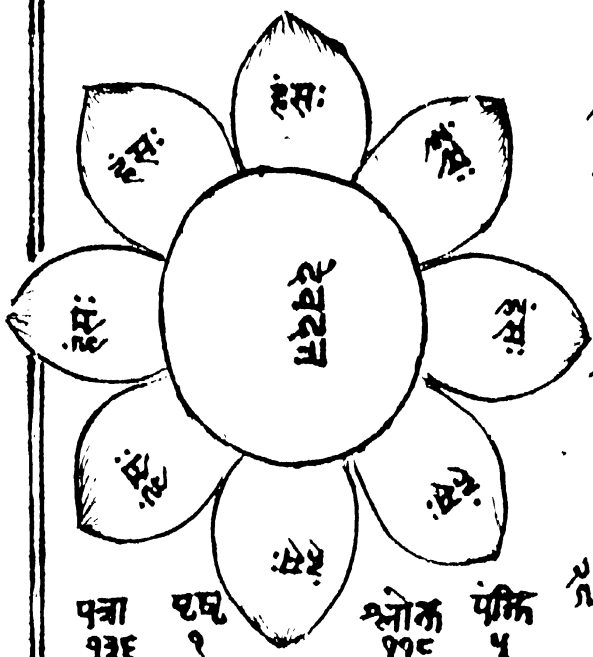
अकथर	उडप	आवटके	ऊचक
१	२	३	४
ओडव	लजम	ओडरा	लुनप
५	६	७	८
ईधन	मृजम	रागस	मृकव
९	१०	११	१२
अःनम	रेठन	अंगाप	एठर
१३	१४	१५	१६

पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
१५९ १ २१ ५

१२ अःवम	१ आवटके	३ रागप
११ ओडवस	२ अकडम	४
१० ओअर	५ ईधनल	६
९ ओषणर	७ एठपष	८ उडपव
८ रेजनम	९ ऊचदरा	१०

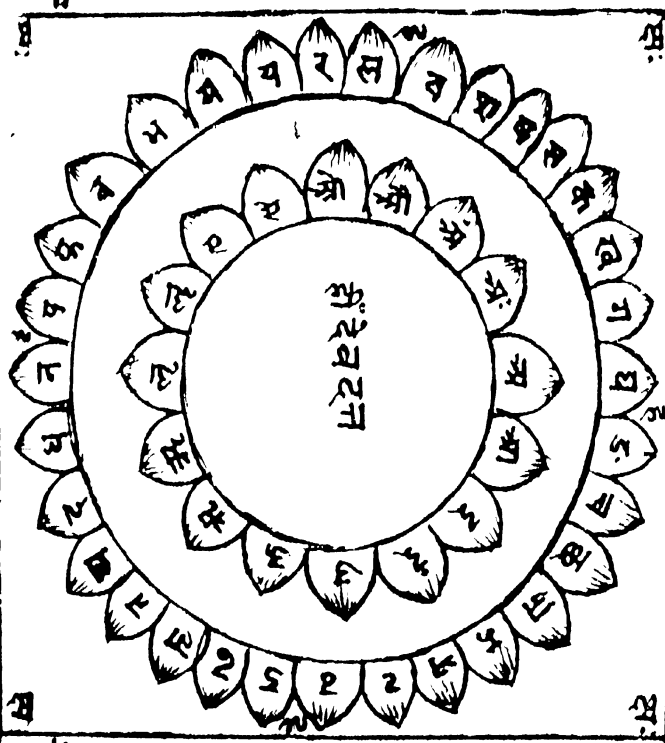
पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
१६० २ २८ ३

अःवम	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
------	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

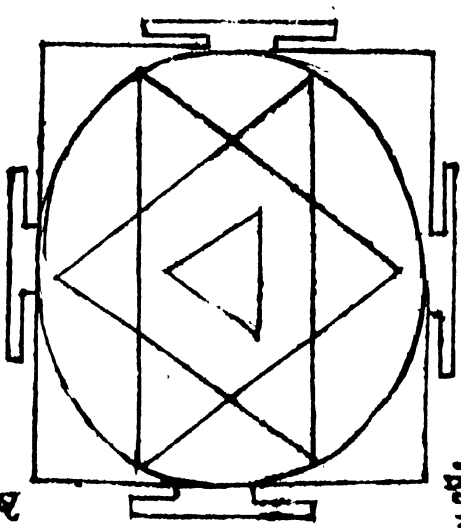


पञ्चा पद्य श्लोक पंक्ति
१३६ १ ११६ ४
अस्य हंसदेवता ॥ सर्वभयहरप्रसादिविशतिपञ्चम २८

पञ्चा पद्य श्लोक पंक्ति
१३६ १ ११६ ४



अस्य कवमीसकनसकोनविंशती पञ्चम ॥ २८ ॥



पञ्चा पद्य श्लोक पंक्ति
१४५ २ १ १

श्लोक पंक्ति
३८ १

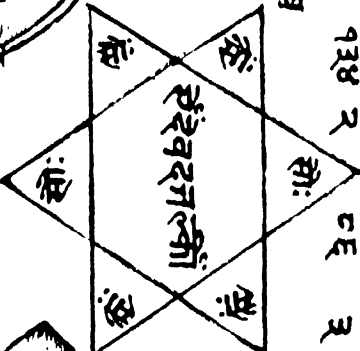
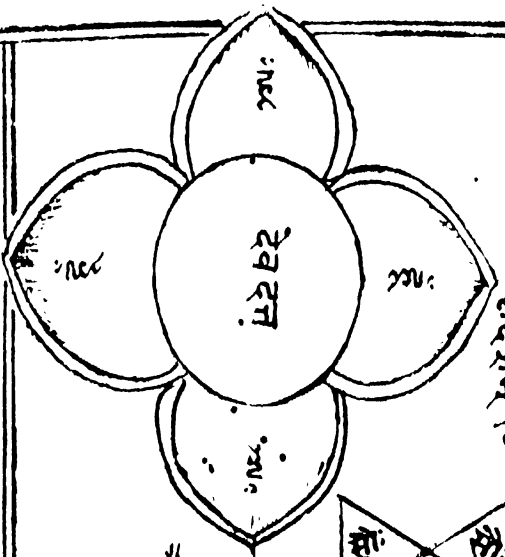
पञ्चा पद्य
१४० २

गणेश	विष्णु	शिव	शिव	गणेश	विष्णु	शिव	विष्णु	रवि
विष्णु		गणेश		रवि		भुवनि		शिव
रवि	रवि	शक्ति	शक्ति	विष्णु	रवि	गणेश	शक्ति	गणेश

ॐ	न	घं	ङ	चं	छं	जं	झ
ॐ	प	फ	ब	भ	म	क	ख
ॐ	ग	घ	ग	घ	ग	घ	ग
ॐ	ङ	च	छ	ज	झ	ड	ढ
ॐ	न	घं	ङ	चं	छं	जं	झ
ॐ	प	फ	ब	भ	म	क	ख
ॐ	ग	घ	ग	घ	ग	घ	ग
ॐ	ङ	च	छ	ज	झ	ड	ढ

पञ्चा १३४ पृष्ठ २ श्लोक ८४ पंक्ति २ पञ्चा १३४ पृष्ठ २ श्लोक ८६ पंक्ति ३

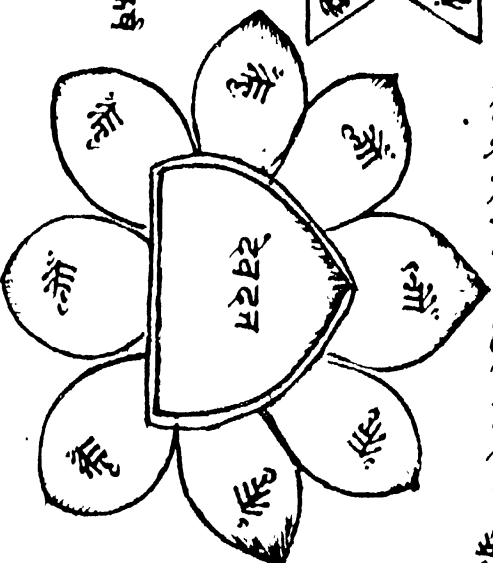
अस्य रुद्रो देवता ॥ आकर्षणयंजंश्च
सादशम् १८



अस्य विष्णु देवता आकर्ष
णयंजंश्च एकोणा
विंशतिः १८

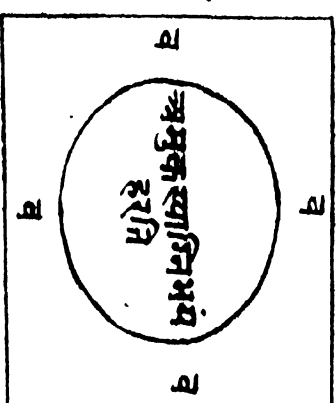
पञ्चा १३४ पृष्ठ २ श्लोक ८८ पंक्ति ५ पञ्चा १३४ पृष्ठ २ श्लोक ८८ पंक्ति ५

अस्य रुद्रो देवता ॥ विष्णुयंजंश्च २०



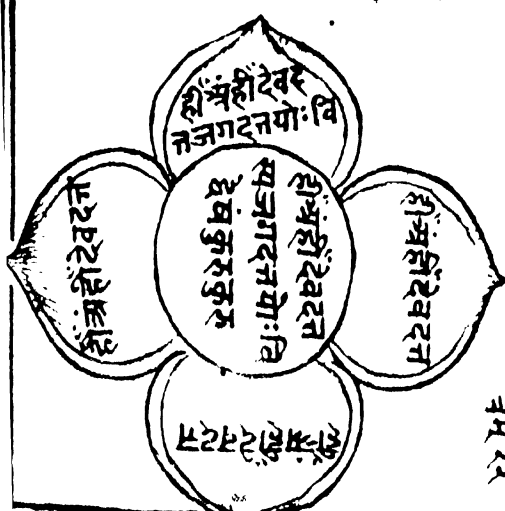
पञ्चा १३४ पृष्ठ २ श्लोक ९० पंक्ति ८ पञ्चा १३४ पृष्ठ २ श्लोक ९० पंक्ति ८

अस्य मातृका देवता ॥ अभिभूय हरं एक
विंशति यंजंश्च २१



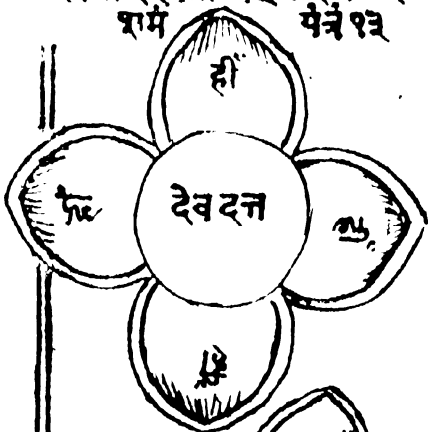
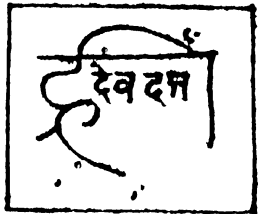
पञ्चा १३४ पृष्ठ ९ श्लोक ८३

अस्य गौरी देवता ॥ विष्णुयंजंश्च २२



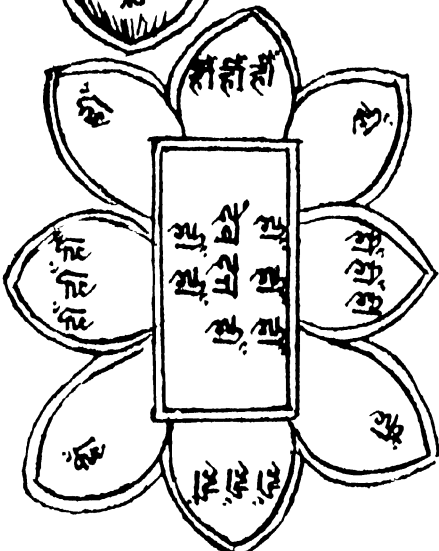
पृष्ठ श्लोक पंक्ति पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 गोरिदेवता वेशंकरत्रयोद १३३ २ ७० ६
 शर्म येन १३

अस्य गोरिदेवता ॥ वसंक
 रं येन चतुर्दशम् ॥ १४ ॥



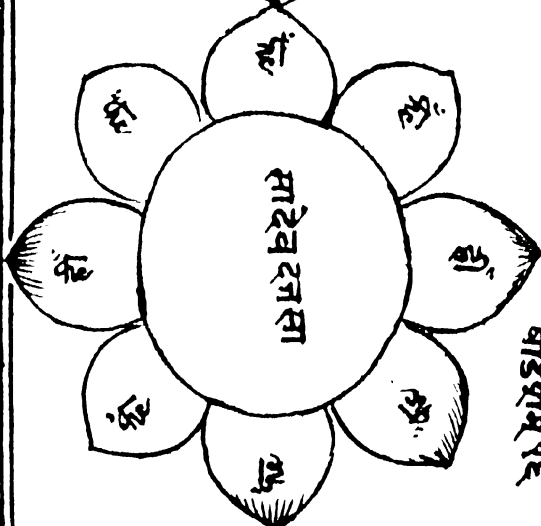
पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 १३४ १ ७४ ३

अस्य ललितादेवता ॥ पञ्च पंच दशम
 म १५



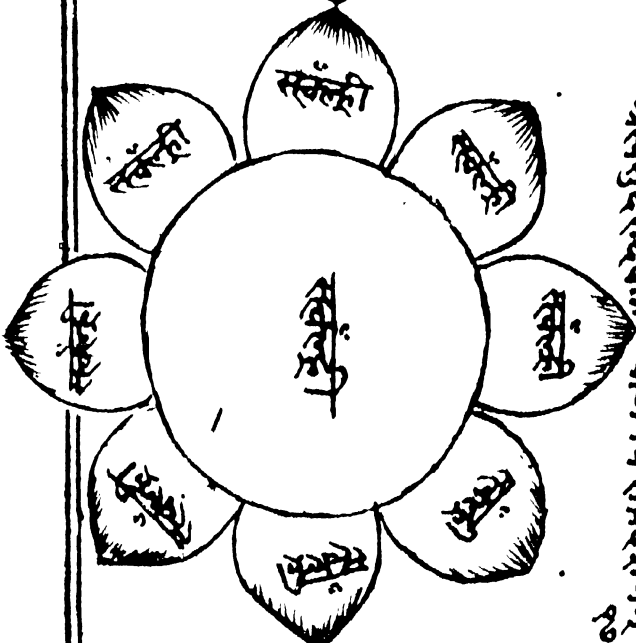
पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 १३४ १ ८० ७

अस्य गोरिदेवता ॥ भर्तृवश्यकरं येन
 षोडशम् १६



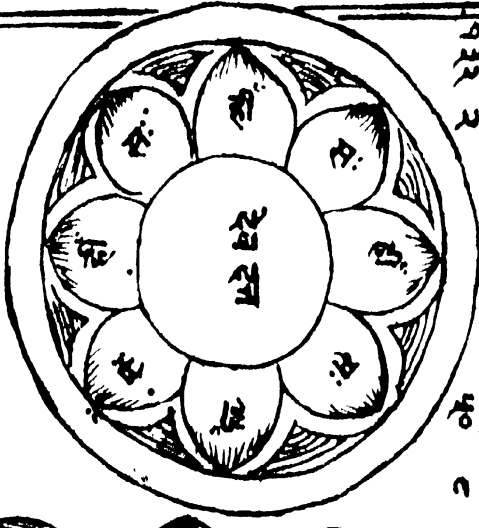
पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 १३४ २ ८२ १

अस्य सुंदरीदेवता ॥ बीजयेन सप्तदशमम्
 १७

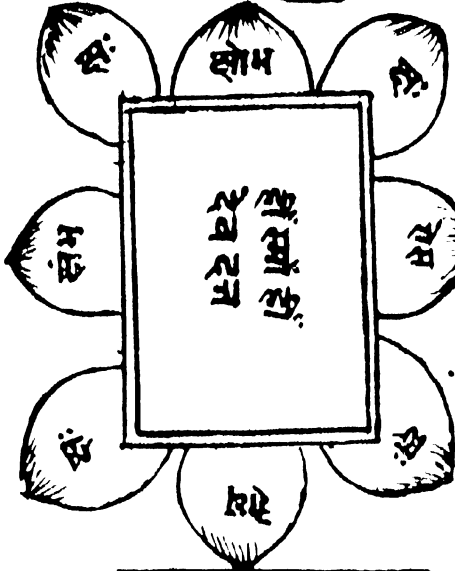


मंटी
नौ
१७६

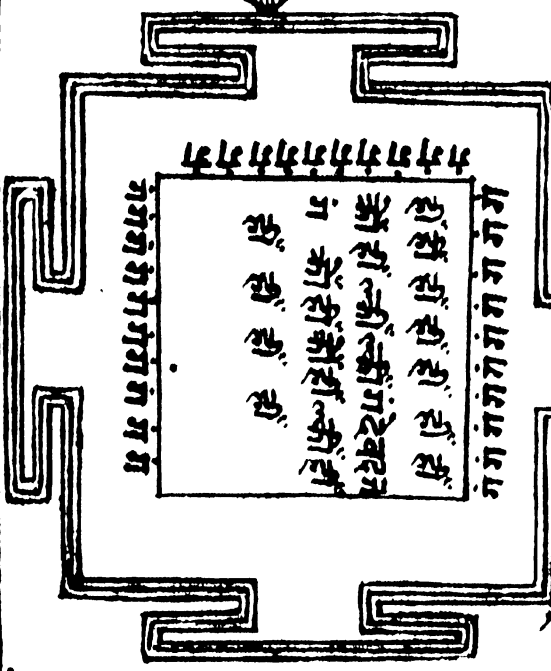
अस्यगोहिदेवता॥ मोहनंनवमंयंत्रम्
पञ्चाष्ट
१३२ २
श्लोक पंक्ति
५० ८



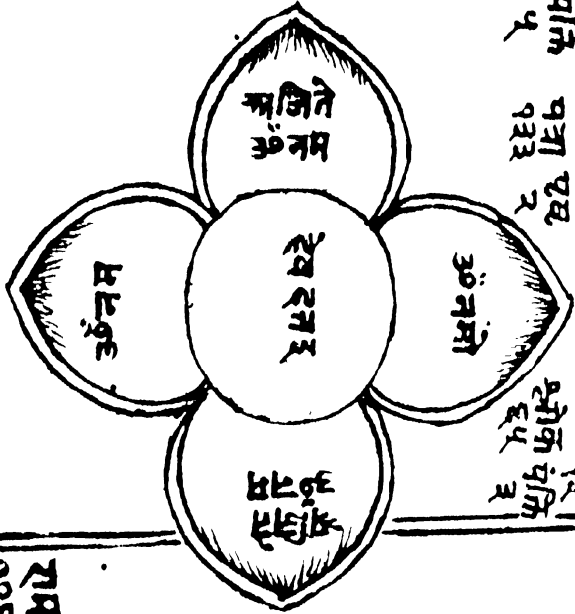
अस्यगोहिदेवता॥ यंत्रवर्णादशमं १० पञ्चाष्ट
पञ्चाष्ट
१३३ १
श्लोक पंक्ति
५३ २



अस्यगणपतिदेवतावष्ययंत्रमेकादशं ११ पञ्चाष्ट
१३३ १
श्लोक पंक्ति
५३ २



अस्यअजितादेवता॥ वषाकाद्वादशयंत्रम्
पञ्चाष्ट
१३३ २
श्लोक पंक्ति
५३ २



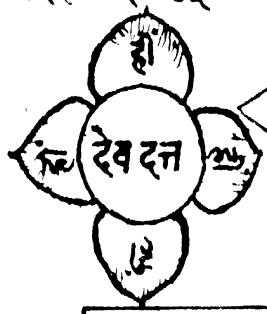
रासः
१७६

श्रीदेवतावश्यसप्त

मम

पञ्चा १ पृष्ठ श्लोक २ पंक्ति ४
 १३२ २ ४३

वश्यकरं चतुर्थं यंत्रम् ॥ अक्षयगौरीदेवतावश्यकरं पंचमं यंत्रम् ॥ ५



पञ्चा १ पृष्ठ श्लोक २ पंक्ति ४
 १३२ २ ४३

वश्यकरं चतुर्थं यंत्रम् ॥ अक्षयगौरीदेवतावश्यकरं पंचमं यंत्रम् ॥ ५

पञ्चा १ पृष्ठ श्लोक २ पंक्ति ४
 १३२ २ ४३

वश्यकरं चतुर्थं यंत्रम् ॥ अक्षयगौरीदेवतावश्यकरं पंचमं यंत्रम् ॥ ५

पञ्चा १ पृष्ठ श्लोक २ पंक्ति ४
 १३२ २ ४३

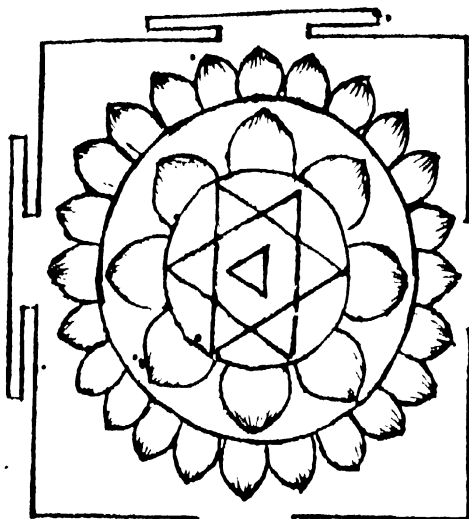
वश्यकरं चतुर्थं यंत्रम् ॥ अक्षयगौरीदेवतावश्यकरं पंचमं यंत्रम् ॥ ५

अक्षयगौरीदेवता ॥ वश्यकरं अष्टमं यंत्रम् ॥ ८

श्लोक पंक्ति ४५ ५

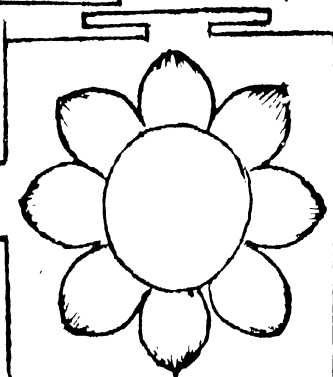
सं. टी.
नौ.
१७५

पञ्चा
१९९५
पृष्ठ
२
श्लोक
४८
पंक्ति
६



पञ्चा पृष्ठ
१२३ २

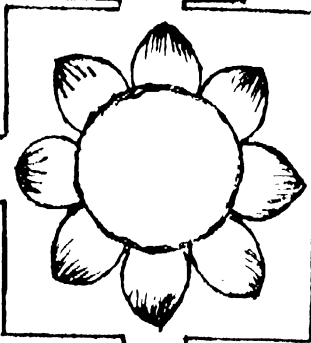
अस्य गौरिदेवता ॥
वश्यकं
द्वितियं यन्त्रम् २



सो १० पंक्ति ३

हो हो हो हो
हो देव दन हो
हो हो हो हो

पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
१३१ २ ३१ ४



पञ्चा २ पृष्ठ
परम् ८ श्लोक

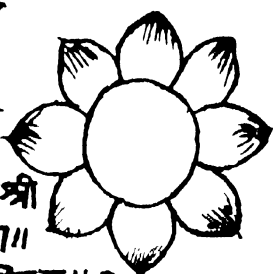
पृष्ठा २
१३०
श्रीकृष्ण
५.५.५५

[illegible]

पत्रा पृष्ठ
१३१ २
श्लोक पंक्ति
२६ १७

ॐ श्री गुरुदेव नमः ॐ

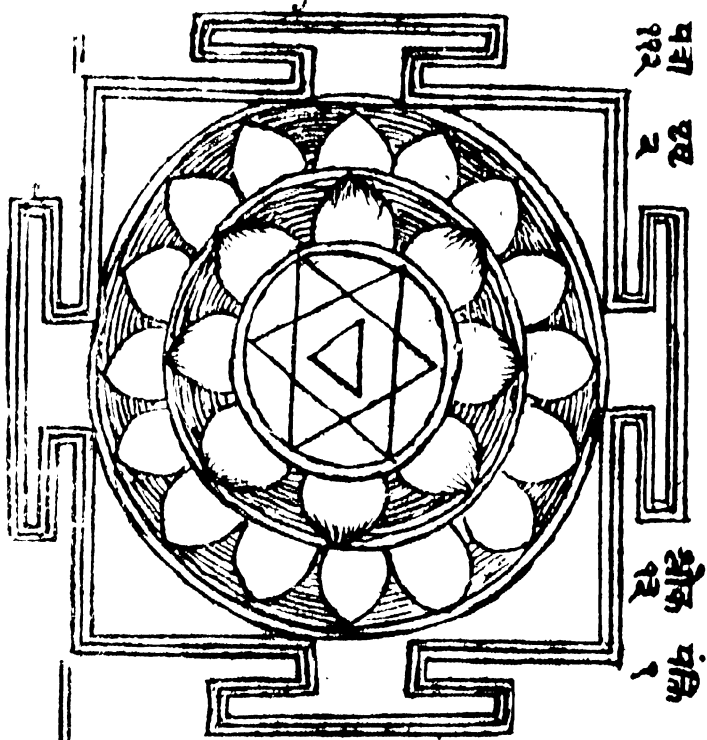
अस्य श्री
देवता॥



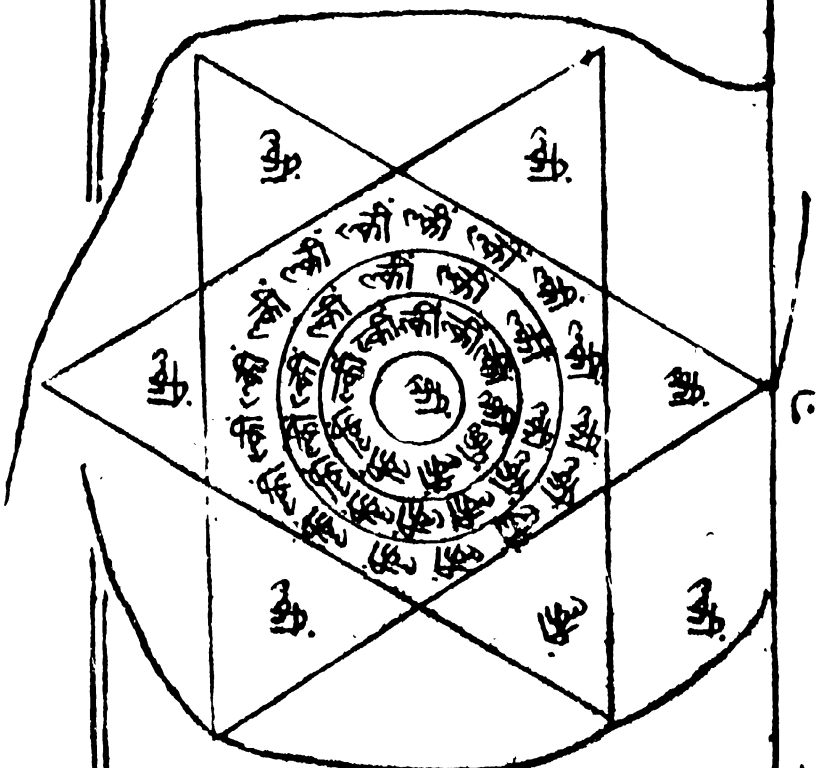
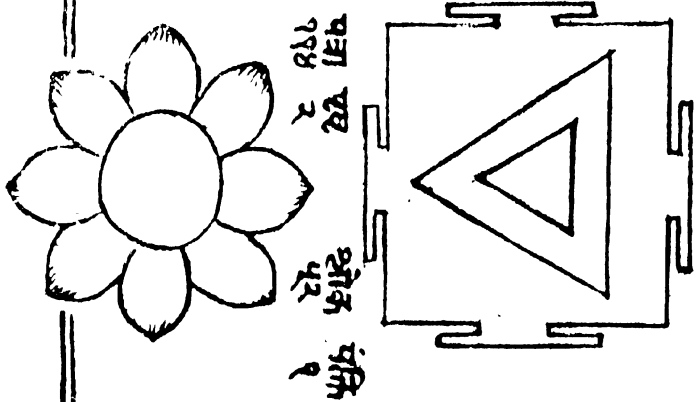
पञ्च पृष्ठ श्लोक-पंक्ति
१३१ २ २७ १
अस्यभानुकादेवता ?
दशकत्प्रथमपञ्चम

वश्यकरं यंत्रं तृतीयम् ॥ ३

१७५



पञ्चा ११३
एष्ट २
श्लोक ३
पंक्ति ३



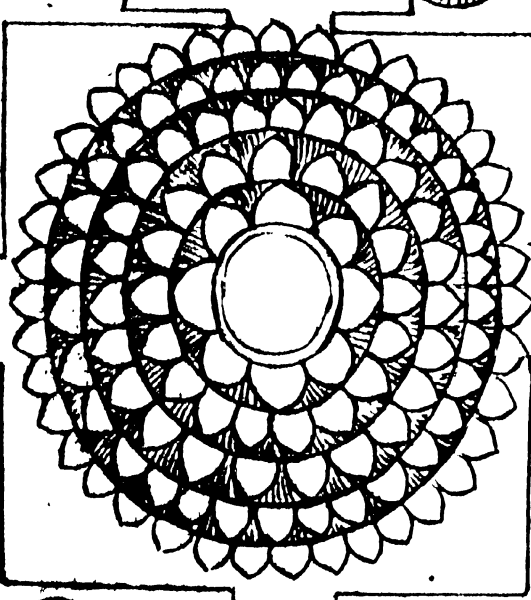
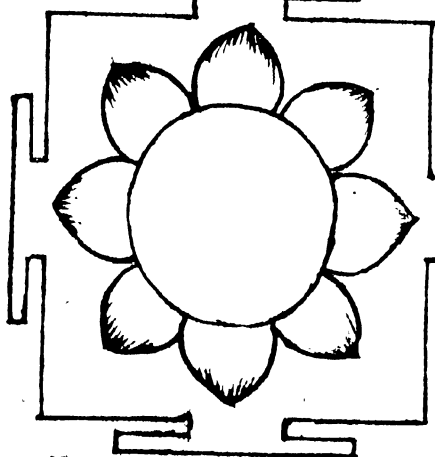
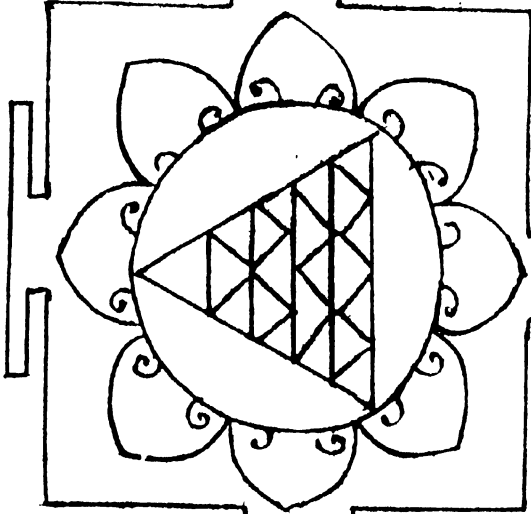
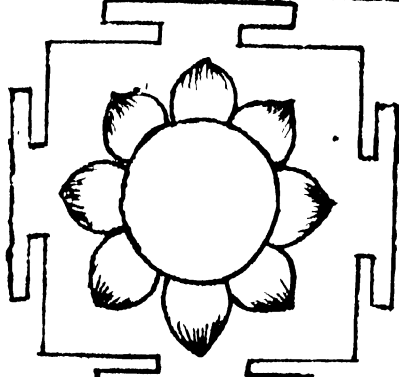
पत्र १०४ पृष्ठ श्लोक १ पाणि ३

पत्रा १०६ पृष्ठ श्लोक २ पाणि १

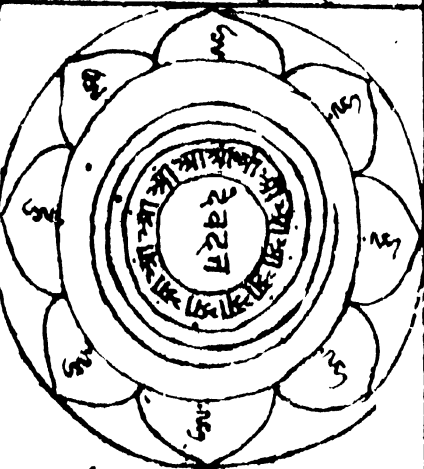
पत्रा १०६ पृष्ठ श्लोक ३ पाणि ४

पत्रा १०६ पृष्ठ श्लोक ३ पाणि ३

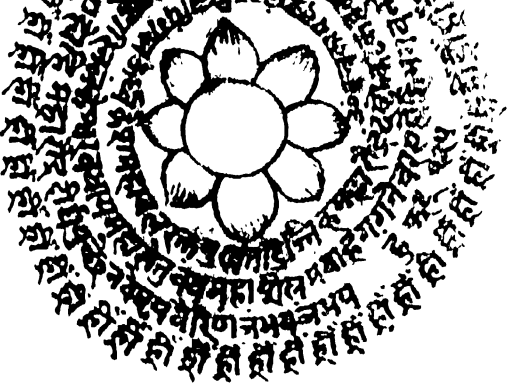
पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 २३ १ २८ ४
 पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 २४ २ ५९ ६
 पत्रा पृष्ठ श्लोक पंक्ति
 २५ १ २२ २



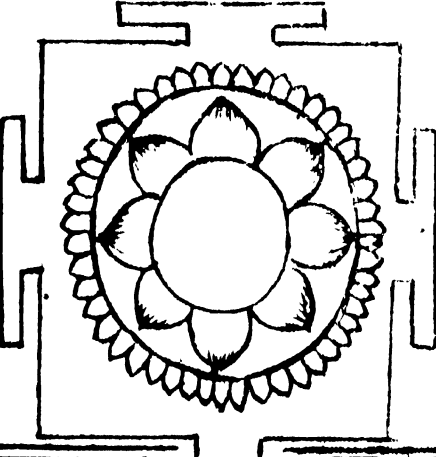
38 6 02
b. 45 2. 6

[illegible]

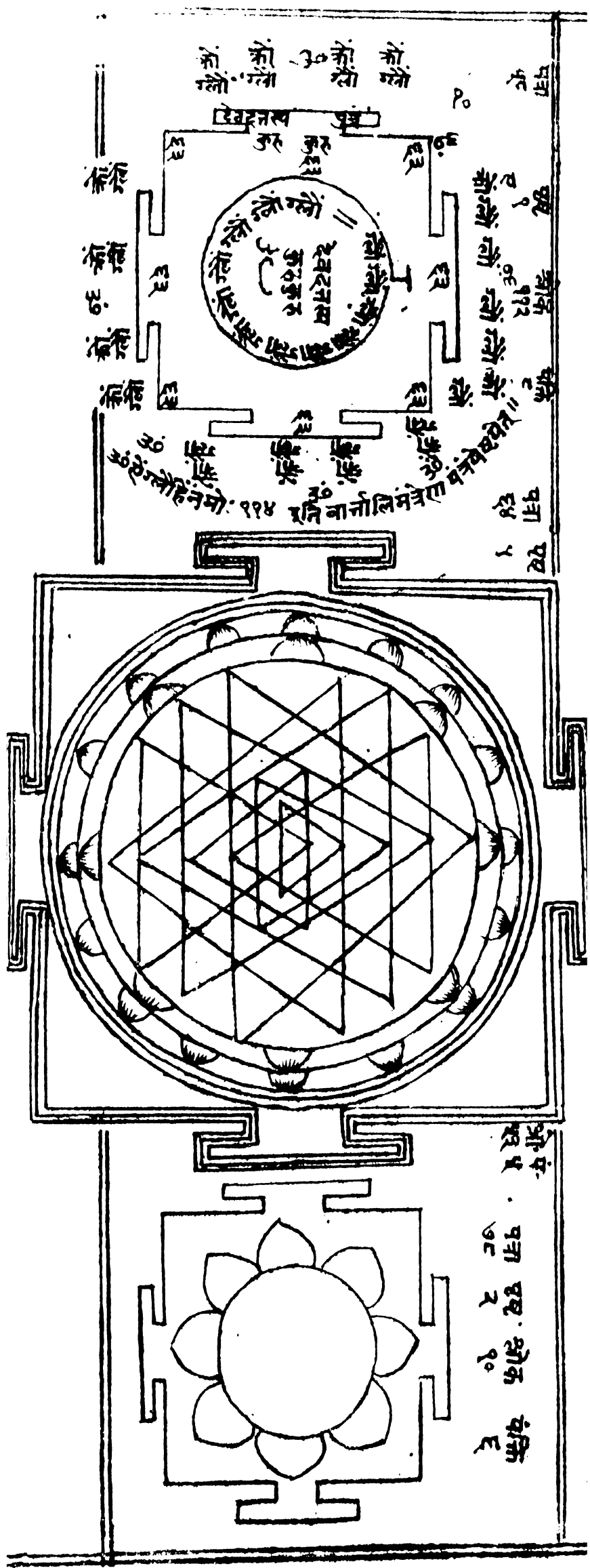
पत्रा	५६	श्रीक	१०४	५
५३	२			



पं. ११११



पत्रा	५२	१००	२
-------	----	-----	---

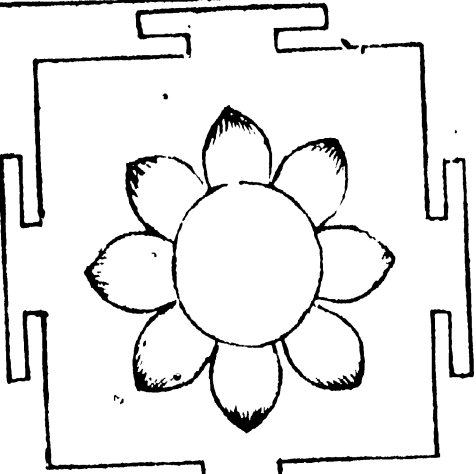


पञ्चा
५०

पृष्ठ
१

श्लोक
६३

पंक्ति
८

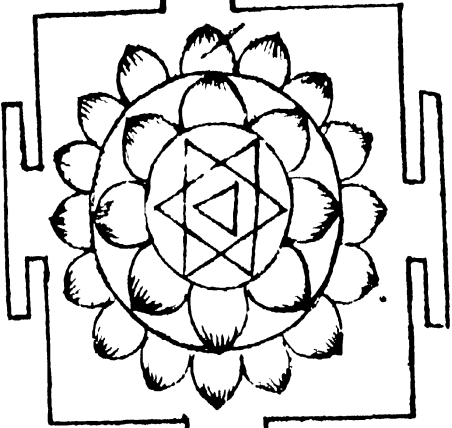


पञ्चा
५४

पृष्ठ
१

श्लोक
७

पंक्ति
१

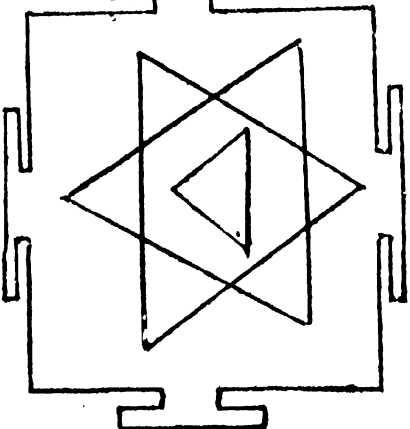


पञ्चा
५५

पृष्ठ
२

श्लोक
४८

पंक्ति
४

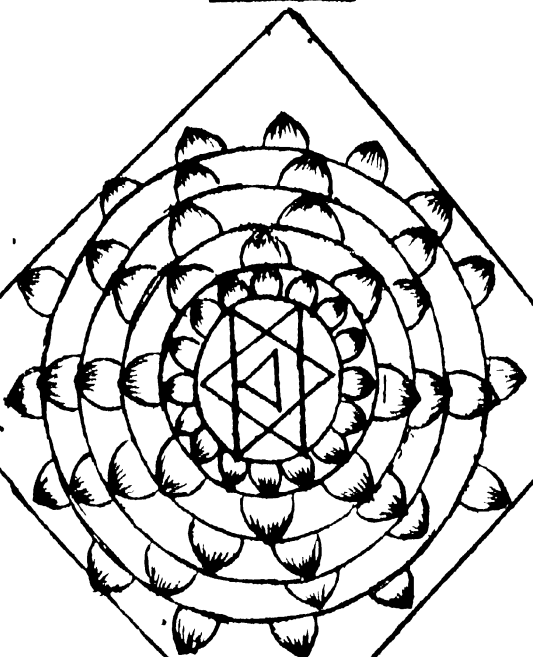


पञ्चा
५६

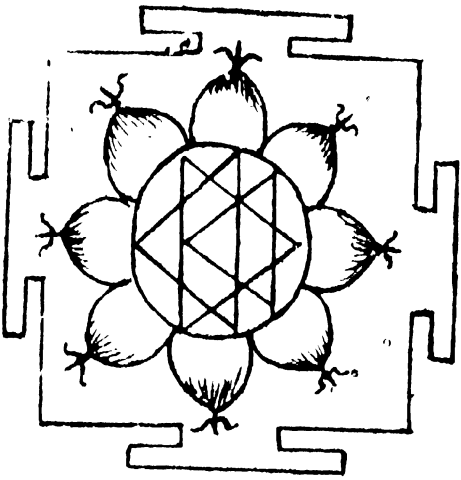
पृष्ठ
१

श्लोक
५८

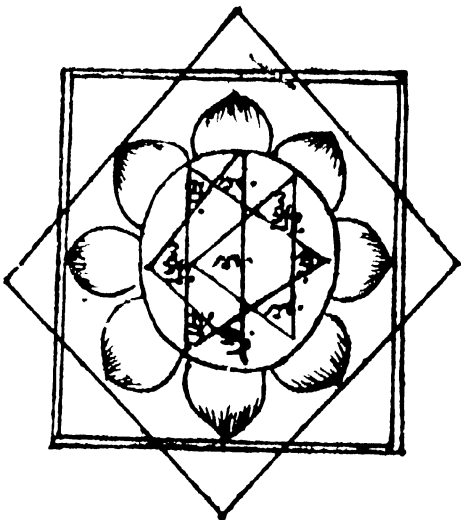
पंक्ति
१



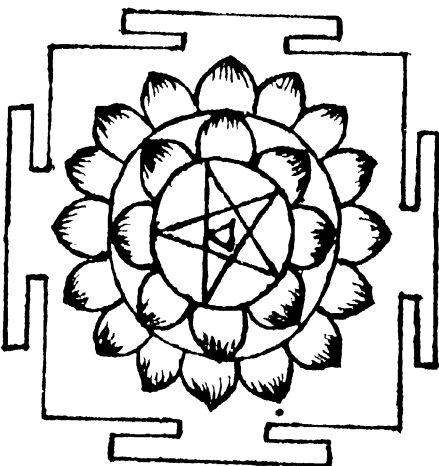
पञ्चा ४१
१
२४
श्लोक १०
५
पंक्ति



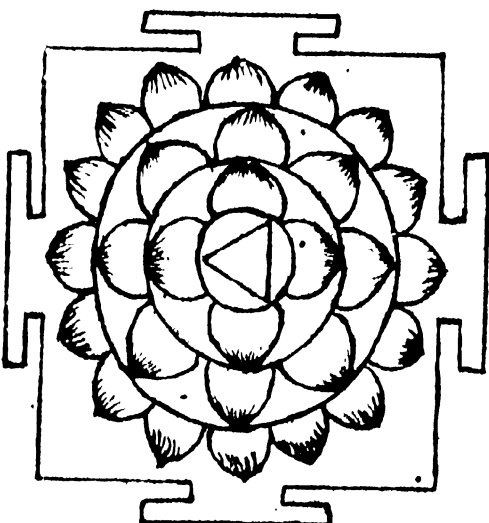
पञ्चा ४३
२
२४
श्लोक ७
७
पंक्ति



पञ्चा ४६
२
२४
श्लोक १
१
पंक्ति



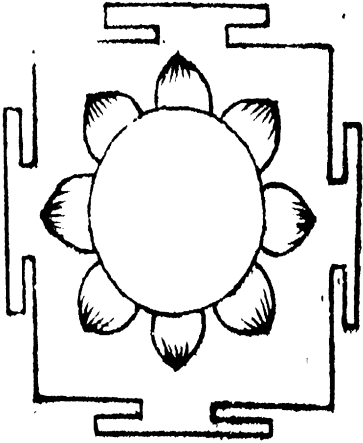
पञ्चा ४०
२
२४
श्लोक ६
६
पंक्ति



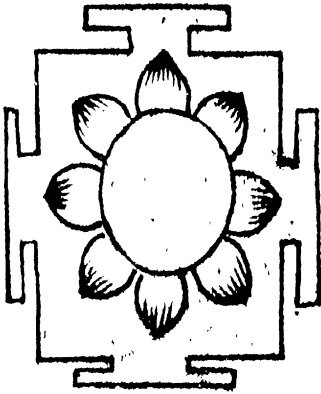
नृसिंह इति नृसिंहो मंसदा व्यान कीदृशः ३ तस्ये ससुद्रजालस्थीर्यस्य सः समुद्रे जातं यच्छेत्तदीपगतत्रयद्वहंतोपविष्टः समुत्तसहर्षः रजोहीनमतिविरजा समुद्रोऽं
 नृसिंहो महादेवो महादेवार्तिनाथनः मुदेवरो महालक्ष्म्या देववीरनीलुमे २८ नृसिंह उत्संगससुद्रजो मंससुद्रजदीपगृहे निषण्णः समुद्रो
 हीनमतिः सदा व्यानसमुद्रभक्तो खिलसिद्धदाया ९२६ राजालस्थीनृसिंहोजयति सुसुकरं श्रीनृसिंहं भजे ये वै न्याधीशमहांजो हसन
 नृहरिण श्रीनृसिंहाय नौमिसे व्योमलक्ष्मीनृसिंहादधरहरनाहि श्रीनृसिंहस्य पादौसे वल्लस्थीनृसिंहवसतुमममनः श्री श्रीनृसिंहाच्च
 भक्तम् २३० विश्वेशे गिरिजाकिंदुमाधवो मलिकार्जुना भैरवो जान्हवी दंडपालिर्मनन्वतां शिवम् ९३९ अत्रेद्विक्तमनोजाते वेद
 काणनृपैर्मिने ज्येष्ठाष्टम्यां शिवस्माये पूर्णो मंत्रमहोदधिः ९३२ ॥ इति श्रीमन्महीधरविरचिते मंत्रमहोदधौ षट्कर्मणि निरूप
 णे नाम पंचविंशति त्रयः २३ ॥ श्रीसम्बन् ९६ २६ मी भादो वदी ६ शनौ ॥ लिखितं महेश्वरपादे ॥

जल्लादिमुद्रा विद्येये भक्तो सेवां सर्वसिद्धिदानाः ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिः दीक्षादीकासंपूर्णम् ॥ इति श्रीमद्वनप्रामाण्यवर्णनविशेषमाधवराजगुर्जरकव
 णिद्वयनीसयं नाम त्रयमहोदधेर्नौकादीकामुभागाः ॥

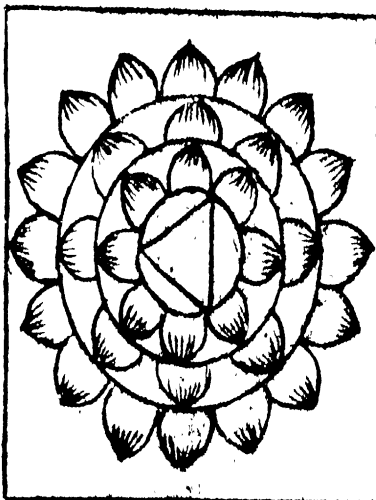
पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
३६ १ ११ ५



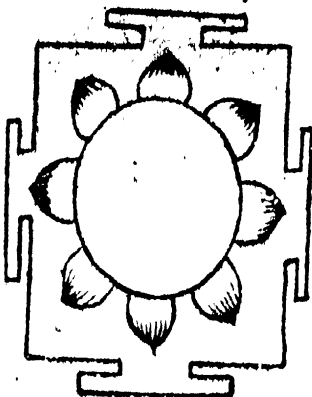
पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
३७ २ ४५ ५



पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
३८ २ ७२ ६



पञ्चाष्ट श्लोक पंक्ति
३९ २ १०१ ६



चरमेयं चावशेन रंगे शान्त्या हि कर्मषट्कर्मनुक्रमणी चेति १२० खं चं प्रमाह अहिच्छन्नेति १२१ ग्रंथाने अशिष आह अविच्छिन्नेति ।
विशेषधनीया विद्विः संतव्यं साहसं मम चापलं निजवाला नो ह्यमने जनको यथा १२० अहिच्छन्नाहिजच्छन्नेव नस गो
त्रसमुद्रवः आसीद्देवाकरो नाम विहानं ख्यातो धरातले १२१ न तन्नुजो रामभक्तः फलभूदाभिर्बोभवेत् महो धरस्तुदुत्पन्नः
संसारसागरा विदन् १२२ नित्देयं परि न्यज्य गतो वा राणा सीयुः सेवमानो न रहसि तत्र ग्रंथमिमं व्यधान् १२३ कल्याणं भिध
पुत्रेण तर्थायै हि जसगमैः अने काना गमयं यानं विलोकि तस्मिन्नी भ्युरैः १२४ एकग्रंथस्थितं सर्वमं आणं सारमि युभिः ॥
संप्रार्थितं स्वमं सौ नाना ममं च महोदधिः अविच्छिन्ना च्याः संतु निजधर्म पराणः मंगला नि प्रपश्यंतु सर्वे हो हय यज्जु स्वाः १२५
हरिः कशेरु कल्या णं सर्वे धांज गदी भूरः प्रचरं यो निमं ग्रंथं पावहे दोरविः प्राप्ते २७ ॥
हो कत्रये ण देवं प्रार्थयते नरसिंहरति नासं हो मे मुदे हर्षा या सुदेवानां वारे ण समूहे न नतः १२७ २७ १२७ ॥

वधनहारिणीनिवंदीविशेषलंछिन्मस्तादिवंधनंवेहे वारहीवार्त्तस्तीवदप्रसिण्यादिकषनंकर्त्तपिष्णविनीचसप्तमे १०८ मोहनद्रिज्जोहनगौर्द
 स्वयंचरामधुमनीप्रमदाचप्रमोदयावंदीबंधनहारीतिसप्तमेचदयसिणी १०९ नस्माभेदाभ्युवागहीत्येष्वाकलीपिष्णविनी स्वप्नेभ
 रीचमानगीवाणेशीमदनेभूरी १०८ अष्टमेविसराभोक्ताचाल्वालाभिराप्रानवमेत्वनपूणैर्कानद्देहामोहनारिना ११० अर्थात्
 स्मीरन्मन्त्राउक्ताप्रमंगिरारिहादशमेवगत्तप्रोक्ताचराहीहि नयनया १११ श्रीविद्यैकादशेमेक्ताहाद यत्तुनराहर्गिः नयोदशेनेह
 नुमानविसराभोनेपादितः ११२ चतुर्दशेनारसिंहोणोपलोगरुर्जापिचअथापंचदशेसूर्याभोमोजिवःसिनेषिनिः ११३ चोड
 शोर्भोमहामुरुंजयोर्द्वेधनेभूदः जान्दवीमणिकर्णचप्रोक्तासप्तदशेर्जुनः ११४ अष्टादशेकस्तशनिभ्यंडिकया नवासाद
 कोनविशेषरएयुधःशम्लसमाच्चितः ११५ पार्थिवार्चनकीनाशाचित्रमसुशिविधिःविशेनरंगयन्त्राणिसर्णिकर्कणभैरवः ११६
 स्वानादिरंतर्थागोर्नएकविशेशेर्वाविधिः द्वाविंशेष्टसमारभ्यपूजनंतद्विदंअपि ११७ त्रयोविंशेनुदमनैःपवित्रैश्चसप्तवर्चनम् चतुर्विं
 शचमेदेनमन्त्राण्यारिणेधनम् ११८ नरेशेचरमेष्टोक्तं कर्मषट्कर्मनुक्तमान एवमन्त्रोदधावसिन्धुचविशतिरुत्तमः ११९ ॥ ० ॥

भरिहाशनुनाशकःचोडशार्त्तःवलगावक्त्रावगत्यागुही ११९ नराहर्गिःश्रीविद्यायाआवरणपूजाः १२० मुनिर्वदव्यासः १२१ चरणयुधकुट्टमः

१२२ ॥ ० ॥ १२३ ॥ ० ॥ १२४ ॥ ० ॥ १२५ ॥ ० ॥ १२६ ॥ ० ॥ १२७ ॥ ० ॥ १२८ ॥ ० ॥ १२९ ॥ ० ॥ १३० ॥ ० ॥

संजीवनी
न-२५
१९६८

मंत्रसिद्धेर्लक्षणमाह मनः प्रसाद इति १०० आत्मसाक्षात्कारपर्यन्तमेव मंत्रोपातिरिमाह लब्धज्ञान इति अहं ब्रह्मेति साक्षात्कारो ज्ञानमिदमर्थः १०१ द्रव्यसमाप्तौ भगवन्मन्त्रानि नवं देवनिब्रह्मेव नाना देवकारुण्यजनैः सेव्यत इत्यर्थः यो योगयोगी तनुभक्तः श्रद्धया चित्तमिच्छति तस्यानस्यामन्त्रत्वं प्रधीना ॥
१ प्रजाशेषकर्माभीर्ष्यमभावः क्रोधलोभयोः एवमादीनि चित्तादिप्रदापयति मंत्रादितं ६८ सिद्धिमन्त्रस्य जन्तोपादिवनायाः प्रसन्नतां ॥
न तो जपेद्युक्तं यत्तं प्रकुर्यात्तं ज्ञानलब्धये १०२ लब्धज्ञानः कर्मावश्यासंसारान्नातिमुच्यते साक्षात्कारानं परं ब्रह्म वेदां तैः प्रणिपादितं १०३ नवं देवमात्मानं सर्वथा पित्रभी श्वर्यो नानादि कर्मास्तेन एव पुं प्रयच्छति १०४ विलोकात्मानं न चार्था प्रादुर्भूतो द्विजसन्तमैः स्वमने रनुसा १ एणं कार्यमंत्रमहोदधिः १०३ वाणीनेन मितांसासंसारं गाः संति निर्मिताः न चानुक्रमेणैव स्युर्मन्त्रिणं सुखमुदये १०४ भूतशुद्धिं स्यान्नाणप्रतिष्ठा न्यसनीति पेंः पुरश्चर्या हिमविषिर्लव्य एणं कार्यदीति म १०५ द्वितीयोक्तो र्गोशस्य मंत्राः सम्यक् समीरिताः कालीका स्त्रीमिधाना नासुमुखीति तनीयके १०६ गाराजु हीये संवोक्तं गाराये वलुपंचमं षष्ठे तरंगे गदिगां छिन्नमकां द्वादशमं पि १०७ ॥
मेव विदधाम्बहं एतया श्रद्धया युक्तो स्यात्पाधनमीदृते लभते च नाना कामान्मयेव विहिता न हि तान् इति भगवद्वचनात् १०८ प्रथमकरले हेतुमाह विलेनेवेति १३ वा स एवार्थनमेव हेतुः वा एनेनामिनाः पंचमं यानि १०४ अनुक्रमेण माह भूतशुद्धिरिति लिये र्गोशस्य मन्त्राः सम्यक् संन्यासः आद्ये प्रथम तरंगे एतदीरितं १०५ द्वितीयोक्तो द्वितीयतरंगे गारेण मंत्राः कालादि नतीये ६ ॥

नवशुभसप्तमनाह लिङ्गमिति ३९

ममन्तरेण रं विनाशुभाशुभं सप्तमं सप्तमे विचारयेत् ८० लिखीति मयूरयुक्ते हं सप्तमे चक्रयुक्ते चारये स्थिति मोहनं सुरतं ८१ निमग्नानदीमान्नसंदनरथो निमग्नवि
संशानादर्थने व शुभं ८२ हर्म्यदिवाभागे हल ८३ मयमांसयोर्महलं विषयादीरलेपः रुधिरास्मानं दधिभक्तमस्य रज्यमसिः एतानि शुभानि गतसिनादर्थन
सप्तमं दृष्टानि शान्तं गुरोर्विविचेदयेत् नमन्तरेण मंत्रज्ञः स्वयं सप्तमं विचारयेत् ८४ लिङ्गं चन्द्रार्कयोर्विवभासी जन्तुवोगं रं रक्ताक्षिनरत्नं पु
हं ज्योत्स्नसप्तमं चर्म ८५ शिखिहं सारयागादीरये स्थानं चर्मोहनं आरोहणं सारसस्य धरात्मा भव्यनिनगां ८६ प्रासादः स्यंदनः पद्मच्छत्रं
कन्यादुर्मः कस्ती नागो दीयो हर्षः पुष्पं वषभं च क्वपर्वनः ८७ सुगच्छदं ग्रहासागनारी सूर्यो द्योत्सराः हर्म्यशैलविमाननाभारो ह्योगो नेग
भः ८८ मयमांसादनी विष्टाले बोधधरसेवनमं दधोदनादनं रज्याभिषेको गोवधवच्चजाः ८९ सिंहसिंहासनं शंखोक्तादिनरो च नादधि चं
दनं दयणं श्रेष्ठं स्वमेसं दर्शनं शुभम् ९० नैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णे भनो नागार्तवायसौ शुष्ककंदुकि वस्य च्चं चालो दीर्घकंधरः ९१ प्रासादः क
लह्यवध्वने ते स्वमे शुभावहाः शान्तिकुर्वीत नंदः स्वमे जये नमं नम्यधीः ९२ अद्विजं प्रान्तस्य कुर्वतो वि प्रसंघर्मनादत्यंत राज
परो भवेत् ९३ सिंहे विष्वत्सचिक्तं संसुरो ये व्हेसासिद्धिभक्तं मनः प्रसादः संतोषः श्रवणं दृष्टिभिर्धुनेः ९४ ॥ गीतस्य नात्त शब्दस्य गंधवर्जणां
मम ९५ अशुभसप्तमानह नैलेति नैलाभ्यक्तो नापुरुषः नदादीनां दर्शनमशुभं ९६ ॥ ९५ ९६ समीपेण स्वनेन संसूर्यसाभ्यस्य एतानि द्रासु धात्रपः ९७

ननु तस्मिन्नेतन्मन्त्रे नान्यथा प्रयति न व्यभिचर्यः न चोपायमाह तस्मादिति निःकारणे वेदोक्तं चरणे देवतोपासने चानेः कारणश्रुतिस्तोत्रानामा
 नन्वस्यः ७८ तानस्वरूपमाह कार्यति कर्पादिदं द्रियाणिकारणानि भूतानि न तत्संवातशरीरे तच्चा लक्ष्मणेनोर्जात्वास्तोत्रस्यैवेति साक्षात्कारे ज्ञानं तस्मान्मुक्तिः त
 त्मसि चेतो ७९ अहं ब्रह्मास्मीत्यादिभ्युत्पत्तेः ज्ञानाया प्रयत्नमात्रं निंदति मनुष्येति ८० कश्चिन्माह आत्मज्ञानेति कासंक्षोभत्येभ्यः अपरस्वेषां स्य यत्कृत्यं कृतैः कर्म

नस्मादेतौ न कर्मादुपासीतं च देवताः शुद्धांतः कारणेनैव ज्ञानमुत्तमं ७८ कार्यकारणसंवातं प्रविष्टं ज्ञानं कर्मकः जीववसैव सं
 पूर्णमिति ज्ञात्वा विमुच्यते ७९ ननु अहं संप्राप्य उपासीतं च देवताः यन्मोमुच्येन संसारमहापापशुने हरितः ८० अहं ज्ञानासयेन स्या
 दिति न व्यनयेन सैः कर्मभिर्देवसेवाभिः कामाद्यारिणो ह्ययानं ८१ चिकीर्षुर्देवतोपासिमादौ भविचिचारयेत्तस्मान्नानादिकं कृत्वा स्मृत्वा ह
 रिपदां वृजं ८२ श्रमं कुरु श्रमपायां प्राप्य यद्दृष्टमध्वजं ज्ञेयं भागवतं देवदेवं शब्दबुद्धयवाहनं ८३ दृष्टानिष्टं समाचर्य सर्वममममसं प्रपन्नो
 भवेत्तज्जगन्निनेत्यर्थे प्रिणत्वा यमहात्मने ८४ कामार्थं विभूरुपायं स्वमाधिपतयेनमः स्वदेकपयमेतं व्यस्य सर्वकार्येषु यतः ८५ किमासि
 द्विदिधा स्यामि त्वत्प्रसादान्महेव ८६ भिमैः त्रैः शिवं प्रार्थ्य निद्रां कर्ष्य निराकुलः ८६ ॥ ८७ भिर्देवैर्देवैः पात्रेभिश्चान्नकराण्युद्विष्टा तं नो विधि
 मर्थः ८८ देवोपासितुं वर्तमानं विप्यद्विजा यं प्रवर्तितं व्यभिचाराद्विकीर्षुभिरिति विचारप्रकारमाह सो न संधादिकं कंचिन्मादिना ८९ शिवप्राप्य नमं ब्रह्माह भग

स्थलान्नसंनेउच्चादे ६६ एवंकाप्रकर्मभिरुपनतमसक्तिं वारयति शुभंचिति ७३ एवंचेत्किमिच्छन्तं हित्यनआह विषयेति पूर्वचार्योक्तत्वादुक्तं न हस्तुगत्याहितं न भ
 यंतो वश्येह विष्यावैतं भनेपरमानकं मावाप्रदाश्च विहेषेण धृमाभंसेने स्थलान् ६६ मसूयान्तं वाश्यामाअजादुप्योत्थपायसं मारणे प्रोदितं मसूं
 मं शिष्यकर्मसुर्वतां ६७ शंतो वश्येह रिद्राक्तं जलं तपेण दीरितं मश्यायं कवोत्संनतं संभने मारणे तथा ६८ मेघरक्ताच्चित्तोयं विहेषोच्चादयोर्मन
 म् स्पर्णपानं नर्मणं श्लाघ्यं नौ वश्ये च कर्मणि ६९ संभने मृनि कापार्थं विहेषे खरिहेद्रवम् अहनिर्मितं मुच्चादे कुकुटांडं गुमारणे ७० मृदास्ते
 समासीनः शंतो वश्ये प्रनर्मयेन जनुं भ्यामुत्थितः संभेहेषाद्विक्रयान् स्थितः ७१ षड्कर्मणि पंचिष्टिः प्रोक्त एव संवत्तनुष्टये सम्यक् कृतान्या
 सजानमान् रक्षा विधाय च ७२ काप्रकर्मप्रकर्तव्यमन्ययाभिभवो भवेत् न शुभं वाप्यशुभं वापि काम्यं कर्म कसे निषिद्धः ७३ मर्यादितं व्रजे क्वं चो न
 तस्मिन् न यो भुवेदं वषयासक्तचित्ताणां संतोषार्थप्रकाशितं ७४ पूर्वचार्योक्तिं न काम्यं कर्मनेत हि तावहर्ष काम्यकर्म प्रसक्तानां त्वन्मात्रं भवे
 त्सु ७५ नैकाभं भजतां देवमखिलाभीष्टसिद्धयः प्राप्तिभं न समुदिताये प्रयोगाः सुखासये तदा सक्तिं विहायैव निष्कामो देवतां भजेत् ७६ वेदे का
 ऽं प्रोक्तं कर्म पासनवोधनं साधनं कांडयुगोक्तं नृलोपे साध्यमीरितं ७७ ॥

(॥ वाति ७४ तत्रेहेतुमार कथ्येति ७५ निःकामभजने फलमाह वेद इति कर्मपा
 कर्मकांड्योतिष्ठोमेन स्वर्गकामार्जयेत्त्यादि उपासनां कांडसूर्याव्रसे सुपासीतयो ह वै श्रेष्ठं च वेदेत्यादि दं कांडद्वयं साधनं तानस्य ततोपज्ञानकांडं अप्रमः

कलितरुद्रवैभिनकजानि शेषउच्चटनमारणकर्मणि श्रमशानवन्हैहोमः वन्हिप्रसंगात्ताष्ठमप्याह शुभश्रुति शुभश्रुतिप्रवृत्ताहोमकर्मणिवित्कादिकप्रतिपन्न
 लयेन ५५ अशुभसंभगाहैविषवस्सादिकाहैः विषवसः कचिलारनिप्रसिद्धः असोविभीतकः शूलः श्लेष्मानकः ५६ अनिप्रसगादेवकर्मविशेषवन्हिजिह्वापूना
 णानि र्वप्रयत्नौकि कागौ संभनंवटजेनर्त्त देवः कलितरुद्रवैभिनकजानि शेषउच्चटनमारणकर्मणि श्रमशानवन्हैहोमः वन्हिप्रसंगात्ताष्ठमप्याह शुभश्रुति शुभश्रुतिप्रवृत्ताहोमकर्मणिवित्कादिकप्रतिपन्न
 विषवस्साह्यनिवधनूरशेलुजैः ५६ काहैः प्रदीपयेदनिहोमकर्मणिमंत्रविन वन्हिजिह्वापूनाप्रभावापाणानिकर्मणिपूजयेन ५७ वस्य
 काष्ठीहिरक्ताख्यासंभनेकनकाभिधा विहेर्वगगनाजिह्वापूनाच्चाप्यनिरक्तिकां ५८ कस्मानुमारणेचार्चैहृद्रुखांनुसर्वतः भोज्यसंख्यावि
 शेषविशेषः शंन्यादिकर्मसु ५९ शंनौवश्येभोजयेनहोमादिप्रानदशशतः जनमंनद्वेनकर्मतत्वांजनतुमध्यमं ६० हेमाच्छतांशनिवि
 प्रभोजनत्वध्वंनुननं श्रुतिहिगुणितंविप्रभोजनसंभनेमत्तं ५९ निगुणद्वेषणेच्चादेमारणेहोमसंमिलनम् अतिशुद्धकुल्येन्याः सांयवेर
 विहोभ्रस्ताः ५२ सदाचाररताविभाभोज्याभोज्यमंनोहैः पूजासेदेवतावुध्यानमस्कार्याः पुनः पुन ५३ संतोष्यामधुरैर्वैकैर्हिरण्यादिप्रदा
 नः अचिरात्प्रभनेभीष्टगृहीतायांनदाशुषि ५४

५५ माहवन्हेरितिकनकाभिधाहिरण्या ५७ होमप्रसंगादिप्रभोजनसंख्यामाह भोज्येदानींशानिव
 मादशंशेनहिजाभोजनमुत्तमं होमान्वचविशेनतन्मध्यम शानंशेनाधमं ५९ विप्रस्वरस्यमाह अतिशुद्धेति ५३ उक्तवासाणभोजनेअभिचारेत्यभेनः
 पापंनश्यनितस्मादुत्तमादिजाभोज्याः ५४॥

नासाम्भ्य ट एडा श्रितगम नेधरोदयः संसाम्भनेत्रेयः नासा विवरम ध्ये प्राणं प्राणे वायूदयः समिध आह दूर्वापा रति ३७ दाडिमे नि वश्या र्थे हेमि अजा घृताक्ता
 दंडिम समिधः संभनेमेषी घृताक्ता राजदस्य समिधः ३८ उच्चा देस र्थप नैस्त्राक्ता आस समिधः भालामाह शंखजनि संभनेनि वफ लज्ज अरिष्टः केनैस्त्राक्ता
 नदोक्तमृद्वेय सिद्धिर्मोर ए च वशी कर्तौ प्राणे तीर्प्य गतौ हेय उच्चा देमारु नोदयः ३९ दूर्वापाः समिधः प्रांतैर्यो घृतेन सम्पन्विताः दंडिमप्रसवा
 हेमेव पर्येज्य शतसंयुताः ४० मेवी घृताक्ताः समिधः संभेरा जन रुद्रवाः धनूर समिधो हेषे अने सौ नैस्त्रा संयुताः ४१ चूर्नजो कटु तैस्त्राक्ता उच्चाट
 नविधौ मताः कटु तैस्त्राक्ताः क्षुमा एते खदिरोद्भवाः ४२ शंसजा पसवी जो म्या निंवा रिष्टक लोद्भवा येन दंतमवावा हर दो न्थी खर दंतजा ४
 जयमास्तन मातसे या शानि मुखे युकर्मसु मध्यमायां स्थितां मास्तं ज्येष्ठेनावने येन सुधीः ४३ शंतौ वैवश्वेन यष्टौ भोगमो स्या र्थ के जये।
 अजा मां गुष्टयोगेन संभनः दौ जयेत् सुधीः ४४ तर्ज्यं गुष्टयोगेन हे व्योच्चाटनयोः पुनः कनिष्ठां गुष्टसंयोगान्मार ए मजयेत् सुधीः ४५ अ
 धो नर शतं संख्या न दंडं च न दंडं कर्म मणीनां शुभकार्ये स्यात् निषिद्य संख्याभिचारके ४४॥ ८ वा माता विधेया उच्चाटने कार हर दो स्या मय्य
 दंतजा माता यां ग एन प्रकारमाह मध्यमायां भिनि ज्येष्ठेनां गुष्ठेनावने येन भामयेत् ४६ माता मणि संख्यामाह अष्टोत्तरशतं भिनि तदर्थं चतुः पंचाशतं
 तदर्थं सप्तविंशतिः एषा निविधा माता शुभकार्या अभिचारे तं मना दौषं चाशुभं मणि युक्ता माता ४७ अनिमाह श्रान्तिरिति वदने वट काष्ठा मय्य नो मा

होममुद्रा आह मृगीति नासांलक्षणमाह मध्यमेति २७ वर्णनाह चंद्रेति शृंगैवंद्रवर्णपंचवीजनेनलेख्यः वशीकरणादौ जलादिवर्ण २८ चंद्र
 वर्णनाह स्वरादिति बोधशस्त्राः सूर्येति २९ छद्दश्चंद्रवर्णः शनि सति तथा पिवण्यादौ पंचभूतवर्णसु प्राक्तरंगे स्वकुलाम्यकुलभेदे उक्ताः नत्र
 षण्मुद्राः कर्मषट्के सुखं प्रहेमे निगद्यते मृगीहंसी भूकरीति होमे मुद्रात्रयं मतं ३० मध्यमानामिकां गृहयोगे मुद्रा मृगीमता हंसी कनि
 धाहीनानां सर्वासां योजने मता २८ भूकरीकरसंकोचे मुद्रालक्षणमीरितं शृंगैवश्ये मृगीहंसी संभनादिषु भूकरी २८ चंद्रेनैव धर्याका
 श्यवर्णानं लवर्णकाः षट्सु कर्मसु यंत्रस्य वीजान्युक्ता निमित्तिभिः ३१ स्वराः सौ चंद्रवर्णभूतवर्ण उदीरिताः चंद्रा एहीना सेमास्त्रा वशी
 कृत्वा ॥ द्विकर्मणि ३२ चंद्रिक्त्वा लक्षणं यस्माद्दृष्टं द्वादिवर्णकान् शृंग्यादि कर्मसु हेमाजानयः षडभूकमान् ३२ नर्मः साहास्यधावौ
 षट्हे फट्त्वमत्र विनमैः नासा पुटदया धला पदा ध्राणा निमित्तवर्ण ३३ नैयोदयस्य हि याः शृंगि कर्मणि सिद्धिदाः नासा दंडा भ्रिजमनौ
 नर्णैर्लक्ष्ये धरोदयः ३४ पुटमध्यगौ तस्मिन् हे वैजो मोदयः श्रुभः पुटो परिष्ठा नमने प्राणैः स्यान्पावकोदयः ३५ ॥ यद्यपि चंद्रवर्ण अपि संति
 पिवण्यादौ नोपादिवर्णैस्ते खने चंद्रवर्णे रहितानामेव जलादिवर्णानं लेखनं ३४ केषां चिन्मते सवस्त्यहराः क्रमाच्चंद्रो भुवनभो नि लानलवर्णः ३१
 नान्वर्णनाहनमदति ३२ भूजोदयमाह नोसेति नासा विवरयो रधका न्या एगौ जलोदयः ३३ उपरि प्राणमतिवस्तुदयः ३४ ३५ ॥

मंटीनो
न२५
१६५

प्रथमलक्षणमाह एकदति १६ विदर्भलक्षणमाह आदाविनिग्रथनविदर्भयोर्मन्त्रनाम वएलेखनेऽन्यत्रसमाप्तेषुनर्लेखनं २० संपुटलक्षणमाह मन्त्रभि
नि २५ रोधनमाह आदिति योगमाह नमितिपक्षंमाह मं नोनदति २२ मंडलमाह अर्द्धचंद्रेति २३ तद्वर्तचंद्रवद्भाकित वयुमंडलं २५ मुद्राआह
सरोहमिति सरोरुहंपद्ममुद्रा मायया कथेहैसंसुखैकनामंहतावुन्ननौपुनः अंगुलीः प्रसृतामध्यंगुलौपद्मसमुद्भवेति पाशमुद्रायथातजनीमध्यमे
वामेउर्ध्वमुखेविषयचतुर्दशितेअधोगुत्थोसमुख्योत्पत्त्यरं पशुमुद्रामवेदेवभिषः संपीडनेतयोरिति गदामुद्रायथा अन्योन्याभिसुखैकनाहसोनग्रं
प्रमेकमेधंयुलंगुलक्षणंप्रणिगाद्यते एकमेधंनस्यवर्णः स्यात्ततोनामासुरंयुनः १६ मंत्रार्थेनामवर्णश्चेमेवंप्रथममीदितं आ
हैमंनोसुरंरुद्रमेकंनामः सूरंनतः २० एवंयुनःपुनःशोक्तोविदर्भोमंत्रवित्तमैः मन्त्रमाहोसमुच्चार्यन्ततोनामाखिलंपठेत् २१ अं
नेत्युक्तमतेमन्त्रमेकः संपुटदरीतः आदिमध्यावसानेषुनामोमंत्रसुरेधनं २२ नामोतेनमनुर्योगोमंत्रानेनामपल्लवः अर्द्धचं
द्वनिमंपार्श्वद्वयेपद्मद्वयांकितं २३ जलस्यमंडलंश्रोक्तंप्रशस्तंशान्तिकर्मणि त्रिकोणंस्वस्तिकोपेतंवश्येवनेसुमंडलं २४ चतु
स्संवज्रयुक्तंशंभुमंसुमंडलं वनेदिवसादिद्वेषेविंदुषट्कांकितंतुनत् २५ वायुमंडलमुच्चादेमारलेवह्निमंडलं सरोठहृषा
विनातुभौ अंगुष्ठोमध्यमेतद्वत्संयुक्तेषुप्रसारिणे गदासुरेयमुदितादर्शनाविघ्नहारिणीनि मुखतयुद्गेनाकुलि «श्रीगदेसुशालंकुलिशंत्वसिः २६
यंवज्रमुद्रासायथा कनिष्ठांगुष्ठयुक् मुद्रात्रिकोत्पत्तिरिति अशनेर्वज्रस्यकनिष्ठांगुष्ठयोगादन्यासांप्रसारणत्रिकोलेनार्थः अक्षिः स्वरूपमुद्रा यथा
उर्ध्वस्यवामहस्तस्यनर्जन्माद्यंगुलित्रयं प्रसार्ययेज्जयेदत्येपिषंगुष्ठकनिष्ठिकेस्वरूपमुद्रेयमुदिताशर्वशत्रुनिकंतनीति २८ २९ ॥

कं वसंतः तद्विमं नदीदृशकं शिरः दृश्यादि ६ दिशि अह विवेति विवादि गैरणी दिवशा नाह शुक्लपक्षेति २० नदं तगाभुक्तप्रतिपत् २७ आसनाभ्यह
 पयंदति पयस्वस्त्रिके उक्ते किकटलक्षणं यथा जानुअं धांतराले तु भ्रुशुभं प्रकल्पयेत् विकटासनमेतस्यादिनि कुकुटासनं यथा उपविश्यात्कटासने कर्त्तव्यं
 दमनपूर्वसमयादहं यतः अं नर्त्तानुकरहं कुकुटासनमीरितमिति उच्यते पादौ कमान्यस्त्रे ज्ञात्वाः प्रणम्य मुरगं लीकरीति दध्यादारव्यानं कुत्रोसन
 वीर्यदक्षिणं यथा जानुनेन धांतराले तु भ्रुशुभं प्रकल्पयेत् विकटमसनमेतस्यादिनि कुकुटासनं यथा उपविश्यात्कटासने कर्त्तव्यं
 शिवसोमे इति कर्त्तुं निप्रवना निदिशः कमान् ६ नतनकमलिकुर्वीत नपत नदिश्यामुखः शुक्लपक्षे हि नीयाचससमीपचमीति यथा २०
 तजीयावधजीवाभ्यां युतां शान्तिविधीमतां चतुर्थी नवमी षष्ठी त्रयोदशी तिथिस्तथा २१ जीवसोमयुतां शस्त्रं वशीकरणकर्मणि २
 कादशी च दशमी नवमी चाष्टमी पुनः २२ शनैश्चरसितो यतां योक्तविदेषकर्मणि कर्त्तव्यं नदीदृश्यादिभ्यां नमस्तुते यदि २३ उच्चाटनास्त्रं
 कर्मत्रकते वं कलसिद्धये भूताष्टम्यौ कस्य गते अमावास्या नदं तगा २४ भानुमंदकुजो यतोः स भमा राणयोः शुभाः पद्मं स्रसि कर्त्तव्यं
 कुक्कुटवज्रभटके २५ शंभ्यादिषु प्रकुर्वीत नकमादासनं मुनमं गोसुद्वगजं फेरुणमेषीमहिषयोस्तथा २६ कर्त्तव्यं निवेद्य कर्त्तव्यं नजप
 शान्तादिकर्मणि आसनाभ्येव संकीर्त्य विज्यासः योच्यते धुना २७ प्रथमं च विदग्धस्वः संपुटो रोधनं तथा योमः पक्षवपतेष्वद्विज्यासाः
 ननु तः भिन्ने सोवन्तः पार्थवो न्यस्मिन् लफयममुनि श्वलं दध्याना यः पादपादौ पाणिभ्यां पदौ धयेत् भद्रासनं समुद्विष्टं यो गिभिः दूषितं पदमिति च २८ श
 नमुपवेश्यार्थमासनमाह गोसुद्वेति केरु भृगुगालः नवादीनां च नौ चर्मण्युपविष्य शौच्यादिविधेयं २९ ३० विज्यासानाह प्रथममिति ३० ॥
 ननु तस्य ज्ञात्वाः प्रत्ययमुत्वा गती कर्त्तव्यं दध्याना ज्ञात्वा कर्त्तव्यं सनमनुतममिति धाम्जनपार्थवो न्यस्मिन् लफयममुनि श्वलं दध्याना यः पादपादौ पाणिभ्यां पदौ धयेत् भद्रासनं समुद्विष्टं यो गिभिः दूषितं पदमिति च ३१

॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥

पानविप्राप्तंभोज्यचसिद्धिप्रवाप्तुयादितिसंबंधः॥३१॥ इतिश्रीमंन्महोदधिनीकायामहोदरानिर्मितायामंत्रशोधनंनामचतुर्विंशसरंग २४५०॥
षट्कर्माणिचतुस्रकर्मनेकमणीति नाम्नाह शान्तिरिति १ सप्तममाह शान्तीः-रेणादिनाशनमिति देवतास्येकोनविंशतियदर्थान् प्रतिकर्माभिन्यान् ५
इतिमंन्महोदधौमंत्रशोधनंनामचतुर्विंशसरंग २४५॥ कर्माणिषडधोवस्थेसिद्धितानिप्रयोगानः शान्तिर्वयंस्तंभनंचदेवमुच्चादमारणे
१ उक्तानीमानिर्कर्माणिशान्तिरेणादिनाशनं वश्यंचनकारित्वंस्तंभोवतिविरोधनं २ हेष्टोऽप्रतिः प्रीतिमनोरुच्चाटस्थाननश्रुतिः मा
रणंप्राप्तरणमितिषट्कर्मलक्षणं ३ देवतादेवतावर्णैर्कतुर्दिक्दिक्सासनं विन्यासासंभंडलंमुद्रांस्तुभूतोदयः समिन् ४ मा
लानिर्लेखनंदव्यकुंडस्तुक्कुलखनीः षट्कर्माणिप्रयुंजीतंतात्वेनानिययापयं ५ रतिर्वीणांरमज्येष्टादुर्गाकालिचंदेवता
सिनासुहृद्द्वारमिश्रव्यामलधूसराः ६ प्रयोजयेत्तवगाहोस्ववर्णैः कुसुमैः क्रमान् अगुषट्कंवसंतापमहोत्सवंभक्तमान् ७
एकैकस्यअजोर्मानंधादिकादशकर्मनो हेमंनंचवसंताप्यशिशिरं प्रीत्यनोपयदौ ८ शरदकर्मणोषट्कैर्योजयेत्क्रमतः सुधीः

यास्तंतात्वाषट्कर्माणिकुर्यादिभ्याह देवतादेवतावर्णैर्द्विभ्यादिना ५ उद्देशक्रमेणस्यैदेवताभ्यादितिमिति शान्तादिकर्मारंभेकमादत्तादिपूजादेवता
वर्णानाह सिनेति रतिः सिनाः चाली अरण्यमादि ६ स्ववर्णैः सिनादिवर्णैः अगुषट्कर्माणिशान्तादौव्यसंतादीन्युंजीत प्रत्यहं सूर्यदिपान्तादीदृष्टा

कामश्रीवाचोवाहुजेभ्यः स्तुतिप्रभ्यः श्रीवाचोउरुजेभ्योविद्वद्भ्यः वाचंभूद्रूपमभ्येभ्यः प्रतिलोमातुलोमजेभ्योवर्मोदयः १२२ हयगारेः करवीरेः १२४ जगिभ्यः
 भिज्जीतिपुष्पहेभिर्नाभिरैकाकिंदिः १२५ स्रष्टादिजानेनएषसासमिद्धिः १२६ किंशुकादिभिर्हृतेः क्रमादिप्रादयोवयथाः कृतमालोरुजवहः गंधवसुभिः क
 सर्वसाधारणमथहेमद्रव्यमथोत्पत्तेरं कस्यैर्हृतेः सुखावाप्तिः पालाशोरिष्टसिद्धये १२७ हयमार्गैस्त्रिणोवयथागुडच्यारेणसंक्षयः दुर्वयाहु
 द्विद्विद्विः स्फातगुडेनजनवयथा १२८ वित्त्वपन्नैर्धुनैः पक्षैः पादलैश्चंपकैः शिखरैर्महिकाभिश्चकीर्तयेज्जानिभिर्गिरैः १२९ वी
 हि भिश्चयवैः स्रष्टेऽडंवरश्चन्यर्जधसा गिलैस्त्रिमधुरैरिष्टाः संपदः सुनूर्णहृतेः १३० किंभुर्केकासमर्हैश्चकृतेमालैश्चंपावतैः वि
 प्रादयः क्रमाद्वयः सौभाग्यंघवसुभिः १३१ कोदवैर्व्याधयोरीणमुन्मत्तत्वंविभीतकैः कर्त्तव्यैः साध्वसोत्पत्तिर्मीधैस्तेषांनुभूकता
 १३२ समिद्धिः शाल्मलैर्नाशेरिपूणमचिराद्भवेत् किंभूरिणादहणीष्टदेवतासमुपासिता १३३ पुरश्चरणएकस्मिन्कृतेनन्मांनराघनः
 मंजोपदिनासिद्धः स्थानदाननयुनराचरेत् १३४ यद्वासमुद्रगामिन्यांनद्यामंदराविग्रहे स्पर्शान्मोक्षांतभाजप्यजुहयानदशांशान्
 विप्रान्संभोज्यनानैर्मन्त्राणांसिद्धिमाप्नुयात् १३५ पपरस्यापिसिध्वांनिमनवोचिरात् १३६ ॥ १॥ पूरुदिभिः १३७ कलायैर्मयूरपिच्छैरेषा
 णंभयोत्पत्तिः जन्मांनरोपार्जितपापवाहृत्पादकपुरश्चरणैकनेयदीष्टसिद्धिर्नर्भवेत्तर्हिपुनः पुरश्चरणंकुर्यात् १३८ संक्षेपपुरश्चरणप्रकारमाह प
 समुद्रगामिन्यांगणदिकायां १३९ विप्रान्संभोज्यहोमसमानसंस्थानेवेत्तमर्थः तदशांशान्द्रुमपक्षापिसंबंधात् तदशांशानोन्नयदशांशेनचजुहरे

स्विनामदिस्युपिनि ११० विप्रसन्निपविडभ्योदयान्नंजानम् अघोरइति उमासहेश्वरः ॐ ह्रीं नमः शिवायेत्यदि ११४ मंन्त्ररत्नोत्तरसिंहः ११६ विप्रसन्न
^{विनाभर्तिः}स्त्रिजालोभिरवोयस्यनायकः १११ गोपालोराजवक्त्रश्चेदकायस्थिणीनया मातंगीसुन्दरीश्यामानाएकलण्विप्रः चिनी १११ याव
 यैकजटावामाकालीनीलसरस्वती त्रिपुरकालरात्रिश्चकलाविष्टप्रदारमे ११२ अघोरैर्दक्षिणमूर्तिरैमामाहेश्वरोमनुः हयग्रीवोय
 दंश्चलक्ष्मीनार्यलक्ष्म्या ११३ प्रणवाद्याश्चतुर्वर्णवैदेर्मन्त्रास्तथा रवेः प्रणवाद्योगणयतिहीरद्वानाणनायकः ११४ सौराष्ट्राक्षरमन्त्रश्च
 नयामममृडक्षरः मंत्रराजोद्युवादिश्वप्रणवोवैदिकोमनुः ११५ वर्णत्रयापदानव्यायेत शूद्राय नोबुधैः सुदर्शनं पाशुपतं मायेया
 स्त्रं नृकेशरी ११६ वर्णद्वयापदानव्यानाम्यवर्णैकदाचनं छिन्नमस्ताचमातंगीत्रिपुराकालिकाशिवः ११७ लघुश्यामाकालरात्रि
 र्मोपालो ज्ञानकोपतिः उग्रनाथोभैरवश्चैर्यावर्णचतुष्टयं ११८ मृगीदशविशेषणमन्त्राएतेर्मुसिहिशः वासुणः सन्निपवैश्याः शू
 दानार्थोधिकारिणः ११९ श्रद्धावंतोदेवशुद्धिजपूजासुसर्वथा मायाकामं श्रियंवाचंप्रदद्यान्तु स्वजन्मने १२० मायामुनेवाहुजे
 भ्यउरुजेभ्यः श्रियंगिरंवाणीबीजंतुभूदेभ्येभ्योवैर्मवषणम् १२१ ॥ ८८ देवानाह सुदर्शन इति १२७ वर्णचतुष्टयापदेपान्मं
 जानाह छिन्नमसिनि १२८ कैजेषु विशेषमाह मायामिति मायाकाम श्रीवागीजानि सुखजन्मने विप्राय १२९ ॥ १२९ ॥ १२९ ॥

दीपनमाह जपदति हंसमंत्रेण पुटिनस्य मंत्रस्य सहस्रं जपो दीपनं हंसः शमायनमः सोहमिति बोधनमाह नभरति नभीहकदिः २ इन्द्रविदुसैर्युक्तो र्युक्ते
 नहं एनसंयुटितस्य मन्त्रोऽथ स हस्रजपो बोधनं इणमायनमः हमिति फट् शमायनमफटिति सहस्रजपसुनाडनं १४ अभियेकमाह वागिति र्हंसः उंमि
 निर्मेण स हस्यामिमंत्रि नैर्नहै सेनैव मंत्रेण नाडपत्रोपरिभित्तिस्वितमंत्रेऽभियेवनमभिषेकः १५ विमस्तीकरणाह हरिति हरिस्त्वस्य चित्तोरस्य
 सहस्रपंचक्रमितो बोधनं तस्मै तं बुधैः सहस्रं मन्त्रपेदस्य पुटितं ताडनं हिनत्र १३ वाक् हंसगारे जेसेन सहस्रं पाथसामनुं अभिषिचं चैतवांमाधैर
 भिवेकोपमौरितः १४ हरिवत्सु चित्तस्मादीव षडंगो ध्रुवादिकः सहस्रं तस्युदंजप्याद्विमस्तीकरोते मन्त्रः १५ स्वधावषट्पुटं जप्यात्सह
 स्रं जीवने मनुं स्त्रीराज्ययुनपाथोपि सपर्येतो न पर्येक्ष्यन्तुं १६ जपेन्मायापुटं मंत्रं सहस्रं गोपनं हिनत्रं बालागार्तोपवीजेन मृगनाद्येन संपुटं १७
 सहस्रं प्रजवेन्मंत्रं मेतदाप्यायनं मतमं संस्कारदशकं प्रोक्तं मन्त्रोद्येयनाशकं १८ सिद्धिप्रदीकं लिपुगेयेमं त्रास्तान् च दाम्यन्तः अर्णो एका
 क्षरोनुष्टुप्त्रिविधो नरकसप्त ६ एकाक्षरोर्जो नोनुष्टुप्त्रिविधं सुरगाननः ॥

॥ हस्रजपो जीवनं १६ नपर्येणमाह स्त्रीशनिदुग्धध्वंशरकै सेनैव मंत्रेण तस्मिन्नेव शतं न पर्येदिति नपर्येणं १७ गोपनमाह जपेदिति ह्रीं पटस्य सहस्रं ज
 प्यायनमपह कलेति बालायास्तार्तोपवीजैः गम्यन्तः नशाद्येन तेन सौः दति बीजेन संपुटस्य सहस्रं जप अप्यायनं एकवर्तेन संपुटं त्वमादावंने
 व एकस्यावल्लोमत्वाशक्तेः १८ सिद्धमंत्रः बर्हिच्यर्णो दति त्रिवर्णादिस्त्रिविधो नरसिंहः एकाक्षरोनुष्टुप् त्रस्य लोहि विचो हय ग्रीवः

नेपाविनि योगमाह वक्ष्यति ६४ छिन्नत्वादिनि छिन्नोरुद्धृष्टकिंहीनरमादयः पंचाष्टदोषान्नह्यस्य एण निचष्टा रदातिल केटिगीयपटले उक्ता निग्रंथगौरवमप्य
 न्नाल्लभ्यते सप्तकोटिमंत्राः संति ते सर्वथत द्वापत्क्रान्ता एव ६५ नूननाख्यं संस्कारमाह भूर्जपत्रे रोचना कुंकुमचंदने रागाभिमुखं त्रिकोणं कृत्वा त्रिभोपि
 वष्टोच्चाटनरोधेषु पुष्पांसः सिद्धिस्य यकाः सुदृक्मरुजांशोश्चोर्मंत्राः शोभासिद्धिदाः ६४ अभिचारस्मृताः कीवाएवने मनवसि
 धाः नस्यत्र शोधनेनैव नस्यत्राभिर्नरत्रनु ६५ शोधने मंत्रिभिर्प्राप्त्यसिद्धं जन्मनामवा दनेः संशोधितोर्मंत्रो भवेत्त शिष्यैश्च सिद्धये ६६
 छिन्नत्वादि कृद्दोषाये पंचाशत्तमं त्रसंस्थिताः तैर्देवैः सकला व्यासामनवः सप्तकोटयः ६७ अतस्तदोषशान्त्यर्थं संस्कारदशकंचरे
 न भूर्जपत्रे स्तिखेत्सम्यक् त्रिकोणं रोचनादिभिः ६८ वारुणं कोणमभ्यसप्तधा विभजेत्समं एवमीशानि कोणभ्यां जायते तत्रयो
 नयः ६९ नैव वेदमित्रासत्राविलिखेत्तान्त्रकांक्रमान् अकारादिह कासांतामीशानि चरुणावधिः १०० देवां न त्रसमावात्स्य पूजयेच्चंदना
 दिभिः नतः समुद्धरेत्तं न जननं न हृदीरितं १०१ जोहस्य पुटस्यास्य सहस्रदीपनं स्मृतं न भो वन्हीदं युक्तो धि संपुटस्य जयो मनोः १०२ ॥
 कोलेभ्यो मध्ये कृताभिषट्षडिस्त्राभिः समाभिर्मध्ये नववेदमित्रा एकोनपंचाष्टा त्रिकोणा कोष्टा जायते तत्रे शानादिष्वश्विमे कोणां नमान् कालि विविक्षा
 वाख्यं संपूज्य तत एवैकमंत्रा एवमुद्धरेत् नतः समाज्य चान्तरे लिखेत्तस्यार्थः एतज्जननं १०२ ॥

वर्गोद्यादिति कचटनपआए अएषएनेवायवीयाः वर्गानिमादिति उज्जणनमल्लुशहअंतेनाभसाः विसर्गस्यपंचभूतमपत्वगाह विसर्गदिति अन्येवर्णः
कचटनप^आ अय^अ कचवर्ण^उ उज्जणनम^ल लल्लु^श शह^अ अंतेनाभसाः^{वि} विसर्गस्यपंच^{भू} भूतमप^त त्वगाह^{वि} विसर्गदिति अन्येवर्णः
वर्णोद्यानंनकिंटीप्राअयवामारुतामनाः वर्गानिमाः कथौलौशोहोविदुश्चनितनाभसाः २२ विसर्गानुप्रकृत्यात्मासर्वभूतमयोयनः
प्राणैरितौविनिर्यानिंकडाहस्थानमसुशन् २३ पार्थिवार्थिकवर्णानांस्वकीयाः स्वकुलाभिधाः पार्थिवस्यचवर्णस्यमित्रंवारुण
मसूरं २४ नैजसंशत्रुभूतंस्थानुदासीनंनुमाहनं जलोद्भवस्यवर्णस्यपार्थिवंमित्रमीतिमृ^{४८}सृपत्नंवह्निसंभूतंमुदासीनंतुवायवं^१नै
जसस्याथवर्णस्यवायवंमित्रं मुच्यते २६ विहेषीवारुणोवर्णउदासीनसुपार्थिवः पवनोऽथिनवर्णस्यमित्रंवाह्निसमुद्रवर्म २७ श
त्रुः पार्थिववर्णः स्थानुदासीनसुपार्थिवः चतुर्णपार्थिवदोनामाकारार्णः सखासदा २८ मनोः साधकनागर्णपिषोवर्णवीहिमौजयोः
सफलादिकभेदसुशोष्योमंत्रप्रदिनसना २९ स्वकुलेभीषितासिद्धिः सिद्धिर्मित्रेयिकीर्तिना अभिनेमरणंरोगउदासीनेनकिंचन ३०
गिनममित्रं चमंत्रदूरेणवर्जयेत् स्वकुलंमित्रंभूतं चगृह्णीयादृष्टकामुकः ३१ नस्यनैक्येपिसंभोक्तं स्वकुलंनामसंत्रयोः पुंस्त्रीन
ाः भोक्तामनवास्त्रिविधावुधैः ३२ वषट्कारं फट्कारं ध्येयमांसोमनवः स्मृताः चौषट्साहांनगानार्थ्योहंनभोनानपुंसकाः ३३ ॥
नानिस्पृशंनोनिशीति विसर्गसुननद्यति सर्वभूतमयकं ३४ एषांस्वकुलानां कुलत्वमाह पार्थिवेति ३५ फलमाह स्वकुलेऽर्भोपिनासिद्धिरिति ३६ पुनर्मंत्र

॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥

मं-दी-नो॥ नं कुं मं जलै स पूर्य न च कुं मे मं न युक्तं ताल पत्रं ह्यिष्टं रूपाङ्गं गतया वर्णं मालया स माय नमः आं रूपादित्वा नं प्रजप्य तत्र आरभ्य पुनरकार पुर्यं न गण
प्रवध्य निजमूर्धनं तस्मात्पात कुं भस्थितैर्जलैः पुनः स पूर्य नं तोयै स स्या स्ये मं न वचनं ७० संपूज्य कुं मं सरित्ति न जगे चा वि नि स्थि ये न
विष्ण न सं भोज्य मु च्ये च्छे पीड यं सौ म नू त्वया ७१ अनेक धा शोधने चेत पुद्गे न प्राप्य ने मनुः माया को मं श्रियं चा दौ द चा त्र हि ष मु क्तये ७२
यद्वा दृष्टो मनुर्जुष्टः सि ध्ये न प्रण व सं पुटः यद्वा क्र मो न क्र म ग या प्र ज तो व र्णं मालया ७३ यत्र य स्य भवे द भक्ति वि शेषः सम नू त म वै र
ने ह सु स नु भ्र म सि हि द स स्य जा य ने ७४ बीज मं चो स य मं चो माला मं चो स य प रे त्रि धा मं च ग णः श्रे क्ता व वै र ग म वे दि मि ७५
बीज मं चो द शा णं ति त त गो मं चो न स्वा व धिः विं श त्प धि क वर्ण ये माला मं चो लु ने स्मृ ताः ७६ वा ल्ये व य सि सि द्धां ति बीज मं चो उ पा सि
तुं मं चो सि द्दा यो व ने तु माला मं चो च्च वा र्द के ७७ उक्ता न्य स्या म व स्या या म भी षुं प्रा म ये सु धीः बीज मं चो दि मं चो णं हि गु णं ज प म च
रे न ७८ स्व कु ली न्य कु ली र यो य मं चो णं मे द उ च्य ते प्र कृ तिः पंच भू ता त्मा न तो जा ना तु मा त्का ७९ न स्मा द्दृ णं सु पंचा शं न पंच भू त म यं किं
य नः ततो या वर्ग गाः वर्णो बोल लाः पार्थि वा म ताः ८० ना से यो वर्ग तु यो च्च व सो वर्णाः स्मृ ता उ पा ने चो दि ती या वर्ग णि मे र स्था या व का
ये न ए वं ज सो रि मं चो पि सि हि दः त्रि वि धा न मं चो ना ह बीजे ति ७५ न स्मा द्वा धि विं श त्प णं व धि ७६ वर्ग गा स्तु ती याः ग ज उ द ट क रौ उ ओ ल ल रे ने भू व र्णाः ८०

नृ-दी-नो॥ नं कुं मं जलै स पूर्य न च कुं मे मं न युक्तं ताल पत्रं ह्यिष्टं रूपाङ्गं गतया वर्णं मालया स माय नमः आं रूपादित्वा नं प्रजप्य तत्र आरभ्य पुनरकार पुर्यं न गण
प्रवध्य निजमूर्धनं तस्मात्पात कुं भस्थितैर्जलैः पुनः स पूर्य नं तोयै स स्या स्ये मं न वचनं ७० संपूज्य कुं मं सरित्ति न जगे चा वि नि स्थि ये न
विष्ण न सं भोज्य मु च्ये च्छे पीड यं सौ म नू त्वया ७१ अनेक धा शोधने चेत पुद्गे न प्राप्य ने मनुः माया को मं श्रियं चा दौ द चा त्र हि ष मु क्तये ७२
यद्वा दृष्टो मनुर्जुष्टः सि ध्ये न प्रण व सं पुटः यद्वा क्र मो न क्र म ग या प्र ज तो व र्णं मालया ७३ यत्र य स्य भवे द भक्ति वि शेषः सम नू त म वै र
ने ह सु स नु भ्र म सि हि द स स्य जा य ने ७४ बीज मं चो स य मं चो माला मं चो स य प रे त्रि धा मं च ग णः श्रे क्ता व वै र ग म वे दि मि ७५
बीज मं चो द शा णं ति त त गो मं चो न स्वा व धिः विं श त्प धि क वर्ण ये माला मं चो लु ने स्मृ ताः ७६ वा ल्ये व य सि सि द्धां ति बीज मं चो उ पा सि
तुं मं चो सि द्दा यो व ने तु माला मं चो च्च वा र्द के ७७ उक्ता न्य स्या म व स्या या म भी षुं प्रा म ये सु धीः बीज मं चो दि मं चो णं हि गु णं ज प म च
रे न ७८ स्व कु ली न्य कु ली र यो य मं चो णं मे द उ च्य ते प्र कृ तिः पंच भू ता त्मा न तो जा ना तु मा त्का ७९ न स्मा द्दृ णं सु पंचा शं न पंच भू त म यं किं
य नः ततो या वर्ग गाः वर्णो बोल लाः पार्थि वा म ताः ८० ना से यो वर्ग तु यो च्च व सो वर्णाः स्मृ ता उ पा ने चो दि ती या वर्ग णि मे र स्था या व का
ये न ए वं ज सो रि मं चो पि सि हि दः त्रि वि धा न मं चो ना ह बीजे ति ७५ न स्मा द्वा धि विं श त्प णं व धि ७६ वर्ग गा स्तु ती याः ग ज उ द ट क रौ उ ओ ल ल रे ने भू व र्णाः ८०

मरुनाक्षरो ह्यत्रिषदर्थः कृतो व्यंजनसमूहः ध्रुवः प्रणवः ५८ पराही ५९ पक्षिनायको गरुडमंत्रः ६० ६१ अरिमंत्रत्यागप्रकारमाह मुदिनदतिमुपायस्य
 पंचमेतु भवेदाधिः षष्टे सर्वस्य संसृपः ७० वंसंश्लोधि नमंत्रं दद्याच्छिष्याय मां त्रिकः ५६ येषां मन्त्रां सिद्धादिश्लेषे धनं नास्ति नानुवे एक
 वर्णस्त्रिवर्णे वाप्येवाणैरसवर्णकः ५७ समालेन ववर्णश्चरुदाले रदनासदः अष्टाले हंसमंत्रश्च कृतो वेदो दिगो ध्रुवः ५८ स्वप्नलव्यः सि
 या प्राप्नो माला मंत्रो नृके सरी प्रासादो रविमंत्रश्च वा राहो मातृका पराः ५९ त्रिपुरा काममंत्रश्चाह सिद्धः पक्षिनायकः चौहमंजो जयिन मं
 त्रानैष सिद्धादिश्लेषे धनं ६० एतद्विनेषु मंत्रेषु शुद्धिश्च फलकीमता विद्यामंत्रं सत्त्वं सत्क्रमरिभूतं यजेत्तु ध्रुवं ६१ अरिमंत्रो गृहीतश्चेद
 र्शनं च स्मरन् सदा तस्य त्यागः प्रकर्तव्यं सन्नकारो ध्रुवो व्यने ६२ सुदिने स्थापयेत्तु कुंभं सर्वतो भद्रमंडले विलोमं संजपन्मंत्रं पूरयेत्तं सु
 पायसा ६३ तत्रैवेवं समावाख्ययजेद्द्वीचरणान्वितं तदग्रे स्थापितं कर्त्वा प्रतिष्ठाप्य नत्तं नतः ६४ जुह्वा न्यूलमंत्रेण विलोमेन धर्मं
 दिक्पतिभ्यो वैच्छिंदद्यात्पायसान्नैर्धुना चित्तैः ६५ पुनः संपूज्य देव्यां प्रार्थयेन्मनुना मुना आनुकूल्यमना लोच्यं मया न रत्नवुद्धि
 ६६ पदपानं पूजितं च प्रभो मंत्रं च स्वरुपकं तेन मे भो नमः स्तोममशेषं विनिवर्त्तयेत् ६७ पापं प्रतिहृतं चासुभूषा तश्चैषः सज्जननं न नो
 ॥ कल्याणपावनी भक्तिरसुते ६८ एतं संपूर्णं त्रैलोक्यं पूर्य गुरुचंदनैः विलोमं विलिखेन्मंत्रं गोडपत्रेन दत्तयेत् ॥ मनोदकेन ६९

मन्दी नैः प्रकारं नरेण भूय धनमाह नामादीनिः धन्विना भूः स्मिन्ना भूः पूर्ववत् न अधिक शेषः कर्माणि उन्नीय नोत्पद्यः प्रकारं नरेण माह यदेति नादृशैः स्वरस्यंजनरूपेण
 नः २४ यक कर्तैः सा धकनामा स्यैर्योजयेत् ४७ अलिना धाः नो पूर्ववत् अधिक कर्माणि नादि ४८ मन्त्रस्य कर्माणि त्वहेतुमाह योर्मन्त्रे नि पूर्वजनमनुयासन्मस
 मन्वराशिः स्मृत्तुः स्मिष्टः पूर्ववद्वनिता एर्ता यद्वर्मा स्यराणीह स्वरस्यंजनरूपतः ४९ एष कर्तुं नृदिशुण्येन योजयेत् सा धका स
 रैः नादृशैः स्मिष्टैर्मन्त्रैर्मन्त्रराशिरुदाहृतैः ४७ एवं नामा एर्ता संयोगविहिता कर्म योजितः मन्त्रवर्णैरुपमन्त्रो नामराशिः स्मृतो ब्रुवैः ४८
 अस्मिन्ना धनिता चात्र पूर्ववत्परि कीर्तिता उक्ता न्यतममार्गेण शोधनीयमृणो धनैः ४९ योर्मन्त्रः पूर्वजनविसेवितो नादृशो फलं पापः
 त्यापस्य ये जानै फलं वाप्तिरनेह सि ५० आयुस्य यादृशो नाशं साधको स्य भवांतरे कृणुता तस्मात्सिमात्रेण मन्त्रो भीष्टं प्रयच्छति ५१
 समाको यद्युभौ राशौ तस्यैव नातु फलं धनीमन्त्रसु संप्राप्तः फलं न्याधिक सेवया ५२ मन्त्राणां शोधने भूयः प्रकारं नरे मुच्यते षट्
 को णे विलिखेत् पूर्वको ण्ये कै कवर्णे कान् ५३ अकारादिरुका एतां नृपुंसकविवर्जितान् नामाद्यस्य रमारभ्य मन्त्राण्येव विप्रो ध
 येत् ५४ प्रथमे संपदां प्राप्तिर्द्वितीये धनसंस्थयः तृतीये धनसंप्राप्तिश्चतुर्थे वंशु विग्रहः ५५ ॥ (प्रथमपापसद्भावान् पापस्य यं कुर्वन्नाभ्यर्चयेत्
 फलं ददौ ततः पापस्य ये कर्ते फलं दानकाले उपासितुरायुः स्य ये जानः समन्त्रः फलं दानाच्च न्मानं नरे कर्माणि जानः संप्राप्तिमात्रेण षट्कालो भवती

नृनीपायंकादिहंताः चतुर्थ्यादिहंताः पंचम्यांवादिहंताः षष्ठ्यां दशांकां लेख्याः ३८ कोष्टे पावनीति यतिनमेकोष्टे वर्त्तमानं कंउपर्यं केन गुणये
यथा प्रथम कोष्टस्य प्रकारश्चतुर्दशगुणितश्चतुर्दशैव द्वितीयकोष्टस्य प्रकारः सप्तविंशत्यागुणितश्चतुः पंचाशत् एव तृतीयकोष्टस्य उकारः सप्त
नृनीपयंनौका^{का}घर्णा^{१.८}दकारांताभ्यैर्वर्मिताः ठादि^०कांताश्चतुर्थ्यानुपंचम्यांवादिहंताभिः ३८ षष्ठ्यां पंनौकमाह्वेस्वाअंकाः कथ्यंते एवते दि
कंचद्रमुनिवेदाष्टगुणसेषसांगः ३२ रसाश्चरमसंख्याना एवमंका उदीरिताः मंत्रवर्णान्ष्टयकुपर्यानेस्वरव्यंजनरूपतः ३८
कोष्टेयावन्निवर्णः स्याद्दशगुणयेतावदंककम् कोष्टोपरिस्थेर्नाकेन सर्ववर्णेष्वयं विधिः ३८ दीर्घाश्चराणां मंकास्तु ज्ञेयास्तद्यस्य स्थि
तः एकीकृत्या विज्ञानं कानं षभिर्विभजेत्पुनः ४० शेषो कोमंत्राणिः स्यान्नामवर्णेष्वयं विधिः अष्टः पंक्तिस्थितैरकैर्गुणनीपास्तु
नेष्टित्वाः ४३ अधमर्णोधि कोशार्थैर्नोराशिर्धनीस्मृतः मंत्रोपसाधमर्णः स्यान्नामवर्णेष्वयं विधिः ४२ एवं धनर्णसंशोक्तप्रत्य
याशोच्यते पुनः कश्चाद्यस्य रमारभ्य पावनं त्रादिमास्य रम् ४३ गणयेन्मानकाद्यर्णक्रमेण गुणयेच्चिभिः विभक्तेष्वसमिः शिष्टेनाम
शिरुदीरितः ४४ एवं मंत्रार्णमारभ्य पावनं त्रादिमास्य रं गणयित्वा विभर्त्वा विभजेन्मसमभिः सुधीः ४५ ॥ १० गुणितः षट् एवमप्येपि
नामवर्णान्ष्टुदिशा शिभिरैवंगुणनीपाः सप्तैकानेकोक्त्या षभिर्भक्ते शेषः साध्यराशिः एवं साधकां कानगुणितानेकीकृत्या षमक्तये
षः साधकां शिः मंत्रराशिगुणयेच्चिन्नास्तः ४२ ४३ ४४ ४५ ॥

स्यार्थमाह सिद्धेनैकादश्याणि स्थितिः २४ प्रकाशं न माह जायत इति नाम संवयोर्वा एतेन कोकमचतुर्भक्तिः एकशेषसिद्धः द्विशेषसाध्यः त्रिशेषसुसि
सिद्धेनैकवारोयसाध्यो रसदिष्टासिद्धस्तु सुसिद्धस्त्रिमुनीश्वरिषुर्वेदाष्टभानुषु २४ अन्योपीह प्रकाशसिद्धसाध्यादिशेषेने च
नृकोष्ठेषु विलिखेदौ दिवर्णनपुनः पुनः २५ नाभ्यर्णनसिद्धसाध्यादिसेपंमन्वस्यरावधिः चतुर्थोपि प्रकाशसिद्धादीनां विशेषधने
२६ नाजोमंनस्यवर्णोचं चतुर्भिर्विभजेन सुधीः एकादिशेषे सिद्धादि कमामत्तेयं विचस्यतेः २७ सिद्धादिशेषधनं प्रोक्तमथ चर्चिभ
शेषधनं त्रैत्रभूगुणवेदस्माधेरा नयेन भूभुजोः २८ द्विचैत्रभूजवाह्यस्यैर्भनेत्रविधेरागुणः एकैर्कैर्भूभुजेह सिद्धासचंद्रानुदस्यथ २९
अभिन्यादिषु विज्ञेया आदिवर्णः क्रमादुधैः स्थांताविंदवि सगैर्निषोक्तैर्भागे व्यवस्थितौ ३० जन्मसंपादितं स्वमेव प्रत्यदिः साधको व
धः मैत्रं परममैत्रं च गणनीयं स्वनामभान् ३१ विषदधः प्रत्यरिश्च न्याज्या अन्यदुद्धनमं अथर्णधनसंश्रुतिः कथ्यते सिद्धिदायिनी किं
३२ सप्ततिर्यक्स्थिरेखा द्वादशैवोर्ध्वगाः पुनः एव कते गुजायंते केष्टा षट्षष्टिसंमिताः ३३ आधयंक्तौ लिखेदं कोर्त्तकथ्यंते यथा हि
क्रममनुनस्यत्रनेत्राकर्त्तौ निष्ठिर्वद्वेदवैद्वयः ३४ सायकावयवो नंदा कोष्ठेषु क्रमनः स्थिताः द्वितीययंक्तौ संलेख्याः पंच हीर्वा
हः श्रुत्येऽहिकलं पूर्वोक्तं २९ भये धनं न सन्नशो धनं न तन्न सन्नशेषवर्णविभागमाह नेत्रेति २९ उद्धुनस्यत्रेषु २९ यौ स्त्रभागे रचनं शो ३० क्रमाधयंक्तौ
धनमाह सधेति ३३ तिर्यकसमरेखाः उर्ध्वहोदशकान्ताः अधयंक्तौ चतुर्दशाद्यंका द्वितीया आर्द्धः उन्मूलहीनाः स्वरा एकादशः

अरिसाध्यः १४ अरिसुसिद्धः १५ अपर्यासिनि १६ बोदप्रभेदभवंति बांकलमाह सिद्धसिद्धोपयोक्तेनेणादि यथोक्तेनकले क्तेनजयदितिनारिर्भू
भवतीत्यर्थः १३ द्विगुणकले क्रद्वैगुणान्नसुसिद्धसाध्यसुसिद्धः १५ इति १७ युक्तमानसिद्धसुसिद्धानां बहुलसाधारीणमल्पमे शुभमि
सिद्धसुसिद्धोर्जयानसिद्धारिर्हतिवाधवान् साध्यसिद्धोद्विगुणः साध्यसाधोनिरर्थकः १४ द्विगुणञ्चकान्सुसिद्धः सा
ध्यारहीनोन्नजान् सुसिद्धसिद्धोर्जयानेनसाधोद्विगुणञ्चयान् १५ नसुसिद्धोपहृदेवसुसिद्धारिः कुदंवहा अरिसिद्धः सुगंहन्यदरि
साध्यसुकन्यकां १६ ननसुसिद्धकुपनीर्जसदरिः साधकापहः नाम्नोमंनस्यवर्णश्चलित्विनाप्रतिवर्णकं १७ सिद्धाद्विगुणनकाय्यि
द्वयंजसमापनं नान्नोपदिसमासिषातपुनर्नामलित्वेनसुधीः १८ एवंसेव्योधिनेषुसुर्भूरयः साध्यवैरिणः अस्याः सिद्धसुसिद्धश्चेद
शुभंयुक्तंनशुभं १९ मनामिष्यंनुकेषांचिनतदर्थिप्राप्तसंमनं अथवान्यनप्रकारेणसिद्धादीनांविशेषधनं २० द्वादशरेल्लिखेच्चुके
वर्णोत्पर्वोदितोन्नजमान् र्द्विगुणानमंकासाद्यान् हानानव्युदविचर्जितान् २१ नन्ननामार्णभारभ्यमंनोषर्णवचिक्रमान् गणयेत्सि
॥ दिक्लनेषांचिनिर्दिष्टेन २२ सिद्धः सिध्यति कालेनसाध्यसुजयहोमनः सुसिद्धः प्राप्तिमात्रेण साधकंमस्ययेदरिः २३ ॥ ॥
मनंप्राप्तसंमनंवहुसंमनं २० अर्जुनस्यैकमाह द्वादशरेल्लिखेच्चुकेन २१ जयहोमाधिकेन २३ ॥

मं दी नै
न २५
९५८

इसा धादि किं च मयुन चनु को सहा दिगलनं कं १३ नै प्रयमचनु के मस्यां विदिशि नामार्णः द्वितीयादि चनु के युन द्विदिशमारभ्य सिद्धादि
 मूला मजेवनं दार्हि विवर्ता कदिग्रसाष्टभिः १४ कल्पमनुशरैरदिनिधिनिधैर्मिनेषु च ४ कोष्ठेषु मातृकावर्णान्ननामादिभिः
 क्रमानं सिद्धसाध्यः सुसिद्धौ रित्तयो मन्व ह्यरवधिः ५ यस्मिंश्चनु के नामार्णसंनस्यान सिद्धचनुष्यं ग्रादसि स्यान्दि
 नीयं स्यात्सा ध्या रव्यं न नीयकं ६ सुसिद्धारव्यं चनु र्यनु सपन्ना रव्यं स्मृजं बुधैः एककोष्ठे द्वयोर्वर्णः सिद्धसिद्धः प्रकीर्तिनैः ७
 न द्वितीये मंत्रवर्णे सिद्धसाध्य उदाहृतः तनीये सिद्धसुसिद्ध सिद्धादिः स्याच्चनु र्यके ८ नामादि युक्चनुः कोष्ठान्मन्व एण्यो
 द्वितीये के चनु के नत्रपूर्वनुयत्तनामा ह्यरं स्थितं ९ तत्र तत्र कोष्ठमारभ्या णयेन पूर्ववत्क्रमानं साध्य सिद्धः साध्यसाध्यसं
 तसु सिद्धश्च नार्द्रियः १० एवं त्रेषां तनीये चनु के मंत्रकर्णकः तदा पूर्वोक्तयमीत्याक्रमानं देया विचक्षणेः ११ सुसिद्धसिद्धकम्पा
 व्यस्तानसु सिद्धश्च नार्द्रियः चनु र्येनु चनु के स्यादशिसिद्धा रिसाध्यकः १२ न सुसिद्धो र्यादि यश्चादेवं मंत्रं विचारयेत् सिद्धसि
 द्धो यथोक्तेन दिगुलानसिद्धसाध्यकः १३ ॥ ८८ ॥ एणयेन एवं गणने सिद्धसिद्धः सिद्धसाध्यः सिद्धसुसिद्धः सिद्धादि साध्यसिद्धः ५ साध्यः
 साध्यः ६ साध्यसुसिद्धः ७ साध्यारि ८ सुसिद्धसिद्धः ९ सुसिद्धसाध्यः १० सुसिद्धसिद्धः ११ सुसिद्धारिः १२ अरिसिद्धः १३ ॥

॥

आभादीनि चानुर्मस्येव प्रवृत्तजहे शालभ्यंस्त्रिंशं कश्चिहस्तुवर्जयेत्तत्रेति नानियममन्याव्रतं वाजाप्यमेव वा चानुर्मस्यं न येन्मूढे जीवन्नापि मृतो हि सद-
 न्यादिनिंदा भवणान् १०० ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधि नौकायां दमनया विचार्य नक्त यन्त्रयोर्विशारंगः २३ ॥ मंत्रशुद्धिं क्रमाह साधकानामिति अक्ष-
 महालक्ष्मीं यजेद्दिहानभाद्रकृष्णमूर्तिने माधवस्य सुक्त सप्तम्यां विशेषादि न नायकं १०५ याकाचिन्सप्तमी शुक्लारविचारयुना यदि
 तस्यादिने शंसं प्रवृत्तया दध्युपेति न १०६ ततश्च कश्चोदितान्मन्त्रा नरेवना श्रीनिवर्द्धनान् विशेषानियमान् ज्ञात्वा भजे हे वमन न्यर्थाः १०७
 आभादी कानि कीमद्यो किंचिन् नियममाचरेत्तदेव संश्रीतये विद्वां जप प्रजादिनपरः १०८ एवं यो भजे ते विष्णुं रुद्रं गंगेण दिव्यं भास्करं
 रं अहम्भानि नमस्कृत्या चिन्तसी इति १०९ सधर्ममाचरन्वित्येव प्रजापरायणः जितेन्द्रियोस्वित्त्वानभोमान् प्रार्थ्यं हानं ततां व्रजेत् ११०
 ॥ इति मंत्रमहोदधौ दमनया विचार्य निरूपणं नाम त्रयोविंशत्तारंगः २३ ॥ साधकानां श्रीमदसिद्धौ मंत्रशुद्धिर्मात्रं नैव साधकस्य
 नानाप्रतिवर्णभारभ्यो धयेत् १११ मंत्राद्यक्षरापर्यन्तं च कोसिद्धादिके कमान् जन्मस्यैव प्रसिद्धं वा नामया स्यां विशेषेण ११२ उद्दिगाः
 ३१ः स्युः पंचतिथ्यगताः पुनः कोष्ठानि तत्र जपयेद्यो उशे चार्चनं लिखेत् ३१ ॥ ११३ यद्वचनमाह उर्ध्वेण इति योऽग्रकोष्ठा निधाय तत्रै-
 नवद्विचतुर्दश दश अष्टषोडश च ११४ एवमपंचदश त्रयोदशेषु कोष्ठेषु क्रमादकारादिवर्णान् पुनर्विलिख्य कोष्ठं चतुष्के सि-

मं. टी. नौ. यस्यामिनि उक्तनि यो करणसंभवे सर्वथा भ्रावणेण विद्रुजाच्चैत्रे दमनार्वाचनमन्त्रेनावययं कार्यमर्थः अन्नेष्वपीति अपरागाश्वं दसूर्यग्रहणं अर्धं
न. २३ दयत्स्य एतं अमार्कश्रवणं नौमन्त्रे चैत्रे नौमन्त्रे ययोः अर्धोदयाभिधोयोगः कोटिसूर्यग्रहाधिक द्वाभिसौम्यायनं मकरसंक्रान्तिः आदिशब्दाद्युगादयो म

१५७

पश्यां कस्यां नि यो कुर्याति यानुक्ते कृतं न चेत् सर्वथा भ्रावते चैत्रमपि ननु निवेदयेत् ८६ अन्मव्ययः पवित्रेण पूजां कर्तुं नैवेनेत्
श्रुय्यां रोपय संयुक्तो नेकवर्षालिजीवति ८७ संपूर्णहायनं पूजादिवना नैकं ननु या सर्वासापूर्णे नामेति पवित्रं दमनार्पणं ८८ अन्ने
द्युपपागाहृदि यसौम्यायनादिषु कुर्यात्तत्र योगेषु विशेषादिवत्तर्चनं ८९ यथा पथेष्टदेवेषु नृणां भक्तिः समेधने प्राप्यते तद
यत्नेन मनोभीष्टं न यानया ९० अचौ न तदहे कुर्याद्देवप्रत्यायनोत्सवं उर्जतयेव देवानामुभयापनविधिं सुधीः ९१ माघकृष्णचतुर्द
श्यां विशेषान्निवपूजनं आश्विनोत्थनवाहेषु दर्गा पूज्या यथाविधि ९२ गोपलपूजयेद्दिहान्ततनः कक्षाधमीदिने रामचैत्रसिने
पक्षे नवम्यामर्चयेत् सुधीः ९३ वैशाखाद्यचतुर्दश्यां नरसिंहं प्रपूजयेत् यजेन्नुक्तचतुर्थ्यां नृगले शंभादमाधयोः ९४ . ॥

नारयः श्रवणद्वारं प्रमुखायाः तत्रेष्टदेवमहोत्सवो महापूजाश्च विधेया ९५ नत्रहेतुमाह यथेति ९६ शुचावाहेन नदहेच्चतुर्थ्यां दीपले अर्घ्यं
नोऽर्जकात्रके ९७ माघकृष्णचतुर्दश्यां शुक्तपक्षादिमास्यामिमांसेण शिवपूजा प्रकारः शिवागमाद्वोध्यः नवरत्नेटुगार्चनविधिरथ
॥ नदपामादेव एवमयोपि ग्रंथगौरवमया न्नोच्यते ९८ ९९ १००

नावदह्योतरां सर्वथा गुरुवंशाभवेकं चिच्छिष्टं संपूज्य तस्मै विनमस्यार्थं दक्षिणां च दत्त्वा पवित्रपूजापूर्णस्मिन्निगद्वचनं प्राप्येत् ८५

नमः सुवर्णकुसुमेः पुष्पैः शानभिः सह मूलाभिमन्त्रितं देवमूर्तिमूलेन चार्पयेत् ७१ तद्वा^{नमः} न्यपटलस्थानि पवित्राण्यभिमन्त्र्य च नानामानसो नित्यपरिचारात् सुगन्धयजेत् ७४ एवं पवित्रैः संपूज्य धूपादीनि प्रकल्पयेत् पावके देवभावास्तानि तद्गोमं विधाय च ७५ मूलेनाग्निपवित्रं न दप्येद्देवतांस्मरन् मूर्तौ दिवं समुद्रास्पृशन् त्रिसंयोग्यर्चाम्नि ७६ पुष्पांजलिं विधाय शोकमर्चनं निवेदयेत् मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तौ हीनं कृपानिधे ७७ पूजनं पूर्णमेषु पवित्रेणार्पितं नरे शतिसंप्राप्य देवं शंभो जयेत् तद्दये विजे ७८ गुर्विति कर्मयोगस्तदत्वाधुष्यांजलिं गुरौ स्वोरोषडंगं विन्यस्य गुरुदेहपवित्रमेतन् ७९ पाषां दत्त्वा तथैवाध्वं वस्त्रात् कारचंदनं पुष्पैः संपूज्य मूलेन पवित्रं न दत्त्वेत् ८० स्वयात्मा दक्षिणां दत्त्वा दंडवत्प्रणमेद्गुरुं अभ्येभ्यः शिष्टं ब्रह्मः पवित्राणि दंशीतु च ८१ सर्वैकगुरोः पूजा कर्मभामंत्रिणसदा अपूजिते गुरौ सर्वा पूजा भवति निष्कला ८२ गुरो रभावेतत्पुत्रं न दत्त्वा तत्तदभावे तदात्मजं दैहिभ्यं न दत्त्वं न्यपूजयेत् गुरुभो भजं ८३ नतो धृत्वा पवित्रं स्वभोजयेत् काटिजो नमानं भुञ्जीत न दत्तं सातो बंधुभिः कनयैः सह ८४ यथा कर्तव्यं कर्त्तव्यं चिन्तासुगार्चने विधेरुक्तं तस्मात्पूजा संपूजिहेतवे ८५ ॥

कश्चावपदस्थानेऽङ्कः भास्कः विप्रशब्दनि भगवन्मप्यवित्रारेणलेनपदेष्टुलिंगोलेपिकार्यः अमंजितासिदेवेष्टि आगच्छेयामवानीशेवि
मनोन्मनीनवनमीदृशमीसर्वतोमुखी एताः पवित्रग्रंथीनोदेवताः परिकीर्तिताः ६९ आवाहन्त्यादिमुद्राभिर्नवभिः साधकोनमः न
दाह्नानादिकर्तव्यकृत्वाच्चैदनादिभिः ६९ एवंपवित्राण्यभ्यर्च्यदेवाङ्गं धपवित्रकं नष्टपयित्वागरेण^{नमः}दयेनाभिमन्त्रयेत् ६३
प्रणम्यप्रार्थयेद्देवं श्लोकमुपमिदं पठन् आमंजितोसिदेव शसाहं देव्यागलेभ्युरैः ६४ मंत्रेशैर्लोकपालैश्च साहितः परिवारकैः
आगच्छ भगवन्नीशाधिवासं पूजित्वा ६५ प्राप्तत्वां पूजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु केशव नमोऽङ्गं धपवित्रं नमो देवा विन्यसेत् नमः
भैः ६६ केशवेति पदस्थाने कार्यं उद्बोध्यैव नमो भगवन्माः पदेव च लिंगोले मन्त्रविनमैः ६७ अधिवासं विधायै न्यनिश्चिजागर
णंचरेत् देवस्य सुमिनामा निवदन् गायंश्च नदगुणान् ६८ प्राप्ता निर्मा चर्चनं कृत्वा मूलेनाष्टोत्तरशतं कनिष्ठारव्यं पवित्रं तनय
हीत्वा चाभिमन्त्रयेत् ६९ वंदावादित्रये देवानां कारयन् द्वाषमुत्तमं जपयन् द्वांश्च देवस्य कर्तुं मूले नर्चाप्येत् ७० एवमैवाप्येदेष्टे
पवित्रे मध्यमोत्तमे चैतरेर्नक्तमान्तीर्तथाप्येदेवं तदप्येत् ७१ च नमात्वा पवित्रं नमस्ते नमो विनं अर्घ्यो देष्टु देवस्य मुक्ते
विशं मूर्तिकारिके सांनिध्यं कुरु पार्वती न्यादिलिंगपदानामूहः ६५ ६६ ६७ कनिष्ठपवित्रारेण देवं श्वेतां ध्यायेत् मध्यमारेण रक्तं उद्बोध्य

निष्ठां शुद्धं दृष्टुं नैवेद्यपवित्रपात्रं आवरणपवित्रपात्रं च ५५ अधिवासनमाह नत्रेति शिखिद्युजः कार्तिकेयः दिश्वेदिश्वेदेवः ५६ आवाहनोऽस्या
पुनीसंनिधापनीसंनिधापनीसंमुखीकरणीसकलीकरणी अवगुं रनीअपुनीकरणीपरमीकरणीववाहन्मादिमुद्राः गजक्ताः गभिर्सदा
ह्यदृष्टाप्रथितिष्ठां शुनवसूनीविनिर्मितम् निमये^{५७} वपवित्रालिकुर्प्यार्तपूजार्थमंडलं ५८ पंकजं धोडशस्त्रं पूरयेदं वृषार्य
कैः नीलहारिद्रशोणाहूमांजिष्ठश्वेतसंज्ञकैः ५९ सिंहं दूधं मूकं स्यात्स्मैसाहन्निर्मंडलत्रयं सूर्यसोमानिसंस्तनसिनीनां रु
णकमानं ५९ न ह्यस्याष्टलं कुर्प्यारुणं यदि चासिनं एवमंडलमातिस्थपूजयेत् कुसुमादिभिः ५४ नस्यो परिनिवधीयानं वि
नानं समलं कृतं मंडले स्यात्पये इव प्रनिर्माणं दिवा घटं ५५ नत्रेष्टदिवसं पूज्यं यत्संविनिवेदयेत् देवताग्रे पवित्राणां न्यस्या
धिवासयेत् ५६ उक्तसंख्यस्य सूत्रस्यांशेनानियथा रुचि ज्येष्ठादीनि पवित्राणि विदध्या न सर्वथा सुधीः ५७ न च ह्यविशुद्धिं
इयं प्रतिपूजयेत् ब्रह्मविष्णुमहेशानां त्रिसूत्र्यादेव ताः स्मृताः ५८ ओंकारं चंद्रमौ चन्द्रिब्रह्मनागां शिखिध्वजाः सूर्यः सदा शि
श्वेन वसूत्र्याधिदेवताः ५९ क्रियाचरौ रूपावीरा चतुर्थान्ते पराजिना विजयार्जपयया मुक्तैर्दाचसदा शिवा ६०

कंपवित्रेदेवतानां ब्रह्मादीनां पदाथानुसमयेन कंडानुसमयेन वाहनादि कृत्वा गंधादिना च देन ६१ ॥

मं टी नैः
न-२३
१५५

अष्टोत्तमशतनवसूत्राज्येष्ठं चतुःपञ्चाशत्तामध्वमं सप्तविंशत्याक निष्टं पवित्रं कुर्यात् अष्टं षड्विंशद्द्रव्ययुतं मध्यं चतुर्विंशतिग्रंथि कनिष्ठं द्वादशग्रं
विदध्यान्निनपुञ्जांते पवित्राणि पयाविधिं हेमदुर्वर्ता न्नोऽन्यतं तु मिः पट्टसूत्रतः ३६ पट्टाकार्या ससूत्रैर्गुणैर्निर्मितैर्विप्रभाष्यया ॥
अम्यया वा सधवया सदाचारप्रसक्तया ४० कर्मनैर्लोकानि कुर्वीत न पुंश्च स्वादिनिर्मितैः त्रिगुणं त्रिगुणैकम्यनिर्माया न वसूचिकः ४१
नां प्रोक्ष्य पंचगव्येन स्वात्तये दृढाचारिणा प्रणवेनाभिषिञ्चेत् न मूले नाष्टानरं शतं ४२ मंत्रं च येन मूलगायत्र्या ना वदेव न तः सुधीः रत्नये
न वसूचीभिरेष्टोत्तरशतेन च ४३ न दहते न तदहते नानूरुनाभिमानतः देवे प्रास्य पवित्राणि शुचौ देशे प्रसन्नधीः ४४ अष्टमध्वक
निष्ठानि ते षडग्रंथी न दधीत च ४५ त्रिंशत्तत्त्वमार्तं दुर्मितान् अष्टादिवृत्तमार्तं ४५ अष्टोत्तरसहस्रेण न वसूत्रा विनिर्मितं अष्टोत्तर
शतं ग्रंथि च न मालाया विनक्तं ४६ कृत्वा तानरं जयेद्द्व्यंथी न रोचना कुंकुमादिभिः वै एषे पटले नानि संछापी सितवाससा ४७ स्थाप
यित्वा विनिर्मायां दन्यान्पांचरणचर्चनं सप्तविंशत्तं छुरविन वसूचीभिर्नानि ४८ अदिनेत्रमिनाभिस्तु कुर्याद्गुरुपवित्रकं ताव
नीभिः कृशानोस्तं वडुविंशत्या न दान्मनः ४९ नत्रग्रंथी न पयाशो भं दत्वा संरंजयेदपि तानि पात्रां नरेत्यस्य कुर्याद्गंधपवित्रकं
वि ४५ अष्टिः षोडश ४७ अदिनेत्रमिनाभिः सप्तविंशति संस्थापित्वाभिर्न वसूचीभिर्गुरुपावित्रं तावतीभिस्ताभिः सप्तविंशत्येन न शुचैरेनेत्रेभ्य

नैः २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

चर्मणावगुंरनंअस्त्रेणरस्रएचकुर्यान् २५ हेराकालवृत्तार्थवर्षपूजासांगत्तापदमनार्चकारिष्यदतिसंकल्पः २६ पवित्रविधिमाह पवित्रैर्वै ३०
 देवेषुष्यांजलित्वादंडवनप्रणिपत्यचं दमनेवर्मणस्त्रेणविदध्याहैवगुंवनं २७ रस्रएचंकमार्दतद्विवासनमीरितं नीनो
 जागरणंकुर्यान्देवंगमनस्तुवनजपन् २८ सर्वाधिवसनैर्चापिकुर्यान्ननृजागर्दः प्रातःस्नानादिनिर्वर्मकृत्वा निन्यार्चनोव
 भोः २९ संकल्पदमनार्चायाविदध्यादेवगात्रमा गृहीत्वादमनस्यायहस्नाभ्यामंजरींभुभां ३० ह्रींमिमंनवयस्मंजीतनः श्लोकमि
 मंपठेत् ॐसर्वरत्नमयीदिव्यांसर्वगंधमयीभुभां ३१ गृहाणमंजरींदेवनमस्तेनृकृपानिधे मूलमंत्रेणघंटादिचोषेदेवस्यप्रस
 के ३२ समर्प्यतांननःकुर्यान्माल्यदमननिर्मितां ह्रींमिमंन्यचानेनश्लोकेनाप्यभिमंत्रयेत् ३३ ॐसर्वरत्नमयींनाथंदाभिनींवन
 मालिकां गृहाणदेवपूजार्थंसर्वगंधमयींविभां ३४ मूलमंत्रंजपन्देवमुक्तेनांसमर्पयेत् दधनेनेष्टदेवस्यपरिचास्तुसमन्त्रेभ्यः ३५
 ॥ नोनैवेधनांवल्लेदत्कमत्वाचदंडवनं दमनार्चकानांनमैश्लोकेनविनिवेदयेत् ३६ देवदेवजगन्नाथवांछितार्थप्रदायक कृत्स्नान्प्र
 दसेनाथकामान्कामेभ्योऽपि ३७ जस्त्रामूलमंत्रंवाह्निंहुत्वादेवांसि सज्जच गुरुंनत्वादमनकैर्यजंतोषयेदृत्नैः ३८ विप्रान्संभो
 ॥ १॥ ॐजीतस्वदेवायनिवेदितं ॥ चंकेते कृतार्थः स्याद्वर्चा फलभागनरः ३९ कथितं दमनार्चैवापवित्रयजनंनुवे पवित्रयजनीदातुं प्र

मं-दी-नौ
न-२३
२५४

नायद्याभ्यां प्रणवादि काभ्यां कामरानिमंत्राभ्यामुक्ताभ्यां न त्रमंडलमध्यस्थ रमनेनौ रानिकाभौ १५ कामानाह कामरानि १६ प्रणवेति उंक्ती काभायन
रक्तवर्णेन न द्वास्वे विदध्याच्च न रत्निकं एवं विरचिते रम्ये मंडले सार्वकामिके १३ यदि वा सर्वतोभेदं मुंचेद्दमनभाजनं सायंकालीन
पूजां नैक्यार्थं न स्यादिति वासनं १४ त्राय. द्याभ्यां कामरानिमंत्राभ्यां न त्रितो यजेत् रत्नेष्वष्टसुराणाद्यानष्टो कामानष्टयार्धनैः १५ कामोभ
स्मं शरीरं ध्वजं तोनं गंधं मन्त्रयः वसनं सत्संस्तं च स्मरं द्रुधुं नु धरं १६ पुष्पवाणं रमे कामाक्षानयजेन्नामभिर्निजैः प्रणवानां
दीजाद्यैश्चतुर्थैर्हृदयां न्वितैः १७ कर्पूरेण चनां यं कनामिनां गुरुं कुंभैः धात्रीफलैश्चंदनेन पुष्पैः कामान्कमाद्यजेत् १८ रमनं गंधपुष्पा
द्यैरपि पूज्याभिमंत्रयेत् अष्टोत्तरशतं कामगायत्र्या मंत्रं त्रिविधमः १९ कामदेवाय वर्णं तो विद्महे परमेश्वरे नं पुष्पवाणाय च परं धीमहि नित
नो वदेत् २० न नो मंत्राः प्रचो वर्णं दद्यादिति मनो भवः गायत्र्ये वा तु धैरुक्ता जस्वा जनविमोहिनी २१ हृदा पुष्पां जलं हित्वा मनो नैर्न
नमन् नमो मुखपुष्पवाणा यजगदानन्दकारिणे २२ मन्मथा यजगन्नेत्रे रानि प्रदायिने ततो निमंत्रयेद्देवमनेन मनो न्यसुधीः २३
आमंत्रितो सिद्धे श्रयातः काले मया प्रभो कर्तव्यं नृपयात्ना मं पूर्णं वर्तवा त्रयां २४ ८ मर्यादि १७ पूजा दद्यात् कर्पूरे निष्कुंभेना
भिजाता कसूरी कर्पूरेण कामपूजरोचनयामस्मरशिरपूजा कसूर्योन्नंगस्येतादिक्रमः २८ कामगायत्रीमाह कामदेवायेति २९ जनविमोहिनी नृपयामा

॥ २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥

॥ इति मंत्रमहोदधि नैकाया देवार्चनिरूपणं द्वाविंशत्तरंगः २२॥ यवित्ररमनार्चनं वक्रमुपक्रमते वदस्य इति १ पूर्वहि पूर्वदिने ४ कयार्पणम् पूर्वदिने
॥ इति मंत्रमहोदधौ पूजा कथनं नाम द्वाविंशत्तरंगः २२॥ वदस्येद्यो सर्वदेवानां पवित्ररमनार्पणं पवित्रैः श्रावणैः पूर्वोच्चैः चैत्ररमनकैरपि
१ प्रमदं विधिवन्तु र्णान्तवर्षा र्क्षा फलसिद्धये चैत्रे शुक्लचतुर्दश्यां दमनैः पूजयेद्दरं २ नारस्य एतु द्वादश्यां मधुभ्यां गिरिन्देर्वीं समभ्यां भा
स्करं देवचतुर्थ्यां गणनायकं ३ एवं तत्र तिथौ तंतं पवित्रैः श्रावणैः चैत्रे पूर्वहिन्दमनार्चयार्ः कृत्वा निर्याचनं विभिर्भोः ४ मत्वादमनका
एव गृहीयार्तं कयार्पणत् उपविश्य शुचौ देशे मनुर्नानेन चार्पयेत्तु ५ श्रुणो कयूनमस्तुभ्यं कामस्त्वौ श्रो कनाश्रनं यो कर्तिहरं मे नि
यमानं दं जनयस्व मे ६ इति संश्राप्य तर्चा चैत्रदिनकार्तौ स्वमंत्रतः कामदेवाय कामादिहृदगोष्ठाक्षरो मनुः ७ कामस्य मायामयै हृदयं
चाण्डि सुरतेर्मेतुः दृष्टदेवस्य पूजा र्थे नेष्यामि न्नामिति व्रुवन् ८ उन्माद्यपंचगव्येनाभिषिञ्च्य स्वास्तये जलैः गंधादिभिर्हृदाभ्यर्च्य च्छाद
येमीत वाससा ९ निधाय वंशपात्रे तं गीत वदन् इत्यनेः स्वनेः गृहमानीय तं देशे राण्यापयेद्देवद्वयं स्मरन् १० नगो देवस्य पुरतः कृत्वा पुदल
मं व्रुजं शितकं छरन् पीतवर्णैः संपूरयेत्तु ११ भूषणं ददहिः कृत्वा पीतवर्णेन पूरयेत् सिम्बरं कृषीव वर्णेन ददहिर्वर्तित्वयम् १२ ॥
कीं कामदेवाय नम इति काममनुः शारत्तैनम इति रतेः ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४

पंचमप्रकरणे पूजामाह साधनामाविनीति साधनानां पूजोपकरणामभावोपस्थांसा साधनाभाविनी त्रयोपस्थाः सानत्कृता त्रयोधनाभियं देवो धी धी भ
 दशभिः पंचभिर्वापि पूजयेदुपचारकैः अथ क्रतुः कारयेत् पूजां दद्यात् चर्चनसाधनं १६० दानाग्रक्रतुः समर्चनं पश्येत् नगरमानसः साधनाभाविनी १६१
 त्रयोधो धी धी सृजति क्रतुं यथा १६२ आतुरो यं च धो क्रतुं सौ पूजा सा कीर्त्यति क्रमानं पूजा सा धनवत्तु नमभावात्मन सैव सा १६३ पूजां भगवाञ्जुहे
 न सा धनाभाविनी तु सा त्रसर्गः संपूजयेद्देवं यथास्तथोपचारकैः १६० मानसैर्वापि सं त्रयोधो संपूर्णसिद्धिदां बालाहदां त्रिविधो भूर्वाहुर्वो धा
 तत्तत्कृता तु यथा १६१ यथाज्ञानं पण्डितसौ दौर्वो धो कीर्तिना तु धैः सून कीर्तुनरः सात्वा सं ध्यां च मानसो चरेत् १६२ मानसैर्वाचं नैष क्वासीद्वैष्णवः
 सर्वमाचरेत् सौ तत्कुक्कुरातुराणे गान्ना स्नायान् च पूजयेत् १६३ विलोक्य भूर्नि देव स्मयादि वासू र्यं मंजुलं सुकृन्मूलमनुं जप्त्वा तत्र शुष्कं विनि
 स्थितं १६४ ततो योगे गते स्नात्वा पूजयेत्वा गुरुर्ब्रह्मजान पूज्या विद्धे दशेष्टो मेमांस्त्विति प्रार्थयेत् तज्जान १६५ नेभ्यश्चाग्निषमादाय देवे शंषुर्ववध
 जेत् आतुरो कीर्तिना पूजाः पंचैवं नारदो दिनाः १६६ स्वयं संपाद्य सर्वोणि श्रद्धया साधना नियः पूजयेत् नमरो देवं सत्त्वमेतादित्स्त्वं १६७ प
 जनेन फलार्हं स्पर्शं दम्यदं नैस्तु साधनैः तस्मान् स्वयं समानीय साधनान् चर्चनं चरेत् १६८ देव पूजा विहीनो यः स नरो नरके पचेत् यथा केषुं ए
 सून के सौ तन की आतुरस्ये यमातुरो १६९ क्रमात्तद्वत्त एमाह पूजयेति १६८ त्रयोधो माह त्रसर्ग इति दौर्वो धी माह वात्स इति सौ तन की माह सून केति १७० त्रयोधो

ब्रह्मार्पणमन्त्रमाह रत्नरत्नि १५६ वक्रः शः मेघोऽन्तान्वितः त आ पुनः श्रापयाजो रत्नः पूर्वप्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तवस्थासुषुप्तनसा
 वाचाहलाभ्यां पद्मागदरेण श्रापस्मृतं पदुक्तं पक्तुं न त सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु साहामां मदीयं च सकलं हरये नैसमर्पयेजो न त्सदिनि १५८ संहारमुद्ग्रेक्तुं हरये र
 रत्नः पूर्वप्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तवस्थासुषुप्तनसां च देनं १५९ वाचाहलाभ्यां पद्मागदरेण शिर्वक्तुः सतः मेघेन
 गान्त्वितो यत्स्मृतं पदुक्तं च यत्कृतम् १५७ तत्सर्वं प्रोच्य ब्रह्मार्पणं भवत्विति वत्सभा मां मदीयं च सकलं हरये नैसमर्पये १५८ तां स्तस्मदिनि यो
 नो ब्रह्मार्पणमनुवृधैः प्राणवादिर्ह्यशीमल्लेदेव नाम समर्पणे १५८ संहारमुदयादेव संहरेत्तत्तदये निजे अन्यस्मिन् देवते कार्यं ऊह
 हरिपदे वृधैः १६० एवं स पूज्य देवे श्वं ब्रह्मयज्ञं समाचरेत् योगक्षेमं ततः कृत्वा मध्याह्ने स्नानमाचरेत् १६१ स्नानं च पूर्वाह्णं संध्या नर्पण
 मप्यग्नं संपूज्य पूर्ववदेवैश्वदेवादिकं चरेत् १६२ देवप्रसादं भुंजीत संभोज्य ब्राह्मणेन मान् आचम्य देवं संस्मर्य पूषाणं श्रुत्या सुधीः १६३
 आहोमं च निर्वृत्य देवं संपूज्य पूर्ववत् शयीत शुद्धशय्यायां भुक्त्वा त्पदेवनां स्मरन् १६४ एवं यः पूजयेद्देवं त्रिकालं धर्ममाचरन् न जानु वैरि
 दुःखैः पीड्यते हरि रक्षितः १६५ त्रिकालं पूजनाय कैंः कार्यं हिः सकृदप्यर्थाविशेषेण यजेद्देवं स क्रान्तिश्चिपर्वसु १६६ ॥ ज्वरार्शणाय गोर्षे रत्या
 स्तयस्ते वेदाध्ययनं अलक्ष्यत्वा भोगाः लक्ष्यपथि पालनं क्षेमः १६१ गात्रं स्नानं पूर्वोक्तं प्रथमतः रोगकं १६२ अरुः पूजनं १६५ दशभिस्त्वचरैरावाहना स
 र्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तां वस्थासु मनसा वाचाहलाभ्यां पद्मागदरेण शिर्वक्तुं सतः पदुक्तं यत्कृतम् तत्सर्वं प्रोच्य ब्रह्मार्पणं भवत्विति वत्सभा मां मदीयं च सकलं हरये नैसमर्पये
 ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥

मंशीकोऽपार्धश्लोकचतुष्टयं शिवोक्तं १४४ तदेवाह बुद्धिरिति १४५ मंत्रेण गुत्थानि गुत्थेभ्यादिनामंजयं देवदक्षकरेर्धजलेनार्पयेत् १५१ प्रदक्षिणा
 नम्र १५२

शक्तेरुच्छिष्टांजालीस्मृता उच्छिष्टभोजिनः ततोत्सवणमुत्तार्य कुर्यादांशत्रिकं सुधीः १४४ अथो निवेद्यं तावत्तुलं दर्शयेत् स्त्र
 चामरे यत्र देवमनाभूत् साहस्योक्तचतुष्टयं १४५ बुद्धिः सत्त्वासनाक्तसादर्येण मंगलाविव मनोवृत्तिविविचनेन न्यरूपेण क
 स्थिता १४६ ध्वनयो गीतरूपेण साक्षात्तं प्रभेदतः स्त्रजालिनवयव्यानि कस्थितानि मया प्रभो १४७ सुषुम्ना ध्वनरूपेण प्राणा
 द्या चामरा मनाः अहंकारो गजत्वेनेवेगः क्लृप्तो रथात्मना १४८ रं द्विषाण्य ध्वरूपाणि साक्षादीरयववर्त्मना मनः प्रमहत् रूपेण बुद्धिः
 सारथिरस्य नः १४९ सर्वमन्यतया क्लृप्तं न चोपकारेणान्मना श्लोकोनेनान्परित्वा तु मूलमंत्रमनन्यधीः १५० यथा शक्तिरपि त्वा
 तं मंत्रेण विनिवेदयेत् स्थिपन्नवर्षस्य पानीयं देवतादक्षितेकरे १५१ गुत्थानि गुत्थगे सात्त्वंगहाणस्मन कृतं जयं सिद्धिर्भवतु मे देव
 त्वमप्रदानं त्वविस्थितिः १५२ कीर्त्तिनस्यैक रूपाय मंत्रो जपनिवेदने दत्त्वा पराङ्मुखं चाव्ययैः शंस्य प्रपूजयेत् १५३ दंडवनप्रविप
 ने शं देवकुप्या न प्रदक्षिणाः अजे श शक्तिगणमास्त्याणं क्रमादिमाः १५४ वेदार्द्धचंद्रवत्त्यादिसंख्याः स्युः सर्वसिद्धये सुता वंक्षा
 र्पणास्त्वेन मनोनामानमर्पयेत् १५५ ॥ संख्यामाह अजेति अजे विष्णो वेदाश्च न सः प्रदक्षिणादंशेर्दंशं तावेकागले प्रस्थानि सः वेदे सं १५६

नेपथावसेनाद्यैः परितन्त्ररुभिः सृष्टाविहैः समेनैलक्षणाभिजद्वल्यपकरासादरं कीज्यमानः नर्मस्वेत्थिग्रहसनमुद्वैक्यामुवच्यंति मधुमुं नोपतिः कनक
 धटिनेषु संश्रीरेणः शालीभक्तं सुभक्तं शिष्टं करशितं पायसाशुषसृपं लंख्येयं चोष्णं गिगममूनकलं द्वादिक्कसुखायं आज्ञाभाज्यं सभोज्यं
 पक्कं शालीभक्तं मिनिमूलमनेचसमथा १३५ प्रतिसीएमपाकन्यदद्यान् श्लोकं पठन् जलं समसदेवदेव शसर्वगुहिकरं परं १३६ अ
 र्वं ज्ञानंदं संपूर्णं गृहाण जलमुं नमं स्थंडिले निमुपाधापयैश्वदेव किंपांचरेत् १३७ मूले नवी सृष्ट्वा स्त्रेण कन्यासो एनादने कुशै
 कद्वर्मणा भुष्ट्य पूर्ववत्स्थापयेत् शुचिं १३८ नमने एतमभ्यर्च्य हृदये ननेषु देवतां पूजयेद्गंधपुष्पैस्तोभहा व्याहृतिमिसक्तः र
 हुत्वा व्यक्तममका मिष्टां हुतीनां चतुष्टयं अन्ते मूले नजुहयानं च विंशति संस्थया १४० पुनर्वाहृतिमिहृत्वा मूर्तिं देवं नि योजये
 न् वन्हिं विसृज्य देवापदद्यात् दीचमनोदकं १४१ नेजः संयोज्य देवस्थे निर्गते देववक्तनः नैवेद्यां तदुच्छिष्टं भोजिने विनिवेदयेत्
 १४२ विश्वक्सेनो हेरुक्तं च देश्वर उमापतिः विकर्तनस्य चंडांशुर्वक्तुं उगा एो शितुः १४३ ॥ ८ नयनरुचिकरं एजिकैला मसि चखा
 शाकराजी पारिकरममनाहारजोषजुषस्वेति पद्यद्वयं रमे प्रापदेऽन्यदेवने उहः कार्यः लक्ष्म्येति पद्ये यौर्ध्वापर्वमीशदम्भादि १३५
 सीरांजवनि कां १३६ शुचिं वन्हिं पूर्ववत्प्रथमतः गोक्तं विधिना १३७ नमने एवैश्वानरमने एषुर्वोक्तेन १३८ उच्छिष्टं भोजन आह ॥

मं-दीनो- वंवीजं ध्यात्वा तत्पृष्ठे दक्ष हस्तं दत्त्वा नैवेद्यं प्रवृत्त्या मुनवीजो स्यात् मुनस्तु तं स्मृत्वा मूलेन प्रोक्ष्य तत्पृष्ठं पुनरुवाच मूलं प्रजप्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य संपूज्य देवे
 न-२२- पृष्ठं दत्त्वा देव स्पर्धन्न ते नः स्मृत्वा वा मां गुह्यं स्पृष्टुं नैवेद्यं सजलत् दक्ष हस्तेन मूलं श्लोकस्वाहा ते सांभवायेति पठन् नैवेद्यमुद्रां प्रदर्शयेत् अनामामूलं
 विचित्रं च मां गुह्येन स्पृष्टुं नैवेद्यं भाजनं दक्ष हस्तेन जलं दत्त्वा मूलं श्लोकं शिरः पठेत् २२ सत्पन्नसिद्धं सुहविर्विविधानेकमक्षरं पं
 निवेदयामि देवेश सानुगा यगहाण तन् २२ सांगार्यं त्वादिकं प्रोच्य जलमुत्सृज्य भूतले नैवेद्यमुद्रां भगुहा नामिकाभ्यां प्रदर्शयेत् २२
 सपुष्पाभ्यां कर्णभ्यां चिः प्रोह रत्नमक्षभाजनम् निवेदयामि भवते जुषाणे दं हविर्हरे २३ कोडशार्णानि मान प्रोच्य ग्रासमुद्रां प्रदर्श
 येत् चाप्रहस्तेन पंचाभां प्राण्या दक्षिणेन तु २३ कनिष्ठानामिकां गुह्येर्मुद्रा प्राणस्य कीर्तिना तर्जनीमध्यमां गुह्ये रपानस्य तु सप्त
 मां २३ अनामामध्यां गुह्ये रुसानस्य च मुद्रिकां तर्जन्यनामामध्याभिः सांगुहाभिश्चतुर्थिकां २३ सर्वाभिः सासम्यनस्य प्राण्या
 न्देहि दिशश्चितान् तौ रपूर्वजन्तु दः प्राणादीनां प्रदर्शयेत् २४ ततो जवनि को कृत्वा ब्रह्मो ह्यैरिदं पठेत् ॥ ९ ॥ पोरं गुह्यं कोणे निवेद्य

मुद्रा २२ सपुष्पकगार्भां पानमुद्रां निवेदयामि निपठेत् २३ यद्वा भो वा मरुतो ग्रासमुद्रा २३ प्राणादिमुद्रा आह कनिष्ठे नि २३ चतुर्थिकां च च
 मुद्रा २३ सर्वैरुगलिभिः समानमुद्रां हि दं स्वाहा जे प्राणाय स्वाहेत्यादि २४ जवनि कारिस्करिणे नं धत्वा श्लाकी मन्त्रं ब्रह्मो ह्यैरिदं पठेत् २४

बोधेति मध्यमामूलबो रं गुह्यो गोदीपमुद्रादीपदानं नेत्रप्रदेशेन र्गोनां भूषि पक्षे बहुत्वपक्षे विषया स्या ज्या १८० शिववर्तियुत नैलदीपोपि दक्षिणः र
 न्तवर्ति च तदीयोपि वामन रस्य र्थः १८० अन्यच्च ल प्रक्षेपादि १८६ कैर्नलैः चक्रमुद्राणाः वायुबीजेन द्वादशवारं मंत्रि नैर्जलैस्तन्ने वेद्यं प्रो ह्यनः १८१
 वाममध्यमया र्मभ्रैर्मूलश्लोकस्य कीर्तनं जैमुप्रकाशेन महादीपः सर्वनासिमि राय ह्वा १८३ सवस्वाभ्यन्तरं ज्योति दीपो यं प्रतिपत्सतां धूमस्थ
 ने दीपपटं मध्यमां गुह्ययोगतः १८३ दीपमुद्रादर्शनं च न हानं नेत्रदेशतः भूयः पक्षे तु वर्तनां विसमावर्तिका मर्ता १८८ चतुर्दीपकदक्षिणे स्या
 नैलदीपस्तु वामतः शिववर्तियुतो दक्षे वा मां गोरक्तवर्तिका १८६ अत्रान्यद्वयचतस्रे यं नो नैवेद्यमप्येन स्वरुग्दिभाजने सभ्यं पायसं
 शर्करादिकं १८० पवित्रे व्ययया शक्तिं नो ह्मेन कै रस्त्रि मंत्रि नैः चक्रमुद्रा मय्यार च्यप्रो ह्मेन न्मंत्रि नैर्जलैः १८९ वायुबीजेनार्कचारेन न
 साज्जातमां र्तनैः नैवेद्यं दोषसंश्लेषा चिंतये दक्षिणे करे १८२ अग्निबीजेन स्यष्टे वामं करेन लं न्यसेत् नंदर्यापि त्वा नैवेद्यं तदुभये
 न मिनादित्वं १८३ नैवेद्यं दोषसंश्लेषा चिंतये दक्षिणे करे १८२ अग्निबीजेन स्यष्टे वामं करेन लं न्यसेत् नंदर्यापि त्वा नैवेद्यं तदुभये
 ॥ १८४ ॥ प्रो ह्यमूलं न न स्यष्टाष्टशो मूलमनुं जपेत् २५ दश्यापि त्वा येन मुद्रां गंधयुष्मैस्तद्वयेन द्वेयुष्मां जलितं दत्त्वा तेनैवेद्यमुखा
 ॥ स्थभारतैर्नैवेद्यं दोषसंश्लेषा दक्षिणे करे रं बीजं विचिंतये दक्षकरेष्टे वामकरं दत्त्वा नैवेद्यं प्रदश्यान्मि बीजो स्यान्नना दोषं दग्धा चामकरे

मंटीने^१ वं वरुणा प्रजलाधिपतये यं वायवे प्राणाधिपतये संतो मायनस आधिपतये हं ईशानाय भूताधिपतये ह्रीं अवंक्षाय नगाधिपतये इति प्रमे
न २२
१५ सुष्माय सीपुषो देवता १० धूपमाह धूपयन्ति पुष्टे शुभमुत्तुः आदिशब्दान् ध्वनकपूर्वशर्कः १८ अन्नावगुर्वादिप्रक्षिप्य फडि
१५

पार्कदान् पूर्वममुकस्थाने स्थानसिद्धे देवता ५ बीजानि पूर्वमुज्जानि चाह नाना युधाना पिपातु तोयपयोर्मध्ये नंतं पूर्वप्रयो सुकम् १६
प्रमाह निक्षिपे हे वृष्यं मंत्रो मंत्रं जपन्त्रं अंभीष्टसिद्धिमे देहि शरणमात वनसल १० भक्ता समर्पयेतु भयमिदं प्राकरणा चर्वन् आह्वाना युष
चारैः प्रनेकं वृषयाय सी १०८ दत्ता प्रस्थास्य चैकरमुपचारं तं चरेत् धूपयान्त्विनां गारे स्थित्वा गुरुगदिकं १६ पात्रमस्त्रिणसं प्रो
ह्य हृदा युष्यं समर्पयेत् संस्पृशन्त्वा मनर्ज्या मूलं श्लोकं च संपठेत् १० अं वनस्पतिरसो यत्किं च यः सुमनो हरः आदि यः सर्वदेवानां
धूपो यं प्रतिगृह्णाम १०१ सां पायस्य शीतं तैर्वा शयडै न देवैर्वा धूपं समर्पयामीति नमो तं मंत्रं गुरुत्वा ११२ संस्तुं प्रक्षिपेद्दुमौ धूपमुद्रा
प्रदशयेत् नर्जन्त्युष्टयोगेन वं दामर्च्यं तस्वमंत्रान् ११३ जम्ब्वनि मंत्रमान स्वाहा नैः सदश्रास हं वा दयन्त्वा महस्तेन क्क्षीर्तयेत् देव
नाग एतान् ११४ धूपमेह स हस्तेन देवताभिर्देवान् जलं पुष्पं जलं दद्यान् हीयदानमपीदृशं ११५ ११ निमोक्षय नम इति पुष्पं संपर्पयन्
मनर्ज्या संस्पृश्य मूलं श्लोकाने सा माय सयारवा एण माय धूपसमर्पयामीति शंखोदकं क्षिपेत् नर्जनी मूलं चोरंगुष्टयोगे धूपमुद्राः ११२ वं दामंत्रः देव
शं दीपदानमपि प्रोक्ष्य प्रयोगश्च न हन् विशेषमाह धूपयेदिति ११५ ॥

नैधिवतये जं ह्रीं अनंताय पन्नमिधिवतये ॥ ओं आं व्रुल्ले लोकाधिप-
इत्यादि ॥

प्रज्ञौर्वाद्योनिषिद्धः महाह्यस्यास्तु दूर्वाप्रशक्तामात्रं विवृतगारं धनगारं नगरं दानिका न्यकुञ्जभाषायां जातिकदाचिदपि ८८ निषिधान्याद
निर्गधमिति ८९ ननु सस्पष्टं शरीरलभं स्वविकासितं वल्गुतात्मना विकारितं ययुधितं दिनां न एनीनं सुमं ययुधं चंपककमलयोः कालिकाजुपि प्र
प्रज्ञौर्वाकर्मसंसारान्मात्रं नगरं दौ विनायकेन तुलसीनां पर्येज्जातु चिदुधः ८८ येन पीतहरिष्ठं रक्तं राविगणेशयोः निर्गधकोरा
कीटादिदधितं चोगांधकं ८९ मलिनं तुलसं स्पष्टमाघ्रातं स्वविकासितं अशुद्धभाजनातीतं स्तान्त्वानीतं चयाचितं ९० मुक्तं पयुषितं
कृष्णं भूमिगं नार्पयेत्सुमं चंपकं कमलं त्यक्त्वा कलिकामपि वर्जयेत् ९१ कुरं कं कांचनारं वर्जयेद्दहनीयं पुष्पं पत्रं फलं हेनेन प्रदद्याद
द्योमुसं ९२ पुष्पां जलौ न तद्दोषस्तथाप्युषितं सपत्रं तुलसीचकुलो वृक्षश्चंपकश्चमरोजिनी ९३ विनक्तस्तर्दमना सव्यामरुतकः कुरः
दूर्वादि वह्न्या मामासं विष्णु क्कंता मुनिदुमाः ९४ धात्रीयुक्तानामेतेषां पत्रैः कुर्यात्सुगार्चनं जंबूदादिमज्जीरैरिति जीवीजं पूरकः ९५
रं भाधानी च वटशेरसालभ्यनसोपि च एषां फलैर्मज्जेद्वं तुलसी नृहरेः श्रिया ९६ सुवर्णपुष्पं तुलसी नैव निर्मोत्पन्नां ज्ञेयं पुष्पपूजां
विधायेत्यंकुर्वादा वरणार्चनं ९७ ॥ ९८ स्ताः ९९ पुष्पपत्रफलान्यधोमुस्ता निनार्धयेद्यथोत्पन्नं तथैवाप्येदित्यर्थः ९२ पुष्पां जलौ ज्यधोमुसं
पर्युषितयेन दोषः ९३ अहि वह्नीना गवह्नी मुनिदुमोऽप्यस्यः ९४ धात्री आमलकी तुलस्यादीनां पत्रैरपि पूजा जंकादीनां फलैः ९५ रसालात्मजः ९६

पूर्ववत्प्रलभ्यो कोपठनगंधंअर्पयेत् ८२ अंगुष्ठो कनिष्ठप्रलसनी गंधमुद्राः ८३ तर्ज्या वंगुष्ठप्रलसयेष्वप्युद्राया ध्यायमाह अस्य नाविमार्दिना
 गंधमुक्तो र्दकैरीशमभिषिं चैव नुंस्मरन् यत्नमूलं ततः श्लोकं दद्याद्दत्त्वि नरीयकं ७५ माया चित्रपटच्च न निजगुल्योस्तेजसे निवार
 णविज्ञानवासस्तेकस्य याप्यहं ७८ यमं श्रित्यर्महा माया जगत्संमोहिनी सदा तस्मैति परमेशाय कल्पयाप्यु नरीयकं ७७ पीनं विद्वोस्ति
 तं शंभौ रक्तां विद्या र्कशक्तिषु स छिद्रं मलिनं जीर्णं तपजैस्त्रिदिवितं ७८ उपवीतं भूषण निप्रयच्छेद्दुर्भयं यत्नं यस्य शक्तित्रयेणैदं
 संघोतमखिलं जगत् ७९ यत्प्रसूयाय तस्मै ते यत्प्रसूत्रं प्रकल्पयेत् स्वभावसुंदरां गायना नाशक्या श्रयायने ८० भूषणानि विचित्राणि क
 ल्पयार्थमशार्चनं मूलसंज्ञेण पुंस्तिनमेकैकं मातृकाक्षरं ८१ विष्यसे हि वक्रांगेषु योगोयं लोकमोहन् कनिष्ठया यात्रा संस्थं पूर्ववत्त गंधम
 र्पयेत् ८२ परमानंदसौ भाग्यपरिपूर्णा दिगंतरं गृहाण परमं गंधं क्वयथा परमेश्वर ८३ ततः कनिष्ठां गुह्याभां गंधमुद्रां प्रदर्शयेत् मू
 लं श्लोकं परल्लाना पुष्पाणि विनिवेदयेत् ८४ तुरीयवनसंभूतं नागगुणमनोहरं अमंदसौरभं पुष्पगन्धमपि दत्तुं नमं ८५ तर्कस्य गु
 ष्ठयोगेन पुष्पमुद्रां प्रदर्शयेत् अस्य ज्ञानं कथं नृणां विस्मिन् नैवाप्येत्सुधीः ८६ वैधूक केन कीकुटके सरंकुटजं जयां शंकरे नार्पये
 यन्मानं नंदलाशेन निलकोपवर्धयेत् तेन दोषः ८६ ८७ ॥

॥ द्विह्नमालतीयायिका मपि ८७

आचमनीयद्रव्याण्यह लवंगेति कंकोलं सुगंधद्रव्यं मरिचोपमः ६२ ६३ शिरोमन्त्रः स्वाहा ६४ सुधामन्त्रो वं ६७ स्नानवस्त्रोपवीतनैवेद्येषु दनेष्वा
 तस्मै ते चरणक्ष्मापपादं शुद्धकल्पयेत्सर्वं गजानिकं कोलं प्रक्षिप्य चमनीयके ६२ दद्यादा च मनं वक्त्रे मूलश्लोकसु धास्यैः वेदानामपि
 वेद्यायेदवानां देवनात्मने ६३ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां बुद्धिहेतवे अर्घ्यपात्रे क्षिपेत्तद्वा निलदर्भाय सर्वपात्रान् ६४ पञ्चपुष्पा
 क्षमान् गंधेनार्घ्यं सूक्ष्मं मारेत् मूलश्लोकस्थिते मन्त्रे देवस्य मनोविगमः ६५ नापञ्चपुष्पद्रव्यं परमानंदस्य साणम् नापञ्चपाविभिर्मु
 र्त्तं नार्घ्यं कल्पयाम्यहं ६६ पात्रे तु मधुपर्कस्य दध्ना जपमधु च क्षिपेत् मूलश्लोकशुधामन्त्रैर्देवानां वदने प्रभोः ६७ सर्वकाबुध्यहीना
 यपरिपूर्णसुखात्मने मधुपर्कमिदं देवकल्पयामि प्रसीद मे ६८ पुनरा च मनंदद्यान्मूर्त्तं श्लोकांतरं पठन् उच्छिष्टेष्वप्यशुचिर्वापि यस्य स
 रणमात्रकः ६९ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनरा चमनीयकमस्नानवस्त्रोपवीताने नैवेद्यांते पितृत्सु ७० यथादिद्रव्याभावे तु तत्संस्तु स
 तान् क्षिपेत् गंधतैलं तपो दद्यात् मूलश्लोकं पठन् सुधीः ७१ उँस्मिहं गृहाण स्मिहे न लो क नायमहाशय सर्वलोकेषु शुद्धात्मनः सदा
 मिसेहसु नमः ७२ हरिश्चाक्षमुदर्यस्तापयेदुभयं पठन् परमानंदवोधाधिनिमग्ननिजमूर्तेये ७३ सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पया
 म्यहमीश ते जनः सहस्रं शंखेन शानं चाशक्तिगोविन्दा ७४ ॥

॥ चमनीयं दद्यात् ७० उभयं मूलश्लोकौ ८९ ॥

स्वमुद्रया संनिधानमुद्रया उज्जानांगुष्ठौ मुष्टीसंनिधीनमुद्रा स्वमुद्रयासंनिधेय्यासोक्ता ५० मुद्रयासंमुखीकरण्या उज्जानौ मुष्टीसंमुखीकरणी ५१ द
 ५२ मूलं तथा श्लोकं संनिरुध्यात् स्वमुद्रया आत्मानवदेवशक्यां भोधे गुणं बुधे ५३ आत्मानं हे कनसत्त्वां निरुणध्मिपिनगुणे मु
 द्रयासंमुखीकर्यात् मूलं श्लोकं च संपठन् ५४ अज्ञानादुर्मनस्वादावैकल्यात्साधनस्य च यदपूर्णे भवेत् कृत्यं न दद्यात् मिमुरवो भव ५५
 कर्त्तुं मूलश्लोकं भाग्यं प्रार्थन्या मुद्रया र्धेन दद्यात् पीयूषवर्षेण प्रयत्नयज्ञविष्टरं ५६ मूर्त्तावापयज्ञसंपूर्त्तं स्थितो भव महेश्वरं न्यसेत् षडंगं
 देवांगे सकलीकारणं बुधैः ५७ मूलश्लोकं पठन् कुर्यात् देवगुणं स्वमुद्रया अभक्तवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रिदृशयिनद्युते ५८ स्वनेजः पंज
 रेणाश्रुवेष्टितो भव सर्वतः गोमुद्रया मृगीकन्या विदध्या न्यरमो कर्त्तुं ५९ महामुद्रां विरचय सततः स्वागतमाचरेत् मूलसंनं तथा
 श्लोकं पठन् तद्गतमानसः ५० यस्य दर्शने सिद्धिर्निदेवास्त्राभीष्टा सिद्ध्ये न सैते परमे शाय स्वागतं स्वागतं च मे ५१ नतः सुखाभानं
 कुर्यात् मूलश्लोकौ समुच्चरन् कर्त्ता र्थो नृगृहीतोऽस्मि स कलञ्जीवितं भव ५२ आगतो देवदेवे प्रमुखा गतमिदं धुनः ५३ ^{माया} प्रमा कं
 विद्युक्ता गोहृद्द्वारोऽपाधजस्ते स्थितेन ६० मूलश्लोकं नमो मंत्रैः पाद्यपादां बुजेर्पयेत् पद्मं क्लिष्टशसंपर्कान् परमानंदविग्रहं ६१ ॥
 लिनिबंधनं प्रार्थनीमुद्रा स्वमुद्रया च गुंठन्या सोक्ता ५५ गोमुद्रोक्ता ५६ महामुद्रायुक्ता ५७ पादाद्व्यारायाह प्रयासो केति ६० ६१ ॥

कांडानुसमयेनेति कांडानुसमयः पदार्थानुसमपञ्चेति द्वौ प्रकारद्वयम् एकस्पृजाकोण्डं समीप्यापगार्चनं काण्डानुसमयः प्रतिपदार्थसर्वेषां पूजापदा
र्थाऽनुसमयः गतोऽत्र काण्डानुसमयस्ततोऽत्र कांडानुसमयेन पूजा आवाहनमुद्रया आवाहनं अनामामूलसंलग्नां गुह्याग्रं जलशिरीशो देवाह्वानकरीदे
यं चायतनपक्षे तु मध्ये विस्तुं समर्चयेत् अनिनिर्कृतिवायव्ये शाने शुगलनायकं ३८ शिवं शिवां शिवं मध्यगले शश्वेन शिवं शिवो
शिवं विष्टुं रौमव्ये विद्याजनगजे श्वरान् ४० भवान्यामध्यसंस्थाप्यामीरा विद्यार्कमाधवान् हरे मध्यगते सूर्यगले यशिरिजाच्युतान्
४१ संपूज्यादौ मध्यगते गणेशादितो यजेत् गणेशो मध्यसंस्थे नृपुत्रपुद्गास्क रादितः ४२ कांडानुसमये नृपुत्रपूजा योक्तो मनोविभिः
विधायैवाहनं चेत्स्थमावाहन्यानुमुद्रया ४३ संस्थापिन्यास्थापयन्तमूलानि श्लोकमुच्चरन् तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यात्वांसर्वगं प्रभो ४४
भक्तिरहितसमाहृदीयवनस्थापयाम्यहं ३८ः कार्यो भवान्यादौ श्लोकैश्चावाहनादिषु ४५ मूलश्लोकौ परन्तु कर्प्यादीं सनंचोपवेशनं
सर्वानर्यामिने देव सर्वबीजमयं शुभं ४६ स्वात्मस्थापय परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहं अस्मिन् च रासने देव सुखासीनो ह्यरात्मक ४७॥
प्रतिष्ठितो भवेत् शालं प्रसीद परमेभ्यः मूलं श्लोकं नतः कर्प्या न संनिधानं स्वमुद्रया ४८॥ अनन्या न वेद देव शमूर्ति शक्तिरियं प्रभो सा त्विध्यं
कुरु न स्यात्वं भक्तानुग्रह न त्परं ४९॥ ॥ कामुद्रया हन संस्रकेति आवाहनमुद्रया मुखी संस्थापनी ४५ आत्मसंस्था मज्जां शुद्धा मित्या दूरः ४६॥

मंडूकादयः परन्तानाः पीठे वा उक्ताः २८ कीनाशो यमः न आदिका अधर्मदयः २९ शक्रादिषु यथा स्वकं प्रसिद्धे वाची पीठश्चैव न्यभ्या न माह येनेति ।
इहिले च गले शानं पीठपूजा मर्था चरेत् स्वर्णोदिति भित्तिपत्रे यद्वा चंदननिमित्ते ३० मंडूकान् परन्तानां तं हि ज्ञेयं पीठशक्तयः पुथिव्यनं
नरं पूज्यः क्षीराब्धिर्मधवेभ्यो ३१ इह सिंघुर्गले रसादित्यन्तं मृतमागहं अनिरास्य स चाभीशकोले धर्मादयः स्मृताः ३२ इंदूकीना
शक्तिरुल्लोमाशंसु न जादिकाः धर्मादिपूजने प्राचीतवैवाचरणार्चने ३३ पूजकस्य पुरः कस्या प्राक्कादिषु यथा स्वकं श्वेताक्तं स्मारणपी
ना यथा मारुक्ता सिनासिता ३४ रक्तां च राभयधराभ्यः स्युः पीठशक्तयः शालग्रामे मल्ले पत्रे नित्यपूजां समाचरेत् ३५ हेमादिश्रोणिमायां
वभस्यापि नायां यथाविधि अंगुष्ठादिवितस्पर्शे मानसा प्रणिमायुहे ३६ पूजान्तरा धाभिन्ना चानोद्धावोदकनवक्त्रिका लिंगं चालस्य ज्ञो
ते वात्राहनमाचरेत् ३७ मूलमुच्चार्य दद्यात् सुषुम्ना च र्मना सह हारेण वस्त्रं धर्म्पनासारं धौचि निर्गमं ३८ पुष्पांजलौ मानुक्त्रे
विन्वा विनिक्षिपेत् मूर्तोऽप्यंजलिं चैतदावाहनमुदीरितं ३९ शालग्रामे स्थिरायां वा नावाहनविसर्जने आह्वानाद्युपचारेषु
गान्धं भूदिगान्पठेत् ३९ आत्मसंस्थं र्मेजं भुङ्क्ता महर्षे चर आरण्या निवहव्यां प्रभूर्नो वाचा हयाप्यहं ३८ ॥
इत्यादिनायां विधिना प्रणिष्ठितायां ऊर्ध्वदेक अधोदेकवक्त्रानपूज्या ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ पंचायतनपूजा माह पंचेति ३९ ॥

कंशुत्यग्राणि वक्त्री कृत्यसंमुखं योजिना निमालिनीमुद्रा गरुडमुद्रा यथा संमुखौ न करौ कृत्वा ग्रंथयित्वा कनिष्ठिके पुनश्चाधोमुखौ कृत्वा नर्ज
नोपेजये नयोः मध्यमानामिके हेतुगुणा विविचि चत्वेन मुद्रेण पक्षिणस्य सर्वविघ्ननिवारिणीति तेन प्रोक्षणी जलेन निजांगमुखेन सिंचितं मूल
कृत्वा र्धां वक्त्राणि स्थित्यनेनोत्थे^३ निर्जाननं प्रजपन्मूलगायत्रीं पूजावस्तु चयनं यथा १७ पाद्याचमनपात्रैर्बुद्ध्यादिव्यस्य चोत्तरे एवमर्घ्य
विधिः प्रोक्तः सर्वसाधारणो मया १८ विहाय शंकरसूर्यमूर्ध्वशंखः प्रशस्यते हेमरुष्योद्भव एव^{११} गीतिद्वारु मृदुद्रवम् १९ पालाशं प्सं
पत्रं वा स्तुतं पाद्यादिभाजनम् अशक्नोर्वर्धयन्नेषणपाद्यादीनि निवेदयेत् २० अंतर्योगं तनः कुर्यान्मीरुं देहमये सुधीः न्यासस्थानेषु
मंडकमुस्वान्गंधाद्रिभिर्यजेत् २१ वीरुमंजातमंत्रं जाल्दयेस्व षडेवतां कुंडलीमथ चोत्थाप्य द्वादशाने परं नयेत् २२ गदस्यामृत
धारिभिः प्रीणयेत् स्वष्टदेवतां जपं कृत्वा निवेदासेमनसानां विसर्जयेत् २३ मूर्द्धदेव्यादंगुत्थेषु तनौ पुष्पांजलीन् स्थित्यनेन अंतर्पा
त्रे विधायैर्मथवा स्वपूजनमाचरेत् २४ अंतर्योगवहिर्योगौ गहस्थः सर्वथा चरेत् आद्यमेव ब्रह्म चाशीवानप्रस्थो यतिस्तथा २५ स
र्द्धन्याप्रस्थितेनाकिंचिद्देवोदकमनन्यधीः प्राणानायम्य मूलेन वा मेगुरुत्रयं न मेन २६ ॥

॥ गायत्र्यपूजेन प्रकरणानि च उद्धृतं ॥ १४६

नत्रार्ककलादिभ्याद्याः संपूज्यविलोमेमूलमानकेजपन्जलैसंसंपूयजोसोममंडलायषोडशकलात्मनेदेवार्धामतायनम रसपर्वसंपूज्यनवनन्मंत्रं
 लिमुद्रयागोचेत्यादिगोर्धर्मनेलांकुशमुद्रयाः कर्मंडलातीर्थमावात्स्यत्तदेवेवमावाहयेत् अंकुशमुद्रालसालमुक्तं मत्स्यमुद्रोक्ताअंगुष्ठनर्जनी
 स्फोटस्फोटिकामुद्रा वाममुष्टिनिर्गतनर्जनीकंकलाशंखोपरिभमणमवगुठनमुद्रावर्षणहंवीजेनगोमुद्रांवेनुमुद्रांसायथा वामांगुलीनांमध्येषुदक्षि
 णांश्चर्मननुष्टानंतवाच्चैदेदवीः कलाः ॐ सोममंडलाया^{१५}नेषोडशा^{१६}नेकलात्मने^{१७} अमुका^{१८}वर्धामृता^{१९}या^{२०}नित्त^{२१}क्व^{२२}नुश्चा^{२३}र्वपूजयेत् ॥३६॥
 देवतननेष्ट्यानिनत्तंनभृणिमुद्रया १० शविमंडलतः स्वीयत्तदेवमर्ध्याकृपेत् अष्टकत्वोजयन्मंत्रंनष्टृजलमनन्यधीः ११॥
 अप्सुविन्यस्यचांगा^{२४}नित्त^{२५}दासंपूजयेदपः मूलंजयेदष्टशतंछादयकमस्यमुद्रया १२ संरसेदस्त्रमंत्रेणस्फोटिकामुद्रयाजलं मुद्रया
 चावगुठन्यावर्मणा^{२६}त्वंवगुठयेत् १३ अमृतीकन्यगोमुद्रांकुर्वन्मृगवीजनः संरोधिन्यासंनिरुध्यतत्रमुद्राः प्रदर्शयेत् १४ शंखमोष
 तंचक्राख्यापरमीकन्यनसुनः महामुद्रां विरचयन्त्योनिमुद्रां च दर्शयेत् १५ कृष्णमंत्रेणालिनीचरणमेगरुडमुद्रिकां शंखादक्षिणदि
 निर्योज्यनर्जनीदक्षांमध्ययावामयानयादक्षमध्यमयावामानर्जनीचनिर्योजयेत् वामयानायादक्षां कनिष्ठां चनिर्योजयेत् दक्षयाना
 वनिर्योजयेत् त्रिहिताचोमुखीचैवाधेनुमुद्राप्रकीर्तिनि अमृतवीजनः वामिनिवीजेन संरोधिन्यामुद्रया सायथा अंगुष्ठगर्भितैसै
 निति अंगुष्ठगर्भमुष्टिद्वयमित्यर्थः नत्रार्धमुद्राः शंखाद्या १४ शंखमुद्रालचक्रमुद्राउक्तः महामुद्रां कुर्वन्परमीकन्यकरयोरंगुष्ठौ सं

अर्धस्थापनमाह स्वेतिस्वग्रेत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्याष्टिकत्वाशंखमुद्रयाशंभयेन शंखमुद्रालस्यष्टांयथा वामांगुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना
 क्रोत्तेजानं तथा मुष्टिमंगुष्ठं तु प्रसारयेत् वामांगुल्यस्य अष्टिष्ठाः संयुताः सुप्रसारताः दक्षिणांगुष्ठवेत्तनामुद्राशंखस्य भूतिर्देति १ ननः पुष्पास्य नैर्यम्
 दिव्यषडंशानि संपूज्या स्वस्थालिनीमाधारवन्ति मंडलापदशकलात्मने देवा र्व्यपात्रासनायनमद्रस्याधारं त्रिकोणे स्थापयेत् नन्वाग्नेः कलाधूमाचिराद्याः
 २ भवन्ति मंडलापदशकलात्मने अमुका र्व्यपात्रासनायनमः २४॥

स्ववामायेन षट्कोणवृत्तभूपुरवेष्टितम् कत्वा त्रिकोणमूर्ध्वशंभयेन शंखमुद्रया १ पुष्पास्य नैः षडंगानि तत्राग्न्यादिषु पूजयेत् अ
 स्त्रस्थालितमाधारं तत्रादध्यात्मं नुं जपन् २ मंत्रं वह्निमंडलायेति ततो दशकलात्मने अमुका र्व्यतिपात्रां नैः सनायनमद्रस्य वि ३ चतुर्वि
 शतिवर्णैः यमाधारस्थापने मनुः आधारपूर्वकाष्टादिदशार्चत्वावकीः कलाः ४ स्वमंत्रादस्थालितं शंखं स्थापयेत् तन्नुच्चरन् अं सु
 र्यमंडलायां नैः ह्यद्वैतिकलात्मने ५ अमुका र्व्यतिपात्राया नमो नस्थसि वर्यवान् शंखस्थापनमंत्रोपगारकामो महाजल द च
 ७ प्रवर्मकदस्त्राहापांचजन्यापदम्बनः शंखस्थविंशत्पुण्येन प्रसालयेत् न ८ कलाह्यदशसूर्यस्य शंसोपरि यजेत कमानी ॥
 विलोममानकामूलं विलोमं च परं जलैः ८ ॥ ८ पूजयेत् स्वमंत्रेति शंखमंत्रस्थालिनीं शंखं अं सूर्यमंडलापदशकलात्मने देवा व्यपात्रा
 यनमः इति नमाधरे स्थापयेत् अष्टिवर्णवान् त्रयोविंशतिवर्णैः अमुकपदस्थाने दृष्टदेवता नामोच्चार्य नादि शंखमंत्रमाह नारद इति का
 मः क्लीं ओं क्लीं महाजलचराय हुं कदस्त्राहापांचजन्यापनम इति ७ ८ ॥

निषुस्योद्विष्वर्णधाः सूर्योदिकलाः कंमंतविश्वेनमदन्नादिहृदशकलाः सूर्येअंअमनोयेनमदन्नाद्याः षोडशैहोयधूमाचिवेनमदन्नाद्यादशवहोनामा
 वदेवामपार्थ्वनामौदक्षिणपार्थ्वकं अधर्माहीनप्रविन्यस्यहृदधनंतमितीवृजं १६१ पदेसूर्येदुव न्हीश्वदेव्वर्णानिजाः कलाः त
 नन्नामादिवर्णधानसत्वाद्यांस्वीनगुणान्यसेन १६२ ननात्मनयमाद्यर्णपूर्वगुर्व्यपरादिकम् मायानत्वंकलानत्वंविद्यान त्वंतनोभ्यसे
 न् १६३ परतत्त्वंचनामादिवर्णपूर्वाणिविन्यसेन सपीठशक्तिर्विन्यस्यन्यसेनपीठमनुंनिजं १६४ तदिन्यत्वनंतमुखंदेवानामुनरोनरं
 यन्माधारत्त्वमुदितंपूर्वपूर्वसप्तमैः १६५ इतिदेहमयेपीठे व्यायेत्स्वाभीष्टदेवतां ततन्मुद्रांशदर्यायकुर्व्यान्मावसपूजनं १६६ ॥
 अथाययेननोदेवंमंत्रेणनेनतन्मनाः स्मृतादेवदेवेशंस्त्वन्निधोभवकेशव १६७ गृहाणमानसीं पूजांयथायार्थपरिभाविनां केश
 वेतिपदस्थानेकार्यमुद्रोन्मदैवने १६८ मनसापूजयित्वैवंक्षणंतद्गतमानसः स्थित्वामूलमनुंविहान्जपेदहो नरंयातं १६९
 नानि ॥ घदेवायस्यापयेदव्यमुनमं वास्वसंपूजायांयतन्त्रकारोनिगद्यते १७० ॥ ॥ इतिमंत्रमहोदधौस्नानादिकथ

वैश्वस्तरंगः २९ ॥ ३० ॥

८ दिवर्णेनसंस्वत्वायनमदन्नादि १६९ आत्मन्त्रयं आदयः अउमावर्णसमूर्ध्वंअंअमने जेअंतरात्म
 मने नुर्यस्नानात्मानं परादिकंहीपूर्वं १६७ अन्यदैवनेउहः शंकरपार्वतीत्यादि १६८ ॥ इतिमंत्रमहोदधौकायामकावेशस्तरंगः २९ ॥

या के षडंगमुद्रा आह तृतीयेनिके शिरसि ५१ अस्त्रं पूर्वविस्तरस्वतुल्यं शिखयदंगमुद्रा आह मुष्टीनि ५२ निर्गतानर्जनीयाभ्यांनौनिसर्जनीनाह म्ना वनंगुष्टी
सिक्तौचमुष्टीशिरसि निरंगुष्ठकनिष्ठेतौसंयुक्तौमुष्टीशिरायां अङ्गुष्ठनर्जनीभ्यांहीनौविद्युनौमुष्टिः कवचे तलोस्फोटः कारतलास्फात्तनं १५४ म्नासंविममं
नर्जमादिवयनेनत्रयेनेनद्वयेदयं प्रसारिताभ्यांहलाभ्यां कृत्वा नालत्रयं सुधीः १५१ नर्जन्यंगुष्ठयो रयेस्फालयन्वंधयेद्विशः १५५
खमुद्रांभीविस्तारंगमुद्राउद्गीरिताः १५२ त्रयंगुलित्रयंन्यस्येनर्जन्याद्विद्वयंनुके शिरसाप्रदेशेभ्यांगुष्ठंदशांगुल्यस्तुवर्मणि १५३
तृदन्नेत्रंपूर्वमख्यंशक्तेरंगस्यमुद्रिकांमुष्टीविनिर्गतांगुष्टीसंयुक्तौहृद्विद्विभ्यसेनं १५४ निजर्जनीनाहक्रौतु शिरस्यया शिरानले
निरंगुष्ठकनिष्ठेतौनिरंगुष्ठप्रदेशिनौ १५५ मुष्टीपृथक्कृतौस्त्रंधादृदंनंवर्मणिस्मृतौ नर्जन्यादिवयनेनेनलास्फोटोत्तरिर्नः
१५६ शैवीषडंगमुद्रोक्तावर्णव्यासमयाचरेत् जह्वाअर्प्यफलांसंवाविघ्नदाभ्यासमंनरा १५७ पीठस्यदेवगान्यासाहेहेपीठंप्रकल्पयेत्
न्यसेत्तमंडुकमाधारेत्वाधिष्ठानेननःसुधीः १५८ कालानिरुद्धनाभौनुकच्छ्रयंरदयेननः आधारशक्तिमारभ्यहेमपीठावधिर्न्यसेत्
१५९ दस्यवाभांसवामोरुदह्योरुषुयथाक्रमान् धर्मज्ञानं च वैराग्यमैश्वर्यं चिन्मसेननः ६०॥ (आअकलाविघ्नदासतोपूजमंत्रस्यवर्णोदि
न्यासं कुर्यात् १५५ पीठन्यासमाह न्यसेदिति १५६ आधारशक्ति कूर्मानंनपथिवीसागररत्नद्वीपसागरहेमपीठानित्दि १५७ दशांसाद्विषुधर्मोदयः पी
ठपादाः तेषां दशके शरिभूतगजरूपाः १५९ मुखोद्विषधर्मोदयः पीठगात्राणिनोपवहवादिरूपाः रत्नो नंनोबुजयमं १६०॥

स्वस्वमुद्राभिर्जातिशुक्लाभ्यां गतिहृदादिभ्यसेन ता मुद्रा जातयश्चोच्चने १४६ विस्मिरंगमुद्रा आह प्रसारितमिति १४७ मूर्धनि च नर्ज्यादि चतुष्टयमेव १४८
 अतिरक्तमः १४९ प्रयोगे १५० निवृत्तिश्च प्रणिष्टा च विद्यायां नित्यं धेकादीष्वैकैश्चिक्काचापिमोचिक्काचपरमिधा १५१ सूक्ष्मासूक्ष्माभ्यां ज्ञानाभ्यां चाप्यापनीनैः
 व्यापिनीव्योमरूपा चानेनासृष्टि सञ्चिक्का १५२ स्मृतिर्मधाननः को नित्यस्मृतिः स्थिरा स्थितिः सिद्धिर्ज्ञेयत्वात्तिनी च सातिरी श्वरि
 कारतिः १५३ कामिकावरदा चार्थाहृदिनी प्रीति संयुता दीर्घा नीहृणतया रोदीभयानि द्राचने द्विका १५४ सुधास्यानर्को धिनी यश्चान्
 किं यो नर्का शिसमृत्तुका पीनाश्चेता रूपा यश्चादसिना नंतया चिन्ता १५५ कला मातकै वंत सद्भक्तः समाचरेत् नतः स्वमूलमंत्रस्य
 आसा नक्तोदितोश्चरेत् १५६ अथिः कंदोदैवता निमूर्द्धि वक्ते हृदिभ्यसेन बीजं गुह्ये पक्षः शक्तिर्मंगानिकरं यो रपि १५७ अंगुष्ठादिष्वंगु
 लीषु करस्य तत्तदपष्टयोः अंगुष्ठाभ्यां नर्जनीभ्यां नमस्त्यादिकं वरेत् १५८ तदप्यादिष्वप्यां गतिजानि युक्ता निविभ्यसेन स्वस्वमुद्राभिरधुना
 दोर्ध्वं निजानयश्चनः १५९ तदप्याय नमश्चोत्तिशिरसे स्वाहया युतम् शिरसा यैव बंदगंचकवचा यदुमित्यपि १६० नेत्रत्रयाय कौषट्स्या
 १ फडिगीरितं जानिषट्कं द्विनेत्रे तु नेत्राभ्यां कौषट्चरेत् १६१ पंचांगेनेत्रसंज्ञा गोमुद्रां गानां मथोच्चनं प्रसारितमनंगुष्ठेन
 चतुष्टयं १६२ तद्विमुद्रादिचांगुष्ठहीनो मुखिः शिरसा तले स्कंधमां रभ्यताभ्यां नादशांगुल्यमुचर्मणि १६३ ॥

कालमनुकायाः षडंगमाह नौरिति यथा जं अं उं आं इत् रं ईं दीं शः उं ऊं णि स्वा एं ऊं ऐं वर्म ओं ईं औं नेत्रं अं जो अ अस्वि ध्यानमाह पुरवपरशु
 सदाशिवः कामरायुगांमोक्षेम दजिह्वा दुर्मुखेभूतिसंयुक्तः सुमुखेभौ निकायुतः १२६ प्रमोदः सिनयायुक्त एकपादोत्मायुतः द्विजिह्वो म
 हिषीयुक्तः शूरआशितुमंजिनी १२७ वीरो विकर्णयायुक्तः वल्लभस्वोभृकुटीयुतः वरहो लज्जपावामदेवः स्या दीर्घखणया १२८ धनुर्धरायुक्त
 गुडैर्द्विरदोयामिनीयुतः सेनीशोर तिसंयुक्तः कामांधोयामणायुतः १२९ मनःशशिप्रभायुक्तो विमनो लोलचर्चा मत्तवाहनवंचूर्जे
 दीशिषिसमन्वितः १३० मुंडिसुभगपायुक्तः स्वर्गीर्भगयानर्थावरेण्यश्वाशियायुक्तो भगपायुक् चष्केननः १३१ भक्तप्रियश्चमणिनी ग
 लेष्टो भोगिनीयुतः मेघनादश्च सुभगाव्यापी स्यात्कलरात्रियुक् १३२ गणेश्वरः कालिकेति प्रोक्ता विद्विप्रमानुका त्वगादियोगोपादी
 नां पूर्ववत्परिकीर्तितः १३३ कलायुक् मानुकाया सुप्रजापतिः कृषिः स्मृतः छंद उक्तं तु गायत्री देवताया रदाभिधा १३४ नारैः षडंगं कुर्व
 न हस्वदीर्घांतरस्थितैः शंखचक्राब्जपरेषु कपालेनास्मालिकाः १३५ पुस्तकमूनकुंभो च निष्कूलं दधनीकरैः सिनयीनासितश्च नर
 ऋवर्णैस्त्रिलोचनैः १३६ पंचाक्षैः संयुतां चंद्रसकांतिं शारदां भजे ध्यात्वेवं नारपूर्वांगो न्यसेत्तुं न कलां च्चितां १३७ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 अस्य कला मभीकाम्या एस्य प्रजापतिः कृषिः गायत्री देवता ॥ अ उं ओं इत् रं ईं दीं शः उं ऊं णि स्वा एं ऊं ऐं वर्म ओं ईं औं नेत्रं अं जो अ अस्वि ध्यानमाह पुरवपरशु
 कपालासमालामूनकुंभरदासहस्रेषु अन्मन्येषु १३५ मध्ये प्रादक्षिण्यं च्चि मोनैर्मूर्तिः क्रमात्सिनपीनरुद्रासिनरक्तैर्युतं १३६ नारपूर्वमिति जं अं निवृत्तै

शंखपरशुकपालासमालामूनकुंभरदासहस्रेषु ॥ अन्मन्येषु ॥ मध्ये प्रादक्षिण्यं च्चि मे मुत्तैः क्रमान् सज्जीनं रुद्रासिनरक्तैर्युतं ॥

मलेशमानका माह गणेश्वरनि १९७ वडंगमाह स्मृत्येति दीर्घयुक्तमकारेण गंगां गंगं गंगे मंगः इति १९८ ध्यानमाह गुणैर्निगुणस्त्रिभूलं अंकुशवरीहस्तयेन
भूधरः किरीटीयुक्तो विश्वमूर्तिश्चक्रिन्त्य वैकुण्ठे वसुधायुक्तो वसुधायुक्तो वलानुजपरायणे वालमूर्ध्मे ।
वषट्सुसंधायुक् प्रत्यहवः १९९ हंसः प्रभासमायुक्तो वराहो निष्पात्तिर्तः विमलो मेघपायुक्तो नृसिंहो विद्युतायुतः १९६ केशवाग्रामा
नक्तो नाथो दिव्यो गंधर्वपूर्ववर्त गणेशैर्भक्त्या सासुमुनिर्गणकर्दारितः १९७ निहन्ता यत्रिका छंदो देवः शक्तिविनायकः स्मृत्या दीर्घायुचांगं
कृत्वा ध्यायेद्गजाननं १९८ गुणं कुशवराभीतिं यो हिरण्यो विषया लिंगिनिर्गन्तं विनेत्रं गणपं भजे १९९ एवं ध्यात्वा त्वसे न स्थीय
वीजपूर्वाक्षराच्चित्तं विद्येद्येहीसमायुक्तो विद्यराजः श्रियायुतः २० विनायकः शुद्धिदुर्गः शान्तियुक्तः शिवो नमः विघ्नहर्ता स्वस्ति संयुक्तो
विघ्नहर्ता सरस्वती १९९ गणसुखाहयायुक्त एकदंतः सुमेधया ॥ हिरंतः कांति संयुक्तो गजवक्त्रश्चकामिनी १९३ निरंजनो मोहिनीयु
क्तां दर्शयितुं दीयुतः दीर्घाजिह्वः पार्वतीयुक्तं शंकरं च श्रव्या लिनी १९३ वषट्मध्वजनं देवसुरेशाणामनायको गजेन्द्रकामरुषिणा
१९३ वसुधायुक् १९४ त्रिलोचनको जवर्त्मान् लंबोदरसुसमया महानंदश्च विद्येष्टो चतुर्भूतिः सुररिणी १९५ ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पंक्तौ श्रीं ह्रीं नमो नमो ॐ ह्रीं क्लीं भवसुखं क्लीं भवान्मोदस्व मे
नमो पूर्वाभिया नमस्तस्मिन् अकारादीनि त्र्युक्ता गअविद्येष्टा हीभ्यानमस्तस्मादित्त्वगादियोगा इति गंयं त्वात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमस्तस्मादि २०
१ गणेशमानका माह गणेश्वरनि वडांगमाहः शक्तिविनायकदेवः ॥

षडंगमाह विरक्तैरिति ह्रीं हन् श्रीशिरः क्तिं शिराहर्षवर्म श्रीनेत्रं क्तिं अश्वं ध्यानमाह शंखेति शंखादीनि दक्षे कुंभादीनि चामे मेधाभो हर्षशः चपलावि
 द्युत्तन्निभोलक्ष्मणः १३ भां अनेपयोरीदक्षो विष्णुश्च क्तिं अनेपसाक्षां नयानमोनेपस्याः सानमोना प्रणव आदौ यस्याः सा प्रणवादि का सा च सा च ना
 हिरुक्तेः शक्ति श्री कामैः षडंगानि समाचरेत् शंखं च कर्गदापदां कर्मादृणां ज्ञेयसकं १३ विभूतमिदं चपलावर्णं लक्ष्मी हरिं भजे एवं
 ध्यात्वा ज्ञेयं शक्ति श्री कामपुटितासु १४ भासं नं विष्णुश्च क्तिं नं नमो नं प्रणवादि कं केशवः कीर्तिसंयुक्तः कानिर्नायक्य लक्ष्मी चिन्ता १५ माधुवकु
 षिसंयुक्तो गोविंदः पुष्टिसंयुक्तः विष्णु सुधति संयुक्तः शान्तियुक्तः अथ सुदतः १६ त्रिविक्रमः किययुक्तो वामनोदयया चिन्ता श्रीधरो मेधया पु
 ण्णोदकीकेशश्च हर्षमा १७ ययनामयुता अहलज्जालामोदश चिन्ता वासुदेवश्च लक्ष्मी युक्तः संकर्षण सरस्वती १८ प्रसन्नः श्रीनिसुयुक्तो
 निरुद्धो रतिसंयुक्तः चकोजया गदी दुर्गाणां र्ज्ञेय प्रभया चिन्ता १९ स्वर्गी निसुयुक्तः शंखी चंडासमन्विता हलीवाणी समायुक्तो मु
 षस्तीज्रचित्तासिनी २० अस्ती विजयया युक्तः पाथी विरजया चिन्ता अंकुशो विभूयायुक्तो मुकुंदो विनया युक्तः २१ नंदनः सुनसायुक्तो नंदी
 स मासमन्विता नरश्च ह्रीं नरकाजिनः समुद्रीं शुद्धि युक् होरिः २२ कृष्णबुद्धी सत्ययुक्तो सात्वतो मति संयुक्तः सौरिः समुद्रस्यै ज नार्दन उ
 यथा ओं ह्रीं श्रीं अं क्तिं श्रीं ह्रीं के श व कीर्ति भ्यां नमः समादि २५ यादियोगश्च पूर्ववदिति ओं ह्रीं श्रीं क्तिं यं क्तिं श्रीं ह्रीं त्रिगालभ्यां पुरुषो नं मवसुदाभ्यां नमो द

ॐ ह्रीं श्रीं क्तिं अं क्तिं श्रीं ह्रीं के श व कीर्ति भ्यां नमो ललाटे ३ रमादि ॥

ह्रीं श्रीं क्तिं अं क्तिं श्रीं ह्रीं के श व कीर्ति भ्यां नमो ललाटे ३ रमादि ॥

श्रीकंठानंनत्रिमूर्त्तद्वीपनेष्टपदेनालितत्रापिरेषं श्रीकंठेशदमादिशक्तिभ्यां पूर्णोदरीप्रभृतिभ्यां चतुर्थद्विवचनं स्तनमः तथाप्रयोगउक्तः १०॥
 शिवो न मे शो वि न्यस्य पुनरत्रैलोक्यविषया एकस्मिन्नामंत्रशक्तिरुर्भवात्तु युक ६९ एकनेत्रोभूतमात्रायुक्तः स्याच्चतुरासनः तं
 चोदर्यायुतः प्रोक्तो ह्यनेशो द्राविणायुतः ६० सर्वशो नागरीयुक्तः सोमेशश्चापि खेचरी लंगलीशश्च मंत्रार्थादारके शश्वरुपिणो ६३॥
 अर्धनारीशचारिण्यमत्रमाकातः पुनर्युतः ककोदर्यार्त्तया बादी प्रतनायुक्तो हरिनः ६४ चंडीशो भद्रकालीयुगं तीशो योगिनीयुतः मीनेशः
 शंखनीयुक्तो मेघेश सार्जनीयुतः ६५ लोहितः कालरात्रीश्वशिखीशः कुञ्जिनीयुतः छगलुंडः कपर्दिन्यादिरेडशश्वजया ६६ महाका
 लोजपायुक्तो बालीशः सुमुखेश्वरी भुजगोरेचनीयुक्तः पिनाकीमाधवीयुतः ६७ स्वडगीशो वारुणीयुक्तो वकेशो वायवीयुतः श्वेनोर
 हने विदारिण्याभृगुः सहजयायुतः ६८ नकुलीशश्च लक्ष्मीयुक्तो शिवेशो व्यापिनीयुतः संचर्कमहोमाद्योमेका श्रीकंठमातृका ६९॥
 यन्नत्वीशपदं नोक्तं श्रीकंठादिषु नामसु तन्न सर्वत्र वक्तव्यशक्तिभ्यां सहितो वदेत् १०० त्वं सैव सासमं दोषिभ्यो ज्ञां भुक्तैरेव सूतवदेत्
 रात्रिः कोधं न यो धूमभ्यां मंत्रभ्यादिदशास्त्रां १०१ केशवादिमानकायां साधुना रायणे मुनिः अमृताद्यानुगायत्री छंदो लक्ष्मी हरिः सुरः १०२
 १०३ शवर्षेष्ठत्वगादीनामभ्यामिदं नान्वदेत् यथा ह्यौषं च गतात्मभ्यां बालीशपुमुखेश्वरीभ्यां नमः स्तुति ह्यौषं असंगात्मभ्यां भुजंगेश्वरीभ्यां नमोदत्तां
 वातोष्णमुखं भृतेभ्यां नमोस्तुदिशः ह्यौषं त्वगात्मभ्यां भुजंगेश्वरीभ्यां नमोदत्तां मे ॥ अथ केशवादिन्याश्च स साधुना रायणे मुनिः अमृताद्यानुगायत्री छंदः लक्ष्मी हरिः देवः न्यासकरत्नोदीनीयोगः

मं. टी. टी.

子

25

पंचधामानकास्थितिः सृष्टिस्थितिः संहारसृष्टिस्थितिः स्रष्टव्यं पंचविधमानका न्यासं उक्तं प्रथममनुरंगे अन्यं श्रीकंठश्लोकात् ८० तत्सेवी गणेशसेवी ८१ ध्यानमा
पंचधामानकास्थितिः ॥ सृष्टिस्थितिः स्रष्टव्यं पंचविधमानका न्यासं उक्तं प्रथममनुरंगे अन्यं श्रीकंठश्लोकात् २० अस्य श्रीकंठादिन्यासस्य दक्षिणमूर्तिः श्रीकृष्णपूज्योत्तरार्द्धादिना हेतरेव मन्त्रोद्धृतव
पंचधोक्तो प्रकृतिनतोन्यामानकाचरेन श्रीकंठाद्याशुभमन्त्रोवैस्त्वः केशवादिकान् ८० गणेशाद्यानुतत्सेवी शक्तिभाक्मानुकाः कर्त्तव्ये ।
माः क्रमेणैव कथ्यन्ते मुन्यादिन्यासपूर्विकाः ८२ मुनिः स्याद्दक्षिणमूर्तिर्गणेशोत्तरार्द्धादिना हेतरेवोदियोगः सर्वसिद्धये ८२ ॥
हलोवीजानि गृहे नृसणनशक्तीः पक्षेः न्यसेत् हसाम्पादीर्धयुक्ताभ्यां कर्त्तव्यं गंधं करं स्मरेत् ८३ पाशं कुशं वंशं सुस्रक्तं पाणिं शीमां शु
भ्रव्यां अस्त्रं रक्तमुवर्णं भर्तृनासीभ्रं भजे ८४ एवं ध्यायन् शंभुशक्तीं चतुर्व्यं नमो न्विते हसो वीजमा नृका पूर्वविन्यसे न्यानुका
स्थले ८५ श्रीकंठपूर्णे दर्प्यो चानतो विरजयान्वितः सूर्यभेषः शाल्मलीयुक्तो लोलाक्षीयुक्तविभूर्निकः ८६ अमरेशो वर्जुल्लाक्षार्धवर्ध
णो हीर्धवोऽणया श्मरभूनिर्दीर्धमुख्यानि यीशो गोमुखीयुतः ८७ श्यामावीशो हीर्धजिह्वायुक्तरक्तकुंडलदरीयुतः निंदीयाश्चोर्ध्वकेशो च भौमि
को विक्कभमुख्यापि ८८ सद्योज्वालामुखो चानग्रहउल्कामुखीयुतः अक्षरः श्रीमुखी महासेनो विद्यामुखीयुतः ८९ कोधीशश्च महाका
व्याचंडेशश्च सरस्वती पंचांगकः सर्वसिद्धिगोरीयुक्तः प्रकीर्तितः ९० ॥ ९१ हपाद्येति पाशं कुशौ चामयोः रक्तो हरं शः सुवर्णभोदेव्यं सः ९४ मान
को स्थले ललाटादौ पूर्वोक्ते ९५ प्रयोगोपयाह्यौ अंशो कंठे शपूर्णे दरीभ्यां नमः ललाटे ह्यौ अंजननिशा विरजाम्पां नमो मुखं च नैर्द्वयादि ९६ सद्योसद्यो

जाता दर्द दर्द॥

मं-दी-नै-त्रिधा-नि-प्रकाश-ना-दि-व्यं-त-रि-सु-भू-मि-स्थान-६५ अर्ध-पा-नी-यैः-सामा-न्या-वर्ज-तै-रं-त-रि-सु-स्थान-६६ वि-नि-र्दि-तां-गु-ह्या-नि-र्ग-च्छ-तां-अं-त-र-या-ण-ां-वि-धा-नां-अ-व-का-श-
ने-२९ इ-ना-य-वा-मा-नं-सं-को-च-य-न्-त-सि-ए-ण-दि-न-गृ-हं-प्र-वि-शे-न्-७० कु-शा-स-न-व्या-घ-च-र्म-व-स्त्रा-ण-मु-प-रु-पि-रि-स्था-पि-ता-ना-मु-परि-अ-नं-ता-सु-ना-य-न-मः-वि-म-ला-श-

१७०

धू-भ-रा-जो-ग-ण-प-ने-र्हो-र-पा-ला-द-मे-स्फु-र्ग-दं-द्रो-य-मो-य-व-र-णः-कु-वे-र-स्यै-पु-रा-स्मृ-तः-६५ दं-शः-क-शा-नु-र-स्यां-सि-वा-यु-श्चै-व-ह-मः-स्मृ-तः-ह्य-र-
पू-जां-वि-धु-यं-स्यं-वि-घ्ना-नु-त्सा-र-यं-त-त्रि-धां-६६ आं-त्मानं-शं-क-रं-ध्या-त्वा-द-ष्ट-या-दि-व्या-नि-वा-र-ये-न्-न-भ-स्थान-वर्ष-पा-नी-यैः-पा-र्हि-द्या-नै-र्व-रा-
ग-ता-न्-६७ अ-प-स-र्प-यं-ते-भू-ता-य-भू-ता-भू-मि-सं-स्थि-ताः-ये-भू-ता-वि-घ्न-क-र्ता-र-स्ते-न-स्यं-तु-शि-वा-ज्ञ-यां-६८ अ-प-क्रां-सं-तु-भू-ता-नि-पि-या-च्चाः-स-र्व-तो-
दि-शं-स-र्व-वार्म-वि-ये-धे-नं-व-त्स-क-र्म-स-मा-र-भे-६९ वि-नि-वा-र्यं-खि-लान्-वि-घ्ना-नि-दं-मं-न-ह-यं-प-ठ-न्-अ-व-का-श-प्र-दा-ना-य-त-र-या-ण-ां-वि-नि-र्दि-तां-
७० सं-को-षं-य-न्-वां-म-मं-गं-गृ-हं-द-स्य-प-दा-वि-शे-न्-सि-ञ्ज-पा-लं-वि-धा-ता-रं-नै-ऋ-त्यां-दि-शि-पू-ज-ये-न्-७१ अ-नं-तं-वि-म-लं-प-दं-डैः-ता-स-न-मो-न्वि-तं-ज-प-न्नि-
ध्या-न्-द-र्भो-र-त्वी-न-कु-श-च-र्म-व-रा-स-ने-७२॥ ८ ना-य-न-मः-प-द्मा-स-ना-य-द-न्ति-मं-त्र-त्रे-पे-ण-त्वी-न-द-र्भो-नि-द-ध्या-न्-७३ आ-धि-दं-मान-स-पी-डा-प्र-दं-७३ मा-
धु-र-वा-प्रा-ड-नु-र-व-उ-द-ड-नु-र-वो-वा-पा-श्रो-जं-प-दं-स्व-सि-का-स-न-प-द्मा-स-न-वी-रा-स-ने-ष्व-न्य-त-म-मा-स-नं-कु-र्या-न्-स्व-सि-का-स-न-त-द्वि-ष्ट-णं-प-था-जानू-र्वै-रं-त-रं-कृ-त्वां-स-म्य-कं-
मा-द-त-ले-उ-भे-ऋ-जु-का-या-वि-शे-द्यो-गी-स्व-सि-कं-त-न-प्र-च-स्य-ते-प-द्मा-स-नं-प-था-उ-र्वै-र-प-रि-वि-न्य-स्य-स-म्य-क-पा-द-त-ले-उ-भे-अं-गु-द्यौ-च-नि-व-धी-या-ह-सा-भ्यां-वु-क्त्वा-मा-न-

सुभाय हा न आवस्ये च न योर्हो ममुपस्थानं च कृत्वा देवपूजा गृहमागम्य वैष्णवाचमनं कुर्यात् ४८ तदेवाह केप्येवेति उं के श्वा य म मः ना ए य एण य न म
 ना व वा य न मः दिति त्रिजलं धीत्वा गोविंदाय नमः विष्णवे नम दिति द्वाभ्यां कौ प्रस्तात्य म धु स द ना य न मः ४९ त्रिविक्रमाय नम दिति द्विशिप्रस्तात्य म ना य
 न मः श्री धराय नमः दिति सुखद्वयो केशाय नमः दिति दसहस्र प्रस्तात्य य न ना भा य न म द ति पा दौ ५० दामोदराय नम दिति शिरश्च प्रोष्ठसं कर्ष ण य न म द ति

५१

गार्हपत्यादिकानां नीहुर्नोपस्था यता नैपि देवतागारमागम्य समाचामसंख्या विधिः ५० केशवनाथाय एमा धवैः धीत्वा जलं त्रिधा
 कथ्येति त्रिंशद्विष्णुभ्यां स्थात्यैकम धु स द नः ४९ त्रिविक्रमाभ्यां मोक्षैवाय न श्री धरातो मुखं त्रयो केशेन हस्तं च चरणै य न ना भ तः ५१ द
 मोदरेण भूर्हो न प्रोष्ठसं कर्ष णादिकानां मुखं वादित्युक्तरां गुल्या वेदादि प्रीणेन यसेन ५२ मुखे सं कर्ष णं वा सुदेव प्रद्युम्न को न सोः अग्नि
 रुद्रं च पुरुषोत्तममद्वेष्टेणः प्राविन्यसेन ५३ अथोष्ठजं नृसिंहं च कर्ष णं नो भितो च्युतं जना दर्शनं तदित्यस्येदं येंद्रमपि मूर्हनि ५२ अंसयोश्च ह
 णं विष्णु वैष्णवाचमनं त्विदं केशवाद्या अगुर्ध्वं नानमोताः प्रणवादि काः ५४ आस्येन सो प्रदक्षिन्वा नां म धा ने च क ए योः कनिष्ठयानां भि
 र्द्वेष्टेष्टः सर्वत्र संयुतः ५५ तत्तेन तददयेन स्येत् स वा भिर्मस्तकं स योः आत्मा विद्या शिवैस्तत्तायं स्वधा नैः पिवेदयः ५६ ॥ मुखं वा सुदेवाय ५७
 न्नाय नम द ति ना से चां गुष्ठप्रवेशिनीभ्यां स्पृष्ट्वा अनिरुद्धाय पुरुषोत्तमाय दत्त्यसि एण ५२ अथोष्ठजायः नृसिंहाय दतिकर्णे चां गुष्ठानां मि का भ्यां स्पृशेत् अ
 च्युताय दतिजं गुष्ठकनिष्ठाभ्यां नाभिं जनादेनाय दतिकर तत्तेन तदयं उयेंद्राय दति सिरः हरये कक्षाय दत्यस्यै च सर्वाभिः स्पृशेदिति वैष्णवाचमन ५५ ५६

नमो वस्यसि यद्वा नसुखादिनामस्थलितसुखापविग्रहे अघोरेभ्यः सद्योजानं प्रपद्यामि वामदेवाय नमः ईशानः सर्वविद्यानामि निषं चाग्निरेव विपुंडकापि वि
 देशानि ३१ मंत्रसंख्यामाह प्राणायामेति मिदुरोपलेवजपाया एषापयुक्तं जलं क्षिपेत् एतदयमवर्णं ३६ मूलमंत्रमुक्त्वा रविमंडलसंख्यापदेवापार्थक्यं
 कर्त्तव्यं ३७ स्त्रिया रेवोक्तो मंत्रसंख्या समाचरेत् ३८ प्राणायामपठने च कर्त्तव्यं दार्पकं रेजलं त्रिर्जस्त्रा मूलमंत्रेण आचमं त्रिर्जपन्मनुं ३९ पुन
 ईशकरेण भोगं हित्वा वामहस्ततः निधाय नस्मान् चो न द्विविद्भिः सवधानतुं ३६ संमार्ज्यमूलमंत्रेण वशिष्ठं न्यूनजलं दसहस्रे समास्य
 नासिकां निकमानयेत् ४० ईडया तः समाकृष्य नदीनैः पापसंचयैः कृत्वा वर्णयेत् गलपारे चितं प्रविचिन्तनं ४१ क्षिपेद्देवैः एतान् कालिने
 भिदुरोपले अयमवर्णमेतद्विनिश्चिता वनिवारणं ४२ पुनर्देवा लितो दार्पजस्त्रमव्यं दिशेत् नतः त्रिवारं मूलमंत्रो न्योऽष्टांशं मनुजपन् ४३
 रविमंडलसंख्यापदेवापार्थक्यं दत्तं कल्पयामीति मंत्रो यं योऽष्टांशं दत्तः ४४ सूर्यमंडलसंख्यापदिष्टदेवमनन्यथाः प्रजयेन्मंत्रा
 यस्मै मूलवशिष्ठान् ४५ अष्टाविंशतिवारं तपयेत् नो वदं भसि दत्तां व्यंदिनायापार्थं संहारमुद्रया ४६ विसृज्य मैत्रिकाया लान्तना
 दं त्रिपटनं यागस्थानं नयागस्य प्रसात्वा धीर्नार्थाच्च मेत् ४७ ॥ ५५ ॥ यामिनि योऽष्टांशं मंत्रं जपन् देवापार्थं दद्यात् ४८ संहारमुद्रया नीर्थं
 रविमंडलसंख्यापदेवापार्थक्यं ५६ ॥
 हस्तौ चिमुखौ सयाज्यनयोरगुलीः पुरस्परसंक्षेपः कृत्वा हस्तौ संमुखौ कुर्यादिति संहारमुद्रया ५७ ॥

[illegible]

ननीहवान्मनुष्यांश्च संक्षेपानि पर्येत विनतं वस्त्रं संपीड्य संस्थाप्य सकृन्नीचाससीधरेन २६ नीर्थाभावात्स्वसदने साधोद्वेगेन चारुणं
उज्ज्वलं प्रवक्तव्यं सन्मन्त्राय बोधिनाः ३ हसयोरपआदाय कुप्यन्तं नाघमर्षणम् भस्मना गोद्वेगेभिर्वर्त्तमानं नेणार्थाहमः ३१ ननआच
र्यपीठस्य स्थितकरचयेन सुधीः कोषावाधेभिर्भानैस्तु स्थाने बुद्धादशस्वर्ग ३२ ललाटे दंडे हस्ते कंदे दक्षिणार्धसकनने वामपार्श्वसकले च
षट्शेककृपापि ३३ ललाटे गुग्रादं कुर्यात्तद्वदयेनंदकपुनः शरं चक्रं भुजदंडं हेष्ठाङ्गं चालं च भूर्धने ३४ रत्नं तु वैष्णवं कुर्यात्तद्वेकः कुर्याद्वि
पुंड्रकम् अग्निर्होत्रो स्थितं भस्मार्द्रार्थं निरुधिमं वतः ३५ अभिमंत्र्यं च केन कुर्यात्तं च त्रिपुंड्रकं कमनो नु रवाघोरसघवामे शानामभिः
३६ नीलां सोदरं वसस्सु कर्णिसि चार्धमप्यापि च ॥ ८

विनिभस्मजलमिति निभस्य स्थलमिति निभस्य व्योमेति निभस्य सर्वाहवारदं भस्ममन एतानि च क्षुं

१८. नालंमोदरवसस्तु क्रान्तिं क्षीर्वाभं यथापि वा ॥ ८८. शितिभस्मजलमिति भस्मस्थलमिति भस्मव्योमेति भस्मसर्वाहवारदंभस्ममनएगानि चक्षुषि ।
नस्माद्वनेद्वेन प्रशुपनं पद्मस्रुतांगानि संस्पृशेदिति मंत्रः ३५. ततस्त्र्यं वक्तुं यजामह इति पूर्वोक्तं चेष्टाभिर्मन्त्रं कृत्वा त्वाद्विभुतसुरेभ्यः आदिनामपि पंचभेदं पुंड्रं
कीकुर्यात् त्रयाणां पुंड्रकाणां समाहारश्चिपुंड्रकी यथा नसुरवाय नमो भाले अर्धेण यनमोदक्षिप्ते सद्योजाना यनमो वामसिं वा मदेवाय नमोजरदरे दृशेतामर

नवीजेनवमिनिवीजेनकवेनहुमिनिवीजेनअखेएफडितिमेनेए ईश्वारमेकादशचारं वक्ष्यमाणोनाधारद्वन्मादिवादेषनाहकिं व्यनीक्रां कं भ
गोचयमुनेचैवगोदावारिसरस्वतिं नर्मदसिंधुकाचैरिजलेस्मिन्संनिधं कुरु १६ आवाहयामित्वादेवित्तनार्थमिहसुंदरि स्थिरां
नेनभुभुभुसर्वगीर्ध्रसमन्विने १७ नतोर्वामिनिवीजेनयोजयेन्नानिज्जले अ न्यर्कुदुमंडलानिगतं संचितयेनशुक्लः १८ मंत्रयेनेन
मंत्रेणराचिवारंनो जलं कंचचेनावशुं क्वाथरसोदरेखेएनसुनः १९ मूलमंत्रेणैवाचारमंभिमंत्र्यनमंज्जलं मंत्रेणवक्ष्यमाणेनदेव
नांमनसिस्मरन् २० आधारःसर्वभूतानांविष्णोरगुलनेजसः तद्वयाश्रुतनोआनां आपर्णाः प्रणमार्थहं २१ मन्त्रेज्जलेस्मरेन्नत्रभू
लंश्चैवप्रह्मकिं उन्मज्यासंचितं सप्तकृत्यः कलशमुदया २२ मूलेनार्थचतुर्मंत्रैराभाषंचेन्नजाननुं लिख्यं नेनेष्वक्षणे मंत्राः शंक
रंभाषिताः २३ सिद्धोदितिलं विधंमुहुः शुक्रं प्रजापतेः मानरः सर्वभूतानामापोदेव्यः पुनंनुमां २४ अलक्ष्मीर्मत्स्वरूपया सर्वभूते
षुर्मिस्थितां क्षालयंति निजस्यार्थादयोदेव्यः पुनंनुमां २५ यन्मेके शेषुदौभिर्यसीमने यच्चमूह्यनि तत्काटेकलपोरहलेण पक्षन
यं नमः २६ आपुराणायमैश्वर्य्यमहिपक्षस्थयः सुखं संगोषः क्षांतिरासिक्त्यामवतुजेनमः २७ विप्रपादोदकं पीत्वाशाल
शिलाजलं शंखेनत्रिःपरिभोग्यप्रक्षिपेन्नियमस्तके २८ ॥ ८८ शिरःकलशमुदयाकुंभमुदयाहसोदयेनसावकाशिकमुष्टिकरेण

कुंभसुद्रा २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८॥

श्रीनाथावेत्तो रमस्य स्थले विष्वेष्टां भो भवदास्यैवेति शिष्योपासकेन भवानिदुर्गं रम्यं चोपासकेनो होषिष्यः ८ आनरं स्नानमाह कोटिनिवेशे क्रमार्गतिः
 अहं ब्रह्मास्मि स इयं निरमृक्तं न शोकभाक् गुरुदेवात्मना भित्त्यभैकं स्मृत्वा च यत्नमं ५ तैस्तो क्वचित् नम्यं मया दिदेव श्रीनाथं विस्मयं
 वदं स्यैव प्रातः समुत्थाय न च प्रिया र्थसंसारयात्रामनुवर्त्तयिष्ये ६ जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जायते धर्मं न च मे निवृत्तिः केनापि
 देवेन ददित्स्थितेन यथा नियुक्तोस्मि न याकरोमि ७ एतन् ह्येकद्वयेनेष्टदेवतां प्रार्थयिषुर्दुर्गः श्रीनाथविस्मयस्थानेनैका परितो ह्ये
 वने ८ देवतागुणनामादिस्मरं स्नानुर्ध्वं क्रमेण स्नानं प्राप्त्वा स्थावरां दिव्यं कथितं वृद्धैः ९ कोटिस्वर्यं प्रतीकाशं निजभूषणयुक्तं
 शिरस्थं संस्मरे देवं तन्माहोदकधारया १० विशां न्यात्र हारं धेएण निजं देहं दिशुः प्रार्थय सात्मानं गतिं पापं विस्मयाय नैनरः ११ एवं कं
 त्वां न रत्नां न रत्नाया देहोक्तमार्गतः अद्य मर्षणसूक्तं च स्मरे दं न जलं सुधीः १२ मं अस्मान् गतं कुप्यं न त्वा करो धुनो ज्यते प्राणं
 यमं भूत्वेन कान्ताया संपुडं गकम् १३ आदिनमं दत्तातीर्थ्याया कृपेन सृणिमुद्रया मंत्रत्रयेणं वृमधो लिख्यते नमः नृनयं १४
 वत्सां उदरतीर्थानिकरैः स्पृष्टा विनिरवेः तेन सत्येन मे देवती र्थं देहि दिवाकर १५ ॥ (सप्तश्लोका विधिनस्त्रया रत्नां भिन्नलिखितं अक्षर
 धरणसूक्तं अनेन च सत्यं चेत्तादिका मृचं अद्य मर्षणदृष्टमनुष्टुप् छंदस्कं भावहृते देवताकं १२ सृणिमुद्रां कृपया मुद्रा प्रोक्ता १४ च स्मृतिप्रादिश्लोकत्रयं पुण

ध्यानमाह पाहिजानेति पाहिजानवनमध्यगतेमाणि कथमंश्येहेमासनगंध्यायेत् गंगेयपात्रहेमभजनं वरंचद्रस्योऽत्रिभूतद्रमरुत्तामयोः १२८ हेतयोक्त्वा
 जाः १२८ मंडलमेकेनपंचाष्टिनानि १२८० धनेवर्द्धनेअरेः शत्रोः सकाशान् प्रसभवोनस्यान् १३३॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिनीकायमष्टिधरनिर्मित
 सिंहासनगन्ध्यायेद्देवसेवर्त्तदाधिनं गंगेयपात्रद्रमरुं त्रिभूतं वरं करैः संदधन्मंत्रेनेत्रं देव्यायुतं नमसु कर्णवर्णं स्वर्णं कृष्णं रत्नं च
 यैर्मः १३२ तद्धंतेपेदशां शेनपायसेर्जुह्वानुधीः श्रेवेपीठं यजेद्देवमर्गादिकृपालहेतिभिः १३८ सिद्धमनुं जयेन्नित्यं विप्रानीं
 मंडलावधिं हारिद्वाटसुनसिष्यज्जायने धनदोयमः १३० कथादिभिर्मनोसिद्धयेभ्यः सिद्धिमाप्नुयान् सुवर्णमिधनेगेहै
 वीरेः स्यान्मसाभवः १३१॥ इति मंत्रमहोदधौ यंत्रकथनं नाम चित्तरंगः २० ॥ निम्नपूजाविधिं सर्वदेवसाधारणं च वै ब्राह्मि
 हर्षेन पापकृत्ता शौचादिकं सुधीः १ परिधायार्थं चरं शुद्धं मंत्रं खानिं विधाय च प्राविश्य देवतागणं कुर्यात्संमार्जनादिकं २ मंगा
 र्त्तप्राणिकं कृत्वा तिस्रसुप्रसादयेत् दद्यात्सुभ्यां जलं त्रिदशधा वनाचमने अपि ३ नमस्कृत्यासने शुद्धे उपविश्य गुरुं स्मरेत् शिर
 ४ श्चक्रपद्मस्य प्रसन्नं द्विभुजास्तिकं ४॥ ९ पांयंत्रकथनं नाम चित्तरंगः २०॥ एवं मंत्रजानं कथायित्वा सर्वदेवतानां कामना वि
 पंत्ताणि च निरूप्य सर्वदेवसाधारणं पूजाविशेषं च कुमुदकमेति निम्नेति द्वैभुजौ हे अष्टिणी च यस्य स हि द्विभुजास्तिकः नं ४ ॥

मं-दी-नो

न-२-

१३६

४ अं-६-को-र्को-त्-हो-ही-हं-९-वं-आ-प-द-ह-र-ण-प-अ-जा-न-ल-च-ह-य-लो-के-भू-ग-प-स-र्ण-क-र्ष-ण-भै-र-वा-य-म-म-दी-हो-वि-ह-ष-ण-य-ॐ-श्री-म-रु-भै-र-वा-य-न-मः-५८॥

हां-चिं-श-ह-ल-न-दु-य-दि-को-ए-षु-ह-स-यु-नं-च-तुः-को-ए-क-त्वा-स-मा-हं-पू-जि-नं-वं-ध-हरं-१३६-१३७-उ-क्त-य-न्-च-सि-ह-ये-म-म-न-का-भू-त-लि-पि-भै-र-वा-ण-म-न्य-त-म-नु-पा-
स्यः-न-न-हे-उ-क्तै-भै-र-व-मा-ह-प्र-ए-व-इ-ति-१३८-भू-गु-मः-भ-या-वः-१३९-दी-र्घो-वा-लः-चा-प्र-भुं-ज-नो-य-ए-मा-श्री-१४०-हृ-द-य-न-मः-मं-त्रो-य-था-उं-६-को-र्को-कुं-हं-

प-द्यं-दि-वि-दि-शा-ह-स-यु-क्त-स्मा-पु-र-वे-ष्टि-नं-१४१-ए-न-द्यं-नं-को-स्य-पा-त्रो-लि-स्वि-नं-स-प्र-वा-स-श-नं-पू-जि-नं-भूर्ज-लि-स्वि-नं-ध-नं-वा-व-ह-मो-स्य-क-
नं-१४२-पूर्वो-क्तो-रि-व-ल-यं-चा-णं-सि-द्धि-क-मि-ने-मं-त्रि-णं-उ-पा-सां-मा-न-का-दे-वी-प-हा-भू-त-लि-पि-य-ए-१४३-य-हा-पा-स्यो-ले-स्व-क-ले-स्व-र्ण-क-र्ष-ण-
भै-र-वः-प्र-ए-वो-वा-म-व-को-म-श-क्तो-दी-र्घ-त्र-या-न्त्रि-ने-१४४-स-ग-भू-गु-भ-य-सि-से-हं-सी-प-द-ह-र-ण-य-च-अ-जा-म-ल्य-नं-व-ह-य-इ-नो-लो-के-भू-र-म-
या-१४५-स्व-र्ण-क-र्ष-ण-भै-र-वो-नो-दी-र्घो-वा-लः-प्र-भुं-ज-नः-म-म-दा-रि-द्यो-वि-ह-ष-ण-या-ने-प्र-ए-वो-र-मा-१४६-उं-नो-म-हा-भै-र-वो-नो-हृ-द-य-की-र्ति-नो-
म-नुः-अ-ष्ट-पंचा-श-द-र्ण-द्यो-मु-नि-र-स्य-च-तु-मुं-खः-१४७-यं-क्तिः-सु-हो-दे-व-नो-क्तो-स्व-र्ण-क-र्ष-ण-भै-र-वः-नं-दा-ष्टा-कं-न-वा-ष्टा-दि-क-व-धै-र-गं-
म-नोः-स्मृ-त-म-१४८-अ-थ-चा-का-म-श-क्ति-भ्यां-दी-र्घो-हो-भ्या-ष-ड-ग-क-म्-पा-रि-जा-न-दु-का-ना-र-स्थि-ने-मा-ए-क-य-मं-उ-ये-१४९-॥

हो-हं-सः-वं-आ-प-द-ह-र-ण-प-अ-जा-म-ल-व-ह-य-मु-लो-के-भू-रा-य-स्व-र्ण-क-र्ष-ण-भै-र-वा-य-म-म-दा-रि-द्यो-वि-ह-ष-ण-य-उं-श्री-म-हा-भै-र-वा-य-न-म-इ-ति-॥
अ-स्य-व-र्ण-क-र्ष-ण-भै-र-व-मं-त्र-स्य-व-सा-म्भ-वः-॥१४९॥ष-ड-ग-मा-ह-न-दे-ति-नं-दा-न-व-आ-ष्टा-द-श-अ-ष्ट-वे-ति-क्ता-हो-त्त-न-क्तो-ही-शि-र-द-सा-दि-१५०॥

यं-क्ति-०-ह-दः-स-व-र्ण-क-र्ष-ण-भै-र-वो-दे-व-ता-म-मा-भि-ष्टा-सि-व्य-व-ज-वे-वि-नी-यो-गः-३॥

नदन्तः पंक्तिषुमादि सांता नम ध्ये हं विलिख्य रेखायाणि संचर्ध्वनि भूलकायाणि यंत्रपूर्वभागेपञ्चिमे निभूलमध्यभागेषु समसुहिं। संमकं कन्तेन
विधिपूजिनं द्रोहिवाहो धनमुक्तकस्तदं मातृकादेवना ११२ शण्किनीनि वर्तकं षड्भिः शमाह पूर्वोक्तोक्ति पूर्वोक्तविधिनो चनादिभिर्भूर्जजानीलेखि
या भृगुणसकारेण ११२ पूर्ववदिनिदिनचयचंडीपादादिना मातृकादेवना ११३ चरहरससविशमाह धनरोनि कलाहृष्याकलचनुर्दश्यां वा
पूर्वोक्तविधिना कुर्यात्तत्प्रथमपदलान्वितं मध्येनानायुनं सर्गिभृगुणाष्टदले षषि ११२ पूर्वचमूजिनं चैनदहकं ठे भुजे शिष्टोऽथ
शण्किनीभूतवेनालग्रहात्मैधोनि वर्तयेत् ११३ चनूरसर्गोलेख्यपितृकांता रवासासि कल्लेचसुनिर्धो धनेष्टदिनं भृगुरहयं ११४ कोणां
नगले कोणेष्टरेफलोद्दश्या कलिसेन दिष्टुरेफचतुके णयुनं नामापिमध्यतः ११५ पूजिनं नानि नवने निस्सार्तं चरणां निरुतं भूर्जसु
गंधैर्विलिखेत्प्रथमपदलान्वितम् ११६ नामान्वितं कर्णिकायां दले षजयपायुनं पूजिनं विधुनं वाहो सर्पभीतिनिवारकं ११७
रोचनाहिमकपूर्वकुंभैः प्रथमालिखेत् वोडशारखैर्युक्तं दलं मापाद्यकार्थिकं ११८ नस्योपरिष्ठान् दान्त्रिंशदलं ध्वंजनयुक्तदलां

११९ नखेधनूरसेनपरस्परव्यतिभिन्नं चतुःकोणद्वयं कलाधसुकोणे पुनन्मध्ये षषिरामिनि विलिख्य मध्ये रवेष्टिनं नाम कलापूजिनं
निरवान्तरहरं अग्निर्देवता ११५ सर्पभयहरमष्टाविंशमाह भूर्जदतिरोचनादिना भूर्जेष्टदलं कला मध्ये नाम दलेषु हंसरनिदि
स्य कदेको नञ्चि शमाह रोचनेनि हिमचंदनं कोस्य पात्रे रोचनादिना वोडशदले मापादलेषु खरान् नदपरिकादिसाना एषु क्तं
देवता १६

मं० नै० उ० दनं चतुर्विंशमाह चतुर्दश दनिमारुतोयः १०२ चरमेनय नस्मिनयं नखं उपुनोच्छिष्टोदनेकाकेभ्योदनेफलं वायुर्देवता १०४ शान्तिकरं च विंशमाह

प्रमहं प्रदहेत्कोकं लोकां विंशदिनावधि विशेषेण सत्त्वं दग्धं शनोर्लोकांतरप्रद १०० चतुर्दशलिखितानामदत्तगंभीरिमारुतं उ
लूककांकरते न भूर्जभूतदिनो न शि १०१ क्रवस्त्रधरोरक्तपुष्पमात्मनुलेपनः लिखित्वा पूजयेद्यं चैरक्तैः पुष्पैश्च चंदनैः १०२ कुमारं
भोजयेन्निर्यदद्यात्तस्यैव दक्षिणां एवं विंशतिवस्त्राणां विधाय चरमेदिने १०३ यंत्रं तत्त्वं दग्धः कृत्वा सिपेदुच्छिष्टभ्योदने दनेन सि
न्वायसेभ्य उच्चादोजायनेरियोः १०४ रोचनामृगकर्पूरकुंकुमैः शोभनेदिने भूर्जप्रदिलिखेद्यं त्रैलोक्याजानि जातया १०५ प्राक्प्र
मक्कदक्षिणे दक्षे कुर्याद्विस्वाष्टकं समं एवमेकोनपंचाशज्जायनेकोष्टकारगतः १०६ दिग्गतां निमयं क्रिस्थान् चतुर्विंशतिवर्णकान्
उक्ता एहि जकांता न लिखेच्चंद्रसमान् चितान् १०७ नंदनं गतपंक्तिस्थानुनादिभानां श्वषोडशं नंदनस्थान्मादि सांतां नंदकारं शिष्ट १०८
कोष्टके १०९ रेखाप्रेषु त्रिभूला निर्वर्तितरदसंख्यया उपर्यधत्वि भूत्वा नंदं दक्षे स्वासप्तकं लिखेत् १०६ एवं विलिख्य नंदं यंत्रं पूजयेद्विद्व
सत्रयं चंडीपाठकरो विप्रभोजको भूमिप्रयाकः १०९ ततोत्प्रेहत्रया विष्टं धारयेद्दोष्टिवागले उपसर्गः कलिः कृत्याः शर्मया निविधा
राचनेति भूर्जरोचनादिभिः पूर्वापरायनं दक्षिणे नराय नं च रेखाष्टकं कृत्वा नत्रवैहिः कोष्टपंक्तिवीशानादिभाना नंदनं पंक्तिषु नादिभानान्

अभिभयहरमेकविंशतिमाह वनेनामेति क्रियेति अमुकस्याभिभयंहरेति भुजया वाहुनामावकादेवना ८२ विहेषणं द्वाविंशमाह मायेति भूर्जोरिपुरु
 धिरणकाकपक्षलेखिन्या चतुर्दले द्विअंही अमुकौ द्वेषयति मध्येदलेषा यिविलिख्यरात्रौ संपूज्यमेकीरुधिरमुक्तमोदनं निवेद्यैकं नारी संपूज्ययंत्रे शंभो-
 वेष्टिनं चतुरस्त्रेण यंत्रमेतन्न शुसाधितं गोरो चनाचंदनाभ्यां भूर्जोलिखितं भुजसं ८३ एतद्यंत्रं हनंतीह नयेण भुजया धृतं निवर्त
 यदभिभयं सदनं पिचसं स्थितं ८४ मोयापुटिनमंकारं नाम कर्मयुतं लिखेत् चतुर्दले त्रैलोक्यावापसच्छदजानयः ८५ दलेष
 यिगया लेखां विरोधैः स्वतजेन न निशिसंपूज्यं न चं नमोद न विनिवेश्येत् ८६ अजाराधिरसंयुक्तं नारीमिकां च भोजयेत् ननः
 श्मशाने शर्वस्य गेहे वा शून्यमं शिरं द्य निखानं न हि योर्ध्वं जनयेद् विराड्भुवं विहेषणमिदं यंत्रं योमा एणमुच्यते ८७ लिखेद्
 षट्दले यन्नेनामं च र्मास्त्रसंयुटं दिगदले षष्य च र्मे विदिगदलगमस्त्रिकम् ८८ हनेन यंत्रं स वेष्टयेत् र्मण वेष्टयेत् ननं श्मशानां गार
 मेयासं विद्यैः काकच्छदो म्यया ८९ लेखिन्या लिखितं यंत्रं कपाले नरसंभवे संछाद्य भस्मना तरणोपरि प्रज्वालयेद्दसुं ९० ॥

श्मशानादौ निखाने द्वेष सिद्धिः गोरो देवता मारयं न यो विंशमाह लिखेत्ति विंशं गारमेष रक्तविषैः काकपक्षलेखिन्या नरकपाले षट्दलान्नः हुंफ
 न फट्हुमिनिदिगदलेषु हुंकोणदलेषु फटननः पञ्च हनेन च चर्मण वेष्टय संपूज्य भस्मनि प्राक्ष्योपरि स्वल्पमग्निं प्रत्यहं प्रज्वालयेद्यथा दिनं विं
 शत्यासवे कपालस्य दाहः एवमुक्तं फलसिद्धिः अत्र देवता ९६ ॥

मं० नै० दीजयं स सदृशमाह भुवि निभृगुः सः आकाशो हः विधिः कः स्मृतः संहः च न्हीरः एतान् प्राणीं इ विभूषितान् दीविं इ युगान् निनय द्रुकं सह कल
न० २० दीमिति सुदी देवता ८३ आकर्षणयन्मष्टा दृशमाह चतुर्दलमिति स्वकधिरयुक्त रक्तचंदनैः कोधवीजं रुद्रो देवता ८५ त्रिपुरायंत्रमेकोनविं
स० २९ १०३४
भृवाका वा विधिस्मात्स्वच्छेन प्राणीं इ भूषितान् लिखेदृष्टारयस्य कालिकायां दलेषादि ८२ गोरोचना चंदनाभ्यां भूर्जो भूर्व
हिनत्रयम् धृतं हेमगणं कंठेनार्थावाकोन ई एवा ८३ सीभाय दं वीजयंत्रं भोक्तं शोभस्य नाशने चतुर्दलं लिखेद्भूर्जो स्वासुभृ
करक्तचंदनैः ८४ कर्णिकायां साधुनाम कोधवीजदलेषादि तद्यंत्रं पूजयित्वा ज्योतिर्ममा हृष्टि कद्रवेन ८५ चंदकोणे लिखे
त्ताम्रवाज्यनोभवमध्यां कोणे भृगुर्यैः सर्गभूर्जो र्जिचनार्थेन ८६ पूजितं त्रिपुरायंत्रं द्युतां न विनिकेशु तम् दृष्ट्वा कर्ष
णं नेन भवेत्समाहम धृतः ८७ हरिद्वेणो लिखेदृष्ट दलं च त्वास्त कर्णिकम् शिलायां मध्यतोनाम भूवी जदस्मम धृतः ८८ ॥
तदभ्यर्चयिष्याथाथ शिलायां निखने नक्षिणौ वाहे विवादे जायेत प्रतिवाद्यास्पृष्ट एणं ८९ हेतौ मसमा लिख्य किं या कर्मस
मन्त्रितं दिष्टुं दगाह हिर्लस्व्यं वकाराणं चतुष्टयम् ९० ॥ ८९ ॥ दृशमाह षट्कोणरति वाकरं मनोभवः को भृगुः सः औसर्गस्यो त्रिपुरा

देवता ८७ मुखमुदणं विशमाह हरिदयेति हरिदया शिलायां त्रिकोणमध्यमष्टदलं कृत्वा त्रिकोणेनाम दले युक्तं कृत्वा संपूज्य शिलां नरेण वि
॥ वायनिखने दिशु कृत्वा सिद्धिः भूमिर्देवता ९० ९० ॥

चतुर्दशमहाकात्यायनपुष्पायेनयुक्तं अजापारुभक्तेनवतिंदद्यात् उक्तफलसिद्धिः गोरीदेवता ७२ त्वसिन् यन्त्रं च दशमाह दैर्भार्येति भ
 भूर्जेशेचनयामं नीदृष्टप्रभुवशीकृतौ ७० शत्रुप्रतिकर्तेयं देहदेयनं प्रविभ्यसेत् कृताया एजिकापिष्टैः शत्रुपादरजोयुतैः ७१॥
 प्रतिमां पूजयित्वा नां च त्सीषार्थं निस्वानयेत् अजामृगयुक्तभक्तेन कलभूने वतिं हरेत् ७२ महाकात्यायदिक्पेभ्यो ह्येषु व्याज्य
 संयुतम् एवं कर्ते भवदृष्टो नृपो दृष्टोपि नत्स एणत् ७३ दैर्भार्यप्रमनं भर्तुं वशकृदं च मुच्यते नाशी एषीस्विनष्ठासि करं सौभा
 यवर्द्धनम् ७४ कुर्यादष्टदत्तं पद्मं च नृकोणाल्पकर्णिकं च नृः कोणलिखे कौषीयावीजानां चितयं शुभं ७५ ननः स्वनायनामार्ण
 न्मायावीजत्रयं पुनः दिक्पञ्चेति निर्दिशुनां विदिक् पञ्चैष्ये कदाः ७६ भूर्जसिन्त्रयोदश्यां रोचनानामि कुंकुमैः विलिख्योत्तर
 दिश्वकोनिश्वर्चने सप्तवारान् ७७ नदं नेभोजयेत्सप्तपतिषु च त्विनाः स्त्रियः त्वस्तिना श्रीनयेष आनयं च पा नृगनं द्युतं ७८ रूपसौ
 भायसंपत्तिक रं धियवशंवदं संभोक्तं त्वस्तिनायं च कामिनीनामभीष्टदं ७९ गोरोचनं कुंकुमाभ्यां भूर्जेषु दत्तमातिस्त्रिंशकारपु
 णं नाम कारिकायां दत्ते दिजां ८० दिनद्वयं विष्णारिषुष्टाभोजयित्वा गतान्त्रयं कंठे धृतं भर्तुं वश्यकारकं यन्त्रमुत्तमं ८१॥ (शुक्लत्रयोद
 चनाकसुरैकुंकुमैश्चतुःकोणगर्भमष्टदलं कृत्वा मायानयपुटिनं भर्तुनामोत्तं विलिख्यदिक्पञ्चेषु मायानयं कोणदले एकां कृत्वा नरदि
 नावर्चतल्लिना देवता ७८ षोडशमाह गोरोचने निसादेव तनसादनिमध्ये पत्रेषु ही गोरी देवता ८१॥

हिंसीसिणदिशंहिन्मनिमृष्टुदिसुगवीजस्यदशकंदशकं नदुपर्यपिचतुःकोणं एतद्यंत्रं कृत्स्नमृत्कनगाले प्रोदरेभ्यस्पतंसं प्रज्यदेवेदेवतिसं प्रार्थ्य
हस्तमानेनैनिखापपूरयदिति गणयनिर्देवता ६२ नृपवय्यकरं ह्यदशमाह यद्यमिति चतुर्दलेद्युतनाम जैनमरति प्रतिदलं अजितेदतिद
एतद्यंत्रं गणयनेरुदरांनः प्रविन्यसेन विनिर्मितस्य सुस्तेनादानया कृत्स्नयामृदा ६२ यंचोपचारैर्गणपंसंपूज्यामुं मनुं पकेन देवेदेव
गणध्वससुरासुरनमस्कृतः ६३ देवदत्तं ममायनं पावज्जीवं कुरु प्रभो हस्तमानेनैयरागर्तं तं विन्यस्य गणाधिपं संपूयेन्मत्ताग
र्तमेवं वश्यो भवेन्नरः ६० यद्यंचतुर्दलं कृत्वा साध्याख्यानेनैकार्णिकं नोशनमृदमावर्ण्य नल्लिखेदलं चतुष्टयं ६५ अजितेद
न्यधिलिखेदसिणोत्तरपत्रयोः भूर्जोत्तरे च नाचंद्रके मरीगुरुभिः पुनः ६६ त्रिदिनं नियमो मंत्रं संपूज्यान्हि चतुर्थके एकसंभोग्
विधेद्रं यत्र नाहोविधायै न ६० देमादिसंस्थितं भूयो वशा कृददर्थं नदधि चतुर्दलांत विलिखेन्मभ्यनामक्रियाचितं ६८ दलेषु मा
यावीजानि भूर्जोत्तरे च नयासु धौ दधिस्थिते तु तद्यंत्रे भूम्यं आश्रकरो मेवेत् ६८ चतुरस्रं लिखेत्साध्यानामार्णनैर्गिरिजायुतान् ॥
क्षिणे नरदत्तयोराधिकं अजितेदेवता ६० भूम्यवश्यकरं त्रयोदशमाह चतुर्दले निष्क्रियावशयेति नद्युर्गोरीदेवता ६८ दृष्टवश्यकरं चतुर्दश
माह चतुरस्रं रति मायावीजगता न्यामार्णो ध्वतुरस्त्रिचिलिख्यदृष्टया दस्यो युक्तशजिकापिष्ठकृतनम्रानि मायास्त्रिदिव्यस्य गोचुत्सी निखापकृत्स्न

दुष्टमोहनं न वममाह दृष्टादनि भूर्जोस्तरक्तेन साध्यागर्ममृष्टदलं विलिख्य दिग्दले ५० ग्रां विदिग्दलेषु सः दमिविलिख्य वनदयेन संवेष्ट्य प्राणान् संस्थाप्य
 सपृज्पदुग्धसिंघं वस्य करं गौरीदेवना जयदं दशममाह चतुरस्रदनि विषमः अन्नं न अः भृगुः सः चतुर्दले हीमा हीमिति विलिख्य नदपर्मृष्टदलं कृत्वा दि
 लिखेदृष्टदलं पद्मं भूर्जं च कीवतो सृजा कर्णिकागनसाध्याख्यं मायायुक्तककुदलं ५१ सगानभृगुयुक्तकोणं दानादित्य केहि नं कृत्वा सु
 स्थापनं यंत्रं सपृज्पदुग्धसिंघेन ५२ एकविंशतिरात्रेण दुष्टाः सुर्वशवर्जिनः चैतुरेस्ते विद्यानं तगानं मायापुटं भृगुं ५३ लिखित्वा नस्य
 कोलेषु ककुपस्व पिदलाष्टकम् रोहरोधसंभस्थो भद्रिगदलेषु क्रमाविलेखेत् ५४ कोणेषु सगिचैरसंभूर्जो च न यो न मे यशवद्वयमथ
 स्थपमध्यस्थाध्यापि ध्यात्विनं ५५ पूजयेद्दं धपुष्यादिर्दिकपानभ्यो वलिहरेन व्यवहारो विवदे च दशकं दानवे रमनि ५६ यंत्रमेतन्ममा ५७
 स्थानं जयेदं मानवर्द्धनं यावज्जीव वशीकर्तुं नरं यंत्रं न यो च्यते ५८ अन्नामसुक्ताजमृदं रचनान्न कैलिलेखेत् भूर्जजानीयुलेख्य ५९
 चतुरस्रं मनोहरं ५९ नत्वा दपन्ने सलेख्य मायावीजस्य सप्तकं द्वितीयायां भूएणिर्मायाकोमो नमगणे दपुटं ५९ तृतीयायां सुएण्युक्ते
 माया सपुटः स्मरः लेख्यं यन्त्रै चतुर्थ्यां तु मायावीजचतुष्टयं ६० चतुरस्याद्वहिर्दिशुदशवीजार्पणे स्थितुः विलेख्यादक्षिणं हित्वा ॥

यशो धकंभस्थो भद्रनिवर्तद्वंद्विदिकपत्रेषु दनि चरमः सुगौरीदेवनाः ५६ गणेशयंत्रमेकादशमाह यावदिति चतुरस्रं कृत्वा मध्ये पंक्ति
 आधाय माया सप्तकं द्वितीयायां कांहीर्त्वा गदेवदनं वशयगदनि तृतीयायां कोहीर्त्वा कोहीर्त्वा मिति चतुर्थ्यां माया चतुष्कं चतुरस्रं द

मंटी नो हृदयदले अमूलरुहिना नस्थानलुगान क्त्वा विभूलां कि न कीरो न चतुरस्त्रेण वेष्टयेन्मानका देवता द्वये यंत्रद्वयं क्त्वा संयोग्य कीष्टि व्यां निस्वे
न २२ न्मातृका देवता ४२ विवादेन पावहं सप्तममाह लिखेदिति गोरी देवता ४३ धनिक वश्य कारमष्टममाह धनिक इति भूर्जदले भूर्ज गोरी देवता ४३

४३२

सप्तरेखात्मकं कार्यं नैव नुक्कोणमुनमं ईणादि द्वादशदले च्चैत्रि वस्त्रसंयुगान् ३६ वार्धनं विलित्य नमस्कृत्य चतुरस्त्रेण वेष्टयेत्
चतुरस्त्रस्य कोलेषु त्रिभूला नि स मालिखेत् ४० भूर्जपत्रद्वयै तनयै नं क्त्वा षष्ठ्य कर्पुनः यंत्रद्वयपुटं क्त्वा षष्ठ्या पर्यक्त्वा पुटं ४१
नस्थोपरि शिलां न्यसेत् न स्थितो मातृकां जयेत् एवं कृते साधकः स्याद्दीनत्रा सो यमादपि ४२ सर्वरोग समूहाच्च किंपुनः राजमंदला
नं स्त्रिरेव च नुर्दलं पद्मं साध्याया पुक्त कर्त्तिकं ४३ रोचना कुंकुमाभ्यां न भूर्जमाया पुनच्छदं नयत्रं पयसि न्यस्या विवादि नैवरे न ४४
जयमाप्नोति गदि नैव वाद विजयाभिधं धनिके यच्च निद्रव्यं दानाया क्ते धमले के ४५ धनिक स्य वशी कृत्तै यंत्रं भूर्जदले लिखेत् रोचना
कुंकुमाभ्यां नृपवकोणं साध्या कर्त्तिकम् ४६ कोणप्रेकोणमध्ये पुक्तो मान् हृदयसंलिखेत् न हनेन च संवेष्टव्यं भीयया वेष्टयेद्दहिः ४७ पु
नर्हनेन संवेष्टव्यं पुजयेत् स वासयान् पुरे न सप्तशतीं निर्यमं ते होमं शानाधिकं म् ४८ क्त्वा संभोजयेत् च्चन्द्र्यां धरेद्यत्र गत्स्व के एवं धनी
वशमि तो न या च निद्र दान्माधं ४९ दुष्टाश्च जसमी पस्थाः ये भुज्यं कर्त्तव्ये यदा न दायं च प्रकुर्वीत दुष्टमोहन संज्ञकं ५०॥

रेखाद्वयेपर्यधश्चकोष्ठत्रयेऽर्थीष्टः श्रीमितिरेखाप्रकोष्ठयोरेतिमंसं सर्गिणं विसर्गयुनं स्तः शरावयोर्मध्येदहेन अत्र श्रीहेवमचतुर्थदिव्यसंभनमाह
 २८ दिव्यतिपापकर्तृषिदिव्ययत्रधारणाज्यनिर्गौरीदेवता ३० राजमोहनयक्षममाह मायेति अष्टदलंकृतममध्येर्होसः देवदत्तसः हीमिति विलि
 रेखाद्वयोपर्यधश्चकोष्ठात्रयेनयल्लिरत्नमध्यकोष्ठेससर्गसंश्रीवीजपा^{र्षी}र्चकोष्ठयोः २९ एतदोचनयाभूर्जल्लिरत्नावहिनादहेत् शराव
 संपुटस्थत्रनेतिभस्मसमुदरेत् २८ इत्येनसहपीतंनस्वामिवश्यकरंपरं दिष्टुमायाचतुष्कालसाध्यं दकोणमध्यनः ३० कोणेषु
 कोणमध्येषु मायावीजं समालिखेत् रोचनाकुंकुमाभ्यां तु भूर्जपत्रे मनोहरं ३१ नत् शरावस्थितं पूज्यजेन्मायां नदयनः शरावा
 नत्समादाय वध्वाभूर्जनिमानवः ३२ अन्नितोपादिदिव्येषु चिद्दिहादिवर्जिनः जपमासो नितद्रत्नौकर्तृषिपेनत्तमावतः ३३ दिव्य
 संभनसंज्ञं च यत्र मुनममीरितं मायाविसर्गसांर्ग्यां पाण्डितं नाममध्यनः ३४ दलेषु ससर्गाद्व्योसौ मायापुटिनौ लिरवेत् चतुरसे
 एतत्पुत्रं वेष्टयेद्भूर्जपत्रके ३५ रोचनाकुंकुमाभ्यां मुल्लिरत्नां च्छरावयोः मसिष्यपूजयेत् ससरात्रं मायां जयेन्नरः ३६ राजमोहनना
 दयं न नृप रुषं हरेत् कुट्टाज्जिवांसो नृपतेरात्मा रक्षाविधिसया ३७ मृत्युं जयापि धंयं त्रपद्ममर्कदलं लिखेत् कर्त्तृकायां चतुष्कोले लि
 छर्होसः होमिति लिखेत् उपरिभूय रंगौशेदेवता ३४ ३६ मृत्युं जपं षष्ठमाह कुट्टादिति सप्तरेखाम्बकचतुःकोणेऽमुकस्य मृत्युवशायेति विलिख्योपरि

मंटीनौ
न २०
१३३

पंचमाह अथ नि स्वैराक्या नियुक्ता निअष्टयुगपञ्चसिञ्जे इष्टाह्ना नियसेद शो नो बुजन्मनायस्त्रे न नद हदत्स वेष्टयेत् लोहाति हे मरुप्यनामालि अत्रमान
कोदेवता २० हिमीयमाह मायेति रेखाद्वयकृतेन भूयुरेण चतुः कोणे नष्टी न चंदन २२ वाडवान विधान् २३ यत्सत्समांसं २४ अत्र गोरीदेवता २५ नृमीयमाह
गोरोचना कुंकुमाभ्यां लेख्यमाजानि जातयां कारि का साध्यनामाद्यं वर्गयुक्ताष्टपञ्चकम् २७ नदेष्वेन स्वस्थाष्टयुगपञ्चोर्जन्म
ना नदेष्वेयं जिह्वनैः पूजयेत्स सवासरान् २८ नृपादिपुरुषाः सर्वे योषि नोपिवशाधुवं मोहनास्त्विमहायने पूजिते सुर्नसंशयः २९
भूर्जो दौलिस्त्रिंशो ह वैष्टिनां शिरसा धृतं नृपाणां दृष्टसत्त्वानां वशीकराणामुत्तमं ३० मायासंघटिनां साध्याभिर्धामादौ समास्त्रिंशे न
नस्यात्र पर्यध्वं ध्यायिमां योजयितुं ३१ नदेष्वेदं पूरेण रेखाद्वितयसंयुता भूर्जपत्रे विलिखितं शोचनायां तैर्कुंकुमैः ३२ अना
मारक्तसंनिधौ पूजितं वष्टाकृन्मतं कुमारी वाडवान् नारीः संभोज्य विनोदं हलि ३३ रक्तपुष्पान्नपत्रलैर्ध्वशीकराणां सिद्धये सर्वस्वमपह
र्तुं च निचहुं चार्धनीधरे ३४ पंचवाहै विधुर्भेदंगच्छेद्दुमिपानि नरः कोपाक्रान्तमना भूयः शान्तकोपस्तुमर्चयेत् ३५ वीजैर्नैः सुदन्तप्रदे
यं तर्पणं कर्मनीधिमिः दक्षिणेन शयनरेखाद्वयं कल्पा मध्ये नामाविलिखितं ३६ नारायणालयायुतं प्रणवश्रीपुटितं ॐ श्रीदेवं नमो ॐ इति २७

गायत्रीमाह यन्नेति ११ मध्यवीजेन परे वनाकं यन्त्रं नष्टीजेन तदसिनेमान्कया १२ संयानो हुन शेषेन सिक्तं भूतस्त्रिपिरूपास्य जप्यासायथा अद्वं
 अस्तरे ए ओं हं यं वं लं डं कं खं घं गं जं चं ङं नं णं टं डं डं नं यं धं दं मं पं कं भं वं शं षं स रयं द्विचत्वारिंशदणु भूतस्त्रिपिः तदुक्तं शारदायां पंचदशस्क
 संधिवर्णव्योमरो निजनधरा अन्त्यमादां हिनीयं च चतुर्थमध्यगं कमात् पंचवर्गस्य णि सुवर्तनं येनेदुभिः सहति अस्यादक्षिणा मूर्तिर्नृबिः गाय
 त्री ह्रदः वर्णव्यग्रीदेवता हं यं वं लं डं डं कं खं घं गं शिरः अंचं ङं नं णं टं डं डं नं यं धं दं मं पं कं भं वं अं खं गुदं लिंगं नमिस्त्वं कं रं भू
 रवो नायं नं गायत्री स्मृता सर्वेष्टसिद्धिदा वहिः प्राणप्रतिष्ठाया मनु सर्वत्र वेष्टयेत् ११ स्थलां नृजैर्भूर्जपत्रेक्षोर्मेवा नाडपत्रके ॥
 यन्त्रे विलिच्यं गुलिकां वद्धा सूत्रेण वेष्टयेत् १२ लास्य क्वादिने स्वं णं रयेनां सेष चाक्षिपेत् मध्यवीजेन संपूज्य देवं मान्कया विवा १३
 संजय हत्वा यं पातसिक्तं कृत्वा नियोजयेत् मूर्द्धिवा ह गले वापि तत्र दिष्टार्थसिद्धये १४ यंत्रसेवनसक्तेनोपास्या भूतलक्षिः परां पयो
 पासितया सर्वश्च सिद्धिः प्रजायते १५ अथ वप्यकरं यंत्रमुच्यते क्षिप्रसिद्धिदम् मस्मादिष्टो धिने कांस्यभाजनं षट्कलितेन १६
 मन्त्रके तां शरो वृक्षं विधुन वस्त्रा ल्यस्योर्ध्वं प्रादक्षिणे दक्षपश्चिम वक्त्रे सुहादिपंचकं चरयोरग्रे मूलकूर्परं गुलिसंधिमणिं चं धेषु जादिकर्जान्ध
 ११ नं तपोरप्रमूलजन्तुगुलिसंधिगुल्फे सुगादिनादी उदरपाध्वं दयनाभिपृष्ठं पुमादिवर्गं गुत्सुतदुभूमध्येषु श्वासा ल्यसेत् एव वर्णल्यस्य
 १२ त्रिनेत्रं वरास्फाला पुनः कंकालक रासुरा मनां ध्यायेत् एवं ध्यात्वा लक्षप्रजप्यायुते नित्यैर्हत्वा सिद्धमं नो भवति एवं भूतलक्षिपि सेवया वश्य

= आर्द्रा त्रीत्यामवमनेष्टयेत्

१६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अर्केति अर्कदुग्धाक्तं जीहोमाद्रियुनेन नाशः ४० गुटपुनांराजीहनास्यनि यंवशयेन दध्यक्तां हुत्वा वैश्यं ४१ होममानमष्टोत्तरशतं सर्वत्र ४२ अथ
 सर्गाउपद्रवाः ४४ शीतचदनं ४५ वशवदं वशकन ४६ सूर्यसूत्रग्रहतिथिं यमानिर्धिर्मनमित्यर्थः ४७ किंकर्प्यदिनि आसुर्यामुषासिनायानृपाहयोर्व
 अर्कदुग्धाक्तं न होमां जनेनेनाशयते रिपोः पलाशो धनहीने नौ सप्ताहं घनसंयुतां ४८ साधकोराजिको हुत्वा ब्राह्मणं वशयेद्दधु
 वं स्तत्रियं नृगताभ्यक्तो वैश्यं दधियुतां च नां ४९ भूदं लवणसंयुक्तां हुत्वा तां साष्टकं शतं ५० आसुरीसामिधो हुत्वा मध्वक्तो लभते नि
 धिं ४२ नो यपूर्णे च दं मं चौराजिकापल्लवाच्चिने आवात्वनं पूजायित्वा शतं मूलेन मंत्रयेत् ४३ नेनाभिधिं मंत्रुजर्मलद्वयी र्धयोक्तं
 जः उपसर्गाः पलायने पश्चिज्यानि दूरतः ४४ आसुरीकुसुमं यौतधियं गुं नागकेशं मनःशलाचं नगरमेतत्सर्वं विचूर्णितं ४५
 शनाभिमंत्रितं साध्यमृद्धिस्थितं वशंवदं निवकाष्टमग्निहोमं सुरीसर्वपाचितां ४६ अष्टोत्तरशतं हुत्वा सप्ताहं दक्षिणा मुस्यः
 दिदध्यादिचिरान् शत्रुं सूर्यसूत्रग्रहातिथिं ४७ किंकर्प्यान्तृपतिः क्रुद्धः किंकर्प्युरियुवो विला क्रुद्धः कालेऽधिकं क्रुर्प्यर्हसुशेचेदुपा
 ॥ ५८ ग्रंथार्धने कानां लोकापमंत्रां गुप्ततमामया हिनायसुधियां स्व्याना विसरादुपरस्यते ४८ ॥ ८८ शर्वर्त्तिनः सुरित्यर्थः कालेनाप्या
 कोनपराभूयते किमुना नैः अथर्ववेदे होमसर्वोपद्रवशानि कृत्स्नं त्रः ४८ ग्रंथविसारभयान्मंत्रकथनमुपसंहरति ग्रंथानि नि ४८ ॥

मं टी नौ
न ३६
३६

पावकनापिकाखाहा षडंगमाह तदिति ३० द्यौरेकादशालैः वाणरसाक्षरैः पंचषष्पलैः हुं फट्स्वाहेति च त्वा रो व र्णाः सर्वे षंगेषु क्तवर्णो निना च्याः
३१ ध्यानमाह शरदिति अभयां कुशवा मयोः जगदिशक्ति युने पीठं मेद्रायुधैः पूजावो ध्या पंचांगमिति मूलशालापचय व्यक्तान्विता ३४ मध्वको
देवताप्रणवो जी जंशक्तिः पावकनापिका तल्लवार्कैः शिरो गार्थैः शिरसा ससाक्षरैर्मना ३० वर्माष्टभिर्नवमीशैः स्ववाणरसाक्षरैः
हुं फट्स्वाहेति सर्वत्रपठेद्दंगेषु साधकः ३१ शरचंद्रकांतिर्वरभीति भूत्वं शृणु ह तपश्चैर्दधानां वृजस्थं विभूषां वराद्यादि यज्ञोप
पीतामदेष्यवपुर्नैकरोत्वासीतः ३२ अयुतं प्रजपेन्मंत्रं जुहया न दशांशतः धृता क राजि कां व त्तेततः सिद्धै भवेन्मनुः ३३ पंचांगीमा
सुदीपं चोपहीत्वा मंत्रयेत्तशतं नया धूपि न मात्मानयो जिघ्रैस्त्ववशे भवेत् ३४ मध्वतामा सुदीहृत्वा सहस्रं वश्ये ज्ञानं शजिका प्र
तिमां कृत्वा द्वांघ्रिर्मस्तकावधि ३५ अष्टोत्तरशतं खंडान् जुहया दसिनां कृता न् नायः प्रति कर्ते र्वा मया दादि हवनं चरेत् ३६ एवं प्र
कृष्णोत्सवाहं एजीधं न विने न ले स सयत्नोपमृत्तं दा सो जाये न मंत्रिणः ३७ स्त्री लि गो हः प्रकर्तव्यो मंत्रे ना शिवशी क्तो कटुनै
लान्वितां एजीधं न वपुर्नारिणः ३८ नामयुग्मनुना हुत्वा ज्वरिणं कुरुते रिपुं एवं राजीं सल्लवणां हुत्वा रफो टो भवेत्दरः ३९ ॥
खंडधुनसौ द्रशुतां ३५ सपत्नोपि शत्रुरपि देहांतपर्यंतं सः स्थानं किमुता न्यः ३७ स्त्री लि गो ह दति नार्या वशी करणे प्रतिमा हि मादो मंत्रे स्थिता नान्म
मुकस्थेति स्थाने देवदत्ता य उपविष्टस्येत्यादीनां षष्ठ्यानां पदानां उपविष्टा याः सुमाया रम्या धृति विधेयः ३९ ॥

धीसंयुताऽयुताः श्रद्धया मिनी श्रयुता विदुयुताः नेनयस्तुमिति पिंडं स्वरूपमन्यन् २८ मंत्रोपपञ्चो नमो विवित्राय धर्मलेखकाय पयमवाहिकाधिकारिले प
 न्नेनमसंपन्नं कथय २९ स्वाहेति षडंगमाह समेतिवसवो धी अंगा निषह ध्यानमाह किरीटेति ३० आसुरी मंत्रमाह कटुकेति अनंतमार्के शवः ३१
 पल्यं कथय इहं स्वाहाष्टविंशदक्षरः मंत्रोपां चित्रशस्त्रं सर्वदुःखोद्यनाशनः ३२ सप्तवल्नववस्वगनेत्रां लोर्मनुसंभवैः प्रविधा
 षडंगानि चित्रं यत्कर्म लेखकं ३३ किरीटी ज्वलं च स्त्रभूषणमिशमं विचित्रासनासी नमिह प्रभास्यं नृणां पापपुण्यानि पञ्चैल्लिखंतं
 भजे चित्रशं सखायं यमस्य ३४ मिहिमं नमि मयुसां जपतां चित्रशर्कः प्रसन्नो गणयेत्पुण्यं नैव पापं कदाचन ३५ वर्षाभ्यय
 र्वेदे क्तमासुरा विधिमनुमं कटुके कटुकोत्तेन पुत्रे न सुभगे पदं ३६ अनंतसुरिरक्तेने पदस्यादक्त वाससे अथ वर्षणस्य दुरिनेके
 शवो घोभगीवली ३७ अघोरकर्मशब्दोत्तैकारिके अमुकस्य च गतिरह दृष्टकथयिष्यमगदं दह ३८ दह सुमस्य नंदी नो दह युष्मं प्रवृ
 द्धं भृगुः स्यात्तीह दयं दह दहं हन हयं ३९ पंचयुग्मं तावदने दह नावन पचैति च यावन्मेव शमाया निवर्मा र्त्ता वहि वलभा ३९ ना
 सुरी मंत्रोदशोत्तरशानाक्षरः अंगिरास्य न्मविष्णुदेवि राट्टुर्मासुरी मन्ता ३९ ॥ १० ॥ लीरः भगिरा युतः २५ कर्ण उ २६ नंदी मः भृगुः स
 दह सुमस्य मन्त्रोदह दह प्रवृत्तात्तरपदं दह नदनपव पत्ताय दह मवमचणवक्त्रे वशमायाति दुःकृता ३९ लीरः भगिरा युतः २५ कर्ण उ २६ नंदी मः भृगुः स
 पथा जौ कटुककटुकपत्रे सुभगा आसुरी रक्ते रक्त वाससे अथ वर्षणस्य दुरिने अघोरे अघोरकर्मकारिकेऽमुकस्य गतिरह २७ उपां विषस्य दं
 नोदह २ प्रवृद्धस्य दयं दह ३ हन २ पच २ तावदह नावन पच यावन्मेव शमाया निदुःकटस्वाहेति आसुरी सत्तादगा दिवता २८ ॥

३ अथ आसुरी मंत्रमप्यंगिरा न्मविः विराट्छन्दः आसुरी देवता अं विनं स्वाहा शक्तिः प्रमापिषति ध्यै न पेविनी योगः ॥

शिवमंत्रेण उं नमः शिवायेति षट्सरेण सतः सदाचारान् १२ यममंत्रमाह प्रणवेति प्रणवं उं अंकुशः कोटस्तेखाहीं पाशं अंकुजं लंबः भौतिके दु
मनरे विदुः पुनर्वै प्रमंजनी यः स्पष्टमन्यते १३ यथा उं कोही आवैवैव खनाय धर्म राजापभक्तो नुग्रहकते नमः शमनहैव नो यमदेव गार्कः १४ वटगमा
२८ कोही अवैवैव सत्पुधमराजपभक्तो नुग्रहकते नमः २८ ॥ ३८ नमः शिवाय ॥
५ पतस्रस्याकप्यजेद्विगतं निरुहो ममाचरेत् शिवमंत्रेण तस्यानेवास्त्राणान् भोजयेत् शनैः ११९ वं कर्तै समलोष्टसिद्धिर्भवति निश्चि
५ तं अश्वधर्मराजमंत्रः प्रणवाकुशहृदये वा पाशः वभौतिके दुमन १२ वैवस्वनाय धर्मातिराजवर्णाः प्रमंजनीः १३ भक्तानुग्रहं वर्ण
५ नेहने नमउदीरकं चतुर्विंशतिवर्णात्मा मंत्रं शमनहैवतः ११४ विनेत्रपंचवाणां हि सुभां रौं रंगकं मनोः विधाय सावधानेन म
५ नसा चिंतयेधमं ११५ पाशः समुनमेव सन्निभननुः प्रद्योतनस्यामजो नृणां पुण्यकृता शुभावहवर्गः पापीयसां दुःखकृतां श्रीमद्
५ शिवादिक्पनिर्महिषगोभूषाभरात्कनो व्ययः सयनिनीयानिः पितृगणस्वामी यमोदं भूतं १६ अभ्यखोयं सतामंत्रैः सकलाय हि
५ नाशनः नरकपासिरोहस्यादिपुमिनि निवर्तकः १७ अथा चित्रपुममंत्रः प्रणवो हृदि विन्मोय धर्मातिरेखे काप्यं च यमवां नो हि को
५ धीनिका रिणेष हमुच्चरेत् १८ सुधातदी किं यो न कोरीव न्द्रियाधीश संयुताः यामिनीं शंयुतां मुहुर्जैः संयमं नरैः १९ ॥
॥ विनेत्रेति उं कोही तदययनमदगादि अं वै शिरोरगादि १५ ध्यानमाह पाशदनिमजलमेधामः प्रद्योतनो रविसस्य पुनः पुण्यवतां सौम्यः प्रकी
यसां भीषणः १६ सिद्धमन्त्रादय्यादि पूजाभावः १७ चित्रपुममन्त्रमाह एव रति १८ सुधापः नदीमः किं यत्तः उन्काशीवः वन्दीहः पस्वरूपेति अम

धनप्रापकं प्रयोगमाह आतरिति १०० संपदावहं प्रयोगमाह एकादशेति प्रत्यहं कात्स्वत्रुष्टये एकादशेकादशपूजयेत् २ ऐनोतिकरः पापौघसम्पनाशनं
 नवनीतस्य लिंगानि संपूर्णैर्षमं वा मुपानं भस्मनोगोमयस्यापि चातुकाया सया फलं ६८ कीडंति पृथुक् भूभूकत्वा लिंगं रजोमयं पूज
 यंति विनोदनेनेषि स्य स्थितिनायकाः ६९ आतर्गोमयलिंगानि निमित्तं यस्त्रीणि पूजयेत् ३०० ॥
 एवं मासवयं कुर्वन् नत्वं भते धनं एकादशेवल्लिंगानि गोमये स्नाना नियोयजेत् १ आतर्गोमया न्हयोः सायं निष्ठीये प्रनिवासं सप्तर्षिः
 संपर्शेया यान् एषा सा देवमाचरन् २ एकादशयजेत् निमित्तं स्नाना निषिष्टमयानि सः लिंगानि मासमात्रेण सकल्मषचयं दहेत् ३ स्नादि
 कं पूजितं लिंगमिदं निरुक्तं रात्रौ सर्वकामप्रदं पुसामुदं वरसमुद्भवम् ४ रेवाश्वजं सर्वसिद्धिप्रदं ५ राविनाश्वजं यथा कथां चिह्नि
 तस्य पूजानि यकते षड्धो जयेत् ति च भूदेवैः पत्नैः गोमयजं चिह्नं कुहं महेश्वरं ध्यायन् स पराजयनेषु नृपो लिंगं पूजयेत् निमित्तं चि
 वभक्तिपरायणः मेरुतुल्यो पितृणां भुयाय शिल्पं ब्रजेत् ७ होमधीनां तु गवां लसं यो दद्याद्देवगिर्न कार्थव्यं यो च यो ह्यं न यो लिंगं च को
 वरः ८ चतुर्दश्यां तच्चाष्टम्यां चोर्णमास्यां विधुस्ये पयसा स्नापयेत् स्निग्धरादान फलं ब्रजेत् ९ लिंगपूजां विधाय प्रोक्तो ज्वं वा प्रसूते
 १० वरसमुद्भवताम्रमप ४ ५ धिन्नमं होनि कः ६ ७ ८ ९ आतरुद्रियं नमस्ते रुद्रमय्यव सध्या यं यजुर्वेदे होक् ॥ द्विपमं प्रजपेत् नमो भूत्वा शिवे सर्ववि
 ॥

॥ रवमात्मना शिवे निवेदयेत् १० ॥

मं-टी-नौ-
न-२६

२२७

आद्याश्चतुर्थ्येनाहराद्याअद्रयः सप्तसंख्याकामंत्राः त्रैलोक्येनादयोमयोक्ताः एवंमेकं संपूज्यापरंपूजयेत् अत्यकालेवहुंकराण्यस्त्रिवहूनिस्म
हैवपूजयेत् एतेषां त्रैलोक्यमन्त्राभ्यामेवाविलोपचारैः संपूज्यविसर्जयेत् ८८ विद्याकामस्य ध्यानमाह परशुमिति वरदानमुद्देदस्योः परशुहरि
धनपुत्रादिक्रमेण शिवोक्तः प्रोक्तस्तथाः विद्याकामाश्चैतनीयः परशुहरिणं वरम् ८९ ज्ञानमुद्रादधदं सैर्वदमूलमुपाश्रितः पुंसो
विरुद्धयोः संवौकृत्यास्त्रिंशानि साधकः ९० नदीतीरद्वयं नीरमृदानि च पूजयेत् नत्रध्येयो हरिहरः शंखपद्मा हि भूलभूत ईश इन्द्रो
लशरश्चंद्रनिर्भो भूषणपुंजनवान्दंयमोर्ध्वरो धार्धर्महोरी श्वरः स्मृतः ९१ पीयूषपूर्कलशोदघातशो कुशावधि उच्चाटमार
णहर्षध्यातव्यः पुनरीदृशः ९२ कालीहस्तां वृजालं कः भूतघ्नो नद्विषं च यः मुंडमात्मा तप्तमन्त्रं कंठोपवचिन्वा सिताविलम्बः ९३ इयं
नुकामना मेरात् ध्यानमेराः प्रकीर्तिताः पूजयेत् कार्यवशात् लक्षावधिसहस्रतः ९४ लक्षयार्थं च लिंगानां पूजनाद्विविक्तभक्तं च
क्षतगुडलिंगानां पूजनान्पार्थिवो भवेत् ९५ यानां गुडलिंगानि स हस्तं पूजयेत् सती मर्तुः सुखमखंडं सा प्राप्योर्ध्वं नैषा भवेत् ९६ ॥
एते वामयोः मंत्रौ अर्द्धहरिहरो ध्येयः शंखपद्मौ हरिहरस्योः नागभूतहरहरस्योः इन्द्रनीलनिभो हरिः शरश्चंद्रनिभो हरः ९७ उच्चाटनादिषु ध्यानामाह का
लीति भूलेप्रोक्तः शत्रुसमूहेषु न कर्मवशतः अत्येकोर्ध्वं ल्पानां पूजा कार्यगोरो वहुना पूजा ९८ ९९ १००

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

मंदिनेन चरन्तं नृविद्यामह चतुर्दशविमलमिदं ॥ २२ ॥ चामेव नमिन्मन्त्रं उच्यते किं हि इनेकमेव नैकलं वापुर्देवता ॥ २४ ॥ शान्तिरायं चावेष्टमाह

疾

4

[illegible]

अभिमप्रहरमेकविंशद्विपाह वनेनमोति स्थितिः अमुकस्याभिभवहरेति भुजवाचुनामाह च देवना ८२ विहेषणं द्वादशपाह भायोहि भुजेश्वर
 विरेषणं कथमस्ति विना पावनं द्वादशमं हि अमुको देवयोगी मध्ये दले कथमस्ति स्विस्वभावात् संपूज्यमेकीरप्रियुक्तमेदानीं निवेद्यैककर्म संपूज्यमेवेति मो
 वेदिनं चतुरस्त्रिणयं कर्म नातु सावित्रीं विप्रिषत्तव देवामभ्यर्चयेत् स्विस्विनं मुत्तमं ८२ एतद्यं दद्वैतं विरेषणं भुजया धृतं निवर्त
 यद्विनिर्भयं दत्तापि च सांख्यिकं ८३ कर्मोपादय दत्तं कारनाम कर्म मुनिस्त्वेन चतुर्दले वैलक्षण्यं चाग्रसं च दत्तमर्थः ८३ इत्येव
 पि गच्छात् रक्षां विरेषणं दत्तं जगन्नाम विनामं पूज्यं कर्म विरेषणं विनिवेद्येन ८४ अजगद्विरसं मुक्तं नष्टि मिकां च योजयेत् जतः
 दत्तं दत्तं रक्षयते न च न्यूनमस्ति ८५ निस्वाननं पाहि चोद्विषजने येर्द्विचिह्नं विहेषणमिदं चर्म कथमस्ति मुच्यते ८६ विरेषे
 षत्स्वपमेकमर्थं रक्षयं संभवं दिगदले यद्यवर्मे वा विदिमदत्तगमत्वे कम् ८७ वनेन ययं संवेष्टव्यं यमं एणवेष्टयेत्सुतं द्वादशनां पाह
 गासां विरेषणं कथमस्ति च देवपा ८८ तस्मिन्पाति स्विनं कर्म कथातेन रसं भवे संछाद्य भस्म नां रसो परिमृज्यात्स्येदम् ८९ ॥

च षष्ठांशे द्विस्त्रिंशो देव सिद्धिः गोपित्वना गारणं यो वंशपाह तिले स्थिति विंशं गारमेव रक्ताक्षैः क्क कथं दत्तस्ति स्थाना नरकपाले भुजदत्तं नः पुं
 १ फद्विभिनिदिगदले मुहं कोणदले पुटननः पदं वेनेन नखवर्म एणवेष्टय संपूज्य भस्म निप्रक्षिप्यो यारि स्वल्पमनिप्रत्य हं भज्यात्स्येदम् पादिनं वि
 श्रज्यात्सर्वकपालस्य दाहः एवमुक्तं फलसिद्धिः अत्र देवना ८६ ॥

अथीगंनरमाह कर्मांरितिलोहकारकगृहाहृदिआभीपत्तेह यत्रेसंस्थाप्यकरवीरकाहेः संदीप्यनत्रसर्वपयैल्लक्ष्मिनिविषवूर्णयुग्मानिधनूरवीजानिप्रातं
 शतंसकाहंरुक्मपञ्चमुखाटयेनसुनंयसं कल्पारंशतरेनयेन अस्संस्तत्तामारयेनं ३२ प्रयेनांनरमाह नसेनि नरकारंनल्लपत्रं कल्पारौकैः माणांस्संस्थाप्य
 स्थापायित्वैवयेनकाहेः करवीरसमुद्रकैः जुहुयामन्नयनूरवीजानिशनसंस्थापा ३३ तिस्रार्थनीललिङ्गानिदिवक्वर्णयुगानिच ससा
 हएवहृत्कारस्थानाहृत्चाटयेजुषं ३४ यस्संदेशंशेरगतंमोसंसंभापयेज्जुगिं नालपन्ननराकारं कल्पार्थंस्थपयेदसुनं ३५ जयेदंष्टस
 हसंनगीस्वर्णनेलावलिपनं नसंखंडाविषंकांन कल्पार्थं वक्वोत्थितं ३६ उर्ध्वगतंरुसंदीपेजुहुयंजानेवेदासं एवंप्रकुर्वस्वि
 दिनंमारयेनोहयेदंष्टं ३७ साध्यसंनरकाहिनं कल्पार्थंनल्लिङ्गंजुभां नस्यामसुनंयतिष्ठार्थंसहस्रंयजयेन्ननुमं ३८ चिनाकाह
 स्यकीलेननंरसुधाधनकाशननं छिंयायेदंमशस्त्रेणनंदंनंस्थनस्थति ३९ वैरिभुवज्जुभांमुत्तांनुर्यादरजसामहं कुलाम्भयुगु
 नां कल्पार्थनस्थोरनंयैतंमं ३९ नस्थारुद्विपदेभुर्द्विनामकर्मपितंयनुम स्त्रित्वेनस्थस्थानजोगारैरसुनंस्थपा ययेनंनः ३८ ॥
 भद्रानकनेतेनविलिप्यअष्टमधिकं सहस्रंमभिभंन्यनस्यपच्यारुक्मवनिष्ठत्वाधनूरकाहदीपेयशस्थानांनोविष्टिनंहुत्वादिगारयेनोहयेव ३९ प्रये
 मांतरमाह साव्येनि नरसहस्रहृत्काहकांनविनाकाहकिलिनांयुमर्षाष्टद्वामनुंजयेदिनिपूर्वेणसर्वं५८ नस्थाः पतिमायापरग वस्त्रेणछिंयोतदंनस्थमा

३८ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥

स्वरूपमयम् यथा यद्विद्वत्कृतं २८ त्वेहि रम्यं वसिष्ठ २९ त्वाप्यसर्वं नम्रमानं देहि यत्कुं द्विं पूनमः कुतश्च येति चो मयुष्मत्सस्वत्वारिषादर्थः नमः
पूनमः कुतश्च यो विमन्त्रो यो मयुष्मास्यः वलद्वयादनेकेकं च ह्यमापां च साधकः २६ त्वज्जिह्वापुरे येनेदं धर्मं च विनिधां च
शये हस्तिविवर्धं च हि न चोदने नृधरः २७ यमि अन्नमेधमादिहि कुर्वाद्दुष्कर्म अज्यकर्तृरयुक्तेन तेन दद्याद्वा त्वां कर्म २८ अहमेवं
वल्लोचने सुखी स्यात्तद्वशये जगत् कस्वोरेति लयनेः पीतपुच्छैः सुगन्धिभिः २९ सहस्यसंखैः प्रत्येकं पूजयित्वा नयेन्मनुं सहस्रं वसि
समाहं यमुद्दिश्य जनं सुधरः ३० स याति तत्सतां स मने वचनकर्माभिः क्लामत्वा वक्त्रो नास्ति सत्त्वा हविनोरेह ३१ सहस्रं प्रपदं
जस्तवशयेदं हितं जगत् नृणो स्थिते स यत्ने स्थे भये जाते च संकटे ३२ अप्यसंशयं व्याभ्यस्योत्तरे स्त्वन सुखा मये यो यनो यो विर
त्रिं यं वल्लेः कव्यो नन्दमनौ ३३ मुक्तके शूराश्च वक्त्रे जयेद्भानुसहस्रकर्म अन्यत्वं च सुद्यत्वा तं यमुद्दिश्यादियामिति ३४ नम्रा च मीरि
स्यं मयि किं सिकटास्थितं आनी प्रल्ले लोसं चूर्ण्य कर्तुं मध्यमः क्षियेत् ३५ अभिमन्या कर्मो ह स्यात्सिंह सजसा युतं ३६ क्रीकर्म भि
नन्त्रे दयं नृणां यथा यथा ३७ स्यापयुदायं स यत्ने न स्पृष्टुं भितो भवेत् कर्मो रसदनाद्विद्वान्नीर्याय सभाजने ३८ ॥

व्यानमाह स किं सर्वं लं क्वरे दिक मं मं च लो च य स्या निजान सेव का न्या यान्द सवु ८ शैवे चाभां दित्युने १० सुग धीय प्रमु स्वार्थे द्वा दीन १२ चंदेन
 सत्कलकति दीमकं द चालो हे मा म देह सुनि पृष्ठ ह ह वै धुन ने नि कु मलः सर्वो भग भवति नः मे शीर स स रो जगो क एा शिखः सर्वो धर्म सिद्धि प्र द
 रत्नं चं च पुट द ध व स प दः यो या नि जा न कु कु दः ८ एवं व्या ना स मा सीनः शैत्यो सारि न क दे व ध न्ये य धि मा र्थे य द्वा यं क स यार्न ८ द्वा वं
 जपे द्वा रो ना ति के हे व न मा च रे न शैवे पीठे य जे ना म चू ड गो री क र स्थि तं १० आ स वं कानि स प्र ज द ले वु प्र य जे दि गान धं धुं मे सी र्गो पा त
 का नि के य त नः पर म ११ मं स र यो रि जा तं च म हा का तं च वी ह्ने ए द्वा र्ग य सु स ए वी श्वा य मु म्ना न स वा नि च न १२ एवं क ने प्र म मा हा ज्ञा
 य ते मं न ना य कः प्र ये ष ष दं प्र ज ये षा च य नं हि ये गो धि क १३ द धा क्षी रे ण म पु ना च इ ण स तं कान्ति नः द धा क्षी र्थे नां व र्तिः पा व सै के स
 मं न तः १४ भो ज ना दो भो ज ना ने ल ह्मी सं मा स ये सु धीः व लि मे नं प्र द न्ना य क वे रो ध न क य तां १५ कान्ति य हा वा नि वा त्ति मे न मे च प्र द
 ये न्ने उ न्न स्य व ह्म मा ए स्य व ले मं यो च क य्म ने १६ काम क र्णे द्वा यु क भू र्मा वु ड भू र्मे दि क्ता कु क ट द्वि त य प ध्या हे त्वा दी म च र्ति दे
 न १७ ग ह्म यु म्ग न्ता प य स र्वा न्का मां ध्या हे च वा युः स च दः क र्णे द्वा यु क च कां गि रि न द नो र्ग १८ च र्ति १९ च र्ति मं ज्म न्ना च र्ति मं
 वा म क र्णे द्वा यु क भू र्मा वु ड यु न्ना भू र्मा र मः क्ता स वि द्वा ह्म य द्वा र्गो १० वा यु स च दः य स र्के दः यं क र्णे द्वा यु क च र्ति मं ज्म न्ना च र्ति मं ज्म न्ना च र्ति मं
 १०॥

१०॥

॥ १ ॥ दशमस्कन्धे दधि नैका मम सा रण मारंगः १८ ॥ कु कट मंत्रं च नृकं ममि ज्ञानी ते चर एहि १ मंत्र मुह रति मे ह्येति गी ह्यः अक क अर्धे भेद मुक्ता । कु कट
 यत्नानेन यथैधिः कंससो ज्ञात युत ओषुतः नोपि न कंसः स ह्यप्रक र युगः हि एत ह एन ययुन र्वा र दयं यं नो हियं कु कटि नि २ अथ ए च नार सि र्कभा न
 मशे दुभि सरो गा वा न रय नि ध स नो च यः नेमं क धु व र ने इ हे स स्वे चो रे गुरु दुहि २० सा धो धु ते दि य दा नं व र दि हि धा मि मं प रं ए व स्या च
 दि कानु षा व क्त न भो नृ ब र द्या मि २२ ॥ दशिमं च म हो र धो क म ल य वि च न्द्री मं न क द्य नं न मा हा द य स रंगः २३ ॥ चण्डा य र्म मं न
 स्या वि धान र्म भि धो य ने मं नो य धि वि न क क ल्या सा धु य न ह्य म नो र धा र्म गो ह्ये ला दौ र द संय क्त स र्क भान यु ता वि द्यै य न क र्म स्य य क र्म
 न य मे त सं नः प र नं २३ क्का री री र्ध संय क्त म मा धा धी ज न गो व र न दि र भ र्त्तु न र्द ल न य र्ध र्मा दि गे य नः २४ र्मः स क ल चो री र्ध र्म न्ये य
 स मु ही रितः क षा र्थोऽ कु रा वी ज नो षा द य सार संयु तः ५ मा हा रः इ स नि धा स्य खं दो नि ज ग गो रि न म मा र्मा धी ज र्ध र्मः शक्ति र्दे व
 च र एण य धः ५ वे द र मा हि र मा वि वे दि र्ध र्मो अ र्द ग क क र्ता व र्ण न य वि म र्म र्म इ भो ले भू व र्ध नोः ६ अ र्णो भु यानं सी व न्ये
 इ कु र्वा च न भि नः वि रा ग र्द ज नु पा र्द न्य स्ये वं सं स र म्भुं ७ ॥ ८ न संय क्त क मा धा धी ज र्ध य र्धो दि र म्य न र्वा र द य दि र म्य संयु न
 न यः २ कु र्म च स क र्ण उ यु नः नृ र्ध र्वा व न पा ण ध म आ सा द्यः अं कु र धी ज नः क्से मं तः य धा आ र्थ स री य र्धो र्वा र्मा य क्तो ज य लि च न क
 ५ ष रं ग म ह वे द नि अं यं यं नो स्ति र द्या म न म र म दि ६ व र्ण न्य स मा ह मू हि ज ति भू व सि श्रु ति ना सा यु हे र्द अ न्य नै के क ७
 अ म च र एण य ध म न स म हा र द्म किः अ नि ज ग ति खं द र्हे नो ज नो र्ध निः च र एण य प र्द न म भ म मि ह सि

नयः रक्तमवसक एउगुननुदावाववाश्वः आमाधः अत्रुः सवानामै भूतानां नयः
५ वृद्धाणास्वेदति अण्डं पुंसि स्थित्वा यत्नमदभादि द वर्णना समाह मुद्रितातिभ्रुवसिभ्रुतिनासायुहेहं नयैक

मंटी नो नमश्च विप्रवरणं २५ ने शान्तिप्रः पत्नेकं दशादशमशानीषागनकुरुः अशुभमयुनमयुननवार्जयंकुरुः २०६ शतं कम्पाशुभोऽयम् पूज्य एव दशा
 न९८ दिनेषु संयाय एकादशे दिने सप्तशानीषागनवन्मा प्रति शोक न ह्यसंख्यनवा एतेन च होमः २०७ २०८ ॥ अस्ति मया विदया २१ निष्कमिदं
 सुवर्णप्रसेकं दद्यात् शेषपूर्वकं वनं शनि सहस्र चंडी विधिः २०६ एतन्फलमाह एवं सहस्रसंख्याकं शनि एतदयुतं चंडी विधानं लक्षचंडी विधानं को
 अभिषिञ्चैच्च यथा संविशेत्स कलशोदकैः निष्कं शुवर्णमयवाग्रन्येकं दक्षिणां दिशेनं २०२ भोजयेच्च शानं विमानस्य भोजयेत्पुथ
 कविधैः तेषां पितृभिरणंदनं गृह्णीयादाश्विनतः २०३ एवं कृते जगद्दण्डं सर्वेभ्यः सुपदवाः शुभं धनं पशुः पुत्रानि सुमन्यस्त्रिभे
 नसः २०४ एतदण्डं एव कर्माचंडी साहस्रजं विधिः विद्याप्रतः सदा चालनं ह्यस्य चण्ड्याच्छानम् २०५ अनेकं चंडिकायाः पतयि
 चुरेद्विष्णुमिताम् अशुभं प्रजायेतु को प्रत्येकं नववर्णकम् २०६ पूर्वोक्तः कल्पकाः पुण्याः पूर्वमनैः शानं शुभम् एवं दण्डं चूंमं साय हो
 मं कुरुः ययनतः २०७ सप्तशानीषागनवन्माशानि श्लोकं विधानतः लक्षसंख्यं नवा एतेन पूर्वोक्तैर्द्वयसंख्यैः २०८ होमं चोदक्षि
 णंदनं पूर्वोक्तं भोजयेद्दिवा न सहस्रसंख्यं नवा सप्तद्वयं न ह्यस्य भयतमम् २०९ एवं सहस्रसंख्यं कर्त्तव्यं चंडी विधीन एतेन
 रूपलक्षकं सहस्रचंडी दण्डं पुनं चंडी विधिः सदा शणैल्लक्षचंडी विधिः जय हो २१ सप्तशानीषागनवन्माशानि श्लोकं विधानतः लक्षसंख्यं नवा एतेन पूर्वोक्तैर्द्वयसंख्यैः २०८ होमं चोदक्षि
 णंदनं पूर्वोक्तं भोजयेद्दिवा न सहस्रसंख्यं नवा सप्तद्वयं न ह्यस्य भयतमम् २०९ एवं सहस्रसंख्यं कर्त्तव्यं चंडी विधीन एतेन

८८ मेदक्षिणायां कम्पासुविप्रयोजने च दसगुणं ३१८

त्रेणावस्थानात्पुनरादिसमन्वैः पुनयेन एवं च तन्निदिना निजप्रकृमापीपूजां च समाप्य पंचमो हस्तिकुंडे आक्रमोक्तपुत्रिध्वंशवा निसंख्यां पश्य
 यस्यान्वादिभिरुक्ते देवो श्रीहृद्यः समग्रान्मन्त्रानि स्तोत्रं च पश्य रत्नजालेनायुर्न च ह्येवमसंख्या एकैको द्विजः सहस्रसंख्यामां प्रतिशोभकं सहस्रं प्रत्येकं न च
 हृद्यं न ह्यर्थं च न अत्र एषा द्रव्यनाशममं भेषाणादिस्वासां मेरे के कस्याहानि हस्तापूर्वकुरंगं कस्यादेवी कर्मस्यासंयुज्यवत्सि दानादिभ्यस्तुति
 एतेभिर्नैः शृणोके त्र्यां कस्यां पुनयेन पंचैषु कर्मिषु भोजैर्वस्ति एषा एतद्वि ६५ वेदां विराचिते रभे सर्वमिभर्तुः स्तुतिं वटं
 संख्याप्यभिविनशं कस्यां कस्यां पुनयेन ६६ न संयुक्तं कस्यां स्थापि पुनयेन ह्यस्यानायि उपचारे तु विविधैः पूर्वोक्तैश्च संख्याप्य
 ६७ एवं च तु रिपुं कस्यां कस्यां पुनयेन ६८ पापसाक्षिं स्विमं धर्मैर्द्रास्वाभ्यां फलैर्भयं ६९ मातुर्विभेदं सुखं देवैर्द्विजैः पुनैस्ति
 तैः जावोपहस्यैः शयनकसैरभ्यर्च्य रत्नजालिभिः ७० समग्रमादृश्यावत्या प्रतिश्लोके हनं चरेत् अयुक्तं च न चालेन संख्याप्य नान्यैश्च
 न ७१ २०० कस्यां चरणैश्च कस्यां विभंजनाममं ननः कस्यां पूर्णहृतिं सम्यक् कदेव मयि च सज्जं च २९१॥ १०५ पुनयेन केनिक २९२ पुनयेन
 न ७२ न सुवर्णं दद्यात् न नो विभक्तं कस्यां च केन यजमानं निगमय एणे कर्म नैरभिधिवेषु राशिष्वच्युतः ततः शतं देवान्वाभ्यां विधानैर्भोजयेत्
 न ७३ द्याशक्तिं दक्षिणे दद्यात् ३॥ रतिशतचंडीविधिः १३ शतं चंडीविधेः फलमाह एवैकं तशतं १४ सहस्रचंडीविधानमाह एतदृशं तु
 एभिर्भति शतचंडीविधानं दद्यात् स ह्यश्वचंडीविधानमिदमर्थः

नेकं रसकलः सप्तशतीमयुतं च नवाहं जपेयुः हविष्यभोजनजनत्रयस्य च र्पभूषणस्य स्मरणस्यार्थं दिनियमांश्च चरेयुः यजमानश्च हिवर्षया
 सुभद्राश्वर्वाकर्त्ता भवेत्परिपूजयेत् एकास्त्रयाः श्रीममाचोर्कद्राव्यनुविवर्जिताः ८३ तासां आहने मंत्राः प्रोच्यते शंकरे हिताः
 मंवाक्षरमयां लक्ष्मीं मानां रूपाधारिणीं ८४ नक्षत्रगणिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् क्रमादिकानां पूजामंत्रान्
 वृक्षेयुता ८५ जगत्पूजयमहं सर्वस्वस्य रुषिणि पूजयं ह्येकोमा रिजगन्मातर्नमोस्तुते ८६ त्रिपुराविपुलाय नमोऽस्तु
 नरुषिणी नैलोक्यचंद्रिणी देवी विष्णुर्न पूजयाम्यहम् ८७ कल्याणिकां कल्याणीं नार्कं कुरु एवमुदयं शिवां कल्याणजगदी देवी कल्या ८८
 णी पूजयाम्यहं ८९ अणिमादिशुणधारा मकराद्यस्य रुषिणं अनंताय नमो कल्लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ९० चाम्पा चारं शुभा ९१
 कांतां कस्तूरकस्तूररुषिणीं कस्तूरकस्तूररुषिणीं कस्तूरकस्तूररुषिणीं पूजयाम्यहम् ९२ चंद्रवीरचंद्रमायां चंद्रमुंडमंजरीं पूजयाम्यहम् ९३
 डिग्वं चंद्रविक्कमं ९४ सदानंदकठेशांतां सर्वदेवनमस्कृतां सर्वभूतानामिष्यं देवीं शंभवीं पूजयाम्यहम् ९५ दुर्गामेदं सर्वकर्मेषु ९६
 दुर्गाविष्णुशक्ति पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गातिनां शर्व ९७ सुंदरीं स्वर्णवर्णामं सुखसौभाग्यदायिनीं सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रा ९८
 उक्तसंस्मरणं अधिकं गीत्यादि दुर्लक्षणं हिताः कुमारी त्रिमूर्तिकल्प्या हिताः श्रीशंकरभोजनवस्त्रहेमदानादिनामं चाक्षरमयो मिन्यादिमं

अथ प्रयोगः शस्त्रोक्तविधिनाशं करात् प्रथमायाः लये चामंडपं वेदिमध्यनिर्मयप्रतीच्यां कुंडमध्यं नोक्तत्वा कननिष्पत्तिमुक्तकामः शतचंडीवि
 धानमहं करिष्यन्निति संकल्प्य विधाय मातृस्थाय पुनर्वाही व्याहृतिविधाय स्वलिवाचनं कृत्वा उक्तलक्षणं दशविग्राममधुपर्कमस्वहेमदानादिनाहं पुं
 स्मात्प्राप्तिस्तदति कृत्वा हणुपाहं शक्यं इत्यनं जिनेन्द्रियात्सदाचारनकुलीनानं स्वयंवादिनः ७१ अथ नानाचंडिकापाठो ह्येवमस्मिन्
 मधुपर्कविधाने नैव स्वस्वत्वं हि स नरतः ७२ जगत्प्राप्तमनं मत्तं दद्यात्तेभ्यो विभोजनं नैव विद्यान्मसं तेषां चार्घ्यं नमानं सः ७३ भूमी
 शयानः प्रत्येकं जयेयुं धृति कालं च मम मार्कंडेयपुराणे कंदं दशकल्पः सुचेतसः ७४ नवाष्टौ चंडिका मंत्रं जयेयुः श्चासु तं पुष्पकं यजमा
 नः पूजयेच्चैकानां दशकं शुभं ७५ दिवर्षाद्या दशब्दं माः कुमारिः परिपूजयेत् नोयिक्तं गीतं न हीनां गीतं कुष्ठिनीं च त्र्यंशं किं तां ७६
 उं धां काणां के करं च कुरु परे मयु कृतं तुं दमो ज्ञातोरोगा युक्तां दुष्टां कथां न पूजयेत् ७७ विघ्नां सर्वेषां सिद्धीं यथासे सन्नियो
 १ वैश्यानां धनलाभाय पुत्राद्यैश्च पूजयेत् ८० दिवर्षासाकुमार्युक्ता विमूर्तिर्हाय न त्रिका चतुराद्या मुक्त्याणीषं च वर्या तु रोहि
 ८१ षट्कां हि कायो नां चिंदि कस सप्तहायनीं अष्टवर्षाणां भवीत्यानं दर्गा च नवहायनीं ८२ ८ नैव यजमानं दत्तासने सुदन
 : समाहिताः समनसो भगवतोऽस्मरेण सप्तशतीमुखं नेष्टुं वेधां कुंभं संस्थापयित्वा नवदुर्गाभावास्त्य कोटशेषचारैः संपूजयेत् ८३

अथानवंधीविधानम्

चंडीजा वस्यार्कडे पुराणे कस्य च्छुष्पा दीनाह सप्तशत्यास्ति प्रथमं चरित्रं मधुकै तमवधः ६१ मध्यमः मरि कासुरवधः ६२ अद्रिनां दी ६३ उ
सस्यत्वा प्ररित्रे तु प्रथमं पद्मभुक्तिः ^{मोक्षः} छंदोनायत्र मुद्रितं मसाकोली तु देवना ६४ वांसी जं पावक ^{भक्तिः} सार्धं धर्मवि नियोजनम् मध्य
मे तु चरित्रे च मुनिर्विस्तु रुद्रहर्तः ६५ अक्षि कूर्छ हो मसाले स्मिर्देवना वीजम हिर्जा वायु सत्वं धनया कै विधाने गार्त उदाहृतः ६६ उन
रस्य चरित्रस्य च्छुष्पाः शकरदीरितः ^{भुक्तिः} शिष्टपुष्पं हो देवना स्य प्रोक्ता मसा रसार्मी ६७ कामो वीजं देवितं स्वर्कपास्ये विनियोजनम् एवं
संस्तुत च्छुष्पा दी न्धात्वा पूर्वोक्त मार्गे नः ६८ सार्धं स्मृति पठे च्छंडी सत्वं कुसुपदा स्य र समाप्ती तु महा लक्ष्मी व्यात्वा ह्रस्वा कडं
पाकम् ६९ जपे हृष्टा तं मूलं देवना यै निवेदयेत् एवं यः कुरुते सो नर्त्ता वसी दत्ति जातु चित् ६० चंडिकां प्रभज न्नर्त्तयेत् नैर्ध
नैर्यशश्च ये पुनैः केनैरु चारो गैर्युक्तो जीवे दडुः समाः ६१ शतचंडी विधानं तु प्रवक्ष्ये श्रीतये नृणां नृपो यद्रव्यं आपन्नो दुर्षि
ह्यं भूमि कं पने र्द अनि वृष्ट्या मना वृष्टिं प्रचक्र मये स्य र्द सर्वविघ्ना विनश्यंति शतचंडी विधी कर्ते ०० एणा एण वै शिष्यं स्यात्
धनपुत्रसमृद्धयः शंकरस्य भवान्वा प्राप्स्ये ^{देवमर्त्यः} दैनिकं भुजम् ०१ मंडपद्वारे वेद्या चंडु कर्प्यात्तं च्छजगो रणे न नक्तुं उग्र कर्तः प्रतीत्या
नरेभ्युभा निभुं भवधः ६४ कामर्त्तको ६५ सार्धं स्मृति अर्थ सार पूर्वकं ६६ ६७ पद्मच्यैः कीर्तिसमूहैः समावर्षाणि ६८ एता चंडी विधाना ह एते नि नत्र

महामाह सप्तमिति सप्तचक्रं वाणाशिरः शंखान्दसोषु रधनी रत्नाणि वा मे सुआस्य पादशकोदशवक्रां दशपदां दशमुज्ज्वितं
 लेखयित्वा र्थः सौ सुतेषामस्य स नीच ह्या मधुकेटवौ हतं यामसौ तन्मया व हो निर्द्वयै स्य दीपा येन र्कः तदुक्तं यथा त्वया जगत्संस्तुता जगत्सिद्धि
 रत्नं चक्रं गार्धुर्नोपपरि वर्तनं भूषं भुंजं शरः शंसं स रधनी के रौ द्विनयनां चर्को गभूयाहर्ता यमसौ गिर स्वायिने हरौ कं मस्तजो हंतुं
 मधुकेटम नोलाशमयुगिर्मास्य पाद रत्नस्य सैवैव हं कालि कर्मा असत्य कं पराभूतं देवु क्खि शं पदं धनुः कुंडिकां दं दं शक्तिर्मयि च
 भवेत्सजं वंदां सुगमजनं भूषं याश सुदर्शनं च रधनी हेतैः प्रसन्न प्रभो सैव सैमि ममाह नीमि हं मस्तजं र्ध्मो सै रोजा स्थिता ॥ ५५ ॥ वंद्यं
 लहलानि यं सर्वमुसले चक्रं धनुः सायकं हं सा जिह्वनी धनां त विस्वस्य च्छिनां भुतस्य प्रभां गौरी हरं समुद्रां विजगतां सा धारभूतां
 ह्य पूर्वो मर्चं सरे स नीमि नु मर्जे भुंभा दिहै र्था हि नीमि ॥ ५६ ॥ एवं आत्मा जयेत्संसा चतुष्कं न दर्शायातः पावसात्तेन मुहुर्वा ग्राजि ते हि म
 र्हे नमि ॥ ५७ ॥ जवादि शक्ति भिभु के यो र्देवो यजेत नः तत्त्वया वत न्य सर्वं धर कोणाष्टदला भिनि ॥ ५८ ॥

महालक्ष्मी व्या नमाह अस्य नामिनि कं हि कां क मंडलुं न च जं र्धं स अस्यात्पाप प्रवाण स्य द्रव जगत्स्य च क कर्म द्रव सुखं स्यादस्य च अनेन भिभु स
 रिममहिनी महिषासुरघातिनी सुहृजो भवां देव देहानि रीते तेज समुद्रां ५५ महासरस्वती व्या नमाह वंदेति यं स्य सुशस्त्र चक्राण्यदस्तेषु र्ध्वं य
 त्वत्तधनुं विवा मे सुधनां तेति शारच्चंद्रप्रभां ५६ हे मरे न सिव नो ॥ ५८ ॥

[illegible]

२३ कृत्वा ह दुर्धमिति २३ पंचमं व्यासमाह यादादीति २४ २५ २६ कृत्वा ह कतेति २७ षष्ठमाह मध्यमिनि अष्टादशमुजामाह
एहेणकंभरीयातुपुष्पपक्षवसंतुगं धनुर्वारकरादगोविषानुसदैवमां २८ शिरःपात्रकरभीमामकाचरक्षणकधि पादा
दिमलक्रंयावत्स्यामसीच्चिकीभिन्ने २९ नृत्यं व्यासनरः कर्प्यञ्जरामृष्ययोरहि अथकुर्वन्नब्रह्मास्वंप्रसर्पक्रममूर्धनम् ३० पा
दादिनाभियर्थं न ब्रह्मापार्तुसनातनः नाभेर्विश्वदिपय्यं तेषातीति न जनार्दनः ३१ विश्वदेवैस्तरेधातं यानुरुद्रश्चित्तो चनः हंसः
पार्तुपट्टहंवैननेयः करदयं ३२ चतुर्थी वषभः पार्तु सर्वोद्याति गजाननः पणपणैरेहभाभौ कल्कनंदमयो हरिः ३३ कुमेस्मिन्
पंचमेन्यासे सर्वो न कामानवानुयातं षष्ठं व्यासंतनूः कर्प्यं महालक्ष्म्यादिसंतुतम् ३४ मध्यं पार्तुम लालक्षणी रथा दशाभुजा
त्रिगां उड्डं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिरुर्जितां ३५ अथः पातुमहाकाली दशाबाहु समन्विता सा होरा सङ्घं पार्तुपरहं सो हि
पुष्पकम् ३६ महिषं दिव्यमारुहो यमपातु पट्टदयं महेन्द्रांडिका युक्तः सर्वोद्याति ममावतु ३७ यक्षो सिन्धु विहिते गोवे स
द्विर्मया तु कालदूरः मूलाक्षरन्यासरूपं व्यासंकर्म ते सप्तमं ३८ त्रेत्यंधे नेत्रे यजे प्रज्ञो न सिक्कको मुक्तिं यद्यौ मूलमनो वर्णाग्रं तौ
स्वरपीठममब्धं निष्पादिप्रयोगः ३९ २६ ३० सममन्या समाह मूलैति ज्ञेयेन मनः त्रयसंधेरनादिप्रयोगः ३९ ३६ घानमसाच्चित्तानं ३९

१८ का र श न्या सा ग ह त त र नि पूर्वोक्तमार्गनः प्रथमपत्रके कवि विना १९ सा र स त न्या स ग ह अये नि १२ चो जे नि मं ग दि श्री ज न यं प्र ए च दि न मे नं क नि
 १७ दि न च स्या ने नु न्य स त र या दि कु ज नि यु क्त न्य से न य या उं रं ही ज्जी न मः क नि षा य मि ना दि उं रं ही के त र द या य न म र ता धं शे य धि १९ १७ क र्त्तव्य
 ने ने ए को र श न्या सा न कु र्वा ने ए फ ल य दानं प्रथमोपा न का न्या सः का र्थः पूर्वोक्तमार्गनः १९ क ते न ये न रं व स्य सार र्थ य नि म न च ॥
 अथा हे नो बं दु र्वा स न्या स सं सा र स त ना भि धं १९ श्री ज न यं नु मं न्या य नो ग्रा हि त र द या नि कं क म हं ग रि कु र्प स्य त क नि षा य स मु यं च सु १९
 क र यो र्म थ्य नः ए षे म रि व धे चं कृ प रे त र द या दि कु र्वा ने नु वि न्य से ज्ञा दि सं यु तं १७ अ सि न स म र स त ने न्या स के ने ना उ यं वि न स
 ति न त स त नी यं कु र्वा त न्या स मं ना न ग ण नि च नं १९ मा य चो ज्ञा दि को ज्ञा सी प र्व तः पा नु मं स द्वा मा हे भ्य री स य य यो कौ ना सी र सि ने
 व नं १९ त वै ष वी या नु का षा यां चा र हा य धि मे व नु रं द र णि पा व रे को णे चा मुं ड चो त रं व नु १९ ए य न ने नु म हा ल र सी रु र्द्ध नो भि भू
 १० ॥ स स ह्री पे थ री भू शै र हे न त्ता मे थ री त ले न नी ये मि न क ने न्या स नै त्ते लो क वि ज यी भ वे न न्या स च नु र्थे कु र्वा ने नं र ज्ञा दि स म
 ११ ॥ मं १९ नं र ज्ञा या नु पूर्वोक्तमलां कु र्वा मं डि ना ख ड ग या न क र पा नु र ह सि ले र क दं ति च २० ॥
 १२ ॥ ति १५ मा ये ति हीं नो ह्री प र्व तो मां पा नु र ता दि या नु च षा यं ने र्म से १७ १८ ए न न्य ल मा ह न नी य द ति १९ च नु र्थ न्या स मा ह नं र जे नि २० ॥

११०
 भं-२-ने-स-ज-ह्यो-वि-शि-सो-नी-र-व-सो-नि-शि-म-या-म-रा-उ-नं-ह्ये-ह-रि-र-क-न-प-मु-नं-
 न-२-
 य-र-क-वं-र-ने-न-कि-रि-म-व-म-ए-य-के-सं-पू-ज-म-द-शे-ह-र-ए-न-म-पि-सं-र-ज-ए-न-म-द-नौ-व-
 वं-मु-ने-क-प-रि-र-क-ने-अ-स-क-न-या-प्र-म-ए-व-२-को-पि-मि-त-न-पु-न-की-शि-र-
 २-ह-रि-र-क-न-प-मु-ने-क-प-रि-र-क-ने-अ-स-क-न-या-प्र-म-ए-व-२-को-पि-मि-त-न-पु-न-की-शि-र-

कर्मस्वैवं विवेकी हेमिर जायतस्त्रिंशत् शतं माणा ज्ञाप्य तम साधैः प्रकटिदिभिर्चेतनभुवं रक्षोमभीचिरभागींश्च कुर्महेन प्रयत्नतः आत्मा
वर्त्तयेत्संसेव्यो नरायं होतरोपि वा ५ अथ चंदीविधानम् आर्चयेत्तवा स्वरं मंत्रं वदयेत्चंदी प्रहृतये पारत्यां मा मरुते दीर्घात् इह स्मिन्दी
नुतीं इयुं ५ इत्येते कृतं तर्कं पूर्वद्वयोर्द्वितीयं संयुक्तम् तच्च स्मृत्युक्तं च यो वै स विष्णुमहेश्वरः ६ छंदः प्रसुक्ता निरुति निर्णयः सु
हिता तुष्टुभः देवः यो नाम सा पूजाः का लोकास्मी सारत्तवी ७ गंदा यत्तं महीधीमाः शक्तं यो स भूजोः स्यात्तः स्यात्तं कटं निष्कार्यो अथ यो वि
ज्येत्तुष्टु ८ अग्निर्वयुष्मन् कस्तूरकं च देव यो हवमं सर्वं भीष्टुं सिसृधो विनियोगात् राह तः ९ नृविहस्ते देवा निशिरो मूर्खं हृदि न्यसे
न्नुमीन ४ सप्तशती पार्याभूतं चंदी मंत्रगाह कथिनि कर्त्तुं भावाही मरुत्तं किं दीर्घा लक्ष्मीः चानंदीमः
भुमीं इव कर्त्तुं इत्युक्तम् ५ दायेत्स त्वं सर कज्जलि नृमहयं च युग द्वितीया च च ६ महाका ली महास्वस्ती महास्वस्ती महास्वस्ती च ता ७ ८ भगः सुभूः ९

ॐ ह्रीं क्लीं श्री भगवत्पदं पारिष्वाद्य विदेहमरोपयोपयमज्यमस्त्रयमर्धजम्पठ है ॐ ह्रीं ५. ॥

[illegible]

गोपाकारं पुनयेत् धूपदीपने चैवं कृत्वा न दये भिन्ने प्रतिष्ठाप्य नञ्चा ज्ञानं च लोकेः शतम धूतोक्तमनुनाहना कुमारी कर्त्तव्येन कृत्वा कर्त्तव्यम्
 त्रेणाष्टावशानिर्दत्तानिर्मितं स्वदेहमिदं होरकं कृत्वा कर्त्तव्यमत्रैरणष्टोत्तरशतं यं धीनृत्वा न दारण्यन्तरं शिवा कर्त्तव्यमीति ७८ उच्चाटनमाह
 भूयैविकं तस्य नखस्य एवमनेव कर्त्तव्यं ७९ ८० मन्त्रपादं नमस्तेति भूयैवः भूयुसः अर्चयिष्ये सर्वार्थः सर्वार्थमन्त्रः सर्वार्थमन्त्रः सर्वार्थमन्त्रः सर्वार्थमन्त्रः
 भूयैविकं तस्य नखस्य एवमनेव कर्त्तव्यं ७९ ८० मन्त्रपादं नमस्तेति भूयैवः भूयुसः अर्चयिष्ये सर्वार्थः सर्वार्थमन्त्रः सर्वार्थमन्त्रः सर्वार्थमन्त्रः
 ५ एतं सहस्रं दशसंख्यानां शतं यो देवगोपमन्त्रं ८० नारो भूधरं भूवर्कं संवर्तः क्रियया चिन्ताः प्रेत्यैकं दृष्टिं चंद्रयुक्ता चीजचतुष्ट
 यं ८१ कालरात्रिमहाध्यां शिष्यदेवमुच्यते अथ भूत्वा दययुग्मं गच्छेत् धीमं धिभिर्युच्यते ८२ यो सा दवी जंको मसि भूयैव
 गोपतुष्टिर्नः यद्विनिंशहर्षसंयुक्तं धीं प्रमुखा रकोरि को ८३ अयानेन दृष्ट्यां येन सर्वे धर्तुर्दृष्ट्या निशितं नर्तः सर्वपापकर्मिणः
 ८ ता ११ दीपिका चंद्रयुगा उच्यते दृष्ट्या च तारिणी जानिनेन चैवं स्तुतुं स्तुं ८१ भूचिद्विषया स्वाहा ८२ प्रासादवीजं हीं भूयैव को ८३ यो यो यो यो यो
 ८३ ईशं भूय भूहे नो लक्ष्म्या च नो सुक कचे सु कश्चित् दक्षिणमुखः कृत्वा सनेनोपविश्य प्राप्ति युक्तं यामि नरचा निशि सहस्रं यमसुं मम
 गोपया उच्छ्वस्य स्वस्वं नो चरा विमहा धीं शिष्यमुक्तं अथ भूत्वा दय २३ धीं धीमं धिभिर्युच्यते ८४ कामाक्षिके प्रसिद्धं ततः शतं दयमनेनेव मन्त्रे
 एतस्य धर्तुर्दृष्ट्या चैव रकयुगेन सर्वपापिण्या केनेन मनुना च स्थितं चान् ८४

रविवा रे हरि शं ना री दु भे न पि द्वा न द से न भूर्ज पत्ने म भ्य क म वी ज यु नं रं क त्वा द श का म वी जैः सं वे ह्य पु न र्द नं कं त्वा द श क म मी जैः सं
 वे ह्य पु न र्द नं कं त्वा द श वी जैः सं वे ह्य पु न र्द नं कं त्वा बो र प वी जैः सं वे ह्य पा रि वी ज य कृ प द को रं क त्वा स र्व वा मी ज म भ्य सं यु क्त य न्ति ग र्व भो प रि
 न द से न लि खे द्भूर्ज ह न मं न स म रा न्ति ग म् ६० न द नं वे ह्य ये न क्ता म वी जै र्दं यं मि गृ ह रा न्ति पु न र्द नं म क त्वा य वे ह्य ये र्द क म म यैः ६१
 वि र च्छा य पु न र्द नं वे ह्य ये न बो र द श स्म रैः न स्यो पा रि ह्य ग व द्भु जे एं को ए षु म र्द ना न्ति ग म् ६२ वा मी ज म भ्ये न त स र्वं यं न मो ह न का र
 क म् उप वि र च्छा य न र्द नं वे र्द श व रं न म नु ज ये न् ६३ डे नः का मः की म वी जं का मि न्ये का म स पृ दः ता रा यो र्दं व रं यं म नु र्द क वि मो ह
 नः ६४ यं च हं भ्र ज ये न मं वं न स हं कु द मा न सः न द शं यं नु द्भु या नि ले र ज्य पा रि ह्यैः ६५ हो षो त्थ भ्र म नो क्त र्द नं नि ल क्त न र स म मः
 मो ह वे र्द श स्म री वि र्चं न र्द नं र यो पि धा र ण क त् ६६ उ र्द नो ह न र्म क र्चं व र्च्ये क द्वा प्थी दि नं भू ते वा भू मि ज न्मा र्क यु क्ते प्रा न र्ज त्वा न रे ६७ न
 । र शो त्थि गो मू हं स र्द शं स या नं ज ये न् ततो ए हं स मा ग म् नै ला भ्य क्त क ले व र्दः ६८ पी ष द म् कं व नैः क र्त्ता र ज्वा क्ता रं वा न स ह्म नि ६९ पु
 ॥ यं च दि नं य न स हं स र्द श स रं ज ये न् भं नो य क्तो र्दं क्ती क म्मा य क्ती क्ता मि भ्ये की मि नि र्ज ॥ ल च्छा य गो य र्कैः प्रो र्त्ता न न्मू ल जी र सैः ६९ ॥
 ॥ ॥ शे न नि ले शे नो व नु द्भु या न त द्द स मा नि ल के न न रं धा र ए न च्छ वि च्च मो ह ये न् ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ आ क र्च ए मा ह न क मि नि ६७ र
 क्ता व गो ल क्ता षुः स्य र्थ मा त्रे ए य म चो लि से क्त वं नि सा ल क्ता षुः ६८ ॥

कर्मविशेषावदेकैव चतुः कोणत्वं कथं नैव ध्येता जान् प्राप्तिव्यनद्वयारदीपयन्मन्त्रादीपेकात्तरात्रिभावात्समावराणानिष्पत्त्यर्थं दीपोपरिधत्तव
 नेषानयेन मंदं जनमादायथाश्रुताभिमुखः शनत्रयमनेजनत्रैलसंनयेन मंत्रोपचारोत्तस्तीर्त्तौ श्रीं स्त्वो जूस्तीं नमः कान्हे श्वारसर्वनाहय २ क ह्येक
 सवर्णोऽहं कामरसमन्त्रिणे सर्वनाकव्यय २ श्रीप्रथमं कुरु २ कं हे स्तीर्त्तौ श्रीं इति ४४ ४५ गतोदीपादेवीमात्मनिसंवा ज्योत्स्नं जलं भीमवारं नवमी
 सर्वनाकव्ययं कुरु २ ह्ये प्रथमं कुरु २ कं ४४ बर्माकावर्माहिरज्जवमभ्यर्त्तौ श्रीं गोमहामलः वसुधायकवर्णैर्ममं जनस्य मिमं व
 र्ण ४५ दीपादात्मनिसंवा ज्योत्स्नं जनं पुनः भीमवारं समभ्यर्त्तनं यदीति मर्देवेन ४६ मूले च होतारं गंधुनं हर्मं सव्यव
 र्णं मधुक्कुसुमैः साष्टशतं वल्लैः सुसंस्तुते ४७ कुमारी च दुर्कं नाटीं भोजयेत्काधुरात्रिणम् नैर्वां जनेन रं चित्तिव्यये मं असममः
 ४८ दर्शनादेव वशायेन तरनादीनरेभ्यस्तन् दुषेवाशौ भद्रं नं नराणां वंशकारकम् ४९ निनस्पष्टे नो नूनं सप्तः सप्तद्विगुणं वि
 णाशी क्स्त्राणामात्मनो संभनं प्रोच्यते धुत्वा ५० हरिश्चं रं विदितव्यं सैव सिद्धं च प्रोदं नुमं निष्ठा मोहाचका कुरु यं नैर्जो मूत्रमहि नैः ५१
 पात्रे संस्थाप्य तदप्रेक्ष्य संस्थाप्य संस्तु न्यमधुक्कुसुमैः शोभनं शतं मूले ननु न्यकुमारी चतुर्काक्षिणी भोजयेत् तदंजनं काको निखको जगत्
 प्रथेद न्यादिकं लक्षणं ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ हरिश्चिनि ५१ ॥

पञ्चसंख्या पातयेत्संख्याय संस्तु नमः धृक्पुष्पैश्चो न रश्मिं मूलेन हुत्वा कुमारी वरुकादिभ्यो लोभयेत् न तदंजनकानि च कोजगद
 एष्येदन्नादिकलं स्यादं ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कालिकापीठे अगादि प्रकृति युने पूजापत्रमाह विद्विनि ११३ कल्पत्रयकोट्यदलं तिस्रोऽष्टायं त्रिदशं धारणी गृहचतुः कोणं ११४ कामनामेवास्तेष्वनेभे
 दमाह नक्षिनि ह्यीर द्रोः ह्यीर वृक्षस्य भान्णोदं वरस्य वदाम्यनमस्य ११५ ११६ अंभनेको किल पक्षैः ११७ हरिताल हरिद्रा भ्यां भिन्नचक्र ११८ मारुते रज्जु
 नां यजेत कालिका पीठे पूजार्थं यच्च मुच्यते विंशति कोणेष्वकोट्यं दशनाष्टदत्तकं ११९ कल्पत्रयं पुनर्हर्तुं त्रिसंवधारणी गृहं च
 तु ह्यारम्भकाला विंशे देवी भवार्चयेत् १२० तपत्रो वलितेर्द्धं ह्यीर द्रोः फलके पितृणां तपयेन्मृगं धेनून् तले सिन्धुवा च पक्षो मय्या भू
 १२१ कर्तव्यं कर्तव्यं च नारक चंदनं कुंकुमं चर्चयेत् कस्तूरीं च गंधकं १२२ सिंदूरं हिंशला भ्यां च चरणयवलि तेलसु धीः सारको
 द्रवले सिन्धुवा संभने को किल चंदनैः १२३ हरिताल हरिद्रा भ्यां मारुते वायस्य चंदनैः धनुरभानु निर्गुं शीस्य च मृगं हिंसा सज्ज १२४ यक्षि
 स्त्रिंशे यन्त्रे कर्पासं वरणं च नमः त्रिकोणे देवनासि ह्यो वपनावर्तने पूजयेत् १२५ संमोहिनी गोहिर्न च नृनीयां च विमोहिनीं षट्सु कोटि
 लेषु च त्सादिषु दंशां निनो यजेत् १२६ दृगेषु च सुमय चर्चामातया विवसु च्छंदे कपटि ह्योऽनाः हलो वने उर्वरेण याः कलाहले १२७ उर्वरी
 मेन क्कारभा घना चीमं तु चोषया सह जन्म सुर्वे मीर्या दह मौनु तिलो नमा १२८ गंधर्वा सिद्धं कन्या च किन्वेरी नागं कन्यका विद्या धरी किंयु
 ल्या प्रिये यथा नुर कीर योऽस्वरा दीना मसु जार क्रोनः १२९ १३० सप्त अंनम दन्मादि हलो यंजना नि कंनम दन्मादि कलाहले योड अयवे १३१ मंजु चोषयस्य

४ अस्य कालरात्रीमंभस्य रसस्य विजगति खंडः भलर्कनिषा नीकालरात्रिदेवनाभ्यो विजंभाया द्यौतिशक्तिः मय्यभिष्टुतः॥

सर्वस्य भूजय २ हे इति निर्दलय २ सर्वसंभस्य २ मोहनास्त्रेण होविष्य उच्चरय २ सर्ववशं कर २ सास्यो देहि २ सर्वकालरात्रि कयमिति गले च हि नम इति ग
 लनामधरास्यत्र यस्त्रिंश इति राश्या ६ कासिका की ७ ८ वेदने काले भवतुर्विषयतिवर्त्यैः नाल्पसि वल्यैः के पंचविंशतिवर्त्यैः ८ नंदचंद्रास्य रेरेको नंद
 देवि एतत्पदमुच्चार्य तत उच्चारयद् यम सर्ववशं करुं इह स्वहा देहि शुभां प्रभः ५ सर्ववशं कालरात्रि निकाशिनो निगले चैरि नमो नैष
 मद्रा विद्या गुणसमधरास्य ६ ओषिर्हस्यो निजमतीस्रं नृस्य कर्कनिवासी सती देवनां कालरात्रि स्यात्तकालिन्ना वीजं मीरि नमं ७
 माया राशेति शक्तिः स्यात्तियोगः सेषासिद्धये पंचागुलियुगा राधां किं पसेही जपंचकम ८ दृश्यवेदने च्छले प्रसोका एषा सिवर्ण
 कैः भोक्ता शिवैकविंशत्पात्रमार्ष्टा दयभिः स्मृतं ८ यद्विश्रान्तानेन मत्त्वं नंदचंद्रास्य रेर्मनं विषयैर्वषट्मा निधायो हि च्यतिमिहि
 नां ९ उद्यमार्त्तदकांतिं चालि न कर्कस्य च स्वातर्गा दंडलिं गं करुं वै रमय भुवनं संदधानां विनेया नानु कल्यैष भगवत्सो सि
 मय क मत्सो सि विना देवसंवेर्मा यस्य द्यौर्मनो मूला सविं कल न नृमा भये कालरात्रिं ११ अयुनं प्रजपे च नंदरात्रं च नृद्वयं निजैः च
 ारु है की व प्रेडा न संनर्पयेय मा नुयानं १२

॥ श्रुत्यैः ९ ध्यानमाह उवाचि नि दंडचरे दृष्टयोः त्रिंश भुवनैवाभयो भुवनं
 नाना कल्यैष भासां विविधाभरण समूह एभिर्नाम लोभू रास वि कल न नृनाम बाणज्वा कुल मरीर १११ ११२ ॥

६३२२३३ श्रीकान्तेभ्योऽसि सर्वजनमोहसि सर्वमुत्सर्गमभिसर्वराजवशं करिष्ये दुष्टानि दत्तानि सर्वस्वीपुरुषकर्मणि चंदिभुंक्तलस्रोदयस्रोदयसर्वगन्धमं जयमन्यहं हि निर्दल्य
 ११४ यथा कथां किं दिवि निमदीये पूर्वोक्तस्य पात्रवर्तने यमस्थानावश्यं कर्तां दर्शयानि त्रिपलविनोपादे एकपलपूतेन निमदीये रोदयो यथा कथां किं हा सर्वपादान
 ३३५ दीपस्य नमोऽर्जुन काले संगादस्य रेषा नां यद्दत्तमिदं त्रिपलकादह मां तं डः सूर्जेन मस्का रं प्रियः दुर्गा सुंदरी ११७॥ इति मंत्रमहोद्यविनोकायां कर्तव्यं
 विष्णुः सर्वरिषिः साकं तस्य नखं निद्रकः सर्वस्य जगत्स्य निपुणान्नौ जानधुनं ययः ११४ यथा कथां किं दिवो दीपं निर्यगे हे समाचरेत् ॥
 कर्तव्यं योर्जुन श्रीह्ये सो भीष्टस्तभने नरः ११५ दीपप्रियः कर्तव्यो र्थो मां तं जेन निवत्सभः सुविदि योमहाविष्णुर्गले यस्मा र्पणी प्रियः ११६
 दुर्गार्चनप्रिया नूनमभिवेकाभियन शिवः तस्मातेषां प्रतोयाय विदध्या नतदाहसः ११७॥ इति मंत्रमहोद्यविनोकायां कर्तव्यं योर्जुन क
 मस्य सदृशसंरागः ११८ ॥ कस्तुराग्निमयो वदस्य सयत्तगणसूदनीं वास्वाकशक्तिं कदप्यस्माः कान्तेभ्यो तिव १ सर्वजनमनेव र्णा
 हरिसर्वमुखो गतः सौ भवन्ते सर्वराजवर्णकश्चिदंततः २ सर्वदुष्टानि दत्तानि सर्वस्वीपुरुषार्थोक्ताः कर्मैव एतेति न गोवंदीभुंस्तला
 स्त्रोदयद्वयं ३ सर्वशर्वान् भुंजयहे हे हि विन्दस्व यद्वयम सर्वसं भययुग्मं स्यान्नो ह कस्तुत्रे यत्तगणम् ४॥

रुनमंत्रानिरूपणं सातदशसंरागः ११९ ॥ ॥ कस्तुराग्निमंत्रमाह गोरेति गारजे वाक्करं यन्त्रिः श्रीं कदप्यः स्त्रीं रमा श्रीं यथा जे २३३ श्रीकान्तेभ्योऽसि
 सर्वजनमनोहारिसर्वमुखसंभानि सर्वराजवशं करिष्ये दुष्टानि दत्तानि सर्वस्वीपुरुषार्थोक्ताः कर्मैव एतेति न गोवंदीभुंस्तला
 निर्दल्य स सर्वसं भययुग्मं स्यान्नो ह कस्तुत्रे यत्तगणम् १३३॥

भूषयंभूषिष्यनं १२३ निष्ठीयिभ्यांरात्रौ १२४ १२५ १२६ दत्तादिहनेनगुरुं दत्ताथयते ३ कार्तवीर्यस्यदीपदानंकारयेत् १२७
 आसमाभिः प्रकुर्वीतत्रसचर्ष्यचभूषयं स्त्रीभूद्रयनिनादीनां संभाषामविचर्जयेत् १२८ ज्येष्ठसहस्रं प्रत्येकं मंत्रं त्रयजं नवां
 द्वादशो नृपारं प्रतिदिनं निष्ठीयिभ्यां विधेयम् १२९ एकपादेन दीपाये स्थित्वा यो मंत्रं नयकं सहस्रं प्रजपेद्वाचौ सो भीष्टं
 सिद्धिमाप्नुयान् १३० समाप्य शोभनेष्वेसं पूज्याद्विजनायकान् कुंभोदकेन कर्तारमभिषेचन् नृस्यारन् १३१ कर्माग्रे द
 क्षिणं दद्यात्पुष्कलां गोषहेतवे गुरौ तुष्टे दद्यात्भीष्टं कृतवीर्यं सुमोत्तमः १३२ गुर्वां तया खयं कुर्यात्वादिवाकारयेद्गुरुं द
 त्वा रत्नादिदानेन दीपदानं धरापतेः १३३ गुर्वां त्वा मंतरा कुर्याद्यो दीपं स्वेष्वसिद्धये प्रत्युक्तानुभवन्नेव ह्यनिरेव यदेतदे १३४
 दीपदानविधिं ध्यात् कृतं द्वाद्विंशो गुरुः दुष्टिभ्यः कथितो मंत्रो वक्तुः स्वावलोकनेन १३५ उक्तं मंत्रो वृत्तं श्रोतुं मध्यमं सहि
 । भवम् तिलैस्तुषादकस्यानकनीयो जाद्विजं घृतं १३६ आस्यसे गोसुगंधेन दद्यात्तैलेन दीपकम् सिद्धयर्थं मंत्रेनाप्य
 षणानां शहेतवे १३७ सहस्रेण यत्तैर्दीपैर्विहितेन दश्यते कार्यसिद्धिस्तदा कुर्यात्त्रिवारं दीपजं विधिः १३८ नैदासु
 र्भक्तो यो सिद्ध्यति तेन संशयः यथा कथं विधिः कुर्याद्दीपदानं स्ववेश्मनि १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ अजादिघृतं कनीयो वयं १४३ ॥

मं दी नौ ^{११०} व्याख्या पूर्वोक्तविधिना ६९ नवाक्षरमाह नारदनि वारत्रे अननो विंदयुतः अंमाया ही खं वामने नयुक्त फीकर्मयी चरै श्रानि चंद्राक्षौ शीवं द्रु नैनेन

११०

व्याख्या देवं नो मंत्रपटी त्वने सिपे कुलम् नोनवाक्षरं मंत्रसहस्रानुरोजयेत् ६९ नारो नतो विंदयुक्तो माया स्ववामने नयुक्तं
मंत्रो योति वं द्राक्षौ वा न्हे नार्थं कु श्रुतः ६९ अथिः पूर्वस्मिन् नुष्टपक्षे न्यनु पूर्ववत् सहस्रं मंत्रराजं च जपित्वा कवचं पठेत्
६९ एवं दीपप्रदानसमकर्मो नमस्वित्तिस्मिन् दीपप्रबोधकाले नुवर्जयेत् शुभांगिरम् ६९ विप्रस्य दर्शनं तत्र शुभदं परिकीर्त्ति
नम् शुद्धाख्यं मध्यमं चोक्तं स्वेच्छस्य वधवं धदं ६५ आरोचोर्दर्शनं दुष्टं वा व्यस्य सुस्मवहम् दीपज्वाला समासिद्धौ वक्ता
नाय विधायिनी ६९ सशब्दमयदा कर्तुं न्वत्वा सुखदा मनां कल्याणं शुभयोग्यं कर्मणी पशुना हि ६९ कृते दीये यदा यत्र
भूतं द्रव्यं नैव तः पसादर्वकृत् दागच्छेद्यजमानो यमात्यं ६९ वर्त्मनारं यदा कुर्यात्क्राव्यं सिद्धे हिल्लवतः नैव हि नो भवेत् न कर्ता
तस्मिन् दीप्यं नरे कृते ६९ अश्वि स्य र्धने का धिर्दापना श्रेतु चैरभीः शुभाजो रासु संस्पर्धे भवेद्दयति नो भयं १०० याचारं भवेत्सु प
क्षैः कृत्वा दीपो रित्सेष्टः नस्मादीपः प्रयत्ने न राखणी यो न रायतः १०१ ॥
अस्य नवाक्षरं कर्म बीर्मंत्रस्य दत्तं नैव अक्षिभ्युत्तुष्टं दत्तं कर्म बीर्मंत्रं नरे व
॥ ६९ वा न्हे नार्थं कु श्रुतः ६९ अथिः पूर्वस्मिन् नुष्टपक्षे न्यनु पूर्ववत् सहस्रं मंत्रराजं च जपित्वा कवचं पठेत्
६९ एवं दीपप्रदानसमकर्मो नमस्वित्तिस्मिन् दीपप्रबोधकाले नुवर्जयेत् शुभांगिरम् ६९ विप्रस्य दर्शनं तत्र शुभदं परिकीर्त्ति
नम् शुद्धाख्यं मध्यमं चोक्तं स्वेच्छस्य वधवं धदं ६५ आरोचोर्दर्शनं दुष्टं वा व्यस्य सुस्मवहम् दीपज्वाला समासिद्धौ वक्ता
नाय विधायिनी ६९ सशब्दमयदा कर्तुं न्वत्वा सुखदा मनां कल्याणं शुभयोग्यं कर्मणी पशुना हि ६९ कृते दीये यदा यत्र
भूतं द्रव्यं नैव तः पसादर्वकृत् दागच्छेद्यजमानो यमात्यं ६९ वर्त्मनारं यदा कुर्यात्क्राव्यं सिद्धे हिल्लवतः नैव हि नो भवेत् न कर्ता
तस्मिन् दीप्यं नरे कृते ६९ अश्वि स्य र्धने का धिर्दापना श्रेतु चैरभीः शुभाजो रासु संस्पर्धे भवेद्दयति नो भयं १०० याचारं भवेत्सु प
क्षैः कृत्वा दीपो रित्सेष्टः नस्मादीपः प्रयत्ने न राखणी यो न रायतः १०१ ॥

इति कवचं चंद्रा मणे कं ६९ दीपप्रारं भेदकृत् नमाह दीयेति ६९ ६५ आस्येति प्रथमं कर्मा करिणोः ६६ ६७ ६८ ६९ १०० वसुपत्नैरष्टपत्नैः अंतरायते विधि

ॐ अं हीं वषट् कार्त्तिकीर्णं जुनायमाहिष्मनीनाम्नाय सहस्रवारं वेदसंस्तुतं तदीक्षेत्तापदतात्रेयप्रियाय आनेष्यायात्तुमुयागर्भरेत्कामं उग्रं रमदीपयुहाय भुक्करस्य
राशिर्वचदशेनारण्यतपत्ताम्रपात्रं अक्षिप्रसंस्थानंदिपंचाश्रान्तमभिनं अभ्यन्नेवमेव धृगानुसारेण पात्रं कल्पं ७३ वह्निस्तीपत्यत्रिपलं ७४ विष
मावर्तिकाश्च चारुकोत्तराश्रान्तादियं निधीति पचदशादिसहस्रपर्यंतं यातुसंस्थानया विनिर्भिनाः कृताः ७५ ७६ तदर्धमष्टांशान्तदर्धवचनं तुल्यं
यनेक्षिप्रसंस्थानमनेकमन्यत्र कल्पयेत् ७३ निम्नदीपे वह्निपलं पात्रमां ज्यपलं स्मृतं एवं पात्रं प्रतिष्ठाप्य वतीः सुचोत्थितं न क्षिपेत् ७४
एकानिस्त्रोपपापंचसमाधाविषमा अपि निधिमानासासहस्रं न तु संस्थाविनिर्भिनां ७५ गोद्यतं प्रक्षिपेत्तत्र शुद्धवस्त्रविषेधिनं स
हस्रपलसंस्थादिदशांतं कथ्यं गौरवान् ७६ सुवर्णादिकृतां रम्यां शलाकां बोड्यां गुह्यां तदर्धं चानर्द्धं वा सूक्ष्माणां सूक्ष्मसूत्रकं
७७ विमुंचेदक्षिणे भगोपात्रमभ्येकमायुक्तां पात्राद्दक्षिणदिदेशे भुक्तां लघुषट्पदं ७८ अथोपां दक्षिणां धारं निरवने न च्छुरिकां
शुभां दीपप्रज्वालयेत्तत्र गणेशसमतिपूर्वकं ७९ दीपान् पूर्वत्र दिग्भागे सर्वतो भद्रमंडले नंदलाहृदले चापि विधिवत्स्थापयेद्घटं
८० तत्रावात्सुनृषधीं पूर्णवत्पूजयेत्कुधीः जलाहृतात्समादाय दीपसंकल्पयेत्ततः ८१ दीपसंकल्पमंत्रोष्णकण्ठनेदीषु भूमिनिः प्र
८२ आः ह्रीं ऐं व्रीं नमः ८३ एतवः प्रशमोय च क्षिप्रं वीकां न क्षमाणि च ८४ वीर्यार्जुनाय माहिने गर्भरत्नाय नमः ॥

॥ ७७ ॥ पात्रादक्षिणे चतुरंशुत्वं भिन्नं त्रिका
क्षुरिकां भूमौ निक्षिपेत् अथोपां यस्याकां दक्षिणस्यां भ्रमामस्याकां ७८ ७९ ८० ८१ दीषु भूमिजो द्विपंचाश्रान्तं राशनासु रोदीपसंकल्पमंत्रः
दृष्टान्नाश्रय नाश्रय पात्रपात्र पात्रानय पात्र पशुचं नदिजशिः ॐ श्रीं श्रीं स्वाहा अनेन दिपपर्येण पश्चिमाभिमुखे भद्रं करस्य भद्रं चरप्रदानाय दीहीं हीं श्रीं श्रीं स्वाहा न च्छंदं च नयं क

६२ द्वाविधिरह आद्यरति कौभूमौ ६४ एष रंक्षीं ६६ वद्वर्णने जं क्रौवीधूं आं हीमिनिषट्केषु स्वायमारभ्य लिखेत् क्रौं श्रीं हं कडिति दिष्टु यो वै न वासुरै
 लषपागेषु पूर्वाहेदीपारंभः कर्तः शुभः कार्तिके शुक्ल सप्तम्यां निषीधे गीवशे भर्तः ६२ यद्विनाशरवे र्वाहः श्रवणं भर्तुं दुर्लभम् ।
 अन्मावश्यकक्रा र्मुषमासादीनां नखे धनं ६३ आसेत्सुषोषा निषीधे गीवशे भर्तः प्रातः स्नान्वा शुद्धमूर्तौ लिप्तायां गोमये टर्के
 ६४ घ्राणनामप्यसंकल्पं न्यासा नूतोरिति श्वरेत् षट्कोणं रचयेद्भूमौ रक्तचंदनं तुलैः ६५ अंतः स्मरं समा लिख्य षट्कोणे बुधसमा लि
 खेत् मंत्रं एजस्य षट्कोणं नैर्कामवीज विवर्जितान् ६६ श्रुणिषद्वा विमं चार्त्विजं पूर्वाघाणसु संलिखेत् न चार्त्वेष्टयेत् चैत्रिके एतद्वहिः
 युतः ६७ एवं विस्त्रिखिते यंत्रे निरध्या हीय भाजने स्मरणं नैज तेष्वं चोना भजनं न रमावर्तः ६८ कोस्पयानं भूषणं यंच क्रनिष्ठं लोहजं मृदौ
 शान्ते ये सुद्रुणैः संखो बोधू म चूर्णजं ६९ बुधे बृहस्पतौ ननु यानं कुर्यात्प्रयत्नतः अर्कदिर्गैव सुषट्पंचचतुरायां गुलैर्मितम् ७० आ
 भयं लसहसं तृणत्रयं न पत्तैः कृतम् आज्ये युतं पत्तैः पात्रं कलपंच यमी कृतम् ७१ पंचसप्ततिसंख्ये नृपात्रं षष्टिपलं मतम् त्रिसहस्रेषु
 । पलैः शार्कं पलभाजकम् ७२ हिमहस्त्रेश्च शिवं शनोर्द्वित्रैः शाना मतम् ७३ वैष्टयेत् ६० ६८ ६९ पात्रमानमाह बुधरति बुधे मूले उर्ध्वं च षण्
 ७४ कियनमाह अर्कं नि मूले उर्ध्वं यद्वारेणादिमानैरंगुलैः कार्यं शार्कं पापलभाजनं पंचविंशतु नराशानपलमिति पात्रं ७५ हीति सहस्रद्वयमिति षट्नेरा

अनुष्ठुभंमंतातरमाह कार्त्तनि कार्त्तवीर्यार्जुनोनामराजावाहसहश्रकन तस्यसंस्मरणदेवदत्तं नष्टं च त्रभ्यते इति ५२ गायत्रीमाह कार्त्तवीर्याय
 विप्रहेमहावीर्यायधीमहि न न्योर्जुनः प्रचोदयादिति ५३ ५४ ५५ ५६ दीपविद्यानामाह अद्योदिति ५७ आरंभेमासानाह वैश्यास इति ५८ रिताश्वतु
 कार्त्तवीर्यार्जुनोवर्णनामराजापदंततः उक्तावाहसहस्रांनं चान्पदंतस्य संततः ५२ स्मरणदेवं वर्णोत्तरेत्तं वष्टुचं संपदे
 न लभ्यते मंत्रवर्षा यं द्वाविंशत्संस्तवः ५३ पादः सर्वेण वर्णां व्यानयो गदि पूर्ववत् कार्त्तवीर्याय शब्दोने विप्रहेपदमीरयेन
 ५४ महावीर्याय वर्णोने धीमहि इति पदं देतं न न्योर्जुनः प्रचर्णोत्तरेत्तं देयां न्यदमीरयेन ५५ गायत्र्येयां न्योत्तरेत्तं चान्पदंतस्य संस्तवः ५६
 येन तौ अनुष्ठुभंमंतां जयन्ती चोस्सं च ५६ पत्नयं गृहान् दूरं तर्पणा हवनादपि अद्योदीपविधिं वस्ये कार्त्तवीर्याय धियं कर
 म् ५७ वैश्यादेवां वलेमां चानिर्वाचि न ये पतः माद फाल्गुनयो मासे दीपारंभः प्रशस्यते ५८ तिथौ रिक्तादिहीना चान् चरे शुक्ल
 और्विनां हस्ते न राधौ ऐरे बुधव्यवै स्यवां युगे ५९ द्विदेवने च रोहिण्यां दीपारंभः प्रशस्यते चरमं च वृत्तौ पाते धूर्तौ हृद्दौ सुक
 र्मुखा ६० श्रीनौ हर्षवसौ भाग्यं शोभना सुष्मनो रपि करेण विप्रिगृहिने ग्रहणेर्होदयादिषु ६१ ६२ कर्त्तव्यमी चतुर्दशकाद्रिहिन निष्कैन
 स्तुत्तमायाह हस्तेति रोदमाद्र्यैश्ववंशवर्णं च शुभं स्तामिः ५९ द्विदेवने विषाखायोगानाह चरमेति चरमेवै धूर्तौ रात्रावरेत्तायां पूर्वहेव ६०

८ कार्त्तवीर्यार्जुनोनामराजावाहसहस्रवान् तस्य संस्मरणदेवदत्तं नष्टं च त्रभ्यते ३२॥

८ कार्त्तवीर्याय विप्रहेमहावीर्याय धीमहि न न्योर्जुनः प्रचोदयात् ॥

यः को गोपाहः भूनेनेति अष्टादशा एमाह नाह इति तृगन्मः कार्त्तवीर्यार्जुनेकाथेनिडेनः ॐ नमो भगवते कर्त्तवीर्यार्जुनाय हुं फट् स्वाहा इति ५३ ५४ मंत्रान्तर
 ग्राह नमस्तुति यथा नमो भगवते श्री कार्त्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुष्टान्तकाय तपोवलपराक्रमपरिपालित सप्तद्वीपाय सर्वरक्षणाय चूडामणये महाशक्ति मने सह
 भूनेनेनेनेनाहिवले रस्यां पांचकम् ^{अं-सूः} गाराहृत्तृगन्मन्त्रे नः कार्त्तवीर्यार्जुनेनाय ५३ चेमास्त्राणि श्रिया मंत्रः प्रोक्तो ह्यह
 वरिवाव त्रिवेदसंयुग्मास्त्रिवैः युंचांगर्भमनोः ५४ नमो भगवते श्री कार्त्तवीर्यार्जुनाय च सर्वदुष्टान्तकार्यनिनेयोवलपरा
 क्रमः ५५ परिपालितसद्यो ते ही पाय सर्वरापदं जन्मचूडामणनेये सर्वशक्तिमने गतः ५६ सहस्त्रवाहू चोन्नतं च मस्त्रां गोपरा
 मनुः त्रिवर्षे वरिचान् प्रोक्तः स्मरणस्तवी विघ्नहर्ता ५७ राजन्यचेकवर्गो च वीरः भूरक्षती यकः माहि क्यनी पतिपुष्पान् च नृप
 समुदीरितः ५८ रेवां पुशिनम् ^{हं} चकार गोरुप्रवाधितः दशास्य श्रुतिपद्भिः स्यात्पदैर्देवैः षडंगकम् ५९ सिंघ्मपानं युवमभिः किरंडं
 नेनेर्मदाजले हजेर्जलो धंरं धनं ध्यायेन्मनं नृपानमम् ६० एवं व्यात्सायुनं मंने जयेदम्यनुपूर्ववत् पूर्ववत्सर्वमेतस्य सया राधु ।
 हुं फट् इति ५५ ५६ ५७ अस्य षडममाह राजन्यो देवेने अमु ध्येनैः पदैः षडंगं स्यात् यथा राजन्यचक्रवर्तिने हृत् वीराय शिरः पूराय शिखा
 नीपतये कर्भरे ५८ रेवां पुशित सायनेनं कारागो हप्रवाधित दशास्यायास्त्र ५९ अमुने जयेत् अन्यममो गाहिकं पूर्वैः कर्त्तु र्दश हार
 ॥ गतने श्री कार्त्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुष्टान्तकाय तपोवलपराक्रमपरिपालित सप्तद्वीपाय सर्वरक्षणाय चूडामणये महाशक्ति मने सहस्त्रवाहू चोन्नतं च मस्त्रां गोपराधु ॥

[illegible][illegible]

अभिज्ञानमाह भुहेति अष्टगंधैः चंदनागुरुवासरुकुम्भकर्मरुहेचनजलम सीभिः तत्रयंत्रेतचकुंभे २३ २४ स्वजनरंजनं जनवप्रयत्नां २५ सुदण्डोनादीपु

यस्य सद्व्यवस्था

कविः कादम्बिनः कर्मरुहेचन

उष्णाद्यस्वरकेसरपरिवनशेकैः स्वकोरणस्त्रसद्गुणालिप्तिमंदिसहस्रमिदं यंत्रं धराधीश्वरः २२ भुक्तं भाववृणं धौल्यस्त्रित्यं यंत्रं
दशानं तत्रकुंभं प्रतिष्ठाप्य तं चावाह्यं च येन नृपं २३ संपृक्तं कुंभं यंत्रं स हस्तं विजितं दिवः अपि विवेकं देभोगिः प्रियं सर्वेषु सिद्धि
ये २४ पुत्रान्यशोरोपानाग्रमायुः स्वजनरंजनं वाकसिद्धिं सहस्रं कुंभाभिषिक्तो लभते नरः २५ यात्रूपद्रवमायने ग्रामे वापु वभेदने
संस्थापयेद्विदं यंत्रमरिभीति निवनये २६ सर्वपापैर्मुक्तं पुनर्कायसिर्मायने रियुः धनं संप्रपन्नं निवेदं यंत्रं वश्यं ते देवैः २७ उ
च्चाटयते विभीतं स्यं समिद्धिः रवदिरस्यं च कटुनेत्रमहिष्याज्ये हेमद्रव्यां जनस्मृतं २८ यवेदुर्गैः श्रियः प्राप्तिस्तिलैः रज्ज्वैः वृष्ट्या यः नित
तं हस्तसिद्धार्थं त्यजेत् सर्वशो नृपो भवेत् २९ अपाभायां कंदर्वाणां होमो लक्ष्मीप्रदो भवतु न स्त्री वश्यं कृतं नृपि यमात्रापुराणं भूतशान्ति
३० अभ्यर्थाद्वं च रत्नसं वदं चित्त्वं समुद्रवाः समिधो लभते हस्तापु न्नापु र्धनं सुखं ३१ निमोक्तं हेमासं ह्यर्थं लवणैः शो रनाशनं
नागो मयैः संभो भूद्राक्षिः शालिभिर्हृतेः ३२ होमसंख्यातु सर्वं च सहस्राद्र्युतावाधिं प्रकल्पनीयं भंजसेः कार्यं गौरवलाघवाने ३३

। गारे २६ अरिष्टानि फेनिल फलाणि पद्मैर्वप्यते वशीक्रियते इतैरिति सर्वं व्यन्ययः २७ पुराणं गुण्यत्वा निमोक्तं सर्वं कंचुक हेम धनं २८
कार्यं गौरवलाघवान् अश्रिक कार्यो होमवाहृत्यं अत्यंतं ३१॥

मं दी
के-त-२७
१-६

दिसु चोत्तरपदविभंजनदीध्वजुरविदिसुदृष्टनाशादीनदृष्टिनापर्म्येकाश्रकोदुरितनासकोगंणशकश्च १५ यंनमाहद्विपत्रमिति द्रव्यवत्तं विलिख्यकर्त्तिका
यासवीजमदनशुभादिवाचोविरक्तस्ववीजंक्रोभदनःकींशुभादिः अंवाकंस्ववीजानिवाभंनदिलिनवर्मोत्तानिप्रपञ्चादीनिदशवीजानिद्विष्युपपन्न
याशेषार्थाः कट्कार्त्तवीर्यार्जुनपुनमरतिदशयचानरेषुपपन्नअभाएः प्रथमहासौगढ्याः स्वराः केसरेषुपपन्नप्रतिकेशरद्वैद्विशेषिः कदभिरुषा

पेणनशय

मध्येग्रीष्मसुरमरुत्कोणेषुदृष्टयादिकानचतुरंगं चसंपूज्यसर्वतोत्वंतनोपजेन १५ एकचर्मधृष्टवेपथुः चंद्रभाअंगमूर्तयः प
दकोणेषुषडंगानिनोदिसुविदिसुच १६ चोहमर्हविभंजनंमारीमंदविभंजनं अरिमंदविभंजनं हैत्यमदविभंजनं १७ दुःस्वनाप्र
दृष्टुर्नोपदृष्टिनामयनाश्रकोदिसुदृष्टयाकपः पूज्याः प्राच्यादिसुसितप्रभाः २० हेमंकेरीवश्यकेरीश्रीकर्त्तौचयशस्करी आयुः कशीतया
प्रज्ञाकरेभिवैद्यकरैपुनः २६ धनंकर्यष्टमीपञ्चान्तोकेषुअखुसंयुताः एवंसंसाधिनोमंनः प्रयोगार्हः यजायते २० कर्त्तवीर्यार्जु
नस्याथंपूजार्थं बज्रमुच्यते दिकैपनोचितस्वेतस्ववीजमदनशुभादिकर्त्तकालेकंमंत्रमितिप्रणवादिबीजदशकंशेषार्थयसंनरमर्ष
हीनेवोपुतंस्वकोणेषुत्रसंज्ञोभूतार्थाः पंचभूतवर्णयन्नादशंपनस्थितिमंहरं चतुःकोणंनोत्तनं वृत्तीयावर्गणः कर्त्तवोत्तलः पर्व्विचामनादभूना
नाकर्त्तव्यवोविरोजरंगवस्थाने यत्रसंज्ञोभूतवर्णस्थिः शालावाधाः वश्येनैजसाः उच्चुदनेवायवीयः विद्वेषेनामसाः मास्तेपिनेजसाः नलस्यमंदचंयोक्त
प्रशस्तंशानिकर्मीणदमादिवस्थमाणात्वात् दंदधनधीशितुः कर्त्तवीर्यस्यंयंनं २६ २० २१ ॥

इति श्री सावित्रीमकरन्द, आद्योपस्यार्द्रदशः अर्वाग्रयुक्तमात्र, पुनश्च मायया शिखरां हं शिखरायेव सत् सत्ता गगणोदयुताभ्यां जं कुं शय द्याभ्यां चर्म के
 न्नैकवचाय हं ७ वर्मास्त्राभ्यामस्त्रं हैकद अस्त्रायक दशे पाणेः कार्त्तवीर्माजुनायनमूद निष्कायकं वर्त्तय्या समा हृदय इति सक्थेन र्त्तुर्जनि नोर्ज
 ६ इहां तु साम कर्णधुमापयार्त्तशायुक्तया शिखामुक्तया शिखामुक्तागभ्यावर्त्तुत्तुसर्त्तु ७ वर्मास्त्राभ्यामस्त्रमुक्तशेषाणां व्यापुके
 ७ चरेत्तु हृदये जद्वनभोजनद्वे मुखादशके ८ इत्यपि द्यामया दिसि जनि वृत्तः विन्यसेद्दिजुद शकप्रेण च हयमभ्यां ८ ना
 ८ सायान्नवशेषाणां नैमसिके वल्लोदके भुक्ताः भुक्ता कथैवास्त्रा नोसि वक्तव्यसक १० सवमने एषवंगि कर्त्तव्यापकमां ८ ना
 ९ सर्वेष्टसिद्धये भ्यायेन कार्त्तवीर्यजने भव ११ उपसृप्य स हस्तकां निरसि च सोष्णीधवैर्विद्रोहस्त्रा नां शनयं च केन च र्थचा ८ ना
 १० यानि च स्त्रासनां कंठे हावका सास्य पारिवर्त्तय क्तावक्ता हरेः पायां स्पन्दनगोरुण्यवसतः श्री कार्त्तवीर्यो नृपः ११ लस्य मेकं जेपे
 ११ त्रैदश्यां जं जुह्वानि लैः साने इलैः पायसेन विष्णुगोदये जने १२ वस्यमाणे दश हते वनभयुरसंयुते संप्रज्यवेद्यवीः शकौ लज्जान्वा
 १२ इमेव प्रणवद्वयां तस्य वीजं मसेन जं कौं जं हृदये वीजं जगदस्मादि ८ गरायां नि जं कामस्तके जं गं वस्ये दस्मादि ९ व्या न्माह उवादिनि
 १३ सोष्णीधनेः सर्वकर्षणैर्वैर्जनेः तावन्नाह कथानयं च केनोष्णं कथानन्दयम् स्रुतकमास्य वास्येष्टज्जस्य दनगोरुयास्थितः १२ १३ १४ ॥

१३

मं. दी. २५

इति मन्त्रमहोदायौ नैकायां शिवादिमन्त्रकथनं चोदयत्तरंगः ॥ १६ ॥ कर्त्तव्योऽर्जुन मन्त्राच्चतुःप्रतिजानीसे अथेति बोधितानमेव चार्थः शंकराचार्यप्रभृतिभिः
 प्रकाशितान् १ मन्त्राजमुदरानि वन्द्यनि शैलीकः वन्द्यैकः गार्हो नाभ्यामुत्तानेन कर्त्तव्यः वः अथोदयानि युक् एवं ईशुत्तानेन श्रीवैधाः कः धरेदुःशं
 नाकः त्विदं दयः तं त्रैको निरुधः अर्धश्रमि विदुः युक् अर्धविदुः युत्तानेन नृ २ यथा आभायाही अकुशः कोपमाश्री चर्मह अस्य फट् कर्त्तव्योऽस्य वप्रा
 इति श्रीमन्महोदयो शिवादिमन्त्रकथनं चोदयत्तरंगः ॥ १७ ॥ अथेष्टदात्मनून्वस्ये कर्त्तव्योऽस्य गोपितान् यः सुदर्शनच
 कर्त्तव्योऽस्य निमं दले १ वेद्विनाशुत्तानोऽस्य मन्त्रोदयानि युक् वधायुदधनमोदयानि ईशोऽर्थाः विदुः युक् गोशोभायाकु
 शं यः चर्मास्त्रिकर्त्तव्योऽस्य २ वेद्विनाशुत्तानोऽस्य मन्त्रोदयानि युक् वधायुदधनमोदयानि ईशोऽर्थाः विदुः युक् गोशोभायाकु
 यतादिर्नस्ववर्णकः ४ स्तान्नेपोभुनिश्चास्यं छं सेनृष्टवदत्तने कर्त्तव्योऽर्जुनोदयोऽस्य मन्त्रोदयानि युक् वधायुदधनमोदयानि ईशोऽर्थाः विदुः युक् गोशोभायाकु
 ददयं विनयेदुधः शानि युत्तानि गीयेन कर्त्तव्योऽस्य मन्त्रोदयानि युक् वधायुदधनमोदयानि ईशोऽर्थाः विदुः युक् गोशोभायाकु

उद्युतो तेन नृ ३ मेघोनः सदीर्घः नापवने यः दंति कोनमो तो मुतः कश्चिन् प्रणवादि विंशत्यर्थः द्रवजो वीजनमः यन्नि ४ वडंगमाह शेषेति शेष अ
 नृशुतो नापवो जदयेन दत्त आकारयुत्तानादयस्त्र निवृत्तिः तेन को २ ददयानममः शान्तिन ईशुतेन चतुर्थोऽनेन कामवीजा केन शिरः स्त्रीयो शिरसि स्त्राहा
 ३ स्त्री चोऽर्जुनो अर्जुनो कः श्रीरुक्मर कर्त्तव्योऽस्य मन्त्रोदयानि युक् वधायुदधनमोदयानि ईशोऽर्थाः विदुः युक् गोशोभायाकु ॥ १८ ॥

मर्त्तिकालसंभोगीव स्याद्युगः कः केतुदयं नमः शुक्लसंयुत अयं प्रणवयुगः १२ षडंगमाह चंद्रनि जं तन एहीये श्रीस्तिंगिखिलेनादि ध्यानमाह फुल्ले
 नि असवेदसः करेदं दीवर मालां दधनी अपरे वीजप्र एव चंद्रकांतिः नेजसा एवितु त्वागो येराकाष्टा मुसीयश्च माभिमुखी पुंडरीकेः सितावृजे गंग बाम्भ
 मणिकर्णमणित्रिभुजा त्दश्यधुक् संयुतः मंत्रः पंचदशार्णोस्य मुनिव्यसिनिष्कर्ष १३ छंदः श्रीमणिकर्णो नृदेवता सुखयुक्ता च
 ईनेत्राख्येनेत्रेषु चन्द्रवर्णेः षडंगकं १४ फुल्ले दीवर निमिनां करतले या त्या मं सव्ये करे वीजाप्र फलसिनां वृज मयी मालां दधानां दि
 श्वेनदो महतां शदि धुनिभा व्यस्य नि चंद्रां जसि ध्याने च मणिकर्णो कं रा विमर्गानि ये शब्दाष्टा मुखे १५ सप्तत्रयं ज्येष्ठं मंत्रं सुहृत्पात
 दशशतः पुंडरीके त्रिभुजैः पुनेत्रांगं गायामं १६ अयं मनुजैर्नैर्वोमोस्य लक्ष्मीं प्रयुक्तानि सत्संभक्तं सजानं सीभामयं धनसंभ
 यं १७ प्रणवो विदुषा भवेत्तु मणिकर्णो कं प्रणवस्त्रिभुजैः केतुदयं मंत्रो मनुवर्णस्य पूर्ववत् १८ विधेयो या सना सर्वमणि कर्ण उपासकः
 १९ गंगामंत्रं दवावर ए पूजां कर्तान्नस्या एव मंत्रांतरमाह प्रणव इति भांगोमः यथा मं मणिकर्णिके प्रत्यक्षात्किं केन मः मनुव ॥ कुंदो गोममूर्तो
 नृदशा एः अस्या पासनाय च दशा एव दिद्ये पाः मणिकर्णिकोपासकः कुंदो मगवा दैमृ गोपि वक्ष्ये च स्यात् १३६ ॥
 । समं न स्य वेदव्यासः कथिः शक्ति चंद्र श्रीमणिकर्णो केतुवता मम भिक्षुसिद्धये न ये विनियोगः ॥
 ४३ मं मणिकर्णिके प्रणवात्मिके न म् १४ ॥

मं. टी. नौमर २८

मं. चोमर माह नारदनि वाक्यं गगनं हः सह कद्रु नः क्रिया लः तं दीमः पि न की शो लः विषं मः लः स्वरूपं एते सूक्ष्म संयुता द्युक्तः नेन हि लिहिलि मि लि मि
 नि हुन वहां गना खा हा गिरि ने चा द्यही सम दिं धन पर्णः यथा ओं न मो भगवति र्हे हि लि हि लि मि लि थ २३ गे गो मां पा वय य स्वा हे नि २४ षट् ग माह य
 भेति अंजनं वदय मे व नि धा आदि नाः प्रथ मे ये स घा र्ण ओं न मो भगव नी नि न ह्यो नान स र स ही वि श नि व र्ण २२५ मं नो न र माह नारद नि उ
 नो न मो भगव नि वा क सह क गग नो लि हि कि यो नं दी पिका की द्य वि षं मः सूक्ष्म संयुक्तः २३ गे गो मां पा वय य हे हं मं ते हं न व ह्यो
 गना मि रि ने चा द्य ही वि धा स्म ना पा त क सं व ह न २२४ य म वे दं यं व न्य क ने चो रें ग मी रि तं २२५ मा हि म स घा र्ण ल्य क म क न
 र व य द्य ही २२५ बा ण वे द्या दि ने र मा नि ने चा रें ग मी रि तं न र हि लि मि लि हे हं गे दे वि न मो मु नः २२६ नि थि व र्णो य म स्या मि
 ने चो र्ण ह्ये य च ह्ये भिः नो रें मा पा र मा ह न नो भग व नी नि च २२७ मं स्म न्य मी सं द क वा यु के न मो व र्म क द्रु म नुः वि ने ने वे द य चा ह्ये य
 यार्थे रें ग मी रि त मं २२८ ए र्णं च तु र्णो मं चा पा मु या स्तिः पूर्व क म ना च र्ण मा या क म ल का म वे द यो वि षं वि द्रु य क २२९ ॥
 २२९ श्री नमः भगवति गे मे ह य ने नो ३८ ॥

हि सि र मि लि र गे दे वि न म र दि २२६ नि थि व र्णः षट् ग माह अनी नि म न्वा न र माह नार द नि चार उ मा या ही र म श्री हार्द न मः २२७ स्म ति गे
 अ चि र्दः सह भा युः द्यु तो यः वि व र्म हं स्वरूप म न्य न यथा ओं श्री न मो भगव नि गा र धि ने न मो हुं क द्र अ ह्य द्र णा र्णः षट् ग माह श्री नि २२८ उ या कि
 पूजा पूर्व व दि ण न्य र्ण च न म ति क र्णो का म न म माह वा गि नि वा क रें मा या ही क म ल श्री का मः क्ती वे द य उ रं द्रु य क वि व सं वि द्रु मः मं २२९
 २२९ श्री नमः भगवति गे मे ह य ने नो ३८ ॥ २२९ श्री नमः भगवति गे मे ह य ने नो ३८ ॥

२२९ श्री नमः भगवति गे मे ह य ने नो ३८ ॥ २२९ श्री नमः भगवति गे मे ह य ने नो ३८ ॥

अस्यप्रज्ञस्यवेदव्यासमधिः कृतिवृद्धः यथादेवतामन्त्राणि सध्वर्षजयोवनियोगः॥३

ॐ नमः शिवाय नारायणायै नमः स्वाहा २.

नमामंभमाह प्रलवर्तति शिवाय गणीति पदद्वयं हे नंदराह गंगोति पदद्वयमपि चतुर्थं नं च न्हि जास्व हा यथा शेनमः शिवायैनाय पुरेयेदराह
 धनार्चनादिकं सर्वमस्य पूर्ववत् चरेत् अथ शंभोः शिरस्यायादेव सिधोर्मनूनुवे १११ प्रणवेदद्वयं उं नो शिवायैनाय यथायदे ॥
 नहदराह गंगोति न्हि जाय नरासह ११४ प्रनुर्वमसो मुनिर्हृदः कर्मिणा स्यादेवैव न्हि वेदवत् ॥ दिने नवर्षोः षडंशकम्
 ११५ उत फुल्लामस्य पुरो कुरु चिराद्विजय विधायि चार्कमेष्टाभयने यजानिदधनी वेना कालं कालं दृष्टा स्यात् शिशोस्तथा स्वि
 त्वनदी शेषादिभिः सेविता अर्थापाय विना शिनी मकरा गाभा मीरया साधकैः ११६ लसं जयेदरां शेन जुहवांसवृत्तिस्त्रिभुवः जय
 दिशान्निभिर्युक्ते यो देवा मीरयां यजेत् ११७ प्रयजेत् केशसे वंगं दले रुद्रं हरिं विधिं सूर्यादिना च तमेनाभयं दयमं वां यति ११८ दत्ता
 प्रतोभी नरुर्ममदं कमकं नयि हं सान्त्वा रं डवां च कर्वा कर्त्तुं साहसं कन्यजेत् ११९ चतुरश्रं कमुस्वप्नानुधैः संयुजान् प्रजे
 नं एवं संसाधितो मन्त्रो भीष्टं यच्च निमं विष्णं १२० जेष भुक् दशम्यानां विषये येषां भवेदुधः दद्याद्दशम्यो विप्रेभ्यो दशप्रस्थमिना
 नित्यान् २१ जस्वा स हस्त्रं दुर्वा चोष्य तत्र विकल्पकः सर्वभोगसमप्रयुक्तो जायते गान्धो मुवि १२२ ॥ एये गंगये स्वाहेति नस्तस्मिन्
 १२३ ध्यानमाह उच्यते इति वरः वरपद्मे दक्षयोः कं भाभये कनयोः मकरागामकरा हन्तः १२६ जयादयः शक्तयुक्ताः १२७ १२८ १२९ ॥

कुवेरमंत्रमाह पक्षायेति यक्षाय कुवेराय वै अवरणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिमेवेति ह वाप यस्तस्मिन् द वाणरागाः सारः पंचत्रिंशदर्धः
षडंगमाह श्रीविष्णुमहर्ष्यापनमदनादि १०७ ध्यानमाह मनुजेति गरुडखण्डमाणिः वराहदेहस्य चाम्बोः १८८ धर्मदीनिघोठयाज्ञभाषः

प्रयोगानुपूर्वमश्नन्नकुर्वन्नात्र दशासुरं भजन् विप्रो रुद्रजा पीभजेन सह १४ अथ मंत्रं कवेरस्य वदन्त्ये सर्वे सम-

[illegible]

100

१९३५

रदेति पंचाङ्गानि पञ्चानि ६५ पक्षिः पूजा समावृत्तिः समावरण युगः ६७ नागपृक माह शेषास्थरति अहयोक्तगाः ६८ एवमिति रथ्यपंचांगमासंकवावसुकि
 शास्त्रकलौ कलौ महापञ्चकं वलौ अतीराह विप्रदति १०० फणसंख्या माहदिगिति शेषः सह अफणः तस्य कः पंचयानफणः अननः सह स्रफणः वासुकि
 रथ्यवेतः पुडरी कोवा मनः कुमुदोजनः पुष्पदंतः सार्वभौमः सुप्रवीकः अदिगजाः ६४ पंचाङ्गा न्येवमापूजं भूगहे दिष्टुदिक् पतीन
 पुनरभर्चयेदीमान् षष्ठमावरणं सतं ६५ आग्नेय्यां भूगहस्यायां विरूपाक्षं पूजयेत् विष्णुं रुद्रं यान् चार्पेयां नृपक्षः पतिर्द
 उर्द्ध्वदिग्गमये शान्यामं यो मुसदनाहदि दिष्टुना गाष्टकं पूजयेत् वसवा वनिर्युनिः ६७ शेषो रथ्यस्यै कोनेनोवा सुकिः शास्त्रपाल
 कः महाप्रभुः कंवलं भुक् कोटं कटभः हयः ६८ भूगो नालः कुकुमाभः पीनं कंठ्या वयो ज्वलः वर्णिनः शेषमुखाः सुखे चां न्ना
 नीः फणान्त्रुर्व ६९ विष्णो वै रथ्यस्य विप्रैः स्यान्विषो वै रथ्यभूदिको भूदं चक्रमो हेयाः शेषाद्याः पूजने वचैः १०० दिग्वायां दे शस
 ादिशरसंख्या निजु क्रमानं शानानि विधा विंशत्पणक्षिषां समीदिनाः ११ एवमर्चनं महादेवं पंचांगमास पूर्व कर्म रथ्या सु
 न्या शक्रो न सी दे न्येष्टसाधने १२ मनोहा एणे हा भिसुं रथ्या वा मत्ते चनाः धनमिच्छा पूरणं तं रभने शिवसेवनात् १३ ॥

समशनफ एणे महापञ्चः पंचशनफ एणः कं वलं कं वलं को अं शान् एणे न प्या चै वं प्रयोगः भूगा या वि प्रवर्णय स रत्न फणाय शेषा यमपरमा

म-टी
नौ-नभ

१२

कलादिकरणेनलविकरणः गतीयेनग्रीयावरणेनत्वावरणेनत्वसंख्यानचतुर्विधमितिमान् ८३ तनेवाह सिद्धयदति नेउक्ताभवान् अन्तिम
वलोवल्लदिकरणेवल्लप्रमथनप्रथा एतान्संपूज्यगतीयेनत्वसंख्यानसुरानयेन ८३ सिद्धयेहीमानेरोहिभेभुव
कर्मिभ्यभूतं गत अतर्थावरणेभवात्मानस्यनन्विषः ८४ भवः प्रवर्तये शानययोरुहलवच उयोभीमोभहद्वचः शवा
एकमुदाहरतम् ८५ अनेतोचोसुकि आथनसके श्वकुलीरकः ककोटकः शास्वपलः कवल्य श्वनएवपि ८६ रमेवमाविनेपुं
हेहेभेभुनसंज्ञकः शार्कनलेयोभरनोनेलोरांमो नृपाष्टकं ८७ हिमेवाननिषधोवि धोमाल्यवानपुंरिवाचकः मल्लयोहेम
कुरश्चयंधमारनरस्यपि ८८ गिर्यवृकपंचमेतु चत्वारिंशत्सु एनयजने वासवादय रमेवांशकयोस्यायुधान्यपि ८९ वा
हनातिगाजाश्चोर्तिचत्वारिंशत्सुः सृजाः इंदोयिन्यमंष्टारंसिक्वणानिलभाविषाः ९० ईशानेदतिदिकमममः सैर्विष
हाक्याहेजास्वद्विनीचारुणिचापिवायवीचकुवेरजां ९१ दर्शनीः शर्कयः पूज्याः कुलिशेशकिदंडकौसद्वयाशोर्कयचिवा
दाभुल्लेचहेतयः ९२ एयवेनेजमहिबोधतमीनपुवल्पाः त्वर्भोवाहनानिसुदिक्पात्तानांक्रमारमी ९३ ॥
स्वन्गान्तरपिरोपिप्रसेकमं हो ९४ नोनेवाह भवेरिति ९५ नागानाह अनन्तरिति ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सद्यो जावं प्रयायामीमादिकं नयं चकं क्कसदिषु प्रत्यङ्गम् ६४ हंसहंसरतिवेदेन इति नती यो न्यासः ६५ संपुटं नाम नगराभिन्नादिभ्यः पूर्वदिषु
नाभौ पदौ रिति न्यासोदणंगे सुदिनीयकः ^{२५} पादौ हरे नुस्वैर्मुद्रैः सद्योजातमुखात्तुर्वः ६४ विन्यस्य मण्डलं चण्डसहसैर्दिग्भ्यः
नती यन्यास इत्युक्ताः कते यस्मिन् शिवो भवेत् ६५ एवं न्यासत्रयं कर्त्ता संपुटं च यो नतः दिक्षु चासुवसुस्त्वा नान्यासः संपुटं च यो न
६६ त्रोगरमिंदमने एषा न्यासो दिद्वेजसं त्वनो अने च्च चावर्त्तसुगं नरस्य चायमं ६७ असुत्वं तैर्नैर्कनिर्चं नत्वा यामिति नो
यपं आनो नित्युद्धिर्वयुं च वयं कोर्मह चावधुं ६८ तमीषा नमिती एण नमां नो यादिसु विन्यसेनं अस्मे रद्रा विधिं चोर्हस्यो नो निष्ठि
वोर्मधः ६९ एवं यः संपुटं कुर्यात् सस्य न किं त्विषवर्त्तनः नंदी यमानमो ह्यने पेन चौरा दुपद्रवाः ७० तप एभ विर्तुं यः कः पत्न
यसि ति द्दशः मनो जे नित्यं सेन प्रस्वो बोध्य निर्जरे ए नसे ७१ मूर्धनं हरे न्यसेत् तसु से मर्माणि ने च्च जान वे राकु शिरसि न्यासः यो
नश्चतुर्थकः ७२ हरे यो शिवसुक ल्या शिरः पुरुषसूक्तं क शिखाभ्यः संभुत रतिवर्म प्रातिरुष्टा मनं ७३ दिव्या हि निस्सुतने च्च यस्त्वनय
नृभृदि यं अयं नृप च मो न्यासः कृतः सर्वेष्टा सिद्धिदः ७४॥

॥ ६६ ६७ ६८ ७० उदरे ७१ मूर्धानं दिक् सहरि मर्माणि ते चर्म एण मुखे जान वे राय
इ चा प्रावको सिः शिरसि ५ एवं चो गे यु न्यासश्चतुर्थः ७२ पट्टं ग मा ह हरे यामिति यज्जाग्रतः स्तन सहस्रं श्री ष्ठी धारः अक्षः संभक्त शिरसा अगुः शिरे पतेन

नमो गणेशाय नमः ॥ २० ॥ हिरण्यगर्भः नामो २१ ॥ भूषणमणिः कायममरुतं २२ ॥
 नमो गणेशाय नमः ॥ २३ ॥ ५८ ॥ जने वेदसे दशांशं च शिरो युतं प्रपन्ननामनि वल्युतपसा ॥ अनेन च राया विभूतिनोदगताः ॥ एतच्च जितेन दक्षकृतं यद्वै
 कचः शिरो युतं दक्षमच पंचकमयाने २४ ॥ मानो महानकुर्वः २५ ॥ एवमेतदभागाः जानुतोः ५६ ॥ २६ ॥ येषां पथि हस्तयः पदोः २७ ॥ अथ चोचद विवक्तव्यं च २८ ॥
 नमो गणेशाय नमः ॥ २९ ॥ हिरण्यगर्भो नामो ३० ॥ हिरण्यगर्भो नामो ३१ ॥ हिरण्यगर्भो नामो ३२ ॥ हिरण्यगर्भो नामो ३३ ॥
 च ये भूतानां भिमें गृहे मंत्रं च विन्यस्य साधकः ५४ ॥ अथ नो शिरसा युक्तो जानवे दक्षरुचं मानो महानमिन् पूर्वो रथने जानुनोर्ध्वसेन ५५ ॥
 येषां सादयो र्भस्याथ चोचनकवचे तथा मंत्रं नमो विस्मिन्ने च स्य पचमीणि विन्यसेन ६० ॥ नमो ह्युनीरुग्रीवाय तृतीयो स्थिति साधकः ५९ ॥
 मुचधन्वर्दनि मंत्रेण खं प्रविन्यसेन ६१ ॥ इमे कर्त्रेण दंगानां व्यासः प्रथमरीतिनः ॥ नमः कुर्वीत हि खंधय एतावं न दक्ष ६२ ॥ मूल
 चणोस्तनो न्यसेन्मे स केनासि चालिके मुखे कं रं दृष्टिपुनस्तनयो र्दक्षाय योः ६३ ॥ ८ ॥ नमो विस्मिन्ने च कवचिने न्युपकुचने २९ ॥
 नीलं ग्रीवाय तृतीयनेत्रे ३० ॥ प्रमुचधन्वनः अस्त्रे ३१ ॥ ६१ ॥ इति प्रथमो व्यासः दत्त एतावं न्यस्य दिवधः ६२ ॥ अथ न्यासमाह मूलं भिन्ने नमो वि
 नमः नमो शिरसादित्रैश्वरे नमः ॥ नमो शिरसादित्रैश्वरे नमः ॥ ६३ ॥ ६० ॥ ॥



३१। दशमेमानसः प्रयोगानाह जन्ममदति सुखावस्थायुः ३२। चतुरंगुलप्रमाणः समिधः श्रीफलं विस्वः ३३। जंघाणां ४४ जन्मना एव ये जन्म
 उन्नादिपुत्रेन श्वानं उमाचंडे चरं धुनः नदिनं चमं हाकौ लंगेणं हवमयुनः ३४ मनेमं गिरिदिस्कं दनेवमाचरणं सिद्धा
 नं द्वाष्ट्याद्यामानः पूज्यादर्शमाचरणमनः ३५ रंशुदयश्च ज्ञाद्या एव स हो भवेन्ननुः नकमिं दशमि तस्यानयुन चैक्येमावश
 कं ३६ जुहुयाद्याः सुधावस्थाः समिधश्चतुरंगुलाः सरीगानस कल्पनश्चनयसमूया अयायुमः ४० मोदनेयुचवैः अक्षैः शान
 वर्षाणि साधकः समिधः श्रीफलोभ्यामिहर्मं संप्रति सिद्धये ४१ यत्नाशानरुजानि कुं वस्तव च समिद्धये वदाम्याभिर्वन
 प्राक्यैरादिगामिभुक्तानमर्धं ४२ नैस्ते र्दमनाशानमर्धवैः शत्रुनष्टये पायसेन कृतो होमः कानि श्रीकीर्तिदायकः ४३ कृत्या
 मनुष्ययकशेदशासंवादसिद्धिः होमसंत्पातु सर्वत्रायुनमानेन कीर्तिताः ४४ अष्टोत्तरशानंदर्वीत्रिकहोमादुज्ज्वलपः
 त्वजन्मादिवसेयसुपायसैर्मधुरान्वितैः ४५ जुहोति नस्य वदंते कमलो रोग्यकीर्तयः गुडचोवर्कुलोभ्याभिः सीमन्तैः ४६
 एणं ४६ जन्मनाशत्रये रोगानमनुं चापि विनाशयेत् प्रत्यहं जुहुयात् दर्वी अपमृत्युविनष्टये ४७ किं वह केन सर्वदृष्ट
 कानि शिवोत्तुणं अपा मार्गसिद्धिश्च सिद्धौ नैर्ज्वरनष्टये ४८॥

८८

नस्य जेतोदशमे कोना विंशयोश्च ४९ ४८

मं दी
नो न ३६

८६

आ वर ए पूजा प्रकार माह फादीति पाद्यार्घ्या च मनी पस्नान वस्त्रे पवीन च दन पुष्पाणि दत्वा वरण पूजां कुर्यात् न तत्रेणान कोरे ईशानः सव विधान
मिमांसा सवशास्त्रोक्तं मंत्रपठित्वा न पजेत् २० नमस्कृत्या य विग्रहे अघोरे भो य घोरे भो वासदेवाय नमः सद्यो ज्ञानं प्रपद्यामि इत्यादि चतुर्भिर्मन्त्रैः कुरु
पा द्वा द्विकुसुमां तो प च एते त्वा व नी र्प जेत् ईशानं शंभु कोणे न पजे दीशानं मंत्रनः २१ नमस्कृत्य मघोरं च वासुदेवं तनी पकं सद्यो ज्ञा
नं पजेद्विष्टु वेदोक्तं स्वस्वमंत्रनः २२ ईशानादिसमीपे कुनिहमाद्याः कल्पाः क्रमान् निवृत्तिं श्रुयानिष्ठां च विद्यायां निश्चिन्त्यै रई
शान्त्तदीर्घां च मीतिन तो सा नि य जे च वटं सै र्ये दौ ह्येति नो यार्थं प्रवेन क्रमं यज्ज्वा ३० मूर्तयो द्वौ क्रमात् पूज्यौ तौ गीष्वा वरणसि
क्तः स्वस्व कर्मप्रभोज्यो ज्ञात्वा पूर्वोक्तं पूर्ण सुधा ३१ चतुर्थ्या वरणे पूज्या शक्तयो धवत्स प्रसाः विभो वं चोत्ति नो पद्मायां संध्या शि
क्तानि र्वा ३२ पंचमा वरणे भूयर्चा शक्तयः प्रसाम विग्रहाः आर्घ्या प्रक्षालनं प्रसामे धांशोक्तैः कौटिल्यो निर्मितिः ३३ षष्ठा वरणे मा अष्टौ
संपूज्या अकृष्ण प्रभाः धरो मा धैव नी प द्वा शान्ता मोचा ज्ञेया मत्स्यः ३४ सप्तमा हतिगाः पूज्याः शक्तयः कांचन प्रभाः अनेनैः सूर्यमं सं
श्रुतं गीष्वा सुशिवो नमः ३५ एकनेत्रैः कुरु दैर्वा नि प्रीतिष्वहरीरिणः श्री कंठो यो शिखरी च संपूज्या अर्घ्यं माहवौ ३६ ॥  
सुपजेत्तेषां सभोपे स्वनामभिर्निहत्याद्याः कल्पाः द्वितीया वर गोणादि न नीपे सूर्यस्य स्थितां मूर्तयः सूर्यमूर्तये नम इत्यादि प्रयोगः ३७ चतुर्थ्ये मादयः ३८ य
त्र मे वि श्वा दयः ३९ षष्ठे आर्यादयः ३९ सप्तमे धराद्याः ४० अनन्तर दोष्ठमे ३५ नवमे उत्तराश्विनो मादयः ३६ ॥

वर्णमसमाह द्वात्रिंशदिनपणवपदिनवर्णेषान्सविंदूनप्रोक्तान्म्यमिमादिद्वात्रिंशद्वर्णान्पूर्ववक्त्रादिष्वंगेषुम्यसेत् ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः च्यंनमः पूर्व
 वक्त्रे १ ॐ ह्रीं च्यंनमः पश्चिमवक्त्रे द्वादिप्रयोगः १३ अंगाम्याह पूर्वति पूर्ववक्त्रादिष्वेकैकवर्णम्यसेत् १४ ऊरुमूलोरुमध्यजानुजानुवनसनपार्श्वपादक
 द्वात्रिंशत्त्रयं वकार्णान्नमोक्तानि विंदुसंयुक्तानि तारादिनववर्णाद्यानंगेष्वुग्रविम्यसेत् १३ पूर्वपश्चिमपार्श्वोद्दुग्मुखे
 सिंकटनः वदनेनाभिर्दन्तैर्कुक्षौ लिङ्गोदयसेत् १४ उरुमूलोरुमध्यवज्जानुनौर्जानुवनयोः सनयोः पार्श्वयोर्द्वयोः करयो
 नोसिमूर्धनि १५ अष्टैकादशां विम्यसेत्पदानि शिरसि भुवोः नेत्रयोर्वदने गदहृदये जंठरे शिरे १६ ॥

पदम्यासमाह अष्टोत्तिशो वलिङ्गे १६ ॥ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः च्यंनमः पूर्वमुखे १ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वंनमः पश्चिममुखे २ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः कं

नमः दक्षिणमुखे ३ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यंनमः उत्तरमुखे ४ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः ज्ञानमः उत्तरासि ५ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मंनमः केंद्रे ६ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः
 हेनमः मुखे ७ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः संनमः नाभौ ८ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मनमः तदि ९ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः धिनमः पृष्ठे १० ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः पुनमः कुक्षौ
 ११ ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः छिनमः स्निग्धे १२ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वंनमः गुदे १३ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः धनमः दक्षिणोरुमुखे १४ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः नैनमः बायोममुखे १५
 ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उंनमः दक्षिणोरुमध्य १६ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वांनमः बायोममुखे १७ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः रंनमः दक्षिणजानुनि १८ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः
 नमः बायोमजानुनि १९ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मिंनमः दक्षिणजानुवन २० ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वंवापजानुवते २१ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वंनमः दक्षिणसने २२ ॐ ह्रीं ॐ
 भूर्भुवः स्वः धंनमः बायोमने २३ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः नानमः दक्षिणपार्श्वे २४ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मंनमः बायोपार्श्वे २५ ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः ज्ञानमः दक्षिणपादे २६

जौं नमो भगवते रुद्रायै निषदांतात् तथा भूत्वा पाण्ये रमादि प्रातिस्विकागमं वयुता न उक्ता षडंगं कुर्यादि मर्यः यथा ओं ह्रीः ओं जूं सः भूर्भुवः स्वः चं वकं जे नमो भगवते रुद्राय भूत्वा पाण्ये स्वाहा स्तुतं ओं यजामहे ओं १० अमृतमूर्त्ययमांजीवय शिरः ६॥ ओं सुगंधं युष्टि वधनें ओं १० चंद्रशिरसे जटिले स्वाहा शिरां ओं ६ उर्वारं
 तैरो नमो भगवते रुद्रायै निषदांतात् मृत्वा दिनववर्णं वाजुक्तां कुर्यात् षडंगं ८ भूत्वांते पाण्ये स्वाहा स्तुतं जौं निषे जये नमं
 अमृतां नैमृते यमांजीवयतीति शिरां निम ६ शिरां निचंद्रशिरसे जौं टिले वट्टिव ह्वभां निषुरांतकाय हां हीक वचांते मनुमूर्तिः १० पवदे
 विषदस्यांते लोचनार्पणं दयुनः अययुः सा ममं चायं वर्णं नैत्रं मनौ पठेत् ११ अनिन्नपायं ज्वलं च ज्वलं मोरं स्वरं स्वरं अघोर
 स्त्रायं मं चोपम स्त्रं मं जौं ननः स्मृतः १२॥ ८ कमि ववंधना जौं १० निषुरांतकाय हां हीक वचं ४ जौं ६ हौं मृते मूर्ति शीय जौं नमो त्रिलोचनाय १
 अययुः सा ममं चायने नं जौं हीं ६ मामृतात् जौं नमो अनिन्नपाय ज्वलं मोरं स्वरं १२॥ ८
 यशुत्वा पाण्ये स्वाहा स्तुतं पायनं मं १० हौं ओं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ८ नमो भगवते रुद्राय अभुतमूर्त्ययमांजीवय शिरसे स्वाहा २ ओं हौं ओं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधं युष्टि वधनें
 नं जौं नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिले स्वाहा शिरां यैव षट् ३॥ ओं हौं ओं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारं कमि ववंधना जौं नमो भगवते रुद्राय चित्रांतकाय हां हीक वचांते मनुमूर्तिः १० पवदे
 ओं हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृते मूर्ति शीय जौं नमो भगवते रुद्राय चित्रांतकाय हां हीक वचांते मनुमूर्तिः १० पवदे
 अनिन्नपायं ज्वलं च ज्वलं मोरं स्वरं स्वरं अघोर १॥ ओं हौं ओं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् जौं नमो भगवते रुद्राय

नारदनि नारं व्यापिनी चंद्रयुक्तं जैवंद्रयुनं खं हः हौं ओ नारं अर्धाष्टविंद्रयुक्तं अष्टगुणननः उर्विंद्रयुक्तो जः जं सुर्गा हंसः सः भूर्भुवः २ स्वरसं सकारो वात्ससर्गा व्भे
वविसर्गयुतः सकारः स्वः अथ कं वैदिको मंत्रः यथा अथ कं यजामहे सुगंधिं पुष्टिर्वर्जं उर्वारकमिव वधनाम तौर्मही यजामहे मोदिति भूर्भुवः सुरपुनारो अंभुनेभ
महामसुं जयं वस्वेदं रिनापनिवारणं यं प्राप्य भार्गवः शोभो भूतान् देवान् जनजीवयन् १ नारः स्वव्यापिनी चंद्रयुक्तं नारश्चतुरश्राननुः अ
र्धाष्टविंद्रयुक्तो हंसः सर्गा च भूर्भुवः २ सकारो वात्ससर्गा च अथ कं वैदिको मनुः ॥ भूर्भुवः स्वः भूर्भुवः ३ अर्काशो
मनुं विं ह्यक्षयः यणं वां नो म नूतमः महा मनुं जया ख्यो यं यं चाग्रहणे निर्मिनिः ४ वामेदेकहोलाख्यं वसिष्ठा मुनयो स्यात् ॥ वंदं स्युक्ता
निरुदेणपंक्तिगायत्र्यमनुष्टुभः ५ सद्यशिवमहामनुं जयरुद्रो स्य देवता मायाश क्रीरमावीजं विनियोगार्थं सिद्धये ६ मूर्ध्नि वैकुण्ठे दि
शिवे पदोर्म्य्यादिकान् व्यसेनं त्रिवर्तुर्वसुनेंद्रवृणो वरुणं ननुष्टुभः ७ ॥ ८ नरो श्वारः रोजं स्वरूपं सर्गं चान् भृगुस्त ९ ३ मनुविं ह्यक्षयः अका
शः ओ विंद्रयुगादः हो प्रणवान् व्यापमन्त्रः यथा ओ हो ओ ज्ञः सः भूर्भुवः स्वः अथ कं भूर्भुवः स्वः हौं ओ रतिपं चाग्रहर्कः १० मोक्षदीरमा श्री १० मनु
नृणां दीप्तिमूर्धादिषु न्यसेन शिवं स्त्रिंशे षडंगं व्यासमाह त्रिवर्तु रिनि अष्टमस्तत्रावकमं त्रस आदिवर्णं नमूना दिनवर्णं धानमूलमं त्रस्य हो यन्त्रवर्णं व्यास
हौं ओं जं सः भूर्भुवः स्वः अथ कं यजामहे सुगंधिं पुष्टिर्वर्जं ३ र्वा रूकमिव वध नाम्ना तौर्मही यजामहे मात ॥ भूर्भुवः स्वः रं जं सः हौं ओं ५ ॥

पथी महामसुं जयमं त्रस्य वामेदेवक होलावशिष्टा ख्ये पः पंक्तिगायत्र्यमनुष्टुप्वंदं रं सि सदा शिवमहामनुं जयरुद्रो देवता हीं रतिः श्री विजयसामनुं जयपि
ममाभिष्टासि व्यर्थं जयो विजयो गः २

विप्रवातहतं वासएसमूहपरिवेष्टितं पाथोरुहागद्युतिं नीलं दीवरकांतिं १२ पूर्वोक्तपीठे धर्मोदिके १३ मृत्युजयमंत्रमाह तारदनि तारुं कामकर्ण
 अस्य मंत्रे स वसाः ऋषिः अत्रुष्टु पृच्छदः स नमवति स तदेव नाभ्यो विनं नमः शक्तिमन्मिष्टसि व्यर्थजये वीर्यभीषणः
 वसानुष्टुपुमनिः छंदो देवः सप्तवर्गी सुतः आर्ष्ववी जनमः शक्तिर्दीर्घाढ्येनादिनागकम् १४ आख्यामुद्रिकपालसग्नकरतलंसद्यो
 गपीठस्थितं कामजानुतलेदधानमपरहते सुविधानिधिं विप्रवातं वृत्तं प्रसन्नमनसं याथोरुहां गद्युतिं पाशं सव्यमंगीवपुण्य
 चरितं व्यासं स्मरेत् तसिद्धये १५ जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत् पूर्वोक्तपीठे व्यासस्य पूर्वमंगानि पूजयेत् १६ प्राच्यादिषु
 यजेत्तैले वै संपाये नैमिर्वां सुमंतकोणभागेषु श्रीशुर्करो महर्ष्येण १७ उग्रेश्वरं समप्यां आसुनी नैसं द्राहिकायुधान् एकं सि
 हं मनुर्मन्त्रैकं विवंशोभनाः प्रजाः १८ व्याख्यातशक्तिं कीर्त्तित्वं लभते संपदं च यं मृत्युजयेन घटितं यो व्यासस्य मनुं जयेत् १९
 सर्वोपद्रवसं त्यक्तो लभते वांछितं फलं तार्दभ्युत्थी वा मकर्णं विंदुयुक्तः स सर्गसः १९ मृत्युजयस्य मंत्रो यं विवर्त्ते मृत्युनाशनः
 जप्तो यं केवलेन नृणां मिष्टसिद्धिप्रयच्छति २० किंपुनस्तेन घटितो वेदव्यासमनुजगमः २१ ॥ इति श्रीमंत्रमहादेवौ सूर्य्यादिमं
 न्नकथनं नाम प्रपंचदशमोऽङ्कः ॥ २२ ॥ विंदुयुतः उर्विंदुयुतः भूलीजः ज्ञेयसर्गः सस्वरूपकचलोप्ययजमानो नृणां मृत्युनाशनः २३ किंपुनस्तानु
 दितः व्यासमंत्रः अस्य मंत्रस्य कहेलः ऋषिः देवी गायत्री छन्दः मृत्युजयो देवता जन्वी जसः शक्तिः दीर्घाद्यसकारेण षडङ्गः ॥ इति श्रीमंत्रमहादेवौ सूर्य्यादिमं
 अस्य मंत्रस्य कहेलः ऋषिः देवी गायत्री छन्दः मृत्युजयो देवता जन्वी जसः शक्तिः दीर्घाद्यसकारेण षडङ्गः ॥

धर्माधर्मादिपीठेदति पीठशक्त्योनसंतीत्यर्थः ८१ शुक्रमंत्रमाह नारदति नारजोवस्त्रस्वरूपंभर्गोसूर्यः एतुतोमः मेरेहि शुक्रायस्वरूपं हं हं सुभासदं
 उपिच्छाशोभिसाहस्रं हन्तानेन धृतेन वा धर्माधर्मादिपीठे तं पूजयेदंगदिगमैः ८२ सिद्धिमनौ प्रकुर्वन्ति प्रयोगानिष्टासिद्धये ८३
 रिद्राकुसुमैर्हृत्पावनैर्दिवसत्रयं ८४ सावित्रीशतमं श्रीवासां सिलभते मरणेन शत्रुरोगादिष्वेष्टा सुखजनैकलहोद्विजं ८५
 जुहयान् विषयलोभ्याभिः समिद्धिर्कानि वतये नारायणं भर्गोसूर्यो देहि शुक्राय हृदयम् ८६ एकादशाष्टये मंत्रो हेमवस्त्रधराय
 कः ब्रह्मा मुनिर्विशदच्छंदो देवता देवप्रभितः ८७ बीजं तरो विनार्य्यति शक्तिरस्य प्रकीर्तिना एकाद्विचंद्रैर्नैत्रोर्वैनेत्रवर्णैः षडंगक
 म् ८८ मंत्रवर्णैः सुकृत्वा यथाये हि वानिर्धिसिन्धु मंत्रो भोजनिष्पन्नं भायण तदेव्येतां वल्लेपनं निग्रंभक्तजन्मप्रसंगं ददर्श वासोम
 णिनस्त्वकं च भेनैव कोणदक्षिणकोरे व्याख्या नमुद्रां किं तं शुक्रं हेमवराचिंतं सिन्धुसंघं वंदे सितंगप्रभम् ८९ अयुस्त्रं पूजयेत्सर्वं द
 शां प्रजुह्वयादधुनैः यजेद्दमोदि वीठेत मंगो द्राह्मि न दाययैः ९० सुगंधैः श्वेतकुसुमैर्जुह्वयान् शुक्रवासुरे एकविंशतिवारं यो
 लभते सोऽंशुकमणीन् ९१ वास्तुपुवनदीर्घद्वयुक्तो निंदीशैः पुक्कजलम् अत्रिर्ध्यासाय हृदयं मनुराष्टासुरो मनुः ९२ ॥ ॥ ध्यानमार श्वेत
 पिणतटे अलङ्कृतमीपे देवोऽश्वेन पद्मस्थितं ९३ वासमंत्रमाह वालदति वालोक पवनदीर्घद्वयुक्तः यकाराकारविंदुयुतः व्याजलं निंदीशायुकवक्ष
 मंत्रः ३७ वस्त्रं मेरे हि शुक्राय स्वाहा ९४
 एकारयुतः वेअत्रिदेः व्यासाय स्वरूपं लदयं मः ९० ॥ अस्य मंत्रस्य ब्रह्माक्षिः विष्टच्छन्दः देवोऽयमेव मा
 अंवीर्जन्ता शक्तिः भर्गो विश्वसिद्धा जन्तयेति तीको गः

ਸੰ. ਟੀ.
ਜੀ. ੨੫

5

अस्य बृहस्पतिर्नाम तस्य वत्साः अत्र पुत्रं देवतां विजं मा भिषिष्ये ध्येयं विनीतः
मंडलस्य इति सर्वतो भद्रं मंडले कुं भंसं स्थप्य नत्र भोमभूतिं सौवर्णं प्रतिमां पूज्या चार्या यद्वर्जितं १२ गुरुमंजपाह खड्गं प्रतिनि खड्गीं प्रोद्घोषका रौ भार
भूतिस्थो नमो रथो नमो राधो क्रोण विदुनायुतः ८७ नमो हः लोहितस्थो भृगुः यकारस्थः सकारः स्वरहितो मया चितो वायुः १८ यतो यपेष्टं दयनं
३ जपनं
मार्हेषभूतिं सौवर्णं माचार्या यनिवेदयेत् मंडलस्य षडेभ्य च्युतसौ भार्या सिद्धये २२ एव वनपरा नारी प्रोमुयान मुभ्रमं सु
गानं यना येन नृणां नाष्टा यत्र तं कुर्यात् पुमानपि ८३ अग्निर्मुहूर्तं यपि मनुष्यैर्दिके क्वा स एते जपेत् न यथा गारक गार्हपत्यौ सर्वाभी
ष्टप्रसिद्धये ८४ अंगारका मयस्वन्ति विदुः स्येयं रसुचरेण शक्तिरसायं च पदं धीमहीति न तो वदेत् ८५ तन्नो श्रीमः प्रचो वर्णनं
यादिति च कीर्तयेत् एषां गारका गायत्री जप्ता भीष्टप्रदायिनी ८६ माहेयोपासनं प्रोक्तं गुरुमंजपाह खड्गं प्रोद्घोषका रौ भारभूतिस्थो
भृगो वायो क्रूर संसृजः ८७ नमो भृगुलोहितस्थो हरिर्वायुर्भगो चितः स्वरं यानो हवर्णे यमनृवं स्वासुतिः स्युतः ८८ छंदो नृष्टुषु
राचो यो देवता किं जमादिभ्यं चराभ्यां दीद्युक्ता भ्या षडंगानि प्रकल्पयेत् ८९ रत्नाष्टा पदवत्परा शिममलं दृष्टान् किं रं कुर्यात्
आसीनां विरक्तौ करं न दधते रत्नादिसौ परमं पीतास्ते पनपुष्यवत्स्वप्नस्थितालंकार संभूतिं विवासागरपारगं सुरगुहं दे
हं हृत्स्मृतये नमदात् ८८ आदिर्महामिनि बीजं षडंगमाह कथाभ्यां भिनि चोर्वी शिरदत्तादि ८९ ध्यानमाह रत्ने निदृष्टा हस्तान् रत्नहे भवत्वरं यो नि
दस रत्ना मत्त हे भवत्वरं सिक्षिपन्नां वा मकरं रत्नादिसमूहं ॥ स्वेयं न वा मकरं रत्नादिसमूहं आरापयन् ९० ॥ अंगारकाय विदुः हे यत्किं हस्ताय पीमदि न नो भोगं यको रत्नान्
आरेपयन् ॥

आरोप्यते॥

रस्वामार्जनममाह दुः खेति ७२ सुतिमाह धरिणीति ७५ उवाच नमाह निहैरिति ८९

॥०

॥०

॥०

॥०

॥०

मृमिधुचमहृमिजाः स्वदोहवपिनाकिनः सुनार्थिनोप्रयन्तातांगुहाणार्धनमोक्तुते ८८ रक्तप्रवालसंकाशजयाकुसुमसन्निभा
महीसुनसुहृदिगोपहाणार्धनमोक्तुते ८९ ऐकाविंशति कानोद्यप्रणमेमूर्वनामभिः प्रदक्षिणविधातव्यास्तावनेसमुधाभ्रजं
७० स्वदिसंगाह्वेनायकुप्रप्रदेस्वासमंनयं वामपादेनमंजाभ्यर्मेताभ्यांननप्रमर्जयेत् ७१ दुःखदौर्भाग्यनाशययुत्रसंनानहेक्वे किं
स्वात्रयं वामपादेनैतत्पमार्ज्यं ॥ ७२ अमुहः स्वविनाशायमनेभीष्टार्थसिद्धये मार्जयाप्यसितरेखासितोजन्मत्रयोद्भवाः ७३
नतः शुष्कांजलिन्मस्तुवीतं धरणीसुगं व्याप्यतीचरणं भोजं पूजासांगत्वसिद्धये ७४ धरणीगर्भसंभूतं विद्युतेजः समग्रममकुमा
रं शक्तिरुक्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ७५ अमुहः हर्षेनमस्तुभंदुःखदाहि द्यनाशिते नमामि येनमानाय सर्वकल्मषकारिणे ७६ देव
नवगंधर्वयस्माद्य सपन्नगाः सुसंयानियतस्तस्मै नमो धरणिमूने ७७ योवज्रगतिमापन्नो नृणां विघ्नं प्रयच्छति पूजितः सु
गोभयं नस्मै स्वासुनवे नमः ७८ प्रसादं कुरु मेनायमंगलप्रदमंगल मेव चाहं नर द्वात्मनू चान्देहि धनं यथाः ७९ एकं संकल्पे
। पुत्र्यगृहीयाद्वा स्तृणां शिषः गुरवे दक्षिणं दत्त्वा भुंजीतां निवेदिनम् ८० अतिगोमदिने कुर्यादेवं संवत्सरावधिः नितैर्विधापयेत्

यस्यैराचिंता निवर्तमाना नृसुप्रसादिनपाणिपादमुखस्वप्रतीकेषु निजंगेषु ५८ न्यासमेवाह कर्मकर्तृमैत्रिं त्रिमंगलाय नमः पादयोः रत्नादिमंचाह भूमिपूत्रेति ॥
नैवेद्यकुसुमालेपान् रत्नान् संपाद्य संधर्ता विधिर्हं विप्रमाह यमौ मम चेतनं तदा ह्यर्था ५९ रक्तगोगोमया लिख्यते शेषी ठ निर्विदितं मंगला
दीनिगेमानि स्वर्गानि केषु विन्यसेत् ५६ मंगलं विन्यसेत् दंध्यै भूमिपूत्रे नृजानो ५७ वाष्पज्जलं हं गार्कटिदेशे धनप्रदं ५८ स्तोहि तदा हि
एवा होतो हि गार्कटिदेशे न्यसेत् वदने विन्यसेत् साध्वी सामगानां कृपाकरम् ५९ धरात्मजनसो रक्षणेः कुजं भौमं रत्नं ततः सूरिदंतु
भुवोर्मध्यमस्य के भूमि नंदनं ५९ अंगारकं शिखादेशे सर्वगो विन्यसेद्यमं मनोवाह द्रव्यस्य सर्वस्यो गायत्र्यहारकम् ६० मूर्द्धादिह
ष्टिकगारिणा र्द्वयं न विग्रहे विन्यसेत् तद्विहर्गो रं मूर्द्धा न चरणवधिं ६१ दिक्षु प्रविन्यसेत् सर्वस्य सर्वकामफलप्रदं ६२ अर्धचक्रं भूमिजं च
संभौवस्यो संमूर्द्धा ६३ पृथ्व्यजगद्गरीरोक्षो ध्यायेत् हरणि वंदनम् अर्धं संस्थाप्य विधिवत् पूजयेत् दृपचारकैः ६४ एकविंशति को
ष्टायेति कोष्टेना भयत्रगे भावात् खधराणि पुत्रं शोणैः पुष्पैश्च चरनैः ६५ अंगानि पूजयेत् प्रणवदेकविंशति कोष्ठके मंगलादीनि
कोशेषु पूजयेत् ६६ च भूमिजम् ६७ त्रास्याद्यामानं कावत्सेयं नादीनायु धाम्ययि धूपदीपौ विधाया यगो धूपान् च निवेदयेत् ६८
सूक्तपूतानां मया त्रैगंधपुष्पाद्यानां नृसिंघेन फलं निधाय मंत्राभ्यां भौमाय विनिवेदयेत् ६९ ८ पूर्वनाममिमंगलायि ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

मन्त्रमंत्रात्तु मन्त्रं विधाय नृदीर्घानिदुनंतं पुनस्तदेवाविभूतचंद्रकिंतह ५६ विसर्गोभूः सः सती वासतिरिति चंदुना किमर्थमुक्ति
 मन्त्रं ध्यात्वा ५७ द्वादश्यां विवस्वते लक्ष्मीपथः सुमानविद्याभिधैर्यसो विगाछति ५४ गायत्रीयासु नामाः संख्यां दर्शनम्
 इदं श्रवणं जयं विप्रैर्नैव दुस्साबाधुयानं ५५ अथ वज्रिग्रहासु नेमं नृसुगधनपदं नारी विषमसी र्विवंदुनकंचंद्रां किंतु प्रल
 ५६ भूगर्वसर्पचंडीका कदाचीं शसितिलौषड्वर्गे मित्रारण्यानी भीष्टापी नराणा पदः ५७ मुनिर्वस्मापायनी खंसे देवोद्यता
 नमः षडभिचरेषु षडंगानिमन्त्रैः कुवीने साधकः ५८ जयां भद्रिवसे दजं हसवर्धेर्मत्सपूर्वयोगीवरधारयतं अचंगी समुद्य
 सुमेधासनस्थं यदनंदनं रक्तवर्तसमीडे ५९ रसज्ञं राजकोटो मः सुभिदिः सदिरस्य च द्वेवेखेदयजे हो मे भ्रातरां भा निमज्जनयेत् ६०
 एकविंशति कोष्ठेषु संगत्याहीन प्रपूजयेत् नदहिः ककुभा नाथानकलिष्ठा हीन तपो वर्धयेत् ६१ रत्नं जयादिभिः हिमैश्च छिद्ये य येन
 । नार्पुत्रमभीसंवर्गभि माहित दूतं चरेत् ६२ मार्गशीर्षे यवेशा स्तेनस्या रंभः प्रपूज्यते असुरोदय वेलायां पुनः पुनः चिकियसी
 दंतान धावेद्दर्शनां समिधा मौन सेविनी नद्यादि सति ले स्नात्वा धारयेद् ६३ कवसी ५४ ॥ (केशि कोटो स्वंसः परात्मजो भो मोद्रे चक्रवर्त्त
 हजया मदनि पूज्यवशे दसयोः अन्ययोः अन्ययोरिनो रसत्तसं षट्सं षोडशसं षोडशसं जयते कुरुं भां गोथा दीनि दा दोन कुलिशी दी नक्वा सी न

दंगान् धावेद्वयस्मार्गमपि धर्मो न सो विनी नद्यादिसलिले स्नानार्थाद्येद
हजयामदनि मूलवशेदसयोः अन्ययोः अन्ययोः सिनेरसलसं षडलसं दो

कनसी ५४॥ ॥ कंरीको रौखं सः राग नओ भौ भौ रैन वक्रा

अर्धाविधिमाह प्राणिप्रस्थयोऽष्टाश्वानि ३३ मूलं विलोममेव सूर्यमंडलान्निर्गच्छेत् ३४ मूनेतविधाचिंतिभिः ३५ वस्तुमाह मिलेति ३६ करकीर
इत्यसिद्धमनो विद्यादानवेधं च न हिने प्राणायामं यडंगं च कृत्वा न्यासान् ३७ विज्ञानं ३८ स्वमंडलं यजेत् ३९ मां न सैरुपचारकैः ४०
सुगामवादिनं प्रस्थानो यग्राहिमनो हर्षं ३३ मंडलं स्थापयेत् ३४ चंदनविमर्शं द्विलोभां मातृकां मूलं विलोमं च यदं नृजलैः ३५
रविमंडलनिर्गच्छत् सुधाबुद्धि विभावितैः त्रयोदशैव च लूनि प्रक्षिपेन्मूलं च रत्नं ३५ मिलेत् ३६ इहैर्भायं प्रक्षिपेत् ३७ मूलं च रत्नं ३८
कां हयादिस्तु मरुत्तं चंदनं च रत्नं ३९ गोरोचनं कुंभं च जया वण्युपवा निनिं न च्छले पीठं मध्य च्छेत् ४० तस्य भातुं स्वमंडलान् ३९
अविलेख्य चारुं संपूजयेत् दाहनीरधिं क्षणायामत्र यं कृत्वा यडंगं न्यासमाचरेत् ३८ चंदनेन सुधावीजं दक्षिणतले न्यसेत् ४०
छादयेत् च्छेत् ४१ चामोक्तं नतेन च ३८ अष्टोत्तरशतं च न्यामूलेनां भिमं त्रयेनं पुनः पंचोपचारे संपूजयेन्मूलमंत्रतः ४० पा
णिभ्यां मुक्ताक्षं यजानुकी भूतले न्यसेत् ४१ आमूर्द्धिण त्रयं हृत्पुं च ध्यायेत् ४२ मनसा पूजयेत् तत्र भातुं मां चरणान् चिदं अ
र्धं दशैः ४३ ध्यायन् रत्नं चंदनमंडले ४२ ततः पुष्पांजलिं देद्यात् ४३ मंडलं स्थापयानवे अष्टोत्तरशतं मूलं जपेत् दशमं संस्थि
न्या न्वयो न्ययवान् ३९ सुधावीजं च भितिं नेन दक्षकोरेण ३८ ४० ४१ ४२ ४३ ॥ ॥ नः ४३ ॥

[illegible]

ਸੰ. ਟੀ.
ਗੋਰਖ
੬੨

[illegible]

१५६ रत्ननवहृदय्यासः॥

1

वर्धन्यसमाह माह नि नमो न्विवा निता नपि नो अं यथा ओं हीं ओं श्रीं नमो मूढि ओं हीं वं श्रीं नमो मुखे ओं हीं खिं श्रीं नमो मखे ओं हीं सं श्रीं नमो त्वां श्रीं नमो
यं श्रीं नमः कुं श्रीं नमः श्रीं नमो नमो ओं हीं दिं श्रीं नमो त्वां ओं हीं तं श्रीं नमः पदा ८ मंडल न्यासमाह खरा नि नि विधुं चंद्र सरग चंद्र मंडल नमो न
मायारमो गमन होवर्णा न्मै दिं मुखे गले त्वां के स्तिनां भिजे था सुपादयो अ प्रविन्यसेन ८ सीरान सविं दूनु चार्थ डे तं श्रीं नमो
नस्ति शिरादि केश्यर्थं विन्यसे नमो सरना विधुं सपान से दन स मुचा य डे तं भास्कर मंडल कं कादिना भिपयर्थं तं न्यसेन च्याय
न प्रभा कुरम २३ वादी न से द अण र्थं तं वहि मंडल मुचरन नमो भादि पाद पथ्यं तं विन्यसे न्यावक स्मरेन ११ मंडल न्यय विन्यसः
यो नो ज्ञो विधा यकः अकारादि वकारां तं वर्ण कं सोम मंडल १३ डे नमो तं न्यसे नमो मूर्द्धादि चरण के छिं डकारादि सा का
रां न वर्णां वां न्मि मंडल १३ दृष्टादि पाद पथ्यं तं विन्यसेन डे नमो न्विनें अक्षी बोमात्र को न्यास कथितं सर्क सिद्धिदः १० सर्क
मानुका वर्णा कं न्याय रस्य नमो नमो नं न्याय कं न्यसे दं स न्यासो यमी रिनेः १५
६ सपार्श्व नकादीनां मान यणकं २५ मूर्ध्व मंडला यनमः कं कादिना भ्यं नमो नमो न्याय १० वादि मंडल यनमः नमो भादि पादां तं १२ अ
न्यासमाह अक्षरादी न्मि नि ३ २ सोम मंडल यनमः मूर्धादि रद यानं डे नि ११ कं दि मंडल यनमः स्तरादि पादां तं १४ हे स न्यासमाह सविं

१. यथापं १६ सोममंडलाय नमः शिवादि
२. सार्धं नवादिनां मानं यथाकं २५ मूर्ध्नि मंडलाय नमः कंठादिनाभ्यंतं यथा नानादि २० कंठि मंडलाय नमः नाभादिपादांतं २२ अ
३. नासमाह अथं पादादीनां २८ सोममंडलाय नमः मूर्ध्नि दिग्दशजंडेति २९ कंठि मंडलाय नमः रूढादिपादांतं २७ हंसन्यासमाह सविं

अप्रतिहनवलाप्रतिहनशासनदुःकदस्ताहा अस्ववर्णमासमाह पाददति २३ ध्यानमाह नमेनि स्मर्तुणमुग्रंविषंननृक्षणान् यमयनं दक्षेन
 सासनातेन ^{स, अस्त्रायक} नृपदस्ताहपद्वमनुरिरिनः पादेकतैर्दृष्टिमुखमूर्ध्विचूर्णान्प्रविन्यसेन २३ नमस्तर्णानिभंफल्गोदनिकरैर्त्तुसांगमूर्ध्वं
 प्रभुस्मर्तुण्दृष्टिमयंनमुग्रमस्त्रिचनृणंविषंननृक्षणान् चंचप्रप्रचक्षुजंगमभमंप्रायोर्वरविभनं पक्षोच्चारितसामगीर्जसमल
 श्रियास्त्रिजंगमभं २३ संक्षुजं जेनं नंदशं प्रांजुहयानिलैः पूजयेत्मानकापयेमारुडवेदविग्रहं २४ चतुर्थ्येनःपक्षिरजःस्वरा
 दीरमनुःस्मृतः दधुगंकार्णिकामध्येनागानपनेषुपूजयेत् २५ अनेनवासुकिंचापनगीयनस्यैकपुनः कर्कोटकंनद्यापसंमहापयसम
 चयेत् २६ शंखपालचकलिकमिंद्रादीनवजसंश्रुनान् एवंसिद्धेमनोमंजीनाशयेद्रत्नद्वयं २७ विष्णुभक्तिपदैस्त्रितयेभजेम्यक्षिनाय
 कं शत्रुस्वर्वाण्यभयसुखीभोगसमान्चितः २८ जीवेदनेकवर्षाणिसिविबोधराखीध्वैः कलेवसने श्रीनाथसायुज्यंलभनेतुंसः २९
 दनिमंत्रमहोदधौविष्णुमंत्रानिरूपणं नामचतुर्दशस्तरंगः १४ ॥ ८ भासुच्चारिणीः साक्षादहद्वयंनरादीनांगीनयोयेननं हृदद्वयंनरे
 निश्रुतेः २३ पक्षिरजःप्राहेनिपीठमंत्रः २४ गरलद्वयंविषद्वयंस्थावरजंगमारुह २५ धराणीध्वैर्भूयानिभिःसेविताश्चिरंजीवित्वाननुक्षये
 ज्यथाप्रोति २६ दनि श्रीमंत्रमहोदधिनौकायांहरिमंत्रकीर्तनं नामचतुर्दशस्तरंगः १५ ॥

आनमाह विजयेनेति अर्जुनेनयुगोवधिप्रथमतया नानीयविप्रायद्वन्द्वेयः १३ हरिप्रसंगान्नह्यनस्यगरुडस्यमंत्रमाह नृसिंह इति नृसिंहः ॥
 सः माधवारुः रश्मिः क्षितिलोहितः यः तिगमादिमजो कृष्णनुभार्यो स्वाहा ११५ षडंगमाह ज्वलेति ज्वल २ महासुतिस्वाहा ह्रस्वगरुडचूडाननस्वाहा
 नारदोऽपि रस्योक्तोऽनुष्टुप् छन्दः समीरितमन्देकः सुतप्रदः कृष्णः पादैः सर्वेण चाणकं ११२ विजयेनयुगोऽप्यस्थितः प्रसमानोऽयं स
 मुद्रमधनः प्रदत्तनयानाद्विजन्मनेस्मरणीयो वसुदेवनन्दनः ११३ लसंजयपुनर्होमलिलेर्मधुरसयुतैः अर्चयिष्वोदिता चैवं मंत्रः
 पुत्रप्रदोऽनृणः ११४ नृसिंहो माधवारुलोहितो निगमादिमः कृष्णनुभार्यो धर्वाणो मनुर्विषहरः परः ११५ अनन्तपान्क्तिर्यस्योदायु
 निष्कृन्दश्च देवता नारवान्निधियवोजशक्तो मंत्रस्य कीर्तिने ११६ ज्वलज्वलमहामतिस्वाहा हृदयमोरितमर्गगरुडोऽपि पदस्यान्ते चूडा
 नर्नस्यचिप्रिया ११७ शिशुमनो गरुजः शिखेस्वाहा शिखीमनुः गरुडार्णवदित्वांते प्रभञ्जययुगावदेन ११८ प्रभेदपश्य गंधर्वादि
 नासया विमर्दय प्रत्येकं द्विर्गतः स्वाहा कुर्वन्मनुरीरतः ११९ उपरूपधरांते तु सर्वविषहरो निर्वभीषयद्विगतयोऽप्यसर्वहृदहे
 निर्व १२० भस्मीकककस्वाहा नैत्रमत्रापमोरितः अप्रतिहतवर्णानेव तन्नामनि हनेति च १२१ ॥ ५ ॥ शिरा गरुडप्रभञ्जय २ प्रभेदय २ वि
 आसय २ विमर्दय २ स्वाहा वम ११६ ॥ उपरूपधर सर्वविषहरभीषय २ सर्वदह २ भस्मीकक २ स्वाहा नेचं २ ॥ देवकीपुत्रोऽपि स्वयमेव भगवत्पुत्रोऽपि ॥
 ननयकं स्तुता म दश १ ॥ २ ॥ असमंत्रस्य नारदः कविः अर्जुणः पृच्छंदः सुतपरकः लदेवता म गो ॥ ५ ॥ क्षिप्रकं स्वाहा ५ अस्य मंत्रस्य अन्ते भस्विः पंक्तिर्ददः पक्षीः ददेवता ३० नैत्रोऽपि हस्तिः क

ननयकं स्तुता म दश १ ॥ २ ॥ असमंत्रस्य नारदः कविः अर्जुणः पृच्छंदः सुतपरकः लदेवता म गो ॥ ५ ॥ क्षिप्रकं स्वाहा ५ अस्य मंत्रस्य अन्ते भस्विः पंक्तिर्ददः पक्षीः ददेवता ३० नैत्रोऽपि हस्तिः क

वसवस्त्रैः पलाशोत्तैः १०० संकंदनादपरं द्वादश १ भंजानरमाह कामेति क्रौं कस्य स्त्रीमिति वेदाक्षरश्रुतवर्णः ध्यानमाह कस्येति कस्यद्विः कस्येति कस्यद्विः
 अष्टलक्षं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः सप्तसहस्रं संधैः
 लीं सन्यभोमार्चल स्मृणां जवर्षमपि ११ संकंदनादपरं द्वादश १ भंजानरमाह कामेति क्रौं कस्य स्त्रीमिति वेदाक्षरश्रुतवर्णः ध्यानमाह कस्येति कस्यद्विः कस्येति कस्यद्विः
 कामसंयुतिर्नैकस्य परदेशस्य रामनुः गायत्री नारदः केशिः छंदो मुनिरधीश्वरः १३ दीर्घास्ते नैकमेन वडंगन्या समाचरेत् कस्य
 इमूलं छंदः पयस्यं विनये हरि १०४ कस्यद्विः सति स एष य एव भूयः प्रोद्गतेर्मणि निकरैः सासिक्तमीमां ध्यायेयं कनकनिभां शुक
 वसानं भुंजानं दविनव नीनया यसा नि १०५ चतुर्लक्षं जयेत्तं चंदं द्वां शं विल्वसंभवैः फलैः प्रजुह्याद नो यजेत् द्वां शं नि पूर्ववत् १०६
 महा पद्मं न थापेत् संधैः
 यं जयादिभिः सिद्धो मं चो नि धिदि वापदः १०८ मंत्रे वेद्यु र्दशा लोका न प्रयोगान् सिद्धधीन च अथ यत्र पदं वा चिह्नं स मंत्रं मनुष्यं १०९
 रकी सुनं वलं नै गोविंदं पदमुच्चरेत् वा सुदैव पदं चो च्य संधैः भुंजानमपि ११० देहि मे तेन न यं प्रो च्य कृष्णत्वा महर्मा रे मेन द्वा रणं गतं
 मिषि किं १११ भंजानरमाह देवकी नि यथा देवकी सुत गोविंद वा सुदेव जगत्पते देहि मे तेन न यं कृष्णत्वा महर्मा रे मेन द्वा रणं गतं

अथ भंजनादपरं द्वादश १ भंजानरमाह कामेति क्रौं कस्य स्त्रीमिति वेदाक्षरश्रुतवर्णः ध्यानमाह कस्येति कस्यद्विः कस्येति कस्यद्विः

षडंगमाह धरेति धरा एकः ५२ मंचांतरमाह नारदति जेनमोभगवनेरु किण्णिवत्तभायस्वाहेति ५७ पंचांगमाह एकेति ५४ ध्यानमाह चिंतेनिचिंता
मलिपुतनिजहरेनालिगिताकांतायेननं सयन्नहसपापत्तालिं गितं स्वर्णपट्टिपुतदक्षकरं अंगैर्नारदादिभिः ५३ द्वादिभिः वर्ज्यादिभिः ५६ मंचांतरमा
उपसनास्पमं नस्पपूर्ववत्परिकीर्तिनां अथर्वस्येवोड्याणोर्मनुलोकाधिमोहनम् ५२ अथरुकिण्णिवत्तभोमंनः नारोदद्व
रावनेनेरुकिण्णिडं नवल्लभः ५३ द्विष्टानेः षोड्याणोर्धनारदोर्मनिरस्पुनं ५३ खं नुष्टपदेवगतुरुकिण्णिवत्तभोहृदिः एकेदि युगस
साक्षिवर्तैः पंचांगमीरितं ५४ चिंताश्मयुक्तनिजदेः परिरव्यकानमालिं गितं सजलजेनकरेणपत्न्या ५३ वत्तवत्तयुतहसमने
कभूषपीतावरं भजनकृष्णमभीष्टसिद्धौ ५४ लसंजपेदशांशेनपद्मैर्होमसमाचरेत् अंगैर्नारदद्विचारिकजायैः पूजयेद्वरि ५६ नो
रदध्वेनोजिह्वां निधुवेद्वद्वरुकां न विषक्सेनं च शैवेयं दिह्वये विनतासुतं ५७ अथाष्टाशुश कांमोणेवत्तभोडः नः खं दानोष्टा
क्षरोमनुः गायत्रीकृष्णधातारः ५८ देवदेवयोमतां ५८ वर्णायुधैः समसेनं पंचांगविधिशिरितः हरिं पंचवर्षव्रजे धावमानस्वसौ ५९
यसंमोहितस्वर्णयोषं पशुदासु नक्षीगतौ हृष्टके लिभे अभूषितं भूषणैर्नृपरायैः ५९ ॥

५९ ह का मद्रति स्त्री गोवत्तभायस्वाहेति गार्धो लोदः ५९
अस्पृजस्य ब्रह्माऽऽभिः गायत्री छंदः कृष्णदेवताभ्यामिष्टसिध्ययेजयेति नियोगः २

सूर्यलसंहरालसं ८२ ठंडं साहा ८३ मंचानरमाह कामेनि क्रीमिति गोपालमनुः नन्वाष्टार्णवन अयंजीवशीकरी ८० मंचानरमाह
 चक्रप्रवगादकरैरुदधिलासंस्थिष्टदेहं हरिं नानाभूषणरक्तलेपकुसुमं पीतांबरं सरोरेण ८० एवं ध्यात्वा जपेन सूर्यलक्ष्मिप्रभुं
 धुनैः पलाशपुष्पैर्जुह्या नमस्तुङ्गनाथने ८१ नययं सलिलैः सावमीठं पूर्वदिने यजेत् प्रसिद्धैः जापदंडं मंत्रेण गुरुचर्चनं ८२ मुकुटं
 शिखरीषाधकं स्थोः कुंडले यजेत् करेषु च काचुत्वाणि श्रीवत्सं कौसुमं हृदि ८३ वनमात्तां गच्छे श्रीणि देशे पीतांबरं ध्रुवं धर्माणि भ्य
 र्चयत्वा दिदिदिदिवंगपूजनं ८४ दिद्युप्रपूज्य चैतरेवाणान्कोणेषुप चमं लक्ष्म्या दानं शक्रः सुपूज्याः शक्राद्या आयुधान्यधि ८५
 लक्ष्मीः सूर्यस्वामी चाप्यग्निः श्रीनिश्चैतुर्थिका कीर्तिः कानि कुष्ठिपुष्टीरिति लक्ष्म्या दयो मनाः ८६ विजयापुष्ट्यसंयुक्तैर्जलैः संनययेत्
 दानम् प्रातः पत्न्यहमे नम्यवांक्षितं मासतो भवेत् ८७ अयुनेन दृते नानो हुत्वा संपातजं घृतं तावज्जप्तं प्रियं कानं भोजयेत्
 तिस्रः ८८ कौमबीजविधिवेयापरिचैर्योक्तं मंत्रवत् विशेषात् कामिनीवर्गमोहकोमनुनायकः ८९ समाभवमवार्त्तिकं दयैः कृत्वा
 पस्मृतिरोयुता विंशत्यं च हिजायां नो ह्यदृशाणो मनः स्मृतः ९० मुनिर्वत्सस्य गायत्री छंदः कृष्णोऽस्य देवता धरैकं च दशमीं चो
 । वा नी द्वीकंदर्पः क्रीं कृष्णं क्रीं स्मृतिर्गः ओं पुता गोपया श्रीं ह्रीं क्रीं कृत्वा योगविंशत्यर्चा हेति ९१ ॥
 ॥ नेत्राणोरंगमीरितम् ९२

अस्मिन् नम्यदत्ताः ऋषिः गायत्री छन्दः कृष्णो देवता मन्त्राः प्रिष्टाः सिध्यर्थे नयिनी योगः १

मंडलमेकोनयंचाग्रहिनानिनन्मधेवांछितंमिप्रामोनि ७२ मंजानरमाह कामदक्षिकामः स्त्रीविद्यनरुरेचिकाद्वयमृगं स्त्रीनामः वागादि
सद्युगाः इयुनावीचक्रीकः किंटीप्रणनरुदः केवकः शः अनंताच्चित्तआयुनः शणमरुनेयः स्वरयुनमः यथाक्षीदधीकेणायनमः ७८ वडनमा
सरस्वमनुनाजसंदद्याधस्मिनरायसं वशमेन्यचिरादेवसपुत्रपशुवांधवः ७२ वंदावनस्थगायंतंगोपीभिः संस्मरन्हरिं
अपाकारिसिद्धिर्दोत्रुहयादृशयेज्जगत् ७३ एसकीडागतं क्लृप्तं व्यायन्योपुनमाजयेत् पराभासाद्वांछितं कन्यामुहरे
इक्तिनमरः ७४ जयेनसरस्वध्यायंगीषावदेवस्थितं हरिं कयकावांछितं नाथं मंडलानं लभेत् सु ७४ यन्मैः फलैः समिद्धि
वधिवत्सोश्चैर्मधुसंयुतैः कमलैः शर्करासुतैर्होमास्वस्मीपनिर्भवेत् वृहन्नोकिमिहेतेन क्लृप्तः सर्वायसो नृणां अयमंत्रो
नरैवस्थिगोविंदस्येष्टदं नृणां ७६ कामोविपदेचिकाद्वयं गोवाभासिसंयुता चकीर्तिं टीशमारुहोवकोनताच्चित्तोमरुत् ७७
स्वरयांनोमनुश्रेष्ठोवसुवर्णोवलिष्टदः मुनिः समोहनाद्योसुनारदः परिकीर्तिनः ७८ गायत्रीछंदस्त्वनंदैवस्त्रैलोक्यमोह
नमर्कोमवीजेनषड्दीर्घयुक्तेनायं समाचरेत् ७८ कल्यानो रुहमूलसंस्थितवपोगजोन्नतसंस्थितं चौखर्वाणमंथेसुचापक
र कामेति लांहरत्नीं शिरः आभमार्ह कस्त्येति कल्पहसमूचस्थितगण्डासंगं वाणयस्योक्तुं शयंसादसेषु अन्मन्त्रे ॥ १॥ मलेपाशां कुंशोविभ्रमं ॥

लांक्षीकैर्कैर्कैः

१. कीदधीकेणायनम २. अमयमंजससंमोहननारदः कचिः गायत्रीछंदः त्रैलोक्यमोहनदेवताममापिष्टसि ध्वर्धेजयेविनीयोगः

अर्कजाकालिंदी गोपांश्च गोपिकांश्च ६३ मंचानस्त्रसश्चासौ गतप्राणश्चासौ आकृष्टश्चासौ कंसश्च नयाभूतं रिपुं समरनरिषु जन्म न स च हृष्टम्
 अप्यादि कोणेऽथ भर्षद्दराद्यंगचतुष्टयं दिशास्त्रवंदले वृष्टौ महिषीः परिपूजयेत् ६० रुक्मिणी सत्यभामा च नगजिर्नभ्या
 र्कजां मित्रविंदालं स्पर्णा चं जाव वन्यसुखा लिकां ६१ महिष्योष्टौ मुवर्णभा विवित्राभरण सज्जः दलायेव सुदेवं चंदेव कीनं द
 गोपनिं ६२ यथोदं वलभ इ च सुभद्रां गोप गोपिकाः रं द्रादीनपि वच्चादीन् पूजयेत् नरनरम् ६३ रत्नसिंहे मनौ मनीसा धुर्येन स्व
 मनीर्वनम् गुडची शक तैरनौ जुह्यान् ज्वरशानये ६४ कर्त्तव्यं प्रकुर्वन् वलदेव स्पर्श कियत् ६५ नासक्तस्य संचिन्त्योऽप्येव
 वगोत्रकाज ६४ जुह्याद्वैषा सिद्धार्थनरयोः सुदंशैर्मिषः पित्रुमंदकत्वेन नैलाभ्यक्तैः समिद्धैः ६६ अस्पर्जैर्जुह्याद्वा वायु
 नं शत्रुशानये अयुतं प्रजयेन्मन्त्रमात्मानं संस्मरन् हरिं ६० मंचस्त्रा गतप्राणा कृष्टकं संरिपुं सुधीः शत्रुभक्त्यर्हसो न्यसमिद्धि
 १ पुनं निशि ६८ जुह्यादि स्थसं गोपसं पलो निधनं वजेन पलाशकुसुमैस्तस्यां विद्या सिद्धे जुहोतु ना ६८ तंदत्तौ सिनमुष्याद्वै
 णाकैः प्रमदं नरैः इत्थां समदिनां तेन ह्यसमाले च मूर्द्धनि ७० धारयन् वशयेत्सद्यो वनं तच्च पुरुषान् पुष्पं वा सोऽजने वापि
 जुह्यान् न स च हस्यानुक्रोः ६८ ६९ ७० मच्च यौवनं युवति स मूहः श्रुत्वा च प्रयेत् ७१ ॥ ६॥ गोवृत्तमथ चंदनं ७२ ॥

मं दी-
कै ७७

८७

अममृजदि गोपालमंत्रमाह गोपीनि अनिसुंदरीस्त्राहा यथागोपीजनवल्लभायस्त्राहा ५२ विराट्छंदः श्रीगोत्रस्त्राहाः ५३ पंचांगमाह आचक्राय ह
न विचक्राय शिरः सुचक्राय शिखा नैलोत्तरास्य कचक्राय कच अभसुरांगक चक्राय प्रभृति ५४ नाट्युटानि जंगो जं
अभयोना रसिंदर सुदेवनाभ्यनु पूर्ववत् अथ गोपालमनचः प्राच्यनेस्त्रिहसाधकाः ५९ गोपीजनपदस्या भिवल्लभायानिसुंदरी रथाय
रामनः प्रोक्तो मनोरथफलप्रदः ५२ नारायणचिराट् कल्याणनिपूर्वाः समीरिताः वीजप्रकीर्तविसेयं क्रमान् क्रमान् स्त्रियेयं ५३ ॥
आचक्राय हृदास्त्रा नां विचक्राय शिरां पच सुचक्राय शिखीय श्चात्रिलोकरास्य एततः ५४ चक्राय कच चक्राय क्रमसुरांगक प्रद
तः चक्राय स्त्रिमिदं कृप्या दंगानां पचकं मनोः ५५ सवंगि त्रिभुवनस्य वल्लभा संसमचरेन मलकेनेनेय्ये शुभार्थं सौधकैर्द्वज
५६ अहंरतिगदशै चक्रानुनोः पालयोरपि वर्णा नारसुटान्त्यस्ये हिंसाद्या नन समायुगान् ५७ हंदा एयगकल्ययादपतले मद्रत्तयो
ठं कुञ्जोणा भवसुपत्रको स्थितमंजरीनां वरा लं कृतं जीमूनाभमं नेकभूषणयुतं गोगोपगोपी हर्षं गोविंदस्मरसुंदरं दीनियुतं वेणु
रत्नं समरेन ५८ एवं ध्यात्वा न पेह्नक्षुंदरां प्राप्स्यसीरुहैः जुहुया भूजये मीरै वै हनवेनं दनं दनं ५९ ॥ नमः मलकैरन्यादि ५७ ध्यात्वा
माह वंदेति छंदश्च नगतकल्यवत्स तलमणिपादरकाष्टपत्रो स्थितध्यायन् जीमूनाभं वैद्यया मंस्मरादपि सुंदरं ५८ ५९ ॥

ध्यानमाहः स्त्रीरथ्याविति स्त्रीरसमद्रभ्येतद्वीयेवसादिहेवैद्यैरआदिप्रधानयावेष्टितः अयेवसुभिः हसैरुद्वैः पञ्चमे आदिनैः चामेविभ्ये
 देवैरित्यर्थः अथोवाभद्रस्य योः स्वचक्रोऽर्धयोगादपदेसितं चद्रवर्णशेषकणएवातपत्रेनेनलसिमोदीमः ईदृङ् नृसिंहोममपदेवर्ण
 सर्पाधीशकणानपन्नलसितैः श्रीगोवराजलंकनोलस्यपञ्चिषकलेवरेनेरहरिलोनीलकंठेसुंदे ३३ एवं आत्मजपेह्यं
 त्रयं षष्टिसहस्रकं मध्वक्तेमोदिकोप्येर्जुहयाज्जातवेदसि ३४ वदशतं त्रिसहस्राणि पीठेषुर्वादित्येपजेत् प्रथमावरणे
 गानिपरशक्तिरिमाः पुनः ३५ भास्वगीभास्वरीचिंगोचुनिरुन्मीलितनीनया रंमकांतीरुर्चिभ्योनिशः कृष्णहिनिसंयुतः ३६ रस
 सिंहेसर्पे मंचो निग्रहानुग्रहसंभूतः मल्लिकार्जुनसुमेर्होमोदिएष्टसिंहिभवाश्रयान् ३७ अथ दण्डवतारी नृसिंहाप्रणचो नृहरिर्वा
 जनेनोभयवनेपदं नृसिंहाय नारद्वर्कजं मंस्यतिकीर्तयेत् ३८ रूपाय नारो वीजं चक्रमरूपाय वर्णकः गौरीजीवकपुष्पोरु
 पायुता रवोर्जक ३९ नृसिंहरूपाय तनुगरो वीजं चक्रमरूपाय त्रिसो रवोर्जक गोरो वीजं चक्रकलायुद्ध
 शोरीजं चक्र त्रिकनेर्जो यद्वर्णनः शालग्रामोदीर्घासनेनका ४० ॥ ८८ ॥ अथानभ्यान ३३ मंजानरमाह प्रणवराति नृहरिवीजं स्त्रीं
 त्रिचि कारं नारवीजे ४० सनेत्रादीर्घाश्रुनो नः निजे निमध्यतु व्यंज ४१ ॥

श्रीमन्महेश्वर उवाच ॥ पुत्रजीवनरुकाष्टदीप्तौ नमः ॥ पुत्रजीवमूलैः पुत्राक्षैर्जुह्यात्तमं चानरमाहजयेति यथाजय ॥ श्रीर्त्तुसं
 हारि ॥ २८ ॥ शक्तिविषमरुः वीजं उभे शक्ति वीजविदुयुते दीर्घयुतेन सविंदु नावि यगाहेन षडंगं संहरन् हीं शिरदत्तादि २९ ॥ ध्यानमार्गं श्रीमदि
 निसाम्नां रजो ईशः यद्वा सामसु एजने प्रकाशने साम एजः सामगाने कृतप्रत्यक्षो भवतीत्यर्थः गीतकशेरुविः पिनाकपाणे इत्युपलक्ष्यार्थं च
 श्रीमन्महेश्वर उवाच ॥ देवकं ध्यात्वा श्रीनीलकण्ठकरुणा एव साम एजं च न्हीं दुर्गात्रकारनेत्रं पिनाकपाणेशीतां शुक्रस्वरे रमे श्व
 र्यं ह्रिं विं शो २८ ॥ एवं ध्यात्वा जपेत्तु स्थाष्टकं न स्यदशां शतं ॥ जुह्यात्त्यायसे नानो पूजा यस्य नृपूव वनर् ॥ लक्ष्मी नृसिंह मंत्रः ॥
 नारः पद्मा चंद्रो र्वां जयत्तु स्त्री प्रिया यच्च नित्य प्रमुदिर्गाते तु चैतं संपदमी रयेत् ॥ ३० ॥ लक्ष्मी श्रितो हृदय परमां माये नमः
 पदं एकादिकं चिंत्वा दर्शने मनुः पद्ममं चो मुनिः ॥ ३१ ॥ वंदेति जगती शोक्तं देवः श्रीनरकं सती वीजं रमां ईजा शक्तिः श्रीवीजनेष
 डंगकं ॥ ३२ ॥ स्त्री एवौ वसुमुखदेव नि करै रयादिसंवेष्टितः ॥ स्त्रियं चक्रां दत्तं च जनिज कर्त्तव्यं विनेत्रं सितं ॥ ३३ ॥ अभयचक्राणां चामो
 स्त्रो ध्वो न पिनाकामयवरचक्र धरदं ययः अस्म प्रजादि पूजा प्रयाग एव एकार्णवत् ॥ ३४ ॥ मंत्रांतरमाह नारद नि मम रजो पद्मा श्री
 हीं रमा ये र्वां हीं स्वरूपमन्य न यथा ओं श्री ह्रीं जयत्तु स्त्री प्रिया यनि न्य प्रमुदि त्वे तसेत्तु स्त्री श्रिता धृदरा य र्वां हीं नमः पद्ममं चो व
 जयत्तु स्त्री प्रिया यनि न्य प्रमुदि त्वे तसेत्तु स्त्री श्रिता धृदरा य र्वां हीं नमः पद्ममं चो व
 नमो हरे रय र्वां हीं नमः ॥ ३५ ॥

जगती चंद्रः श्रीनरकसरीदेवता श्रीनीजं हीं शक्तिः ममाभिष्टितिर्यज्जन ॥

मं. टी. नावतो ह्यत्रिंशत्संख्य कान् ना नाह क्खदति प्रयोगानाह सहस्रेति षट्पत्तयं त्रिंशद्वर्गानि शिदुः स्वधेदष्टमं त्र्यं जपुन्ववशिष्टानि श्रानयेत् सहः
नौ. त. १४

८५

संख्यायाधिष्ठितकुंभजपेदष्टसहस्रकं अभिषिञ्चेद्द्विष्वाकां तं विषजानिर्नष्टतये २६ विष्वाकां विषेने चौरव्याघ्रसर्पाकु-
लेनः जपन्मुमं त्रवरैर्नमयं प्रतिपद्यते २७ दक्षिणेति शिदुः स्वधे जपन्मन्त्रां निश्रानयेत् अवशिष्टां स्वप्रकलं सप्तगादिशानि
ध्रुवं २८ कर्णेनेत्रशिदुः कंठे गान्मं चो विनाशयेत् अभिचारकृतानां पीडां मनुमं चित्तमसम्भवं २९ आत्मानं नृहृदि ध्यात्वा वै-
रिणं मृगावालकम् आशयप्रस्थिते च स्यादिति स्यां सगच्छति ३० स्वकुटुंबं परित्यज्य न वैवाच्यं नैर्गुणः नृसिंहं संसारखा-
देष्टुं न स्यादिति नष्टये ३१ जपेदष्टमं त्र्यं भारणे न्यायनष्टयं प्रसूनेर्बलवत्सोत्थैः फलैस्स न काष्ठसुभवे ३२ सप्तस्वं जुष्टया
द्वैतैश्चोच्चित श्रीसमूहयो ॥ पुत्रजीर्णैर्द्वैतैर्गुणैः पुत्रसंपदं ३३ वासीवर्चावामं त्र्यं मन्त्रिणां शतसंख्यया सुवेनसर्प-
मदन् प्राग्निविद्यापारंगमो भवेत् ३४ किं वदते न नृहृदि सर्वेषु कच्छदो नृणां अयो व्यर्तनरुहर्भिर्निहृदि सप्तसप्तधकः ३५ ज-
पद्वयं श्रीनृसिंहेन्यष्टां मनुरात्रिः ३६ अथि वदन्त्या स्यात्पायनीर्षदो देवो न केसरी ३७ शक्तिर्नो विषद्वीजमुभे च द्रुसंभवि-
मः सुखप्रसवेव फलं दशानि ३८ प्रसंगान्माह एवायश्चित्तमाह प्रजयेदिति अभिचारजानं ॥ नैविष्यतादीर्षयुक्तेन च द्राह्येन षडंगं

नयनेति सूर्यं हनिनेत्रं घनेति घनविरामः शून्यत्रयः श्रीनां शुभं दः तनुत्यकातिं घनसमानगलमिति पाठे नीलकंठं शशिसप्रभं
 नयनेसोमहनाशनलोचनं घनविरामहिमांशुसमप्रभं अभयचक्रं पिनाकं वरानकरैर्दधनमिन्द्रधरं नृहरिमंजं ५ लक्ष्मिकं
 जयन्मन्दं दशं शं घनपायसैः जुहवाभूजयेत्सीरैर्विमलदिसमन्वितं दकेसरेषंगपूजास्मादिगदलेकुसवगेष्मदं शंकरेशेष
 नागं च प्रानन्दप्रयुजयेत् ७ अथोद्विधवृत्तिपुष्टिकोणयत्रेयुसाधकः द्वात्रिंशत्पत्रमधेननुसुहांस्त्रावगोचयेत् ८ केशो
 रुद्रैर्महावैरोभीमोभीषणोउल्वस्तः कर्णलोविकर्णालब्धैर्मातोमधुसूदनः दत्तास्त्रभयिगल्लक्ष्मीर्जनसंस्तर्क्योदशः
 दीप्ततेजाः सुवर्णध्वसुहनुः षोडशस्मृतः ९० विष्वाक्षोराश्रसांतश्च विष्णुलोधुसकेशकः हयग्रीवोद्यनस्वरोमेघनोदक
 पापरः ९१ मेघवर्णः कुंभकर्णः कर्णांतकद्रुगिरितः गीर्वाणेजाम्बिनिवर्णो महोन्नो विष्णुधृषणः ९२ विद्मस्यमोमहोमेनः
 होहोत्रिंशदिरिताः दंष्ट्रादीन्वज्रमुखांश्च पूजयेच्चतुरस्त्रकैः ९३ एवं सप्ताधिनोमंत्रः प्रयोगोबुद्धिमेभवेत् सहस्राष्टकसं
 । तैः श्लोकाभिः कौस्तुभः ९४ जुहुयादुदकैस्तत्सर्वेभ्यस्तत्पदवाः महोत्थानहरोप्येष होमः सर्वदोनेष्टुणं ९५
 । मानाप्रभायस्थानं-उर्ध्वयोर्दक्षिणामयोश्चक्रपिनके-अधस्थयोर्वेभ्योऽग्रे दंडधरं शशिशेखरं विमलादय उक्ताः दशानन्दवस्त्राणि ७

मं. टी.
नो. न. १७

८४

अप्रति मां प्रमंजमाह कजेति यथा उं वज्रकायवज्रमुदकपि लघिगलुर्व्व के प्रमहावल्लभमुरजतिभिर्जिह्वमहागैरदंष्ट्रोत्करकह २ कए
लिनेमहाहदप्रहारिन्लंकेभ्रवधायमहासेतुदधमहाशैलप्रवाहगगनेचरएसोहिमगवन्महावल्लयसक्तमभैरवात्पायएसोहिमहा
लंकेभ्रवधायानेमहासेतुपदंमनः वधमिचमहाशैलप्रवाहगगनेचर ११८ एसोहिमगवन्नेमहावल्लयसक्तमभैरवात्पाय
पयैस्त्रिहिमहागैरदधदंयुनः ११९ शैवपुच्छेनवर्णनिवेष्टयातेतुवैरिणम् जंभयादिनयंहफटप्रणवादिः समीरितः १२० वा
कनेनेद्वर्णोपमालामंजोस्त्रिलेष्टदः मुहेजसोजयंदद्याद्याधौ व्याधिविनाशनः १२१ अष्टाष्टमालामनोऽकुमुभ्याधुर्वातुप
र्वचनंभूरिणांकिमंष्ट्रकेनसर्वदद्यात्कपीभ्रुः १२२ ॥ इतिमंजमहादधौहनुमन्मंत्रकथनं नाम त्रयोदशस्तोत्रं १३
अथब्रह्ममहाविद्योर्मिज्ञानसर्वार्थसाधकान् ब्रह्माद्यानान्समाश्रयससजुर्विचिवाः प्रजाः १ मेरुः कर्णानुसृष्टुकोनुग्रह
दसमन्विनः एकाक्षरोनरहरेर्मन्त्रः कल्पद्रुमो नृणां २ असहसंयुतः प्रोक्तो मायया पाण्डवेन च ३ अवि रत्रिभ्यगायत्री च संश्लेषे
होक्ता ४ अजंभेद

शैवपुच्छेनवेष्टयवैरिणंमंजयं २ हुंफट २० बाणेनेत्रेद्वर्णः पंचविंशन्मुरशनाष्टः अष्टाष्टमासामंजोस्त्रां आविति सूचयन्नाह अष्टाष्टो
दिना इति श्रीमंजमहादधौ नौकायां त्रयोदशस्तोत्रं ॥ १३ ॥ सिद्धमंजमवक्तुं प्रणिजानीने अयेति मन्त्रावाह मेरुरिति मेरुः सः क णान्नरः ३
आं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॥ ह्रीं श्रीं ह्रीं ॥ नमः ॥

८४

३३ वज्रकायवज्रगुटकपिलपिगलउर्ध्वकंशमहावलरक्तमुखतडिजिक्मतारोददंष्ट्रिकटकहकएलिनेमहादहप्रहारिनलंकेभ्रावधायमहासेतुबंधमहा
 प्रयोगांतरमाह पुच्छेति पुच्छाकारेवस्त्रिकोकितापिच्छ लेखिन्याप्रसंगेहेनमदृष्टकत्वानदुरेष्टादशांमिवलिस्त्र्याधिमंत्रितेनाशरेवहेनने
 नपत्परिणामसर्वदर्शनोदेवनिश्चिनें युद्धंजिगीषुर्नृपनिःपूर्वोक्तस्वयेनध्वजे १७ ध्वजमादायोपरागेसंस्पर्शभूमिस्त्रिणा
 वधिमानकोजापयेनपश्चान्दशांशेनचहावयेन १८ सर्वधंसिलसंमिश्रैः संस्पर्शान्मोक्षलवधिः गजस्थानं ध्वजं दृष्ट्वा कृत्वा
 यनेरयोचिरात् १९ अथोहेनमनेप्रचवस्थेरासाविधायकं लिखेदष्टदत्तं पंचसाध्याख्यायुतकर्णिकम् ११० दलेष्वध्यानेमा
 लिख्यमात्मानं जेगवेष्टयेत् नहर्हिर्मययावेष्टव्याणस्यापनमाचरेत् १११ लिखितं खलोलिखित्याहलेभूर्जनरोऽभुमेरोच
 नाकं कुमाभ्यां तु वेष्टितं कनकादिभिः ११२ संपातसाधितं यंत्रं भुजवामुर्द्ध्वधारयेत् रणे जयमवाप्नोति च वृक्षारोदरो ११३ ग
 हर्हि द्वाविंशः शस्त्रेभ्यो र्नेचाभिभूयते रोगान्सर्वानपहृत्वा चिरेजीवति भाग्यवान् ११४ विषदनिर्गुप्तं दीर्घघटकाद्युतारसंपुटं
 भृष्टाणामंत्राणां गोमात्समंत्रोद्यकाव्युते ११५ वज्रक्रयवज्रगुटकपिले स्यादधिगत् ३३ हे केशमहावर्णावलरक्तमुखे ।
 इव ११६ नोडिजिह्वमहारौद्रं दंष्ट्रिकटकहद्वयम् कशालिने महादहप्रहारि निमिचलं काः ११७ ॥

नयनिर्भयं नमाह लिखेदिति अष्टाध्यामात्समंत्रोवस्थमात्पेदुरदशोद्युते अष्टाध्यामाह विषदिति विषयतः अनिरः यथा ज्ञं ह्रीं
 नवाह गगने चरत्योहिमगवत्सहावलपराक्रममैरवात्तापयत्योहिमहारोदरीर्षो वृक्षनवेषयवेष्टिर्नां अंशयजं भयदं कट १२५ ॥

पं. टी. १०० रूपवेदनेचासहः चतुर्विंशत्यर्थः यथा योयोहनुमनकलकलितधगधगिन आगुणवफरुद्रहेति १०० श्रीहरेगउदरोगः
नौनभ ८३

कं कपीशंसदगेहेयुजयेज्यपतनसः आयुर्लक्ष्योयवहंनेतस्यनृपदवाः ८७ शाईलनस्करादिभोरसेननुरयसु
नमस्वापकोलेचौरभोदृष्टस्वभादपिपुव ८८ यवनेद्विनयसद्योजातसुक्तहनुपद महाकालः शशांकालयः कामिकफल
कन्निपादद सनेजाणांतमीनागसान्तनोगितआपुणयलोहिनरुजाहेतिवेदनेचाक्षोमनुः ९० श्रीहरेगहराश्रयमुन्या
द्यं पूर्ववन्मतं श्रीहयकोदरेस्थार्यनागवस्त्रिदलंभुमं ९१ नदुपय्यष्टगणितवस्त्रमच्छादयेनरुचंशजशकलंनस्योपरि
मुंचेत्कपिंस्मरध ९२ आरण्यप्रकरोमन्नेवहोयष्टिंप्रतापयेनं वदरीतरुसंभूनांमंत्रेणनेनसदशः ९३ तयासंगहयेदं
शकलंजरस्थितं समकलः श्रीहरेगोनश्यसेवतृणांक्षणात् ९४ युष्माकारेसुवसनेकेविन्याकोकिञ्चेत्ययमिभ्यदृगये
ह्मिसेनरूपकपिशजस्यसुंदर ९५ नन्मध्येष्टादशार्णेनुशत्रुनामयुगंलिखेत् नेनमंत्राभिजसेन नरोवहेनभूमिभ्यः ९६
अर्धश्रीहारेगप्रोहतमन्त्रकंत्रुवेदधः

मोहवर्जनकलकलीतधगधगिनआ
गुणवपकडाह २५ क्षिप्रहेगमंत्रः

॥ ८८ नचाशकः प्रयोगमहिंश्रीहेति आ

प्रत्यप्रकरोत्यन्नेवनपावाणानिक्काशितेनोवदयुस्यायष्टिसमधामन्त्रेण नापयेन नयोदरस्थितेवशास्वडेगाडिनेरोगोनश्यति १०४

ध्यानमाहः दहनेति प्रयोगानाह जितेति द्वियरति उदरेण नाशकमंत्रमाह पवनेति सद्यो जातओकारनद्युनपवनरूपं यो हनुस्वरूपं शृणुकोत्प्रेष
 नद्वदन्ति प्रियां नोपमनुरष्टादशाक्षरः मुनिरीश्वर^{ऋषिः} एव^{हृदः} स्यानुष्टुप्छन्दः समीरितं^{हृत्को} ८६ हनुमान्देवतावीजं हुं शक्तिर्वान्देव
 ह्यभां ओं जन्मेयोरुद्रमूर्तिर्वायुपुत्रस्तथैव च ८७ अतिगर्भायामर्दुनोच्चसास्त्रविनिवारणः एतैर्हृत्तैः षडंगानि कृत्वा ध्ये
 न्कपीश्वरम् ८८ दहनतमसुवर्णसमप्रभं मयहरद्वये विविहितांजलिं अचणकुंडलशोभिमुखात्पुनर्जनमतवान्^{भूमि} मह
 र्दुते ८९ अयुतं ऋद्धयेत्सर्वं दशांशं जुह्वानितैः वैद्यवेदं पूजयेत्परे पूर्ववत्कपिनायकं ९० जितेति द्वियोनकभोजी प्रत्यहं साष्ट
 कं यत्तं जपित्वा सुदरेण भोमुच्यते दिवसत्रयात् ९१ भूतप्रेतापि यथाचादिनाशयेत्सम्प्राचरेत् महाशयनिवृत्तैर्नुसहस्रं प्रत्यहं
 येन ९२ यताश्चोद्यन्ते निम्नजपन्ध्यायनकपीश्वरम् राक्षसोद्यन्ति दानमर्चिणश्च यतीदृशं ९३ सुग्रीवेण समर्पणं संदधानं
 मरत्कपिं प्रजप्यायुनर्मेतस्य संधिं कुर्वाहि रुद्रयोः ९४ लंकादहनं नैव्याप्य नैयुतं प्रजपेन्मनुं शत्रूणां प्रदहेद्दयामानसि
 श्वसाधकः ९५ प्रयानसमये ध्यामन् हनुमं नैमनुं जपन् यो यानि सौचि सान्सेवैसाद्यथिना गृहं व्रजेत् ९६ ॥

। लः सविंदर्मः मंका मि कातः फलफलस्वरं सनेत्राकिमा दयुतां लः लिपान्तकः मीनो वः गस्वरूपं सात्वतो धः गिन अगु रास्वरूपं लेखि

मंत्रान्तरमाह द्वादशेति द्वादशाक्षरस्यातिमान् षट्दर्पणहनुमतेनमदृतिप्रथमेवेकहौमिति न्यक्ताशेषः पंचाणोर्मंत्रः ह्येकं रक्तेरहं ह्यौमिति २१
 षडंगमाह एमदृतरति हनुमदाद्याश्चतुर्थ्यन्तावी षडंगमन्त्राः यथा ह्येकं हनुमतेह त र्हेः रामभगवायशिरः हस्तौलक्ष्मणमाणदोत्रोशिरादृत्तादि
 ममसर्वकार्थ्यजार्त्तसाधयधितैर्यननः सर्वदृष्टदृजुर्नोर्तेमुखानिकोर्त्यहं ११ येनयेहोत्रैयवर्मात्रितैर्यफटत्रैर्यननः व
 दिप्रियातोमंत्रोयमालासंज्ञोस्त्रिलेखदः १८ अष्टाशीन्युत्तराः पंचप्रातवर्णमनोः स्मृताः महोपद्रवसंपत्तिः स्मृतेयं ह्युः स्व
 नाशानः १९ द्वादशाणैरितिमान्दर्पणनृषट्मन्त्रैकैतयादिमं पंचकृदान्तकोमंत्रोनिस्त्रिलाभीष्टसाधकः ८० मुनीरामोयथा
 यत्रोहं देहिकः कपोत्तः पंचवीजैः समस्तेनवडंगंमुनिभिः स्मृतं ८१ रामहोत्रो लक्ष्मणोनेप्राणदाताजनीमुक्तः शीताशेकाविना
 योषलं कायासादुभजनः ८२ हनुमदोद्याभ्यं चैते वीजाद्याः उः समन्विताः षडंगमन्त्राः संदिष्टा ध्यानपूजादिपूर्ववत् ८३ तार्येक
 कं कं मन्त्रायादीर्धत्रयसमन्विताः पुंषकृदानिमंत्रोयं रुद्राणोभीष्टसिद्धिदः ८४ अर्चनापूर्ववत् सायं प्रेमत्रोषिधीपतेरु
 धर्ववद्वादशवर्णवत् मंत्रान्तरमाह तारदृति तारोवाकरं कमलार्थी मायादीर्धत्रयाया
 होहीरूपचक्रं तानि च दशनीं मुक्तानिरुद्राणैकादशाक्षरमंत्रान्तरमाह हृदयाभिनि नहन् उन्नोतमोभगवते आंजनेपायमहाकेज्जायस्वाहेति
 ह्येकं ह्यौ पंचदशमकोमंत्रः ८५ षडंगमाह आंजनेयदृति आंजनेपायत्तरुद्रासूत्रेयशिरदृत्तादि ८५। भगोभगवते आंजनेपायमहाकेज्जायस्वाहेति

ह्येकं ह्यौ पंचदशमकोमंत्रः।

८२ षडंगमाह आंजनेयदृति आंजनेपायत्तरुद्रासूत्रेयशिरदृत्तादि ८५। भगोभगवते आंजनेपायमहाकेज्जायस्वाहेति

ह्येकं ह्यौ पंचदशमकोमंत्रः।

विष्णोर्विष्णुस्य २ हीहीहंहा ३ एस्वोहिहो। स्तकं हो। स्तकं हो। सर्वप्रचुरहन २ परदत्तानि परसेन्यानि हो। भय २ मम सर्वकार्यजातं साधय २
 एहसीसंघं वणां निविदारणचक्रं भव कणादिव धरां व्यनेपरायण्यदं वदेत् ६५ श्रीरामभक्तिशब्दानेन तत्सर्वं निमग्नं व
 मीदुमलघुनेतमहासामर्थ्यमिति च ६६ तानेजैः पुत्रैर्वापि न राजमानं पटं पुनः स्तामिव च न संयादिना जुनिंति च संयुगा ६७ स
 हायानि कुमारेति वस्तु चारिन्मदं वदेत् गंभीरशब्दैर्निर्वायुर्दक्षिणशायं पटं पुनः ६८ मानेदमिदं शब्दानेनैव नैविष्यदं वदेत्
 शीर्षकार्चनशब्देनैव केलीति पटं पुनः ६९ मंत्रागमाचार्यममसिर्वग्रहविनाशनं सर्वज्योत्स्नादनीति सर्वविषयिकं यत् ७०
 सर्वाप्यतिनिवारणसर्वदृष्टेति संपदेत् निवेहेण पदं सर्वव्याघादिभयनत्वरम् ७१ निवारणसर्वशत्रुहेटनीति पटं मम परस्य
 च विभूवनं पुंस्त्रीनपुंसकानाम् ७२ सर्वजीवपटं पञ्चानं ज्ञानं वशीयते मेकमममाज्ञाकारकं पञ्चानं संपादयदं दयम् ७३
 गान्नामपदं येनानुसर्चनम् ७४ ससंपदेत् परं वा एतन्ममैतन्नेति सर्वकान्तं हरेषु मेकं ७५ सर्वशस्त्रास्त्रवीर्यं नैविष्यति
 भवसंयदं यं मायाहीनं योपेनाहीनं यच्चैहियुगम् ७५ विलोमपंचकूटानि सर्वशत्रुनहनदं परवातेनानि परसेन्या
 धर्जनसुखानि कीलय २ वे ३ हा ३ इ ३ फट ३ स्वाहा माला मंत्रो यमहाशीम्भधिकपंचशतवर्णः ५८ ॥

निसोभयदं

इति परं शब्दार्थः

स्मरणशक्तिभेदनिवारणाविशाल्येषधिसमानयनवालोदिगभानुमंडलग्रसनभेयनादहोमविध्वंसनइंद्रजिह्वकारणसीनारसकणस्मृती
 सद्यविहारणकुभकर्णदिवधयरायण श्रीरामभक्तिनगरसमुद्रयोमद्रुमलघनमहासामर्थ्यमहनेत्रः पुञ्जविराजमानस्वामिचूषनसया
 नारो नमो हनुमते प्रकटाने पराक्रम आकाश दिक्पटल तोयशोर्वा निचंगानुचं ५५ धवुली कर्मवर्णः ५६
 नेत्रगञ्जितयवज्ज्वल देहज्वल निसूर्यकोटानुसमप्रभा ५६ ननूरुहपट्टरावगारपट्टमीये ५७
 नं लंकापुष्टिहस्तं नोदधिलघुनं वर्णकाः ५७ दशग्रीवाशिरः प्रश्नोक्ततातके पट्टननः सीताच्चासनवर्ध
 दितार्जनसंयुगसहायकमारत्रस्तचारिणोभीरशब्दोदयदक्षिणाशार्तंडमेरुपर्वतपीठिकार्चनसकलमंत्रागमाचार्यममसर्वग्रहावि
 षं र्भ्रां हं हस्तिभं र्द्व्यो हं हं हं हं ॐ नमो हनुमते प्रकटयः राक्रम आकाश दिक्पटल तोयशो विमानधवलीकनजगञ्जितयवज्ज्वल देहज्वल निसूर्यकोटिसुप्रपभनमूरु
 रावगारलंकापुष्टि देहज्वल नोदधिलघुनं वर्णकाः ५७ दशग्रीवाशिरः प्रश्नोक्ततातके पट्टननः सीताच्चासनवर्ध
 नदोष्टपर्वतोत्पादनभयो कवनविदारणास्तुभारक ह्वेदनकम्पसा करसमृद्धिविभंजन प्रदास्त्रत्रयशक्ति प्रसनलक्षणशक्तिभेदनिवर्णविशाल्येषधिसमानयनवालोदिगभानु
 दत्तप्रसनभेयनारहोमविध्वंसनइंद्रजिह्वकारणसीनारसकणस्मृती संविदारणकुंभ ५७ दिवधयरायण श्रीरामभक्तिनगरसमुद्रयोमद्रुमलघनमहासामर्थ्यमहनेत्रः पुञ्जविराजमानस्वामिचूषनसया
 नमामि वचनसंवादिगर्जने संयुगसहायकमारत्रस्तचारिणोभीरशब्दोदयदक्षिणाशार्तंडमेरुपर्वतपीठिकार्चनसकलमंत्रागमाचार्यममसर्वग्रहावि

वहिरकं वलयं कल्पे परिचतुरस्रं कल्पानदग्राणि संवर्धनत्रिभूतानि कल्पानि भूलेषु कामिनि वज्रेषु ह्योमिनि विलिख्य नत्ता मंत्रे
ण वक्ष्यमाणेन संवेष्ट्य नत्तुन वलयत्रयेण वेष्टयेत् ४८ नामिः कस्तुरीयत्वाश्रयवाष्पी मालामंत्रमाह प्रणवदनि वाक्कुरे हरिप्रिये श्री मा
वलपंचवहि गलिख्य नददहि क्षतुरस्रकं चतुरस्रस्य रेखाग्रैत्रिभूतानि समालिखेत् ४८ भूतुरस्याष्टवज्रेषु हरसोर्विजोसि
रेतनतः कोणे धंकुशालिख्यं मालामंत्रेण वेष्टयेत् ४८ नत्सर्वं वेष्टयेत् धुंत्रं वलयत्रिनेनेचं वरेत्रि शिलायां फलकेनामना
त्रैधंकुशके ५० भूर्जवानादपत्रे चारोचना नामि कुंभैः यंत्रमेतत्समालिख्य नत्वा शोबस्य चर्यवान् ५१ कपेः प्राणान्
प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् यथा विदिसर्वदुःखनिवर्त्येत धुंत्रमात्मनि धारयेत् ५२ चरमाय्यामि चारं सर्वं पुद्गलानि क
योषिस्तमपि वाजानां धुंनं जनमनोहरम् ५३ मालामंत्रमथो वक्ष्ये प्रणवोवाक्कुरे हरिप्रिया दीर्घत्रयान् चिंतमाया पूर्वोक्त
प्रदीर्घत्रयान् चिंतमाया दीर्घपूर्वाक्तं मूलमंत्रस्थम् अत्रिर्दः वायुर्धः स्वरस्थमन्यत् यथा ओं नमो हनुमते प्रकटपराक्रमभा ॥ कुरं पंचकं ५४ ॥
कौनद्विदः मुंडल यथो विमानधवलौ कनजगज्विनपवज्ररहज्वलदनि सूर्यकोटिसमप्रभुने नरुद्रावतारलंकापुरीदहनोदधिलंघनदशग्रीव
शिः कृतानकसीताभ्यासनवायुसुगाजनीगर्भसंभूजश्रीरामलक्ष्मणनंदकरकपि सैन्यप्रकारसुग्रीवसख्यकारणवाहनिवर्हणकार
वाहनिवर्हणकारणदोणपर्वतोत्पाटनाशो कवनविदारणक्षकुमारकक्षेदववनरक्षाकरसमूहनिभंजनवस्त्रास्त्रवस्त्राशक्तिप्रमनल

पराधीनो वधो निगडान् श्रुत्वा तोमुच्यते विहेषणादी निविहेषमारणे चादाननक्तनपह्वचंति खनेव भुवकुर्मान् अमुकदेव्ययः २
 रनिहेष्ये मारय २ रनिमारणे रन्यादिपह्ववलेखनं ३८ कुवेराक्षः मूक्ष्मकणसिक्तस्रुयविशेषः ४१ यद्वा न्येर्हमिमादाभिः राजीलवरा
 हनुमनप्रतिमो भूमौ विलिखेत् पुरोमनं साधुना माद्विनीयां न विमोचय विमोचय ३० न स सर्वमार्जयेद्वा महसेनाय पुनर्त्तिरे
 न एवमष्टोत्तरशतं लिखितमाजयेत् पुनः ३८ एवं कृते पार्थनो मुच्यते निगडान् स्मरणान् एवं विहेषणादी ब्रह्मार्थान् न ह्य
 वंति खनु ३८ वर्या र्थसर्थैर्होमो विहेषकरवीरजैः कुसुमैरिदं काष्ठैर्वाजीरकैर्मरिचैरापि ४० ज्वरे र्वागुडचीभिर्दक्षार्षी
 रेण वा धृतैः भूले होमैः कुवेराक्षे रंडमनिमिधानया ४१ नैलात्ताभिश्च निर्युजो समिद्धिर्वापयत्तनः सौभाग्ये चंदनैश्च द्रो
 चनैर्लाजवंगकैः ४२ सुगंधयुष्यैर्वस्त्राभ्यैर्जनहान्यैस्तदा सये न त्यादराजसाराजीलं कौत्तेन मृत्यवे ४३ किं वह्नैर्विषका
 धोशां नो मोहे चमारणे विवादे संभने दूते भूतभीतौ च संकटे ४४ वश्ये युद्धे नृपहारे समरे चौरसंकटे मंत्रोपसाधिनो रक्षा
 दिष्टसिद्धिर्धुवंतृणां ४५ वश्ये हनुमतो यत्र सर्वसिद्धिप्रदायकं वलयत्रिनयं कृत्वा पुच्छाकारसमन्वितं ४६ साधनं म
 लिखेन्मध्यपाशवीजप्रवेष्टितं उपर्यष्टदलं कृत्वा दर्भपत्रेषु संलिखेत् ४७ ॥ ८८ पुतेन यत्पादराजसाहयने सक्षिपते ४९ यंत्रमाह
 ॥ येनि पुच्छाकारं वलयत्रयं विलिख्य मधो आभिमिति वीजेन वेष्टितं साधुना मलिखेत् नटपदं षट्पदं लघुद्वि ४७ ॥

ईशानेनादिनदहंकीरमिमंतएकः प्रयोगः भूतां कुशतरोः करंजस्य अरिषस्य ईशानादिप्रस्थितेन मूलेनांगुष्ठमिनां हनुमन्मतिमं कृत्वा प्राणान्मस्य
प्राप्तं दूरं भर्त्तनं दृढादिनिखननेन सर्वोपद्रवनाशतद्वाधश्च शिवितं शिवेनापि राक्षितं शत्रुमैव कुर्वन् हन्यान् अर्द्धचंद्रेणादिरपुषु शनमिह
अंगुष्ठमात्रं प्रतिमां धविधाय हनुमन्तः प्राणसंस्थापनं कृत्वा सिद्धैः परिपूज्य च २६ गृहस्याभिसूखीकारे निखने नैमं नमुचरन्
भूतमिचारचौणिविषये गन्तुं प्रवृत्तः २७ संजायेते गृहे न स्थिन्नकदाचिदुपद्रवाः प्रमदधनपुत्राद्यारधने तद्दहं चिरम् २८
निशि श्मशानभूमिस्थो भस्मनामृत्युपापि वा शत्रोः प्रति कृतिं कृत्वा त्वादित्यमसमाहित्वेन २९ कृतप्राणप्रतिष्ठानां भि
दाहं द्वैर्मनुजमन्धं वा ते प्रोचरेच्छत्रोर्नामहिं धिवाभिरिच ३० मारयेति च तस्यां ते दनैरेष्टं निधीय च पाण्योस्तले प्रपीड्याय म
न्तागं प्रदं नं वजेन ३१ एवं सप्तदिनं कुर्वन् हन्यान् शत्रुन शिवाशिनम् अर्द्धचंद्राकृतौ कुंडे स्थंडिले वा हुनं चरेत् ३२ भुक्तकेशः
प्रश्नानस्थो लवणे राजिकायुजैः उन्नतफलपुष्पेभ्यश्च नखरोमविवेरापि ३३ कार्ककोशिकागुधाणां पक्षैः श्लेष्मांशकाक्षुच्चैः स
मिदं दैश्च त्रिशतं दक्षिणाया मुखे निशि ३४ सप्तसप्तानि दं कुर्वन्मारे पट्टिपुमहत् शतषट्कं न पेदाचौ प्रमशानो दिवस त्रयं ३५
न ते वेनाल उन्मया पदं दद्वा विभुभाभुमं उदितं कुरुते सर्वा कं करो भूयमं त्रिणः ॥ ३६ ॥ ९ नं एको मारणप्रयोगः उन्नतो धनैः श्लेष्मां
नकच्छिक्कणफलोज्ञस्यः असौ विभीनकसदस्य समिद्धिश्च ३७ तं चरेत् उन्मया न सप्तषप्तान् दिवसान् ३८ ॥

शस्त्रस्य गद्यो वारत्रयमं त्रिनेत्रं नमस्मान्माभिर्जनाभिविराजन् शुष्यं निनश्यंति १६ २० २१ २२ २३ देहचंदनं देहे धृतं यच्चंदनं तेन युतं नमस्मां जुचमं
 एवं सिद्धे मनोमंजीस्वपरेष्टं प्रसाधयेत् कदलीबीजपूराम्फलैर्हृत्वा सहस्रकं १४ ह्यविंशतिवत्स्रचारी न विप्रान्संभोजयेद्
 धूं एवं कृते महाभूतविषयौ राद्युपद्रवः १५ नश्यंति क्षणमात्रेण विद्वेषिग्रहजनकाः अष्टौ तिरश्चानंवारिभं त्रिनां विषया
 नमं १६ शबौ न वश्य नमं नृपदे शदिना वधिं यो न रक्तस्य नश्यंति राजरात्रस्य भीतफः अभिचारो मृतो रक्ष्यं चरेत् न न्मं त्रिने
 र्तलः मस्माभिः सस्त्रिहैर्वापि गडये च्छरिणः क्रुधा १८ दिनत्रयान्नरात्कुतः समुखं लभते नरः न न्मं त्रिनेत्रौषधं जगध्यानि
 ऐगोजायते ध्रुवं १९ तन्मं त्रितं पयः पीत्वा यो हं गच्छेन्मनुजपत्नं तस्य ममस्मालिषंगः शस्त्रसंघेर्न वा ध्यते २० शस्त्रस्य तं व
 णः सौ फो ललास्फो योपि भस्मना त्रिमं त्रिनेत्रसंस्पृष्टाः शुष्यं त्पतिरतो नृणां २१ सूर्यास्तमयमारभ्य जयेत् सूर्योदयावधिः
 कीलकभस्मचादाय समाहावधिसंयुतः २२ निरखनेद्रस्मकीलौ तो विद्विषां ह्यर्थलक्षितः विद्वेषं मिथ्य आपन्नाः पक्ष्यापुंनेर
 यो चिरात् २३ अभिमं त्रितमस्मां बुद्धे चंदनसंयुतम् स्वपाद्यादि योजितं यस्मै दीयते स नदास वत् २४ कूराध्वंजं नृजो
 नेन भवंति विधिना वशाः दृशानदिक्स्थमूलैर्न भूनाकुशातरोः शुभां २५ ॥ ॥ त्रितं यस्मै देयं स वश्यः स्यात् २६ २७ ॥

निधीनाहमहापद्मरतिनतः सुंदरीमंजोक्ता निपजेन ७२ वसणः सायुज्यं वसुहसं प्राप्नोति ७३ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधि नौकायां सुंदरीयजुः
हृदयस्तरंगाः ७२ श्रीहनुमतो मंत्रान्वक्तुं प्रतिजानीते अथेति मंत्रमुद्धरति इदं निवराहो हः इंदुस्वरजौ विंदुस्ताभ्यां युतः हौं हसफस्वरजं
पुञ्जं च ह्यादि कोणेषु आर्त्तं श्रीध्वंसस्वामी रतिपुनर्दिष्टपूज्या रुक्मिणी सत्यभामिका १६८ कालिंदी जावुं च नारव्या भिन्नविंदं सुनं
दयां सुखस्वर्णानि तिजिगीत नो च्या निधयोपि च १७० महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छयो मुकुटं दं नीलां च रत्नं च श्रीनिधयो
नव १७१ ननश्च सुंदरीया काच निपूजा समाचरेत् प्रयोगानपि न चोक्तान् कुर्यादिष्टप्रसिद्धये १७२ एवं यो भजते नित्यं श्रीमद्भ
यालसुंदरीं सर्वान् कामान् वाप्यने सायुज्यं वेत्स्येति व्रजेत् १७३ ॥ इति श्रीमहीधरविरचिते मंत्रमहोदधौ त्रिपुरसुंदरी गोपा
त्यसुंदरी पूजनं नाम धादशम स्तरंगः ॥ १० ॥ अथोच्यते हनुमतो मंत्राः सर्वेष्टासिद्धये इंदुस्वरं इंदुसंयुक्तो वर्ण हो हसफा नयः
१ किं दीयां विंदुसंयुक्ता हि मीयं चो जमीरितः गिदायां गानि रं इंदुसंयुतः स्थापनीय कं २ हसरा मनु चंद्राद्याश्चतुर्थं हसरा फराः
३ इंद्राद्याः पंचमं स्थाप्य सोमो न्वंदु गोपरम् ३ ॥ १ अनीरः १ एते किं दीया विंदुयुताः एविंदुयुताः तेन हस्ते गं दीरवः पांतां च रं इंदु
अनिरं रुद्र ए रं इंदु विंदुः ते र्युतः रक्ते २ हसरा मनु चंद्राक्या औ विंदुयुताः रक्ते हसरा फराः पिवेदाक्या ए विंदुयुताः रुक्ते हसो मन्त्रि

इति श्रीमहोदधौ त्रिपुरसुंदरी गोपात्यसुंदरी पूजनं नाम धादशम स्तरंगः ॥ १० ॥

१८ बाशेकी करल हीं हकल रहल हीं सरकल हीं १९ वायवीयं कर देल हीं हकल हीं सरकल हीं २० सौमीयं कहल हीं हकल रहल हीं सकल
 ल हीं ऐश्वर्यमकर कल हीं अने कामराजीय २१ शक्तीयम कामराज हयम अन्यम सकल हिमिति इतिपूजिता २२ हसकल हीं हकल रहल हीं आव
 मेवपुष्पय २३ जैवीयं आद्यं कामराजीयं हकल रहल हीं हसकल हीं २४ ब्राह्मीयं सकल हीं हसकल हीं वैखवीयं २५ आद्यं कामराजीयं हकल हीं
 अथ ऐश्वर्याय शिष्याय नंदयेयं कदाचनः पुत्राय वा सुशिष्याय दत्ताभीष्टप्रदायिनी ५४ गोपालसुंदरी वक्ष्ये भोजमोक्षप्रदा
 यिकां मायारमचिंतनं कदाह्वयेति पदं नतः ५५ आद्यं वा कुरुमुच्चार्य गोविंदाय पदं च देतु हितीयं तु नमः कदं गोपीजनपुं
 नतः ५६ वत्सभाय पदां नेतुं नगीयं कुरुमुच्चेतुं साहाजावन्दिषु ममार्णस्मृता गोपालसुंदरी ५७ विद्यायादौ मुनी उक्तौ विधाया
 नंदभैरवौ चंद्रकुंदौ गोयन्तौ देवतासुंदरी युताः ५८ गोपीलोमन्मयो वीजं शक्तिः पावकवत्सभां माया श्रीमन्मये देहस्यात् क
 र्मायश्चिरं शिरसि ५९ गोविंदाय शिखागोपीजनैकवचं मतं ॥ चतुर्भायस्तु नैव नमस्त्वं पावकभार्यया ६० ॥

हीं २६ उन्मनीयं हसकल हीं सकल हीं सकल रहल हीं २७ सौरी एते मेदाः २८ श्रीवीजी आदिभिः संयुक्ता कामराजवदेव उपासनाप्रपि गो
 र्शिव इति ५४ मायेति माया हीं रमा श्रीचिंतनं कदाय ५५ प्रथमं कृतं गोविंदाय दिक्षीयं कृतं ५६ गोपीजनवत्सभाय नगीयं सा
 क्यविधा नंदभैरवकृषिः देवीनप्यभी हावन्दिषु ममार्णव्यो विप्रनिवर्णः षडंगमाह मायेति २९ ॥
 पात्रसुंदरी देवताकौ विजं साहाय्यं शक्तिः ममाभीष्ट १

मं टी
केने १२
७६

पंथेभं नमधेयत्तद्वयं न चान्यद्वर्णयोगात्तु वेगे पासिन मोर्द्धा निंशदे होयथा हसकर ईल हीं हसकर ईल हीं हसकर ईल हीं २५ नै
चरीद्वय कृद्वय केमरा जीय सहस कल हीं ३ स्तय यगौर वमया नैको अजयै वोपा निन पासर्वेष्ट सिद्धे श्वमुखे धैव कामरा जविद्या हि मेरा ४ यमं दय
मगल्य पासिन हसकल हीं अने कामरा जीये ५ आषट्ठय कामरा जीये सहसकल हीं ६ एतद्वयं लोपा मुद्रोपासिन सहकर ईल हीं सहकर ईल
हीं हसकर ईल हीं ७ हसकर ईल हीं सहकर ईल हीं दलीयमी दशमेव ८ चान्दीद्वय मेन न सकल ह हीं ९ कए ईल हसकर ईल हीं हीं हीं हसक
हल हीं एतद्वयं दर्वो सार्चिन म न ह न जाना एवे कामरा जाख्य विद्या पास्त्रि कृद्वय वगानने पास्थिना भुवने प्रा नीदि धाक्रु मरेश्वरि विद्वही नानाद

पथे कृद्विर्के भेदा वर्णानि योजनानं वहचो न्ये न गदिनां ग्रंथगौरव भीतिनः ५३

हीनां दुर्वा सोपासिना भवेन सां हिना यांच वाभ कस्थ चतुर्कंच कामरा जस्थ पंचक शक्ति कृद्वि कायं च कामरा जस्थ संलिखेन १० माया स्थाने
हरीवर्ण युगलं च कक्षा लिखेन दुर्वास सापाजिने यपुर बाध प्रदायिनी कए ईल हरी हसकल हरी सकल हरी एतद्वयं दुर्वासोर्चिने आवा कामरा
जुल्ल्या ११ सहकल हीं सहसकल हल हीं आधमेव तृतीये १२ नदि विद्याद्वय मेन न हसकल हीं सकल हसकल हीं सकल हल हीं १३ हस एकल १
हीं १४ भेने देव स्कोरी द्वय मेन न क हक स ईल हीं हक ए ईल हीं सक ए ईल हीं १५ मीन वी कए कल हीं हक हल हीं सहकल हीं १५ धर्म राजी आ
द्य कामरा जीया हि नीये न नीये धर्म राजीये १६ एवा वारुणी कस कल हीं हस कल हीं सकल र हीं १७ आने मी हस कल हीं हस कल हीं न नी
मथेभं नमधेयत्तद्वयं न चान्यद्वर्णयोगात्तु वेगे पासिन मोर्द्धा निंशदे होयथा हसकर ईल हीं हसकर ईल हीं हसकर ईल हीं २५ नै
चरीद्वय कृद्वय केमरा जीय सहस कल हीं ३ स्तय यगौर वमया नैको अजयै वोपा निन पासर्वेष्ट सिद्धे श्वमुखे धैव कामरा जविद्या हि मेरा ४ यमं दय
मगल्य पासिन हसकल हीं अने कामरा जीये ५ आषट्ठय कामरा जीये सहसकल हीं ६ एतद्वयं लोपा मुद्रोपासिन सहकर ईल हीं सहकर ईल
हीं हसकर ईल हीं ७ हसकर ईल हीं सहकर ईल हीं दलीयमी दशमेव ८ चान्दीद्वय मेन न सकल ह हीं ९ कए ईल हसकर ईल हीं हीं हीं हसक
हल हीं एतद्वयं दर्वो सार्चिन म न ह न जाना एवे कामरा जाख्य विद्या पास्त्रि कृद्वय वगानने पास्थिना भुवने प्रा नीदि धाक्रु मरेश्वरि विद्वही नानाद

स्तीति॥

प्रयोगानाह नवेति ४१ चंद्रः कर्तृत्वाभाधिको भवेद्दूषणो निषेधः दधाति दधारेण्यं आत्मेन संपदं दुश्चेन यार्ममधुना भग्नमिति कर्मः ४४ राज्यवक्ष्यमा
 नकलस्य जनेनास्परुद्ररूपेन रोभवेत् महिक्तामालनी पुष्येर्होमाहं गीष्टानामिषान् १४१ करवीरैर्जवपुष्येर्होमाहो हयनेभगं
 नं चंद्रस्यैकं सूर्यो होमान् कामाधिको भवेत् १४२ वंपकैः पादलैर्विभ्वंशमानयने चिरान् लज्जा होमो राजपदार्थमधुनो पदवक्ष्यः
 १४३ निशि छायां पलेर्होमो रिपुसैन्यविनाशकं दध्याज्यदुग्धमधुभिः क्रमाहोमादवाभुयान् १४४ आरौम्यं संपदं दध्यामं ध
 नैर्कर्कश्यासुखं कमलैर्धनसंपत्तिर्दीडिनेराज्यवश्याना १४५ ह्यग्निषामो नुलिंगे सुवैश्याना रगजैः फलैः पृथक् कृष्णं च संभ
 नैर्वश्याः सुराचिराद्भुजैः १४६ पुनसा नोत्सहोमान् वश्यांसुभ्रुकुचार्निनः द्राक्षा फलैरेष सिद्धिरभाभिर्भूक्त्रिणो वश्याः १४७
 नारिकेलैः सुसंपत्तिं सिलैः सर्वेषु सिद्धयः गुणलेहूः खनायः स्यान् सर्वेषु शर्करागुडैः १४८ पायसे धनधान्यापिर्वधूकैः प्राणि
 त्रयाः पक्वेभ्युतफलैर्होमान् लस्यमाना हरावश्या १४९ लवणैराजिकायुनैः क्षमादुष्टविनाशनः कर्पूरहोमास्त्वभने वा कृप
 ां नरोचिरान् १५० करंजफलहोमे न धनमेनादयो वश्याः विल्लैः स्यादगुला लक्ष्मीरिषु दंडैः सुखासयः चूतहोमादीप्तिना
 णानिः स्यान्निहतंडुलैः किंवहकैर्नरेवशिः सर्वेषु क्षाधिमान् एणं १५१ ॥ १५२ ॥
 ॥ याः एवमग्रेपि ४६ धागभिर्वश्या न नस्या पाणिनो वश्याः सुरित्यर्थः ४८ ॥ १५३ ॥

नतोमलविद्यायाऽन्त्याध्यात्म्यं श्रीमन्निप्रसूतरी श्रीपादकांपुनया श्रीनिमज्जेरएवंनवमावराणामाध्यात्मकोनंदमयेचकेमर्त्तमिष्टस्येनीयपरहरस्ययोगीनिष्क्रिप्तत्रिप्रसूतरी

प्रजितास्त्रिसुक्तायोगविमर्शमध्युत्तिकाधीनार

मं. दी. नि. सारकं कनकं तन्मत्वं कोनि तानमुद्रावरीदस्योः पाशां कुक्षौ वा मयोऽप्रयोगेयया कारद्वलही कामरूपोऽहं कमेभ्यरीरुद्राणि श्रीपा. हसक
नो. नर. लही पूर्वपीठवज्रे भूरी विष्णु प्राप्ति श्री. सकलही जालं घरे भगमालिनी वस्य प्राप्ति श्रीपा. एवमवमावराणि मिष्टा सर्वसिद्धिप्रदे च के रमा अभिरहस्य
सोमि. य. पू. जनाः संचितु न्का मूले न पुष्पां म्भिरं दत्ता विजमुद्रा दर्शयेत् नतो मूलविद्यां पठित्वा ध्यात्वा विही १२ श्रीमन्निप्रसूतरी पादका पूजया भीतिजेत्

७५

विदेसै पूजयेत् यथा श्रीमन्निप्रसूतरी मूलविद्यां समुच्चार्य ध्यात्वा पूर्वोक्तं वर्त्तना ३३ सर्वानंदमये च के रमा श्रीपुविधाये
नीं पशुपरहरस्याख्यायोगिनी पूजितास्तु मे ३४ यो निमुद्रां प्रदर्श्या यत्नं परं लंकिः समाचरेत् तं पूरं ही पंचनैवेद्यमन्त्रैर्नासि
वेदिशेत् ३५ चन्द्रिहं संपूज्य पूर्वोक्तं विधितान न सुंदरीं आवाह्य मुद्रां द्रव्यं च विद्यां निसेष्यया ३६ दृष्ट्वा नयेय नैर्त्तु वा पुका
एषु च कर्माणि श्रीवक्तव्यं च लिंदद्यात् न हतयेवेण संयतः ३७ वदकस्य च येभिः साः सेने प्रमणनायये विजेमैः सुमुद्रा
मिष्टूषसर्का निममया ३८ नतोः प्रदक्षिणाः कर्त्ता मूलविद्यां नतो यजेत् एवं श्रीमुंदरीं निजं पूजयन् विजेतं दिवः ३९ नवा

४०॥

१॥ ३॥ एवं नवमावराणामाध्यात्मकोनंदमयेचकेमर्त्तमिष्टस्येनीयपरहरस्ययोगीनिष्क्रिप्तत्रिप्रसूतरी

केसवो भीमसुहृदिनी परापरहरस्य योगिनी श्रीमन्निप्रसूतरी पूजिताः त्रिसुक्ता योगिनि मुद्रां प्रदर्श्या क्रिस्तापयित्वा धूपदीपित्वा आवाह्य मुद्रां दत्ता
यत्नं निममया नादिको एषु हतयेवेण वदकयोगिनी सेने पात्रगणोद्गम्यः पूर्वोक्तैः स्वरवमनैः सातन्मुद्रा दर्शनपूर्वकं च लिंदद्यात् नतो नमस्कारान् ३९

७५

नन् नान स्वस्वा पुधानि कारणान्वा न कण रव

चंपादिमविदगीन कल्लोप कंर पकारौ पाशमाये आंहीमि निपाशादौ अंकुशस्या दौ नंकुशं कामिति हेति हेवना आपुधेवताः २४ तासां ध्यानमाह ना
नार्थोपर जंम्यादि प्रयोगो यथा पाशः त्वां कां सां द्रं दीं लो ज्ञसः कामेभ्य र कामेभ्य र जंमनवा ए श्रीपाः पश्चिमेऽधं युक्ता मे भ्य र कामेभ्य र मोहनधनुः
स्वस्त्युधसंमन्विताः विद्युद्दाम समानां यो यो वनो नाहमं यराः २६ अन्यादि कोणचि नये पूज्याः कर्तव्यादि काः कामेभ्य र
चवर्त्तेशी नृनी या भगमा लिनी २७ कामेभ्य र रुद्रा किं शर चंद्रशमप्रभां स्मर्त्तव्या दधनी हिंसेः पुंशो कीर्ति रं स्तुर्जः २८
वने भ्य र शिवि स्तु शक्ति रं द्यन्ता न्द स प्रभा न्द सु चोपवर्त्तेशी निष्यवा ए लं सन क रं २९ भगमा ल व र्त्तेशी किं सि स हार क
सप्रभा ता न्द मुद्रां व र्त्तेशी प्रार्त्तं कुशं दधनी क रैः ३० एव नि कोण स पूज्य यच्छे लुप्या जलि नतः वीज मुद्गं प्रद र्या धं यार्थ येन
सुंदरी मिदं ३१ सर्वा सिद्धि प्रदे च क्रै योगि न्यः पूजिता मया दिशं तं निरह स्या स्वर्ग मंगलं मे नि रं न र म् ३२ ॥

श्रीपाः उत्तरे आंही कामेभ्य र कामेभ्य र वशी कर ए पाश श्रीपाः पूर्वोक्ते कामेभ्य र कामेभ्य र वशी कर ए पाश श्रीपाः दक्षिणे अन्येति अग्रदक्षि
रा काम कोलिषु कटवयपूर्वा रुद्र विस्तुत्र स एणं शक्त यश्च नि स्तः कामेभ्य र वशी कर ए पाश श्रीपाः पूर्वोक्ते कामेभ्य र कामेभ्य र वशी कर ए पाश श्रीपाः
ने कामयोः पुस्त कामये वरा स मा लि दक्षयोः उद्यन्ता न्दो भानु सेन समाना प्रभा यस्याः वरं पुष्यवा एण दक्षयोः रक्षु धनु रभये कामयोः भगे भ
२४ दं ईं श्रीं वृं सः कामेभ्य र कामेभ्य र वशी कर ए पाश श्रीपाः पूर्वोक्ते कामेभ्य र कामेभ्य र वशी कर ए पाश श्रीपाः दक्षिणे अन्येति अग्रदक्षि
सर्वा सिद्धि प्रद र गाः अतिरह स्य को मि न्यः पूजिताः सर्वा नि न्यः ३३ न पूज्याः ३४ र्त्तेशी निष्यवा ए लं सन क रं ३५ भगमा ल व र्त्तेशी किं सि स हार क
३६ सप्रभा ता न्द मुद्रां व र्त्तेशी प्रार्त्तं कुशं दधनी क रैः ३७ एव नि कोण स पूज्य यच्छे लुप्या जलि नतः वीज मुद्गं प्रद र्या धं यार्थ येन
३८ सुंदरी मिदं ३९ सर्वा सिद्धि प्रदे च क्रै योगि न्यः पूजिता मया दिशं तं निरह स्या स्वर्ग मंगलं मे नि रं न र म् ३९ ॥

पं. टी.

नै. न. १२

७४

एवंषणवंपुष्टावरणमभ्यर्च्य सर्वरक्षाकरेचकेरमादशानिगर्भयोगिन्यः पूजिताः संतिसुक्ताकुशमुद्रां दर्शयेत् नतोष्टोरक्तवस्त्रावाणव
रुद्रसुकराधुर्विद्यामकस्यासोका अष्टावशिन्माद्याउक्तवीजपार्थिकायजेन ह्रीं श्रीं अ० अ० ब्रुवश्रीवादेवना श्रीपा० एवंससमावरण
सर्वरक्षाकरेचकेरमादशानिगर्भयोगिन्यः पूजिताः लक्षणं सं ९५ सर्वेष्विनार्द्यफलदायश्चिमादिविलोमगाः पुष्पमूलेन दंत्वा योक्तुं योऽमुद्रांमहां
विशुक्तां कशमुद्रां दर्शयेत्
वैकुण्ठं १११ सवरक्षाकरेचके निर्गर्भाः पूजिताः रमाः योगिन्यसपिताः सनुममाभीष्टफलप्रदाः ११० संज्ञार्थेर्वनं धीष्टारदाडिमी
पुष्पसंनिधाः रक्तं शुक्राधनुर्वारो विद्यावरलसत्करः ११८ अकाराद्यष्टवर्गाद्यापश्चिमादिविलोमतः पूजयेत् पूर्वसंयोजनी
द्याद्यामुद्रदेवताः ११६ वाशनीचाधिके मरीचो देवो विमलरंभा जयनीचापि सर्वेश्वरी कोलिनी सिदिनायरे १२० सर्वयोगहर्षक
चक्रेरहस्यपुष्पिनाः पां नमिताः पूजिताः सन्तै च दद्यात्सुभंजलिं १२१ सेवरीं दर्शयेन्मुद्रां सुंदरीं नष्टयेत् नतः त्रिकोणोत्त
कथेद्वार्याचतुष्षष्टिमादितः २२ यजेत् कामेश्वरामे प्रयोर्वा एतन्चापंचपाशकं अंकुशं चानुलोमेन चतुर्दिक्षु समाहितः २३
जंभोद्वंशसंभयदाद्यान्वीजपूर्वकान् वापकोजान् वा एतदौमीनकस्त्रौ संविंदुको २४ चापादौ पाशस्त्रादौ योर्वा मायेति
पुष्पमूर्ते गह्वरे रक्ता अष्टिबिन्दुः पूजिताः संतिसुक्ता रेचकमिद्रां दर्शयेत् नतोऽकथादिव एतच्चित्तिकोले पश्चिमाद्यनुलोमे च चतुर्दिक्षु प्रसवे
नैः २५ अ० अ० ब्रुवश्रीवादेवना श्रीपाद का पुज्यमभ्यः ह्रीं क्रीं ह्रीं नमो रतुं ऊज्यमभ्यो ८ एते अष्टविन्दवो ८ सर्वतमररेचकेरमा अष्टौ रदस्य योगिन्यः पूजिताः संतिसुक्ता सेवामिद्रां
दर्शयेत्

संवि

श्रीगुरुः पूजितः संवि नृत्ता वक्ष्यमशं दर्शयेन एतद्विश्रवर्णयते दशमे १०६ पञ्चिमादिव्यक्रमेण सर्वसिद्धिप्रदश्चादेवी पृथुद्यादप्रपूजयेत् ॥
ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदरेवीं श्रीं पा १०८ एवमवधारणं संपूज्य सर्वार्थसाधके च केदमादशकलयोगिन्यः पूजिताः पुंवि नृत्ताः क्मादमुद्रादयो

योगिभ्यः पूजितास्तथा मंगलानि दिशं नृपे मंगार्थं निर्दिष्टा रथ्याणादिभाना एभूविने १०६ संपूज्यादशकलयोगिनां पूजयाम्यस

पुष्पभाः एकदशालि विभूषाढ्याः पाशं कुशलसुनकराः १०७ पञ्चिमादिविलोमेन साधकाभीष्टसिद्धिदः सर्वसिद्धिप्रदश्च

सर्वसंप्रदायाः १०८ सर्वप्रियं करीचान्यसर्वमंगलकारिणी सर्वकामप्रदायश्चान्सर्वदुःखदिनोचिनी १०९ सर्वमुमुक्षु

शमनी सर्वविघ्ननिवारिणी सर्वगसुंदरी चान्या सर्वसोभागप्रदायिनी ११० विंदौ पुष्पसमर्पयिन्मादमुद्रां प्रदर्शयेत् स

र्वसाधके च केपंचमे सर्वतः स्थिताः १११ पूजिताः कुलयोगिन्यः संतु मे भीष्टसिद्धिदः त्रिसंमार्ग्यं संपूज्यमादिद्यां न वि

भवेत् ११२ परेदशारे योगिन्यः उद्यद्वा स्करसंनिभाः तानमुद्रादकपाशवर्धारिकरां वृजाः ११३ सर्वज्ञां सर्वशक्तिं सर्वैश्वर्यं

प्रकल्पदा सर्वज्ञानमर्षी पश्चान्न सर्वव्याधिविनाशिनी ११४ सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा यशः सार्कनंदमयी देवी सर्व

साधके च केदमादशकलयोगिन्यः पञ्चिमादिविलोमेन साधकाभीष्टसिद्धिदः सर्वसिद्धिप्रदश्चान्सर्वदुःखदिनोचिनी १०९ सर्वमुमुक्षु

न नो परेदशारे माद्यलुने त्वनमुद्रावरदसकशटकपाशवामकशउद्यद्विनिभाः सर्वज्ञां देव्याद्यादेशपूजयेत् न ह्रीं श्रीं सर्वसादेवी

॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

मं. दी. दानलोभेनानमकुसुमाद्यामृद्वयेन हीं श्रींअनंगकुसुमाभ्यैषा. ८६ एवंगीयावरणं संपूज्य सर्वसंक्षोभयेचक्रे एताअष्टौगमनरयोमिन्ः पूजितः सर्व
नेवभ. तु रसुत्पाकर्मणामुद्रां दर्शयेत. ततश्चतुर्वार एवतुर्दशारेकदिचतुर्दशा ८८ दंडयेत्ताद्युक्तकृपाद्वर्णपाशधराभक्तः पातयामांकुशरश्च
७३ अनंगकुसुमानाद्यादिगीयानगमेवला ८६ अनंगमदनानहदनंगमदनानुह अनंगरेखाचानंगवेद्यानमांकुशाधुनः ८७

[illegible]

ॐ

गुप्तकानि एवं प्रथमावराण मस्य ८७ त्रैलोक्यमोहने च के रमाः प्रकटयोगिन्यः पूजिताकार्पिना इष्टाः संचिनि प्राथम्यं भूत्वेन विदुः
भूजिना कार्पिनाः संजयेन हीं श्री कामा कर्षणी प्राप्ति श्री पा रत्या दि एवा हि मे प्रवर्षा
मध्यसत्तारिष्युरके च के रमाः षोडशगुप्तयोगिन्यः पूजिता कार्पिनाः संचिन्मुक्ता ८४ द्वाविंशतिमुद्रां प्रयेन सा गतिना ८५ अष्टवर्गान् चिनि धीरे प्रवर्षा

स्वचरी वीजयोगी च विस्वदेनि स्मृता रमाः एवं भू विवमाराध्य सिभममुद्रा प्रदयेन ८७ त्रैलोक्यमोहने च के योगिन्यः प्रक
ष्टरमाः पूजिता कार्पिनाः संजयेन विदुः प्रवर्षा ८८ विंशत्युष्यां जलित्वा भूत्वेना न्यावति यजेन प्रवर्षा ८९ प्रवर्षा ९० प्रवर्षा

विंशत्युष्यां जलित्वा भूत्वेना न्यावति यजेन प्रवर्षा ९१ प्रवर्षा ९२ प्रवर्षा ९३ प्रवर्षा ९४ प्रवर्षा ९५ प्रवर्षा ९६ प्रवर्षा ९७ प्रवर्षा ९८ प्रवर्षा ९९ प्रवर्षा १०० प्रवर्षा

प्रवर्षा १०१ प्रवर्षा १०२ प्रवर्षा १०३ प्रवर्षा १०४ प्रवर्षा १०५ प्रवर्षा १०६ प्रवर्षा १०७ प्रवर्षा १०८ प्रवर्षा १०९ प्रवर्षा ११० प्रवर्षा १११ प्रवर्षा ११२ प्रवर्षा ११३ प्रवर्षा ११४ प्रवर्षा ११५ प्रवर्षा ११६ प्रवर्षा ११७ प्रवर्षा ११८ प्रवर्षा ११९ प्रवर्षा १२० प्रवर्षा

प्रवर्षा १२१ प्रवर्षा १२२ प्रवर्षा १२३ प्रवर्षा १२४ प्रवर्षा १२५ प्रवर्षा १२६ प्रवर्षा १२७ प्रवर्षा १२८ प्रवर्षा १२९ प्रवर्षा १३० प्रवर्षा १३१ प्रवर्षा १३२ प्रवर्षा १३३ प्रवर्षा १३४ प्रवर्षा १३५ प्रवर्षा १३६ प्रवर्षा १३७ प्रवर्षा १३८ प्रवर्षा १३९ प्रवर्षा १४० प्रवर्षा

प्रवर्षा १४१ प्रवर्षा १४२ प्रवर्षा १४३ प्रवर्षा १४४ प्रवर्षा १४५ प्रवर्षा १४६ प्रवर्षा १४७ प्रवर्षा १४८ प्रवर्षा १४९ प्रवर्षा १५० प्रवर्षा १५१ प्रवर्षा १५२ प्रवर्षा १५३ प्रवर्षा १५४ प्रवर्षा १५५ प्रवर्षा १५६ प्रवर्षा १५७ प्रवर्षा १५८ प्रवर्षा १५९ प्रवर्षा १६० प्रवर्षा

प्रवर्षा १६१ प्रवर्षा १६२ प्रवर्षा १६३ प्रवर्षा १६४ प्रवर्षा १६५ प्रवर्षा १६६ प्रवर्षा १६७ प्रवर्षा १६८ प्रवर्षा १६९ प्रवर्षा १७० प्रवर्षा १७१ प्रवर्षा १७२ प्रवर्षा १७३ प्रवर्षा १७४ प्रवर्षा १७५ प्रवर्षा १७६ प्रवर्षा १७७ प्रवर्षा १७८ प्रवर्षा १७९ प्रवर्षा १८० प्रवर्षा

प्रवर्षा १८१ प्रवर्षा १८२ प्रवर्षा १८३ प्रवर्षा १८४ प्रवर्षा १८५ प्रवर्षा १८६ प्रवर्षा १८७ प्रवर्षा १८८ प्रवर्षा १८९ प्रवर्षा १९० प्रवर्षा १९१ प्रवर्षा १९२ प्रवर्षा १९३ प्रवर्षा १९४ प्रवर्षा १९५ प्रवर्षा १९६ प्रवर्षा १९७ प्रवर्षा १९८ प्रवर्षा १९९ प्रवर्षा २०० प्रवर्षा

प्रवर्षा २०१ प्रवर्षा २०२ प्रवर्षा २०३ प्रवर्षा २०४ प्रवर्षा २०५ प्रवर्षा २०६ प्रवर्षा २०७ प्रवर्षा २०८ प्रवर्षा २०९ प्रवर्षा २१० प्रवर्षा २११ प्रवर्षा २१२ प्रवर्षा २१३ प्रवर्षा २१४ प्रवर्षा २१५ प्रवर्षा २१६ प्रवर्षा २१७ प्रवर्षा २१८ प्रवर्षा २१९ प्रवर्षा २२० प्रवर्षा

भूविं वमारभ्यविंदुं पर्यन्तं धर्मित्वमेतन्नवाचरत्तु प्रजा आचरन्त देवता नामादौ प्राप्य श्रीवीजं अने श्रीपादकां पूजयामोति प्रयोगः ७८ अभिषेक इति श्रुतिः
नेर्भ्योऽपि स्वावापौ कवचं पुरोनेत्रं दिह स्वस्व यथा श्रीह्रीं लोकेहं सौः स्वरूपं वा देवता श्रीपा ७९ चिरेखं भूगृहं मस्ति यस्या धरेखायां अष्टादि सुकु
र्व्यं अथ श्रुतिमाद्यादशसिद्धिर्भजेन ह्रीं श्रीं अलिमासिद्धिं श्रीपादकां पूजयामीत्यादि प्रयोगः ८० नत्ता ध्यानमाह तस्यै कुशधरा वामे पार्श्वे
चिरेखं भूगृहं मस्ति यस्या धरेखायां अष्टादि सुकुर्व्यं अथ श्रुतिमाद्यादशसिद्धिर्भजेन ह्रीं श्रीं अलिमासिद्धिं श्रीपादकां पूजयामीत्यादि प्रयोगः ८० नत्ता ध्यानमाह तस्यै कुशधरा वामे पार्श्वे
श्रीपादकां पूजयामीत्यनेन हरेण अस्मत्पुत्रः अग्नौ शासुरवायव्यपुरोदिह स्वर्गपूजनम् ७९ भूविं वस्या धरेखायां दिह सर्वार्थो
धः क्रमाध्वयजेन सिद्धिर्दर्शयिमात्वाद्यामहिमात्वाधिमुं शिना ८० वाशित्वसिद्धिं प्राकार्थ्यं भुक्तिरिच्छां हामी पुनः प्राप्तिं
सर्वकामाख्या सिद्धयोदशकीर्तिनाः ८१ न सहेमसमानाभाः प्राणा कुशधराः शुभाः साधकेभ्यः प्रेष्यं ह्यं गिरा नौ धं गं विचिं
हेतः ८२ भूगृहं मस्ति यस्या धरेखायां पञ्चिमाद्युच्योदिमाः चोत्सीमा हेतुं चार्थिको माहो वै लवीमापि ८३ चारं सै च न यं द्रां लो चं मां
उभेय सप्तर्षी मेखलस्मी मिमाध्याय न संवाभरण सयुताः ८४ विद्यां भूलं यन्त्रि चैर्के गं दौ वं जं हि दं भूक धसं करेण द
धर्माः सप्तर्षी प्रदायिकाः ८५ न स्य नृगीये रेखाया दशमुद्राः सपूजयेत् स्योभेण हावणा कर्तुं च यत्नेना दमहां कुशः ८६
८७ भूगृहं मस्ति यस्या धरेखायां पञ्चिमाद्युच्योदिमाः चोत्सीमा हेतुं चार्थिको माहो वै लवीमापि ८३ चारं सै च न यं द्रां लो चं मां
उभेय सप्तर्षी मेखलस्मी मिमाध्याय न संवाभरण सयुताः ८४ विद्यां भूलं यन्त्रि चैर्के गं दौ वं जं हि दं भूक धसं करेण द
धर्माः सप्तर्षी प्रदायिकाः ८५ न स्य नृगीये रेखाया दशमुद्राः सपूजयेत् स्योभेण हावणा कर्तुं च यत्नेना दमहां कुशः ८६
८७ भूगृहं मस्ति यस्या धरेखायां पञ्चिमाद्युच्योदिमाः चोत्सीमा हेतुं चार्थिको माहो वै लवीमापि ८३ चारं सै च न यं द्रां लो चं मां

ॐ ह्यस्तकत्सही ॐ स्मरसमिन्नमः १९ पादिजान श्री पादकां पुजयामि नमः ॥

दक्षिणैर्भजयाम्पुह नमस्मिन्नमोह मृगुः सः यथा हंसः अजपा श्रीपा पञ्चिमे ५६ आदिष्टां त्वर्णानुमातका अं आं दं ईं संमातका श्रीपा उतरे ॥ कल्पे
तापचक्रं त्रिनाम त्रमाह पणवदति भुवने श्रीनोही ५७ मेरुः सः सपिंटीशः एगुनः सेयथा उही त्वे च छे सत्त्वी हं से ही फट् नरिना श्रीपा पूर्व ५८ पश्चिजति
श्रीमंत्रमाह ओकाशेति आकाशेहः हंसः सकोपाशः कापिनकी शेलः हरस्वरूपं अधरे ऐनेसविदवः कूटं तारमायेसंयुटं यथा श्री ओं हीं हंसक

नभःसविट्सर्गद्वयोभुगव्वर्णजपास्मताः अकारादिह्रकागतावर्णाः प्रोक्तागुमातकाः प्रणवोभवने श्रीनोहरेवेचछेष्टः पदं पुनः
५९ र्त्वाहं मेरुः सपिंटीशो मायास्वहादशाक्षरः तारिनायामनुवाक्त्वेन नासुरोचयेन ५८ आकाशह्रस्वकोधीशपिनाकाशाहं ह

धराः सेंदवकारमायाभासयुटाक्षरसर्वतो ५९ उं नोहं नोमं चोयं प्रोक्त एकादशाक्षरः अनेन पादिजानि शो दक्षिणस्यां प्रपू
जयेत् ६० र्मायामनोभमिस्त्रिवर्णत्रिपुटोदिता तां यजेत्यश्चिमेभागे वाये श्रीमन्नेरुनः ६१ दं हीं लोचुं भुगुः सर्मसिदितापंच

वर्णको ॥ ककारोभुगुशेरीसैर्या नीमं चोस्त्रिवर्णकः ६२ मोहिनामनपीठ व्यासनां पूर्वजो यजेत् नेमोभुवग्र्या चामने आद्या च्चंद्र

यैनमः पादिजाने श्वरी श्रीपा दक्षिणे ५९ त्रिपुटामंत्रमाह मनोभूः लो यथा श्री हीं लो त्रिपुटी श्रीपा पञ्चिमे दं हीं लो त्रिपुसं पंचवर्णे
६० कामधेनुपचके मृगपीठे श्रीमंत्रमाह वागिति यथा ऐं लो सौः अमृगपीठे श्री श्री पादकां पूर्व ६३ ॥

पूर्वमायदेवता श्रीपादकां पूजयामि नमः एवं चतुर्दशोऽहः । तसु प्रथमपंचकलक्ष्मी १ संस्कृतं । द्वितीयपंचकलक्ष्मी २ संस्कृतं । तृतीयपंचकलक्ष्मी ३ संस्कृतं । चतुर्थपंचकलक्ष्मी ४ संस्कृतं ।
 नमोऽवप्रयोगः परमकाशानंदनाथश्रीपादकां पूजयामि परशक्तं वा श्रीपादकां पूजयामीत्यादि ४० विंदोः प्रागाद्विदुस्तु पूर्वमायदेवता श्रीपादकां पू
 ४१ दक्षिणमायदेवता दिव्यगुरआमाया नृजयेन ततः पंचपंचिकाः पूजयेत् ४२ आद्यां मूले नमः । द्वितीयाद्यादिस्तु स्वस्त्वैः । एवमन्याः पंचि
 काः ४३ तसु प्रथमपंचिका माह श्रीविद्योति आद्यपंचकलक्ष्मीसूतं ४४ द्वितीयाद्यपंचककोशसूतं ४५ तृतीयाद्यपंचकलक्ष्मीसूतं चतुर्थपंचकका
 तिस्तः स्त्रियं सुदिद्ये सुप्रियां स्त्रीलेनिमानदे ४६ श्रीपादकां पूजयामीत्यतः सर्वत्र योजयेत् । ततो विंदोः श्वतुर्दशुपजेदप्रमाप
 देवताः ४७ पूर्वदक्षिणामाया पञ्चमं चोत्तरं तथा ततः प्रजयेद्विदुस्तु मध्ये च पंचपंचिकाः ४८ अद्यां मध्ये च नमो नमो नमो
 र्वाद्यां सुप्रजयेत् । पंचस्वायिगणे खन श्रीविद्यां चाः प्रकीर्तनाः ४९ श्रीविद्यां च नमस्तस्मै स्त्रीसूतीयकामत्रिंश
 क्रिः सर्वसामां ज्ञापं च लक्ष्म्यः प्रकीर्तनाः ५० श्रीविद्यां च परं ज्योतिः परनिष्कलक्षणं मवी अर्ज्यमां नृकांचेति पंचकोश
 मताः ५१ श्रीविद्यां चोत्तरं चैव पारिजाते भूमीयुतः त्रिपुणपंचवारो यीपंचकलक्ष्मीनादमाः ५२ श्रीविद्यामृतयो दे
 ५३ श्रीरम्ये नमः । अर्ज्यपूणेति विख्याताः पंचैताः कामदेवः ५४ श्रीविद्यां सिंहलक्ष्मा च मांतेगीभुवने भूमी चारु
 ५५ पंचमपंचकं लक्ष्मीसंस्कृतं ५६ तत्सां क्रमां ॥ द्विचमृत्तैर्ननुनि भूभृत्पंचकं ५७ श्रीविद्यां मूलमंत्रेण मध्ये संयोज्य
 ने तत्राद्यपंचकोमूलेन श्रीविद्यामध्ये प्रजादिस्तु लक्ष्म्या नृनलक्ष्मी मंत्रमाहवकोशवदति वके शः सः वन्हीरेफस्तु नृनं वामनेन

तत्राद्यपंचकोमूलेन श्रीविद्यामध्ये प्रजादिस्तु लक्ष्म्या धाः १

१ अः श्रीं हीं क्लीं ऐं सोः ॐ ह्रीं श्रीं क ए हं ल हो ह म हं ल हो म कं ल हो सोः ऐं क्लीं हीं श्रीं १८ निवुर सु दरी श्रीं पादुकां पुजयामीं नमः १९॥

मं-टी- जातवेदसि जत्संनि प्रजलं निजलजल प्रजलहरं रं हं फट् ज्वात्ममास्ति नी निमा श्रीया ३२ विचित्रां प्रथमाह कूर्म कूर्म चकारः को धी यमन्विदुयनौ
 औसिंदुयन को अत्र ययम चकार यथा अं कौ विचित्रा निमा श्रीया एतापंचदशमिन्माः ३३ एतास्त्रिकोणयंचदशपूजयिंदौ मूलेन षोडशी
 यजेत यथा अंमत्संमहाविप्रसुंदरी निमा श्रीया इकां पूजयामि नमः यामिनमः विंदुत्रिकोणयोर्मध्यविभंगिभिः पंक्तित्रयेण पुरुषैर्जैतं ३४
 व क ओ कौ ३५ विचित्रा निमा श्रीया इकां पूजयामि नमः ३५॥ १५ ॥

कूर्मः को धी यमन्विदुः सयुनास्त्र कवणकः विचित्रा यामनु च्छेत्ता निमापंचदशोदिताः ३३ मूलेन षोडशीं मध्यजेच्चिपु
 रसुंदरीं विंदुत्रिकोणयोर्मध्यविभंगिभिर्गुरुपुजेन ३४ दिव्योवाश्वापि सिद्धोवा मानवौ वास्त्रिधाहिने परप्रकाशः प्रथम
 सप्तः पराश्रिताभिधः ३५ परशक्तिश्च कोलेशः शुक्लो देवीकुले चरः कामेश्वरसि ससैव दिव्योपागुरवुः पयः ३६ भोगः कींश्च
 समयः सहजश्च परावयः सिद्धोपागुरवश्चेते चत्वारः परिकीर्तिताः ३७ गणो विभू विमलौ महनो भवन्मया त्रिंशस्तामा
 प्रियेण ह्येमानवा अपयममकः ३८ आनंदनाथशब्दाः पुरुषागुरवः सृणाः अंवादी सुस्त्रियः कार्यः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः ३९
 विधः

नैविर्षादग्नाह दिव्योपाशति दिव्योपा नाह परप्रकाश इति ३५ सिद्धोपा नाह भोग ॥ परशक्तिमया भुक्ता देवी कामेश्वरी निच ॥
 इति ३८ पुष्पसौगुरव आनंदनाथ शब्दाः कामाः स्त्रियोगुरवस्तु अंवाशब्दाः ३९ कानि स्त्रियः कानि कनरा रमन्नाह परशक्तिरिति दिव्यग
 रुरुपरशक्ति भुक्ता देवी कामेश्वरी क्षिप्तः स्त्रियश्चत्वारो चेषुमांसः मानवगुरुषु प्रिया लीलेहे स्त्रियो षडभ्येनराः सिद्धगुरुषु चत्वारोऽपि पुमांस

१ ओं सो सर्वमंगलाये नमः २३ सर्वमंगलानि नमः श्रीपादकोट्युज्यादि नैर्दयामिनः २४ ॥ २ औं उं नमो भगवति ज्वाला मालिनि देवि सर्वभू

न संसारकारिकेनात्र वेदसिञ्चल निप्रज्जलं निज्जलत्तल च न भंडं रं रं फट ४८ ॥ ज्वाला मालीनी निम्ना श्रीपादकोट्युज्याभि नैर्दयामिनः २४

ह्यो ह्यो सोः शौरं दं द्री त्वां ब्रुसः निम्ना श्रीपादकोट्यु २५ नीलपद्मकिं नीमं नमः ह नारदति नारो माया ही पातरे को फरौ नो किं दी श्वाशिसंयुनौ एं वि
दुयुनो फे हे सः सः अय्यर्वा श्विं द्वा द्यः रऊ विंदुयुनः खं रत्नै रवाही अंकुशः को निममदद्वे सखं चर्म हंसलिः को यथा एं ओं हीं फे र्द्वं हीं कौ निमम
दद्वे हं को नीलपद्मकिं नी निम्ना श्रीपादकोट्यु २६ विजयामंत्रमाह वराहे नि वराहो हः हंसः सः चं दी श्ः खः जनार्दनः फः कृष्णनरः एते पद्मनाभे दसं

नमो मायापातरे को किं दी श्वाशिसंयुनौ हंसो न्यर्वा श्विं द्वा द्यो रत्नै रवाही अंकुशः को निममदद्वे सखं चर्म हंसलिः को यथा एं ओं हीं फे र्द्वं हीं कौ निमम
चतुर्दशाक्षरसर्वत्रै लोका कर्षणसमा २७ कृष्णहंसचं दी श्वाजनार्दनकृष्णनखः पद्मनाभे दसं युक्ता विजया येन मों नि कः २८
विजयो पापानुः प्रोक्तः ससर्वत्रै रलि तार्थदः नारादया भृगु रवृ गो यो दे नस्यात्सर्वमंगला २९ नमो नमो मातुराख्या गो न चार्कः स
दंगै लः नारै नमो भगवति ज्वाला मालिनि नमः ३० देवते सर्वभूताने सं हारुने तु कारिके जानवे दसि वलं निज्जलं निप्रज्ज

च ३१ ज्वलदयं ज्वलं ते कवचं पावकदयं वर्मास्त्रा नो दिना ज्वाला मालि न्यष्टय गाक्षरा ३२ ॥ ९ युक्ता ए विंदुयुनः एतत्कूटं स्वस्त्य

ए सत्वे विजयमै नमः विजयानि न्मा श्रीपाद २८ सर्वमंगला माह नारादया विनि भृगु रवृ हीं श्ये सर्वो नारादयोः ओं युनो स्वां दे न्य चतुर्थ्यै कव
चा ओं सो सर्वमंगला ये नमः सर्वमंगला निम्ना पाः २९ ज्वाला मालिनी मंत्रमाह नारदति नारो माया ही पातरे को फरौ नो किं दी श्वाशिसंयुनौ एं वि
इं कं उं नमो भगवति ज्वाला मालिनी उदिना यथा ओं नमो भगवति ज्वाला मालिनि देवि सर्वभूत संसारकारिके

[illegible]

एएकादशार्णः पृथा रंहीनिमृत्तिनेनद्रवेस्वाहानिसक्तिनानिमाश्रीपाडकांपूजयामि भेरुंजामंन्महाह वांनदनि वांनो ॥
 रसयुतः ओंकारसंयुतः श्रोंसकृद्दशः अंकप्रसंपुटः कोमिति वीजेनादावंतेपुनः ५ वेवर्गस्य चत्वारो वर्णो वह्निमहिद्रसंयु
 ना श्रौंछौ श्रौंनौ स्वहांनः प्रणवाद्यादशवर्णः पृथा रंओंकोभौ कौं श्रौंछौ श्रौंनौ स्वाहा श्रौंजानिमाश्रीपाडकांपूजयामि १८
 रं श्रौंछौ श्रौंनौ स्वाहा १९ भेरुं । वह्निकसिनीमंन्महाह मायेनिस्यष्टपृथा ओंहीवन्हि॥ जनीमाश्रीपाडकांपूजयामि नर्पयामि नमः ४
 वाया चैनमः ६॥ वह्निवाष्टिनिनिमाश्रीपाडकांपूजयामिनर्पयामिनमः ५॥ ३५३६ हीकैसः निमाक्तिनेमद्रवेस्वाहा १७ महस्विदे श्रुतिनिमाश्रीपाडकांपूजया

मितर्पयामिनमः६॥

२ अंतेऽस्मिन् नमः कामेभ्यारि रक्षा कामफलपदे सर्वसत्त्ववशं करि सर्वजगत्सोमल कश्चिद्दुःखं दात्रीं लोभुंसः सौः कींते ४८ कामेभ्यारि निम्ना श्रीपादकां पूजयामिनर्पयामिनमः ॥ ४८ वप्रयोगः १
मदी निम्ना नामंते अमुं कनिम्ना श्रीपादकां पूजयामीति ४८ दक्षहस्तेन पुष्पचन्दनाद्यानां निनर्पयामीति वामहस्तेन जलं चार्पयेत् ५ जले आर्द्रकं प्रास्पृशति
नो नृप्रतिवेचिन् ६ निम्नामन्नेषु कामेभ्यरीमन्त्रमाह वालेति वाला पूर्वोक्ता नारः प्रणवः इह ददौ र्ध्वं आसौ जादिमश्च ७ वर्महृत्पंचवाणाः दात्रीं लोभुंसः रुमा

६९

कामेभ्यर्प्यो दिनामांते निम्ना श्रीपादकां पठेत् पूजयामिनर्पयामिददयं प्रोच्य पूजयेत् ४ विंदं परित आकल्प्यां त्रिकोणं विंदं गोमि
मं दक्षहस्तेन पुष्पादिवा मेनां भोविनिक्षिपेत् ५ केचिदाहं हारवा र्ध्मा र्धार्द्रकेण जलं क्षिपेत् वामावर्तेन संपूज्यां कोणपार्श्वेषु पंचशः
६ निम्नामन्त्राः प्रवस्यन्ते स्म ताः सर्वेषु सिद्धिदाः ^{१००} वाला नारो नृप्रकामेभ्यारि ददौ र्ध्वं जादिमः ७ कामफलपदे सर्वसत्त्ववांते नृपं कैरि ॥
सर्वानेनृजगादृणां ह्योभ्यां न केशीनि च ८ वर्मत्रयं पंचवाणाः प्रानित्य माकुमारिकां कामेभ्यरीमनुः प्रोक्तः षट्चत्वारिंशदूर्णवा
न् ९ दवाब्जमंगवर्णा द्यानिद्रो मगिनीति च भगोदशीति वल्गने भगमाले भगावहे १० भगपुं ह्येभ्यां ने स्याद्योने भगनिष्पानि
नि सर्वानेभ्यां शृङ्गाने वशं करिभगोनि च ११ ह्ये निष्पदां किन्ने भगस्यातिः सदायिकः यस्य सर्वमस्मिन्निर्दोषा निमि रस्यां नयवाग्रयः
१२ देने सुसंदिदीशः पावकस्मिन् गार्णकाः किन्ने किन्ने इवे केदय द्रावय च के प्रवः १३ ॥ ८ रिका बालप्रतिलोमा सौः कींते कामेभ्यरीनि

न्या श्रीपादकां पूजयामिनर्पयामिनमदति ९ भगमालिनी माह वागिति वाप्वी जंते वल्गोठ्या निद्रा उयुनो भः भुः १० सदीपिकः आनिः उयुनोरः
रुं दीर्घास्पतिः गात्रमीरेकः १२ सदिदीशः पावकः १४ युनोरः रेके शवः ३३ ॥ १॥ अंते भगभुगे भर्गिभ्यारि भगमाले भगवहे भगपुं ह्ये भगयोने भगनिष्पानि
सर्वभगवद्गं करिभगरुत्तं निष्पाने भगस्य सर्वभगानि मे स्यान्त यवदे रेने सुरे भगालिन्ने किन्ने इवे केदय द्रावय च के भगविचे क्षुभसो भयसर्वसत्त्वान् भगोभ्यारि रं ह्यं जं ह्यं मे ह्यं मे
वृहे ह्यं ह्यं किन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानयस्वी हारत्वे हीं १३८ भगमालिनि निम्ना श्रीपादकां पूजयामिनर्पयामिनमः २॥

स्थापनायामुदावस्थेने ७ दनिमंत्रमहोदधिनौकायां एकदशसरंगः १११॥

॥ श्रीविद्याया आवरणार्चनं चर्तुं प्रतिजानीते श्रीविद्याया इति येन मनोऽ

यादिकमाप्नोति १ मुक्तपक्षे कामे भव्यादिविचित्रांगं विंदुपरितः कल्पिते त्रिकोणे प्रतिपार्श्वे वा मावर्तेन पंचसंयुज्यमध्ये बोद्धव्यं यजेत तत्राविधिमाह ॥

हैरुक्ती हस्तोः श्रीमन्त्रे धृतराष्ट्र चर्कस्त्रिंशत्कृष्णनिष्पन्नमः ॥

महः पुंजाभचैतन्यसमुक्तकुसुमाजलिं श्रीचक्राजे सप्रो ज्यतनः श्लोकद्वयंपठेत् ४ देवेष्टाभक्तिमुल्लभेत् सर्ववराणामुत्पत्तेः या
वत्त्वां पूजयिष्यामि नावनन्तं सुस्थिरा भव ५ रदमावाहनं प्रोक्तं नतः स्थापनमाचरेत् भैरवीमंत्रमुच्चार्य श्रीमच्चिप्रसुरि
द चर्कस्त्रिंशत्कृष्णान्निष्पन्नमोतः स्थापने मनुः दर्शयेत् स्थापनो मुद्रां संनिधिं संनिरोधनं ७ संमुखीकरणं नतं मुद्राभिर्मंत्रवि
चरेत् न्यसेत् षडंगं देव्यंगे सकलीकराणं चिदं ८ अवगुहां मृगीकारं परमोकराणां निच नक्तमुद्राभिराध्यामूले त्रिके प्रैष्टुं जयेत्
१६ नः पादादिकं तस्य कउपचासं न प्रकल्पयेत् मूलमंत्रेण पुष्पां नानुन संनर्पयेद्विधा ११० पुष्पां जलिविधा पार्थव्या
॥ १ ॥ यथाविधि अनुज्ञां पार्थवे मंत्रोपरि चारसमर्चने १११ ॥ ॥ दनिमंत्रमहोदधौ श्रीविद्या कथनं नामा कथनं नामैका
सरंगः ॥ ॐ ॥ श्रीविद्याया अयो वस्त्रे परिचार प्रपूजनं कर्ते नयेन मंत्रं चोत्तमं नवां छिन्नाधिकं १ शुक्लपक्षे यजेन्नित्यं ॥
॥ ॥ दय्यादिषोडशं कल्पयेत् विचित्राद्याः कामे प्रवर्ष्य वसानकाः २ यो हर्षा च यजेन्मध्ये वस्त्रे न च जनकमं एकैकं स्वरमुच्चार्य
॥ ॥ एकैकं स्वरमुक्त्वा वक्ष्यमाणमे कैकं निगमं च योजेत् ३ ॥

श्रीविद्यै

नीत्या

२. यं धुआर्विकल्पा श्रीपादकां पूजयामि १. रं दप्पा कला श्रीपादकां पूजयामी २॥ इति सर्वत्र योगः २॥

मं-टी-नैः एनेवामकर्ते दुसंयुताः उविंदुयुताः वायुर्धः कलात्मा डे-समन्विनश्चतुर्थ्यनः ५८ वावीजं त्रेपवनीयः स्वरूपमन्यत यथा अंगं शीरं मलवपूर्वं अनिमंडलाय धर्मप्रद
न-११ प्राकलात्मने रेंकलशा धाराय नमः ६० प्रादक्षिण्यादिति तदुपरि पात्राधारेपरि आने श्रीदशकला अर्चयेत्तत्तत् एवाह धूमाचिरिति ६१ हव्यकव्यादिका वं हा हव्य
६४ वहकव्यवहा च कीदृशस्तः सविंदवायादिदशवर्णा आयापासा ६२ कलेति नाम्ना धूमाचिरित्यादिना मांते कलेत्यादिपदमुच्चरेत् यं धुआर्विकला श्रीपाद

वामकर्ते दुसंयुक्ताः सेंदुं शिमेडली वायुधर्मप्रददृक् कलात्मा डे-समन्विनः ५८ वावीजं कलशा धाराय वनोनमसान्वितः ना
रादिशितो मं चोभाजनां धारपूजने ६० प्रादक्षिण्यादं शान्तिनेर्यासदुपयचयेत्कलाः धूमोर्चिरूप्या ज्वलिनी ज्वालिनी विस्फुलिंगि
नी ६१ सुश्रीः सुरुषाकापित्वा हव्यकव्यादिका वहा सविंदुयादिवर्णा धादशाग्रेरीति गाः कलाः ६२ कला श्रीपादकां पूजयामी तिपदधु
च्चरेत् नाम्ना मांते न तस्मात् प्राणस्यापनर्मा चरेत् ६३ स्वर्णोदियत्रमस्त्रेण सात्तिने न चो विन्यसेत् विग्रहीर्ध्वत्रये द्वाक्यहसमां सुवशानि भि
लाः ६४ अर्वाशविंदुसंयुक्ताः सेंदुस्वसूर्यमंडला वायुर्वसुप्रदाने स्यात्तद्वा दशाने कलात्मने ६५ मनमद्यः कलशा येति नमो नः प्रणवा

कां पूजयामी रं दप्पा कला श्रीपादकां पूजयामी आदिप्रयोगः ६३ सर्वादिनिर्मितं कलशं अत्रापफडिनिप्रस्थात्पतन्मधारेन्यसेत् तं त्रैशद्वर्णमन्त्रेण च ये
न नमुदरानि विग्रहिति विग्रनरकारः दीर्घत्रयाज्यं हां हीं हं ह्रस्वस्वसं मांसं सलः चरस्वस्व अनिलोपः ६४ अर्वाशउसेदस्वसं सविंदुहः वायुयः ६५ नमपः

क्लेश्यष्टमन्यत यथा जी हां हीं हं ह्रस्वसूर्यमंडला ॥ २७० ॥ शी हीं हं ह्रस्वसूर्यमंडलाय नमः परहादरा कलात्मने क्ली कल

शा यनमः ३॥

३ अथेनासांलक्षणनिगद्यनेकभेदलहि॥ वामकेभूरनेत्रेगामाचचमहेभूरः॥ मध्यमामध्यगेकत्वकर्जैहृगृहसेधिते॥ नर्जन्मोदरद्वन्द्वत्त्वामध्यमोपर्यन्तामिके॥ एषाचप्रथममुद्रासर्व
संक्षेपकारिणी॥ कनिष्ठंगृहेतिसंधिच्छादतः१ एतस्याएवमुद्रामध्यमेसरहेयता॥ किथेनेपरमेषानिर्गन्धविण्णतः२ मध्यमानर्जनीभ्यांचकनिष्ठानामिकेसमेभ्यःअंकुरारूपाभ्यामभ्यमे
चरमेभ्यः॥ अंगुष्ठंनियुंजीतकनिष्ठानामिकेपरि॥ द्यमाकर्षणीमुद्राअस्त्रोक्ताकर्षणस्या३ अंकुराकाररूपाभ्यामभ्यमानर्जनीभ्याविष्टा॥ मध्यमेनादृशमध्यमानर्जन्मोर्मध्यव
र्तित्यौकनिष्ठानामिकेसमेपर्यमुद्रातस्या॥ पुराकोशेकरोहत्वानर्जन्मोवक्रुशकनी॥ परिवर्तकभेदेवमभ्यमेतद्वौगेभ्यःकषेणदेवितेनैवकनिष्ठानामिकारयः॥ संकोज्यविष्टःसर्वोमृ
त्तच्छापी५ स्संस्तत्रपुरी५१॥ संः॥ दानिपी४ मानुका॥ संः॥ दनिर्वाहान्यासः॥ संः॥ आदिष्टाह्यत्वममानुकादयोहेयः५८ एतन्मासान्कत्वामुद्राः५९ प्रदर्शयेद्विष्टा
हमुद्रानि५८ नवानामुद्राणामभ्येसंक्षेपः॥ द्रावणाकर्षस्वेचरीबीजाख्यानापचानालस्यएमुक्तंचनस्यएमुच्यतेनत्रवश्यमुद्रालस्यएयथापुटका
शिकरौकलातर्जमावंकृष्णकनीपरिवर्तकमेवमभ्यमेतद्वोगनेकमेणदेवितेनैवकनिष्ठानामिकादयःसंयोजंनिविडाःसर्वाअंगुष्ठावग्रदेशतःमुद्र
मुद्राःप्रदर्शयेत्कत्वोषडंगंमाणसयम५८ संक्षेपमद्रावेणकर्षवष्टोन्मा५९ दमहांकृष्णःस्वेचरीबीजयोन्माख्यामुद्रादेवीधियानवर्ष
यंपरमेष्णानिसर्ववश्यकरीमतेतिउन्माद्रुद्रालस्यण्यथासंमुखेतिहत्त्वामभ्यमामभ्यगेतजेअनामिकेनगरहेतदधस्तर्जनीद्वयंदंडाकरौतनोगृहोमध्यमा
नस्वदेशगोमुद्रैवोन्मादिनीनामक्केदिनीसर्वयोषिनामितिमहांकृष्णमुद्रालस्यण्यथाअस्यास्त्वनामिकायाममध्यःकृत्वांकृष्णतर्जन्यावयितेनैवकमेणविनि
योजयेत्द्रयमहांकृष्णमुद्रासर्वकामार्थसाधिनीति॥ योनियश्चेनात्रमहायोगेनिमुद्रानेहस्यण्यथामभ्यमेकठिलेकत्वातर्जन्युपरिसंस्थितेअनामिकामभ्य
गृष्ठावग्रदेशतः॥ मुद्रैपंपरमेष्णानिसर्ववश्यकरीमता॥ कनिष्ठानामिकादयदतिकनिष्ठानामिकापदरहस्तकनिष्ठानामिकापरमा॥ आदिपदेनचामरहस्तकनिष्ठानामिकापरिग्रहः॥ अं
गुष्ठावग्रदेशदति॥ अंकुराकारयोस्तयोक्तर्जन्मोर्दृष्टैःगृहोयोजयेदितिशेषः॥ सन्मुखैतुकरोहत्वामभ्यमामभ्यमेःन्यजेअनामिकानुसरहेनहृदिस्तर्जनीद्वयमा॥ दंडाकरौतनोगृ
होमध्यमानस्वदेशगो॥ मुद्रैवोन्मादिनीनामक्केदिनीसर्वयोषिना॥ अर्जन्कनिष्ठे॥ दक्षिणरहस्तकनिष्ठाचामरहस्तमध्यमावध्यावामरहस्तमध्यमावध्याम
योर्नस्वदेशयोर्द्वहोनिःक्षिपेदिन्ययः॥ अस्यास्त्वनामिकायाममध्यःकृत्वांकृष्णकनी॥ नर्जन्यावयितेनैवकमेणविनियोजयेत्॥ द्रयमहांकृष्णमुद्रासर्वकामार्थसाधिनी॥ सं
वदक्षिणदेशतुसव्यदेशतुदक्षिणमा॥ चारुकत्वामहादेविरहस्तौसंपरिवर्तमच॥ कनिष्ठानामिकादेवीयुक्तातेनकमेणनु॥ नर्जनीभ्यासमाकोनेसर्वोर्हमपिमध्यमे॥

मध्ये आजाचकै ६ यांयीयमस्तचर्युयाकि नैनमअंममशुकरस २ शुक्लात्मनेनमः वहरंघे ७ रतियोगिनीमातृका ४ राशिमातृकामंत्रस्यमुनिछंदसेपूर्व
 राशिस्थासुंदरीदेवता श्रीविद्यां त्ववि ध्यानरक्त धेनहरिहरर्णपांडुचित्रासितानस्मरेन पित्रांगपिंगल्यैवशुकरुणशिनधूस्रभान एवंध्यात्वा न्यसेन ॥
 अं अं दं दं मेवायनमः दस्ययादगुल्फे १ उं उं ऋं ह वायनमः दस्य जानुनि २ ऋं लं लं मिथुनीयनमः दस्य वषाणे ३ ऐं ऐं कर्को यनमः दस्य कुक्षौ ४ ओं औं
 सिं हाय दस्य स्कंधे ५ अं अं प्रोषं संहं कन्यायै नमः दस्य शिरोभागे ६ कं खं गंधं डं गुल्फये वामशिरोभागे ७ चं छं जं नं हं त्रिं कायनमः वामस्कंधे ८ दं दं
 डं डं लं धां त्विनेनमो वामकुक्षौ ८ तं थं दं थं नं मकरायनमः वामवषाणे ९ पं पं वं भं मं कुं मायनमः वामजानुनि १० यं रं लं वं थं मीनायनमो वामगुल्फे ॥ रति
 राशिमातृका ॥ योऽयमायुष्मा मंत्रस्य मुनिछंदो गानि पूर्ववत् पीठरूपिणी सुंदरी देवता श्रीविद्यां गत्वेन वि ध्यानं स्थिता सितारुणप्रभा हरिमीना न्यनु
 क्रमान् पुनरेतन्क्रमादेषि चामास्थानसंचये पीठानी हस्मरे हि हा न्सर्वकामार्थसिद्धये एवंध्यात्वा मानकास्थानेषु मानकावर्णपूर्वाणि पीठानि न्य
 सेन गानि यथा ह्रीं श्रीं अं कामरूपपीठाय नमः १ आं वा एण सी पीठा २ इं नै यल पीठाय नमः ३ ईं यौ इ च र्धन पी ४ उं का य सी पी ५ उं का न्य कुं ज पी ६ कं
 पूर्ण गिरि पी ७ ऋं अर्चु दा च पी ८ लं आ न्ना न के ध्वर पीठा ९ लं ए का न्न पीठा १० ऐं त्रि से न स पीठा ११ ऐं का म को ट पीठा १२ उं कै ला स पीठा १३ ओं
 मृग पी १४ अं के दा र पी १५ अं चं द्र पुर पीठा १६ कं श्री पी १७ ए वं उं का र पी १८ गं जाल ध व पी १९ धं मा ल व पी २० उं कुं लां न पी २१ चं को ट क पी २२
 छं गा क र्ण पी २३ जग रू ने ध्वर पी २४ नं अ दृ हा स पी २५ जं वि र ज पी २६ वं रा ज ग र पी २७ वं म हा य य पी २८ दुं को त्र गिरि पी २९ वं ए ला पुर पी ३० ऐं का ले षु
 र पी ३१ नं ज यं नी पी ३२ थं उं ज्वा यि नी पी ३३ दं व सि त पी ३४ धं सी रि का पी ३५ नं हं छि ना धुर पीठा ३६ पं उं डी य पी ३७ फं प र्थ पी ३८ वं ष ष्ठी य पी ३९ भं मा या पुर पी
 ४० मं प ल य पी ४१ यं श्री ल पी ४२ रं मे र पी ४३ तं गिरि पी ४४ वं मा हे द पी ४५ प्रं चा म न पी ४६ थं हि र ए य पुर पी ४७ सं म हा ल स्मी पी ४८ दं उं डि या स्म पी ४९

मर्दो नो लिंगायेन मो मुखं ८ लसंकेतेन वेधूमांवा येन मो गुरे ५ इति ग्रहमातृका न्यासः २ न स नमस्तु कामं च स्य दक्षिणा मूर्तिर्नमो विर्गाय नीलं दो न स नरुणि सुं द र दिव
न २५ ६ रा श्री विद्यां गतेन न्यसे चिनि योगः ध्यानं न्वलत्तात्मा मिसे कायाः सर्वा भूरा भूविताः न निपा रायो भुवि नीमृत्वा वरदा भयपा लायः एव ध्यात्वा मातृका पूर्व
न स्यात्वा लियसे न यथा अं आं अं द्विनैन मो ललाटे रं भूरा एतेन मो द स नेने ६ ईं उं ऊं कृति का येन मो वा २ मनेने ३ नमः लं रं रो हि ल्के न मो द स न्नेने ४ एं मृग
शिः से न मो वा मकर्त्त ५ एं आर्द्रा येन मो द स न सि ६ ओं औं पुनर्वसवे न मो वा म न सि ७ कं पुष्या य न मः कंठे ८ रवं गं अश्लेषा येन मो द स स्कर्त्त ९ धं डं म वा येन मो
वा म स्कर्त्त १० चं पूर्वा फाल्गुन्यै न मो द स कृपरे ११ धं जं उ न रा फाल्गुन्यै न मो वा म कृपरे १२ भं मं हस्ता य न मो द स मणि वं १३ ठं ठं चित्रा येन मो वा म मणि वं
ध १४ उं स्वा न्यै न मो द स ह से १५ टं टं विराडा येन मो वा म ह से १६ नं षट् अ नुराधा येन मो ना मो १७ धं ज्येष्ठा येन मो द स कटौ १८ नं यंकं मूला य न मो वा म कटौ
१९ वं पूर्वाषाढा येन मो द सौम्यौ २० भं उ न रा षाढा येन मो वा मो रौ २१ मं अवलया य न मो द स जनु नि २२ यं रं धनिष्ठा येन मो वा म जनु नि २३ लं श न मिषा येन मो द स
जं षा षं २४ वं शं पूर्वाभाद्रपदा येन मो वा म जं षा यां २५ षं संहं उ न रा भाद्रपदा येन मो द स पादौ २६ सं अं अश्विनै न मो वा म पादे २७ इति न स न मातृका सर्वेषु न्यसे
ध्या दौ माया श्री वीजे यो ज्य न्यासा न्सर्वा न्मर्कवर्ति माया श्री वीज मूर्त्त कानि तु कृत्वा न्मो गि नी न्यास स्य मुनि छंदसी पूर्वोक्तयोगिनी रूपा सुंदरो देवता श्री विद्या
गन्धिन विध्यानं सिता सिता हृणा वभूच्चित्रा पीता ध्वविं न येन चतुर्भुजाः समैर्वक्त्रैः सर्वा भूरा भूविताः एव ध्यात्वा न्यसे न्मृत्तं हीं श्रीं बां डीं ड मल वयुं डा कि न्यै न मः
अ १६ म मल चं रं स २ न्वगात्मने न मः कंठे रं रो हि ल्के न मः कं १२ म म रं कं रं स २ असृगात्मने न मः हृदया ना हने २ लो लो लं मल वयुं ला
कि न्यै न मः ३ १ म म मा स्वं स २ मा सात्मने न मः ना भी मणि पूरे ३ क्क को क मल वयुं का कि न्यै न मः वं ६ म म मे दो रं स २ मे द आत्मने न मः लिं ग मूले स्वाधिष्ठाने ४
शं श्रीं भू मल वयुं शं कि न्यै न मः वं ४ म मा स्थिरं स २ अस्थ्यात्मने न मः गुदे मूला धारे ५ हां हीं ह मल वयुं हा कि न्यै न मः हं स म म म ज्जारं स २ म ज्जात्मने न मो भू

करणैर्ह्यपदयोर्ह्यभ्यनैकेकं प्रणवपुटि गोविंदां सर्वो गेभ्यसेत् ५७ नमोनां त्दहि च वोढान्यासादयो विस्तरमयानोक्ता सिउच्येने गले शयहनस्रव
 को गिनीभूतिष्यो ठलस्रवणः वोढान्यासादयो गले शयानुक्तामं त्रस्य दहि लणमूर्तिभूतिः गायत्री चंदः श्रीमान् कासुं दहीदेवताममोपास्य श्रीविंदां गन्तिनको
 ढान्यासे विनियोगः अंक ५ अर्हत्तन इंचं ५ इत्की शिरः उट ५ उन्मैः शिरवा एनं ५ एंसोः कवचं उँ ५ ओंत्की नेत्रे अयं १० अर्हत्तन ध्यानं उद्यम्युर्
 मरुताभां यो नो नतपयो धरो रक्तमालं नाले परक्तमूषणमूषिनां पाशं कृपाधनुर्वाणभस्त्रन्याणि चतुष्टयां रक्तेन वनयस्त्रले मुकुटे द्वांसि च द्विकं
 एव ध्यात्वा मसे हौजधूर्वमं अविघ्ने प्रह्रीभ्यो नमः गोआविघ्नराज श्रीभ्यानमः इत्यादिमास्त्रस्थलेभ्यसेत् गले श्रः यन्किमुक्ता एकविंशे तर्गे मूलं ग्रंथ
 आधोर्हत्तन इंचं रणोः पादयोर्हत्ति ॥ एवं च विधं कृत्वा विंदां प्रणवसंयुतां ५७ सर्वस्मिन् न्याययेद्दर्शनमोनां नां त्दहि न्य
 सेत् वोढान्यासादयो न्यासः काप्योः सौभाग्यवां च्छया ५८ नोच्यते विस्तरमयानोक्ता नैव चावश्यं कीर्त्यते ॥

न्यासः अथ गृहमातृकामंत्रस्य दहि लणमूर्तिभूतिरित्यादि पूर्ववत् षडंगं गृह रूपिणी सुदंहीदेवता ध्यानं रक्तं श्वेतं नयान् रक्तं श्यामं पीतं च यं उर्ध्वं
 सुकृष्णं च धूम्रं च धविचिंतयेत् तद्विमुक्त्या न्कामरूपां नूत्तर्वाभरणमूषिनां न कामोरुहलतमस्त्रं अदहि लणेन वरप्रदानं एवं ध्यात्वा मानुषो पूर्वो नयुह
 न न्यसेत् अं १६ सूर्योपरेण कांवायेनमः त्दयादधः १ य ५ चं द्वायामुक्तावायेनमः नूत्तमधो रक्तं ५ मम त्वाय धमाकायेन मोनेत्रये ३ चं ५ ध्यायज्ञानरूपां च ये
 न्मो त्दहि ४ ट ५ इह स्यतये यत्स्वित्वायेन मो त्दयोपरिभागे धनं ५ न्यक्त्य प्रांक्रम्य कायेनमः कंदे ६ पय प्रां नै अणय प्रां क्त्वा वायेन मोनामो ७ यो ४ एह वैक

॥ करे लोकोक्ताः दनिगले प्रमातृक

संज्ञा

七

[illegible]

माद्यं न दम्भं हि हिमीयं ललाटे नृणी यं ह शोः चतुर्थं कर्णयोः पंचमं नसोः षष्ठं भ्रूयुः सप्तमं दंतेषु अष्टममोष्ठयोः नवमं जिह्वा वादशमं मूलवमथैर
 गदशं दृष्टं इह दृष्टं संवर्गो त्रयोदशत्वं हि चतुर्दशं सुनयोः पंचदशं कुक्षोयोऽंशं त्रिंशो र्द्विंशतिरन्यासमाह कश्चिन्निषेधकशं गुलीषु यष्टं तत्र स
 त्रिसप्तममुत्से अष्टमं द्दिनवमं नाभ्यादिपादां दशमं कटादिनाभ्यन ४० एकदशं त्रिसंश्रान्कं यं न पंचपादां गुलीषु ४१ पंचाद्विनिन्यासमाह
 सर्वगोददयेन्यस्येन स्वतः कुक्षिं च त्रैयुच ८ कै कर्णमंथोमूहि स र्वेण व्यापकं चरेत् २८ कशं गुष्टां यं गुलीषु त्रिसंश्रान्कं त्रैयुचं त्रैयुचं हि नभ्या
 दिपादं पृथ्व्यं न नाभ्यं न कंठं दशमः ४० त्रिसंश्रान्कं कटां न पादां गुलीषु पंचच अष्टपंचविधं न्यासं वक्ष्ये सर्वं हि सिद्धिदम् ४१ मंचपं
 चावतिरुष्येन तदूपां त्रैयुचं न मूर्ध्वं च केदशोः श्रुत्यां न सौगं श्रेष्ठयो रसि ४२ चक्रमथ्यं दं न पंचो वदने निम्यसेन क्रमान् ८ कै क्व
 एं विद्याया इत्येव न्यास इति नः ४३ शिरो शिरो ललाटं युष्टो एव त्रैयुचं कर्म करं संधिषु सामेयुदये निस्था हिमीयकः ४४
 शिरो ललाटे नैम्यस्ये जिह्वा योषट् नसेन पुनः पादसंधिषु सामेयुदशो निस्थाने नृणी यकः ४५ स्वरस्थाने चतुर्थं सुललाटे चर्गो
 वदं हि नाभौ च मूर्याधारे पित्रसौ र्धौ मूर्याधारे ४६ ॥

इंनोहोयेवेकैकं ७२ द्वितीयमाह शिखिनि शिखा शिरोभासभूनासामुखेवृषट्दस्य चरसंध्यप्रेषपंच ७७ तृतीयमाह शिखिभालेनेत्राभ्युजि
ह्यसुषट्दस्य पादसंध्यप्रेषपंच वामपादपंच ७४ चतुर्थमाह स्फेति मानस्यस्य स्थापान्युक्तानि नेत्रयोदशबीजा निचसेन पंचमाह लत्फट्दनि ७५
१ लत्फट्दमुसहगद्विपुर्वाक शीकेनस्मस्य नेमंत्रवर्णित्येसेन १॥

१ अस्मादेमुत्तरागसिधुर्नोक्तस्तौकेनस्मर्यानेमंत्रवर्णान्येतेन ॥

नेनष्टुदेवर्गिजहीजंचपूर्वपस्यात्तांविमलांकठेयसेनयथा टंडंडं एं ह्रुविमलावादेवनायेनमः ३२ भूत्सीति वामनेनेन कीदृशं भूत्सीनः वैकुण्ठमः
 रेफस्त्रिजापन्नतत्सविंदुच ईदृशंनहीजं नेनन्कीनवर्गवीजाभायुनामरुणद्विभ्यसेनयथानंषंदधनज्मोऽमरुणवगदेवनायेनमौत्तदि ३३ आ
 मेति विषयनरुः हंससः मासलः बालावः अनिलेयः इहविंदुः एनैसुतोवामकर्णोउकारः तेनहसलवृपवर्गएतद्दीजंचपूर्वपस्यात्तांजयनीनामैभ्य
 सेनयथा यकवभमहर्त्सुजयनीवादेवनायेनमौनामौ ३४ पाथीति दीपिकाउकारकीदृशीः नंदीमः रेफः वायुर्धः नैः संयुताः इदयुक्तेनैयपुण्यव
 भूत्सीवैकुण्ठरेफस्त्रिवागनेनंसविंदुयुनंनवर्गवीजासंयुक्तोविभ्यसेदरुणांत्तदि ३५ वामकर्णोविपदंसमांसवास्तांनित्तेइदं
 कं पचर्गनहीजपूर्वोऽपिनींजाभिर्नोभ्यसेनं ३६ पाथीतेदीरेफवायुसंयुतादीपकेइयुक् पचर्गवीजायांभूत्सीधरेसर्वभूरीभ्यसेनं
 ३७ सवर्नकमहाकांतेरेफस्त्रिशांतिरेइयुक् कोलिर्नोणादिवीजायांभ्यसेत्यादांनमूलतः ३८ वादेवनायेहादांतंनमोर्नोचरेत्यदंम
 उक्तोवागदेवनाभ्यासः षष्ठिभ्यासमयान्तेत ३९ वस्त्रं धेनूत्तदेवनेनेयोः कर्णयोर्नसो गंडर्गोष्ठजिह्वासुमुखकृपेयुष्टतः ३८
 गोवीजचाद्यपस्यात्तांसर्वभूरीमूलधारेभ्यसेनयथा यंरलंकंभूंसर्वस्वरीचादेवनायेनमौमूलधारे ३९ सवर्नकेति सवर्नकः स्रः महाकल्पोमरेफः एनैयुना
 विंदुयुगाचणः तेनस्त्रोणादगोवीजचाद्यपस्यात्तांकोलिनीमूर्वादियादांनंभ्यसेनं ४० पंसंहस्त्र्योकोलिनीवारदेवनायेनमरुर्वादिपादांतं ३८ वाग्निनिहादे
 मः चादेवभूधेनमरतिपदनामानिवाशिन्यादिनामांनेप्रोचरेननेमयोगेषुस्त्रिचिंतं ३९ षष्ठिभ्यासमाह वस्त्रंधादिनि वस्त्रंधादिखकेकवर्भ्यसेनं ॥
 टंडंडं एं ह्रुविमलंवादि वनायेनमः कंदे ४ नंषंदधनंज्मोऽमरुणवादेवनायेनमः तदि ४० पंचवंभमहर्त्सुजयनीवादेवनायेनमः नाप्रिदेशे ४ यंरलंकंभूंसर्वस्वरीचादेवनायेनमः मूलधारे १॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

मं. दी. अक्षरम्यासं संक्षेपस्य माह पाटयोरिति २६ पाटादिष्वेकैकमक्षरं न्यसेन केऽर्थात्तुः कर्णे प्राकृत्सी श्रौं नमः पाटयोः द्वौ नमो जंघयोरित्यादिप्रयोगः २७ नौ न॥ अयं संहारम्यासः २८ वाटिवनाम्यासमाह अनीति अनीरेकः भूधरेकः मां संलः एते हि मोर्धो प्राकृत्कारः प्राणकयुक् विंदयुतः तेन त्वं बोड प्राकृत् पूर्वकं मं ६० जपूर्ववशिर्नाशिरसि न्यसेन यथा अयां ई ईड डं कं कं लं लूं ए ए ओ औ अं आ ॥ ह्रस्वशिनीवादेव नायेनमः शिरसि २९ कोधीशेति कोधीशः कः मां संलः

पाटये जंघयोर्न्यसेन जनुनोः कं टि भागयोः लिं गैष्टु नमिद्रेणार्थयोः सनयोः शयिं २६ अस्योः कर्णयोर्ब्रह्मरंध्रं च कर्चनेत्रयोः ॥
 कर्णयोः कर्णविष्टिपुल्लस्यैकैकमक्षरम् २७ संहारम्यासउक्तोपंनोवादेव नां न्यसेन नासां वीजानि नामानि न्यासस्थानानि च
 क्रवे २८ अग्निभूधरमांसां द्योर्वाशिबीजं प्राकृत्क बोड प्रास्वरी जाड्यां वशिर्नां शिरसि न्यसेन २९ कोधीशमांसां युक्माया
 द्विबीयं चोर्जमो शिरमं कवगं पूर्ववीजाड्यां भोले कामे भूरी न्यसेन ३० दीर्घास्वरी प्रां नां द्योर्वां निविंदसमो न्विना चवर्गानदीज
 युगां भ्रमे ध्यमो हिर्नो न्यसेन ३१ अर्धो शोवायुमांसां स्थो विहाकृत् सनरीयुक् टवर्गवीजपूर्वां निविमत्तां विन्यसेन ३२
 एनाभ्यां युना माया ही कवगं पूर्वोपस्य दशमनत्तं जमाद्यपस्या सता कामे भूरी भाले न्यसेन यथा कवर्गवडं कृही कामे भूरी वाटिवनायेनमो ल्यल
 दि ३० दीर्घां गेदीर्घानकारः स्वङ्गीशोवः रंगोलः एते र्धनाणां तिरीकारः विंदयुना च द्युना च एवर्गे एतद्विजेन च युना मे दिनो भूमा ध्ये न्ये सेन यथा च खं हि
 जंघं जंघी मो दिनी वाटिवनायेनमो भूमा ध्ये ३१ अर्धो शोति अर्धो प्रात्रु कौटशः वायुमांसां स्थः यत्नो स्थितो यस्मिन् विंदयुनस्तुरीयं चतुर्थं वाटि

अं प्रा ३१ ई ईड डं कं कं लं लूं ए ए ओ औ अं आ ॥ ह्रस्वशिनीवादेव नायेनमः शिरसि २९ कोधीशेति कोधीशः कः मां संलः

पुनर्वाप्तकर्त्तृपरसौभाग्यदंडनीमुद्रां कृत्वा तामपार्थ्वमूर्धादिषादां तं तादि नमो नं मूलं न्यसेन रिपुजिह्वाग्रं मुद्रां दर्शयन् सर्वशत्रुन्मिष्टां लोभीति संविं न्यपा
 दमूलं तादि नमो नमूलं न्यसेन १८ सकल लोक कर्ता ह मिति ती जं विविं न्यत्रिवं दया मुद्रया ललाटे नागदि नमो नं मूलं न्यसेन मूलं वेष्टयन्नासादि नमो नं मूलं
 न्यसेन दक्षकण्ठो वा मां नं कंठा न्मुखां नं एव मे व न्यसेन पुनः प्रणवपुटां विधांसु र्वागे न्यसेन मुखे यो निमुद्रां वध्या न धेव देवी न्यसेन २३ अयं जगद्द्वारी
 मुद्रां कर्त्तृवा मे कर्त्तृपरसौभाग्यदंडिनी ^{वामभोगे} वा मे मूर्धादिषादां नं तथा मूलं प्रावि न्यसेन १८ त्रिवं दया मुद्रया नृभाले मूलं न्यसेन यथा
 त्रैलोक्यस्याखिलस्याहं कर्त्तृविस्वविचिंतये १८ रिपुजिह्वाग्रं मुद्रां दर्शयन् सर्वविहिंस्रः निगृह्णामीति संविं न्यपादमूलं न्यथा
 न्यसेन २१ मुखे संवेष्टयन् न्यस्थेन पुनर्दर्शयन् कर्त्तृकंठाहं कर्त्तृकं नो न्यसेन २२ तारसं पुटिनां विधांसु र्वागे
 विन्यसेन पुनः यो निमुद्रां मुखे वध्या न मे त्रिपुरसुंदरी २३ त्रसरे अहं त्रैलोक्यमूलं भाले विधां प्रवि न्यसेन अंगुष्ठाना मिकाभ्यां नृन्यासः स
 स्मोहनाभिधः २४ जगद्दक्षकण्ठो य न्यासः संकोर्त्तितो मया संस्मरन् नरुणी मूलं सुंदरी प्रभया जगत् २५ ॥ ६८ ॥ एतस्यासुः देवी का
 स्त्रा विध्वं रक्ते ध्यायन् गृहाना मिकाभ्यां त्रसरे धोमणि वं धेललाटे विधां न्यसेदिति स्मोह नो न्यासः परसौभाग्यदंडिनी मुद्रां कृतं ललाटे पुण्यावा मे मु
 धिदटवध्वं त्रैलोक्यं प्रवि सारयेत् न भामये ह्यम कर्त्तृनं मुद्रासौभाग्यदंडिनी तं रिपुजिह्वाग्रं मुद्रां ललाटे स्पर्शेत् अंगुष्ठगभिर्न मुष्टिवध्नी शब्दं स्यात्ति
 नारिपुजिह्वाग्रं ललाटे यमुद्रां कृतं यन्त्रनाग्निनीति मुद्रां तामपाद नले केनेति त्रिस्त्रिंशलक्षणं तां रामं चैव २५ ॥

कण्डली १ वाकसंसारमकहलही २ कामसंसारमकतही ३ शक्तिसंसार

इदं च यत्संस्तं आह वागिति प्रथमवागीजद्वितीयकामबीजतृतीयशक्तवान् श्रीः श्रीवाग्भमाद्याहो कामः कौवाक्येभक्तः साहचर्यवर्धनः श्रीमान् श्रीमान्वासुनृवा
 ५ पूर्वोक्तभूषणं बोद्धव्यं एषी श्रीविद्याभिधामहाविद्या ६ भूगः संभोः स्वरूपतेजसौः शक्तिः कामबीजं कौं ७ व्याख्यानहर्मुर्धनिराक्षिणमूर्तयेनमोधूर्ध्वं तैरेनमोमुखेति
 ८ इदं च यत्संस्तं आह वागिति प्रथमवागीजद्वितीयकामबीजतृतीयशक्तवान् श्रीः श्रीवाग्भमाद्याहो कामः कौवाक्येभक्तः साहचर्यवर्धनः श्रीमान् श्रीमान्वासुनृवा

[illegible]

अनंत आकारः सौ स्वरूपं क्रमादि दृष्टियुगान् अकारौ सविंदसौ सार्गोपया मायाश्रयी जपूर्वकमिति सर्वत्रासेषु संवध्यते द्वीश्रीं अंमध्यमाभ्यां नमः द्वी
श्रीं अं अनंशिकाभ्यां नमः द्वीश्रीं सौः क निष्टिकाभ्यां नमः द्वीश्रीं अं गुहाभ्यां नमः द्वीश्रीं आनर्जनीभ्यां नमः द्वीश्रीं सौः करनलकरपृष्ठाभ्यां नमः अयं करण
दक्षिणमूर्तये नमः शिरसि १ पंक्तिद्वंद्वे नमः मुखे २ श्रीं मात्रे पुरसुंदरी देवनाथे नमः गुह्ये ४ सौः शक्रये नमः पादयो ५ द्वीं किलकं नाभौ ६

धरावीजेन देवभंकरः कौण्टीयः एकाह एव नृजेन्मीने एतस्मात्परि साध्यर्षिवरवः साध्यस्य यज्ञ-नृसंज्ञा न एव दत्तमस्ति
 विमतेभ्योऽखदं नेव पूर्वमुक्तः सधिनसंपन्नमदिना परितस्थितमेतवर्धनसर्वधस्माधयेत ॥ २० ॥ इति श्रीमन्नमहोदधि नौकायां वगलादिर्द्विपणंदशमोऽंशः
 दृगः १० ॥ श्रीविद्यावर्जुमंगल माचरानि विनेत्रमिनिमंनयिकां नित्येकवर्तिनां सर्वभयारण्यसाभिनीमुमादिकाप्रियार्थः अपरिस्थिताय प्रिय
 धरावीजेन सेवेष्वाभूयं मूढविषया वहिरंकशसंवीर्गिर्दीशेन प्रवेष्टयेत् ॥ १०० ॥ एतद्यंत्रं समासि स्थाने कोलात्स्वये कस
 पुष्पेः समम्प्यर्च्य नैस्थिये सधिवेत्सुनः ॥ १०१ ॥ शिशुमुच्चावयेच्छीघ्रं स्थितं वर्षशान्त्यपि चादित्रेयं यमां सित्यं चारयेत्समसंनरे ॥ १०२ ॥ शु
 न्नां न इव मुच्चलाः पल्लयगैर्विशेधिनः पाषाणैस्त्रिभुवनं रन्मृदीनयुक्तेषु निस्थियेत् ॥ १०३ ॥ संपूजितमधोवक्त्रं काचं संसंभयेत्तद्विषया
 नायकार्थं निनिस्थिमं जस्ते दोषप्रदं भवेत् ॥ १०४ ॥ साध्यर्षे तर्कगर्भस्थं शङ्खण्डः स्वलायकम् किंवद्वैतेन सर्वधंसाधयेत्साधयेत्साधिनं नृ
 १०५ ॥ इति श्रीमहोदधिरचिते मंत्रमहोदधौ वगलादिमंत्रकथनं नाम दशमोऽंशः १० ॥ विनेत्रं कमलाकान्तं नृसिंहं चंद्रशेख
 रम् नत्वा संस्येयं नोर्वेष्टे श्रीविद्यां मंत्रनायिका ॥ १०६ ॥ अपरीक्षितादिभ्या यन्त्रां न दद्यात्कद्वचनं यदुच्चारणान्नेष्टयाय संवृः प्रत्नीयते २
 यन्त्रं विखंडनं दद्यात् आत्मा श्रेयः शिशोः देयं न देयाच्चोडया स्यो निवचनान् मन्त्रमुदरानि नाशमिति ताम्रं त्रिंशया हां कमलया श्रीएतद्दीजनयं कुरु वनयो दोषतेन ॥
 अथ कुरुमाह वद्वेति वद्वेति कः किं दीयते मोविंद ईधरा लः मायेति प्रथमं कुरु कुरु ईच्छन्तीमिति द्वितीयमाह आकाशेति आकाशो हः भृगुः सः चकीकः अ
 भंरुः क्षमसह मायेति द्वितीयं कुरु हसकहल हीमिति तृतीयमाह दसेति दसः सः धामकः क्षमालः मायेति चतुर्थं कुरु सकलश्रीमिति ॥ ५ ॥

५ दी. नौ

न. ९.

५७

७ हेहोहि देवी पुनवद कनायक पिलजटाभारभासुरत्रिनेत्रजालामुदसर्वविघ्नान्नाशयनाशयसर्वोपचारसहितं चलिंगत्स्वाहा ५५॥ १ स्थासीसुक्षैसोऽसुः दुःस्थानस्य नपत्तेऽसर्वं
वदकस्य बलिमंत्रमाह एहीनि सदृक्जलं रघुनोवः विवन्निपत्नीस्वाहा स्वरूपमुपरं शरपंचासुरः पंचपंचाशदणैः यथा एहोहि देवी पुनवद कनायकपि
लजटाभारभासुरत्रिनेत्रजालामुदसर्वविघ्नान्नाशय २ सर्वोपचारसहितं चलिंगत् ३ स्वाहिनि ४४ क्षेत्रपालबलिमंत्रमाह मेरुशितिमेरुः सुःषट्दीर्घ
एहोहि निपटप्रोच्य देवी पुनैः त्रिकीर्तयुन वदकोनेनायक पिलजटाभारभासुर ६२ विनेत्रजालां प्राक्याने मुदसर्वर्जने सदृक्
घान्नाशय युगं सर्वोपचारसहितं वलिं ६३ गृह्णियुमं वन्निपत्नीशरपंचासुरो मनुः वदकस्य बलिंदद्यादनेन श्रद्धया च्छितः ६४
मेरुः षट्दीर्घयुक्त्वं युक्त्वं स्थानस्यैत्रैपदं वदेत् यालिशसर्वकामं च पूरया नलवैलभा ६५ त्रयोविधैः निवर्णैः क्षेत्रपालमनुर्मनभा
योगिनीनामं यो मंत्रः यद्यत्सुः प्रपठते ६६ उर्ध्वं ब्रह्मांडमोवादि विगगननले भूतले विष्कले वा पातालवासे वा भूले वासुलिलपवनयो
यत्रैकुत्र स्थितावा सेत्रे पीठे पपीठादिषु च कृतं यदा धूपदीपादिकेन धीनादेव्यः सदानः शुभवृत्तिविधिनायां तु वीरं द्रवया ६७ या
नी योगीभ्यः स्वाहां न भूमि नंदासुरो मनुः योगिनीर्वाचलिंदद्यादनेन विधिपूर्वकम् ६८ दीर्घत्रयं दुष्टकृसेदः शार्ङ्गिणैर्पुनीर्णकाः मारु
नो भगवांसि यैर्वैरैर्नदं सर्वध ६९ जनं मे वंशमानां नैयसर्वोर्लोहितो हस्ती दीर्घैरस्महितं प्रांने च लिंगत्स्वयुगांश्चिरः ९०० ॥

युक्त्वां सीं सुक्षैसोऽसुः दुःस्थानस्य नपत्तेऽसर्वकामं पूरय स्वाहेति ६५ यागिनी बलिमंत्रमाह उर्ध्वमिमादि ६७ स्वाहांतः स्वरूपमेव भूमि नंदासुर एकनवतिवर्णैः
६८ गणेश बलिमंत्रमाह दीर्घनिशार्ङ्गीयः दीर्घयेदं युक्त्वां गीगं सदृगः मारुतो यः भगवान् एयुनः येनोपवः ६९ लोहितः पृथ्वी हस्ती वा शिरः स्वाहा ९०० ॥

२३ उर्ध्वं ब्रह्मांडमोवादि विगगननले निष्कले वा पातालवासे वा भूतले वासुलिलपवनयोर्दं त्रैकुत्र स्थितावा सेत्रे पीठे पपीठादिषु च कृतं यदा धूपदीपादिकेन धीनादेव्यसदानः शुभवृत्तिविधिनायां तु

५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

पुरस्त्वंवा मे परा चोचिनी कपालहलभृत कपालं दसे देवी सुताय चंडोचं उपयनम इति सुतपूजा ७८ सुत आनमाह ॥ पूजयिषि वपस्क फले दस्योः पूज
 ना गीषाम्योः ८३ चार्वाक्षीमुखं वार्त्ताल्यादि देववृकमनंतरोक्तं चार्त्तलोकासी वा राहमुख्यवितीरं चिनीजं मिनी मोहिनी संधिनी संज्ञकं रुद्रा एकदशवी
 रमहादयः अर्काहादयश्चानादयः वसवी हो धरादयः अश्विनौ नासभ्यदक्षौ ८४ एकैकः पंचत्रिके पूज्यः एवं नवनवद्वि चरमपत्रे तु जंभिनी संधिनी भान
 मुखे हक शलां छाकपालहलभृतमरा ॥ वदकोणये पजे चंडोचं डं नस्याः सुतो तमं ८२ धूर्त्तं नगां च उमरं कपालं दधतं करैः इंदनी लनि
 भंनं जटाभारविश्रितं ८३ अष्टपत्रेषु वार्त्तालीमुख्यं देववृकं पजेन ॥ शानपत्रेषु संपूज्यारुद्रं च वसवीं क्षुणो ८४ त्रिरेके कोर्मपत्रे तु वं
 मिनी संधिनीयुता ॥ शम्कोणाग्रं पूज्यं हि होमहिषसंयुतं ८५ सहस्रपत्रं चारादीं पूजयेत्तु सहस्रकः ॥ अं कुण्डितं चाराहीनं मों नां नम
 नुः स्यात् ८६ मुखरहारं शेषवदुं केशेन पालकं ॥ यो मिनी गीणं नायं च तनन्वकैः प्रपूजयेत् ८७ कोर्मैः सविं वृद्धं कौडं नो ह्यसं पवर्णकः
 मेरुः शशि युतः स्येन पालायनमसां चितः ८८ अष्टां लोको र्धैयुवायुः सैवं दो योगिनी पदं भोजनमोक्तं सप्तवर्णैः स्वां तं श्रुं दान् चितो गणः ८९
 पनयेत् ॥ चाष्टवर्णं मोकोकाभनकः क्रमात् ॥ दिकपाला नायु वैयु को नो दिक्षु संपूजयेत्तु ९० पूजां ते वदकादिभ्यो वलिमंत्रै वीलि हरेत् ॥ वलि
 मंत्रं ८५ वा राही मनमाह अं कुण्डलि कोचराहीनमः इति मंत्रेण सह सवरावभाही मेव पूजयेत् ॥ ८६ लोकोचिना मंत्राः कीर्मने स्तिलसिद्धिदा ८१ ॥
 ८० वदकं मंत्रमाह पंजन इति ॥ पञ्चोवः वै वदकाय नम इति सैनपञ्चमं नमाह मेरु इति मेरुः सः सै सैनपा लय नमः ८८ योगिनी मंत्रमाह वेवेति चायु र्गः
 वयु र्गः अमुनः सचं होषा वयु न प्युमं येति वी भ्ये नम इति गले र्धमं नमाह स्वां न इति स्वां नो गः गी गला पतयेत्तु नम इति ८९ ९० ९१ ॥

॥१॥ अस्य श्रीनांतिमंत्रस्य षि नमः विः जगती खं दुर्वा नी दी देवता ममा विस्व भूमे जपे दि न योगः ।

श्रीगणेशाय नमः

सिक्कोणं७६ भूविंवंचनरसं७७ नदस्यादिषु नस्यादया च्यम्या।दधुआ।ना।नमः।पावा।चा।दः॥७८॥

कृष्णपक्षरभ्यवशा माद्युवभिन्मं नरको वष्यार्थप्रयोगः ५७ तत्कालाजानं नरकाय स मे स्वाणमसुज्जरु विरेण ५८ वेष्टनमंत्रमाह साध्याभिनि ५९ छि
^१ साध्यां चोदपुत्रादयस्तेष्वेव पुनरायमायभीषपभीष्यनाथयथाशिरः कंभयकपयुग्ममाला बनेन कुरु मकीमिमतवसुतेस्यारयसुष्णदयवर्धकुरुवर्धकुरुलाह ५९
यजेद्वष्टदले पत्योमानभे रवसंयुताः त्ये कफालान् दशादश छिदीयहे निसुयुधान् ५५ एवसिहमनुमन्त्री काप्रकमोणि योजये
तं नर्ययेन प्रकिञ्चिद्वैर्जैस्त्री योद्वा वैर्धिव ५६ मानयेन रणे विजयं न स्वकीया कर्मिहये कृष्णपक्षेष्टमी वस्तेभुना हेवाकनव्रतः
५७ चतुष्षण्मं नदी कूलद्वयां तकोत्पत्त्यवेष्टमनः मृदुर्माभीयध्वाररससंयुक्तयानयां ५८ रचयेन युजन्ती रभ्यो साध्या सुस्थाप
नान्वितां गतः ये च वर्ययत्र दैको जासुज्जलिस्विन् ५८ चित्तो गारा युज्या योनिं वटको एभूयुः श्चिन्तं तदंतमिन्वमालि रव्यवेष्ट
यन्मनुना मुनां ५७ साध्या मुञ्चा दये युगं शोषयद्विनयं ननः मार्यो द्विनयं चार्थभीष्यो द्विनयं तनः ५९ आश्या यो द्विनयं यथा नृसि
हः कपययमकर्म माज्ञा वनिन्यं श्वा न कुरु सवर्धभिर्मी र्णकाः ५२ नं वरुजानं शब्दं न संयदये युगं ननः सर्वे कुरु युगं स्वाहो सु
निससाष्टो मनुः ५३ अनेन वेष्टिनं युज्जकनं देवी प्रणिष्ठितं युजन्त्या स्तद्विज्यस्य यजेतां मुक्तमार्गनः ५४ तदये प्रजयेन्मंत्रं
एवार्थे कां न माश्रितः सहसं सप्तिकं भूयः पूजयेतां समाहितः ५५ एवं कर्तेन राजा र्यो राजा नो राजवत्प्रभां सिंहा मजा मृगाः कृ
रां भवेयुर्वशमा ध्रुवं ५६ चित्ते ध्यात्वा निजं कार्यं प्रायी न विजने व्रती यथाभाविनया देवी स्वप्ने वदति मंत्रिणे ५७ ॥

स्वाहा सप्तममनः ५२ मुनिसाहासः समसप्तमर्णः ५३ उक्तमार्गनः पूर्वोक्तविधिना ५५ ॥

स्वप्रवाराहीमाह वेदादीनि वेदादिर्न मायाहीं त्वमेतमः जलं वः पावकोरनौ दीर्घावार ३५ सहस्त्रं हः हिमेधाः सधयुक् ओयुना धारे स्वमंस्वस्य संगी
 ऐहोः ४ः कृष्णवल्गभास्वाहा ३६ वर्त्यसमाह पादेनि त्रिगेकं ठके मधिर्यके कः अन्यत्र हो ३७ ध्यानमाह मेवेनि कोलस्यावराहवदनादं धानलेव
 उच्यते स्वप्रवाराहीजनमावका रिएणी वेदादिवीजं मायावृत्तं हीर्षोजलपावकौ ३८ खंसुहकंसदायुगे धारे स्वमंस्वमिरीणौ
 च्छेदौ कृष्णानुवहभांनोयंमनेः पंचदशसुह ३९ स्वरेजगता स्वप्रवाराहीमनिपूर्वकाः गौरीवीजं चत्तरेस्वार्थकिः तौकील
 कंमनं ३९ हिंयं चैनेत्रे रणा हिंयुगेमारे रगकं मनोः पादेलिगं कंटी कंठं गं डं प्रस्य धुनिनासिकं ३८ विन्यस्य मंत्रजान् वर्यमं चिं
 नयेन्यं रदेवतां मेघप्रणमरुचिमनोहरकचो नैत्रजयोद्गासिनां कोलस्यार्थशशिरेखराभं वलयादं ध्रुं नलिप्रोभिनां विभा एणं स्व
 कं रं तु जै रं मुं लनां चर्मोपयाशं सृष्टिं वारो हीर्मं न चिं नेयेद्वयवररूढां भुभालं कति ३९ तस्यं जयं दशं श्रेण नीलय चै सिलैः शु
 भैः शुभयान्पूर्वसंभोक्तो देसं पूजयेदिमां ४० त्रिकोणेनां समागम्य पदकोणे षगदेवताः चोदशारे यजेत शुक्तिर्वद्व्यमाणा
 लुकोदशं ४१ उच्यते नदीशीचं शोषणं शोषणं भवरीं मारणीं मारणीं शीचं भीषणीं भीषणीं भवरीं ४२ तामनीनां सीशीच
 कं यनी कं यनी भवरीं आनां विवर्तिनी पश्चादां नां विवर्तिनी भवरीं ४३ वसुं जने भवरीं वायुं सर्वसं पादनी भवरीं एताः पूज्यां भुवि ध्यं
 नमानयावसुधया णाभिना आसिलना कृष्णदक्षयाः ३९

नमानयावसुधया णाभिना आसिलना कृष्णदक्षयाः ३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

मं दीप्यन्माह षट्कोणरश्मि धनुररासाक्षरिद्राचूर्णेन षट्कोणेः भुक्तं संभये निष्कर्णयुतं ह्यमिनि बीजं विलिख्य मंत्रश्रेयार्थैः संवेष्टुं यद्विचित्रं रश्मिरेणवे
नौनः ५४

स्वेन पासाकाशेन रश्मिरेण पादुके अलक्षरं जिने लक्षं मंत्रये नर्तुनीं मुक्तां २३ जर्दं रदः पुमान् गच्छेत् स एतेन ग्रन्थेन योजनीं ।
पारदं च शिखां नालं पिष्टं मधुसुमच्चिर्तम् २३ मनुना मंत्रयेत्तस्य लिलेपेनेनीं स्त्रिलोतनुं अदस्यः स्थान्वाणमेषं अभ्यर्च्य द्रव्यमा
मिदं २४ षट्कोणे विलिखेत् द्वीजं साध्य नामाच्चिर्तं मन्त्रैः हरिना लनिष्ठा चूर्णैर्हर्ष्यैर्न रससंयुक्तैः २५ शेषास्तैः समीचीनैर्धरागोह
विराजितं मन्तव्यं तस्यापि तप्राणपीतसूत्रेण वेष्टयेत् २६ आप्यनकुलालचक्रस्थां गृहीत्वा मुनिकां नया रचयेत् नवधर्मं रम्यं यं
नन्मथ्यातः सिधेत् २७ ॥ हरिनालेन संलियं हवप्रमदमर्चयेत् संभयेद्दिद्विर्वाचा चंगानि कार्यं परमं २८ आदाय चाग्रहसिन्धे
नभूमिस्थं रवर्धम् अंगारेण चित्तास्थं नतत्रयं त्रयं समाहित्वेन २९ मन्त्रितं निहितं भूर्भे रिएण संभयेद्देति प्रेन वस्त्रे लिट् वृत्तं नमं
गारेण च तनुक्तः ३० मंडकं वृद्धेनेन्यस्य त्पीतवस्त्रेण वेष्टितं पूजितं पीतपुष्पैः सह च संस्तभयेद्दिर्वा ३१ यद्भूमौ भविता दिव्यं नैत्रेयं न
समासिस्तेन माजिर्नत नृवायत्रैर्दिव्यसंभन कइवेन ३२ इन्द्रवारुणैकामूलं समशो मनु मन्त्रितं स्थितं जले दिक्कं नो जलसंभ
नकारकम् ३३ किं भूरिण साधके न मन्त्रः सप्यगुणा सिनः द्युचूर्णं गतिवध्याद् संभनो नात्र संशयः ३४ ॥

धितं यो न स त्रयी नं कृत्वा २६ भमक्तं भकार चक्रस्थं मदारश्चिन्तव्यो देवप्रक्षिप्य २७ हरिनालेन संलियं हवप्रमदं पूजयन् संभन कलं २८ वृथा अदरुप

भीरव संयुतामानरोषदले संपूज्यबोडषदले रमाभंगलाघ्यजेत् ८ गरुनषष्ठ १८ ॥ १८ ॥ २० ॥ २१ ॥

का ० सप्तममम १

भः ० भ

चंद्रनागुरुचंद्राद्यैः पूजार्थं यत्र मास्ति स्येत् त्रिकोणषडदस्ताष्टास्रबोडषारधरापुरे ७ मध्ये संपूजयेद्देवीकोणसत्त्वादिक्कुनगुरुमर्त्त
षष्टकोणेषुषड्गानिमानभैरवसंयुताः ८ संपूज्याष्टदलेपद्मबोडषारयजोदिग्माः मंगेत्तासंभर्ताचैवर्जंभिनीगोहिनीन वंद्यावत्ता
वल्लर्काचैर्भूधराकल्लर्काभिधा धार्त्र्याचैर्लार्कावैर्लार्काभिर्मापिच १० मंदगमनाभोगस्त्वाभाविर्काबोडषीस्मृता भृगुहस्य
चतुर्दिक्षुपूर्वादिर्षुयजेत् क्रमान् ११ गणेशैवदुर्गापयोगिनीस्यत्रपात्रकर्म इन्द्रादींश्चततोवात्ये निजायुधसमन्विताम् १२॥
इस्थसिद्धमनुर्मन्त्रीसंभयेदेवतादिकान् पीनवस्त्रादासीनपीनमात्याजुलेपनः १३ पीनपुष्पैर्पुजं देवास्त्रिदोषप्रज्जोत्पन्ना
पीताभ्यायन्भगवतीप्रयोगेर्षुयजेत् जपेत् १४ अमिषाज्वातिलैर्होमो नृणां वपुःकरोमर्तः मधुसूत्रिनयानैः स्याद्वैर्कवीस्ववर्षैर्भुवै
१५ नैव्यभक्तैर्निवेयर्षैर्होमो विदेषकारकः नैस्त्र्योणहारिद्राभिर्द्विधासंभर्तुं भवेत् १६ अंगारैर्धूमैर्गोष्पिणादिषंगशुत्तीक्ष्णै
प्रमथानपावकैर्हस्तानायापेदीचिरादरीन् १७ गरुतोपद्रवाकानां कटुनैलविभीतकं गृहधूमं चितावन्नेह्रस्वाग्निच्चादयेद्दिग्दर्शनं
दूर्वागुरुचोलाज्जोमधुरजिनयास्त्रितान् जुहोति सार्विलानरोगान् प्रमयेद्दर्शनादर्थि १८ पर्वनाग्नेमहार्त्येनदीसंगेशिवास्तये ॥
वसवर्षारगोष्ठासंजयेद्देवैस्त्र्यसिद्धये २० एकवर्षमीह भवार्कसमधुसंयुतं त्रिशतं सन्निवर्तयेत् नैर्वाहैष पराभव २१॥

८२२ वि. ५ वि. ५ कु. ६
ॐ स्त्री वगलासुखसर्वदुष्टानां वाचं मुष्णयत्संभयति स्त्री वचनं हि विना यमस्यै ॐ स्वाहा ॥ ५५ ॥

वर्मणां हंकारेण सोमि तमस्त्रं कटकारं रिपोर व्याद निमुष्या यरिपु रं हं हं नं स्मरे तमंडल मेजो नयं चाश्व हिना नि ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव
मिति ॥ ५६ ॥ इति मंत्रमहोदधि नौ कायामनपूर्ण दि निरुपणं नवमसुरंगः ८ ॥ ५६ ॥ वगलासुखीमाह प्रणव इति गानं हः पृथ्वी त्वः प्रणमिः ईवं दृश्यते

वर्मसं होमि त्वस्त्रं रिपोर व्याद निमुष्या यरिपु रं हं हं नं स्मरे तमंडल मेजो नयं चाश्व हिना नि ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

वला त्रितपादर्वो कमारयने वाचि दिवं १३१ एवं यः कुरुते कर्म प्राणायामजपादिभिः स श्रेष्ठो ध्यात्वा सात्मानं स्वरक्षणै हारं स्मरे तमंडल मेजो नयं चाश्व हिना नि ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

इति श्रीमंत्रमहोदधि अन्नपूर्ण दि मंत्रमकाशनं नाम नवमसुरंगः ८ ॥ अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां संमिनी च गत्यमस्वी प्रणवो न ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

गमनं पृथ्वी प्रांति विंदुयु नवग १ लासुसास्यो दीसर्वदुष्टानां वाहली इयुक्तं मुखं पदं लभे यां नो जिह्वा कीलपर्वणं कारः २ वृद्धिं विनीशार्थं ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

सि त्रुं जी नो र्म न सु रं व द त्रिं श द स्यो मं नो नार हो मु न रं स्य नु ३ छंदो पि हं नीश वं र व न व ग ल्य मु र्त्वा ने नो क्ष साय कं न व पं च का षो षु ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

धिरं गे कं ४ सो व णो स नं सं स्थि तां वि न य नो यी तां शु को ह्या सि ना हे मा नां ग रु चिं श शं क मु कं दं स चं प क स्य ग यु र्गो ह सै र्मु रं रं पो शं व रं ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

जं रं स न रं सं वि भ गौ भू ष णं व्या सां गां च गं ला मु र्त्वा त्रिं ज ग तां सं सं भि नो चिं न ये न ५ एवं ध्यात्वा जपे ह्यस्य मं यु र्ने चं प को द्रवः कुरु मे र्जु रं या ७२ मासं कुर्वते प्रायश्चित्तमाह एव

नं हो वगलासुखसर्वदुष्टानां वाचं मुष्णयत्संभयति स्त्री वचनं हि विना यमस्यै ॐ स्वाहा ॥ ५५ ॥ इति अष्टाश्लिपं च ४ ध्यानमाह शिवोति मुन्नरवज्रोदस्योः पाश्र्वियुनिह्वितामबोः ५ ॥

५३

यथाभागं समवप्यधिकं शतद्वयं प्रमेकं १२० प्रयोगमाह अकारमिति १२५ नदप्रिमचकार मास्यदक्षिणस्यांरब्ध अरब्धो जगदाहेयेन खंकेनेति वापाठः १२३ तृतीयमिति

धरासमुत्प्रेक्षिधमक्षिन्नरुद्धभूदिवं पवनसंस्मरेद्विभ्रजीवनं प्राणरूपतः १२० नदीपर्वनद्वसादिकलिक्तायामसंकुलां आधार-
भूतजगतोऽध्याप्यदीर्घमंत्रिण १२२ सूर्यादिग्रहनस्यत्रकालचक्रसमन्वितां निर्मलंगानं ध्यायेन्मालिनामोभ्यपप्रदं १२६ एवं
दृष्ट्वां ध्यात्वा सहस्रो लितुषोडशं जपेन्मन्त्रं दशं शेषं द्रव्यैर्होमार्गं चरेत् १२० वीर्यसंदुलां आज्यं सर्वपांश्च यत्नं सित्कं ९ नैर्ह-
त्वा यथाभागां पीरं पूर्वोदिते यजेत् १२१ अंगदिकालचक्राद्यैरेवं सिद्धे भवेन्मनुः शत्रुपदवमापन्नो युंज्यात् नष्टये मनुं १२४ अकारं पुर्व-
ताकारं धावतं शत्रुसमुदं पतनोत्सुखमसुग्रां व्यादिशि विचिंतयेत् १२३ कैकारं सुधकलोलं ज्ञावितां सितभूतलं ममुदरपिण्डी-
मं प्रतीच्यादिशि संस्मरेत् १२४ वरुणं नदं ज्येष्ठं व्यासं वध्यासनमस्तलं याम्येकं तजगादाहं स्मरेत् सलयापावकं १२५ तृतीयवर्गप्रथ-
मं प्रकंठिनजगच्चयं युगां नपवनाकारं मुनेरस्यादिशि स्मरेत् १२६ तुरीयपर्वमाद्यौष्टव्यीगगनरूपिणौ शत्रुवर्गवाधमानौ चिंत-
येन्नियतात्मवान् १२७ नदनिमवर्णयुगं शत्रोर्निभ्यः समपद्यति निरुंधानं स्मरेन्मन्त्रो विदधद्विषुमाकुलं १२८ मीमादिबर्णवर्ण-
शत्रोर्नैव श्रुतीमुखं प्रमेकं तु निरुंधानं चिंतयेन्माधकीर्तनम् १२९ ॥ ८ ॥ १२४ तुरीयेति चतुर्थपञ्चमवर्गयोः सादृशार्त्वेन तपं १२७ ॥ नदनिम-
वर्णयुगं द्वयम् हंकेनेति १२२ मयादिवर्णत्रिनयं हीरं सरति १२६ ॥

मं. टी. व्यापमाह सिंहेति एव हेतुद्वयसिद्धेः ७ यत्र नाशकमन्त्रमाह प्रणवद्वयप्रणवः ॐ सेंतुः केवलः असेनद्वयं च वगीद्याः कंचदंतं पंच द्वाचिनिं विपनं हं सतंतः सद्यो
 जीमः ॐ शशां कोविंदका भ्यां युक्तः त्वं माया हीं कर्णे च म्भक्ष्यः उविनु युनो प्रविर्दुः सर्मभिः सः वर्मिहं कदस्वाहा स्वरपम विधाना वस्नामहा पूर्वाः पर्वनादयः म
 ॥ ७॥ अर्थः चतुर्नपदं कोविंदकाः ३ कदस्वाहा १४ ॥

सिंहसूक्तं निरुक्तं भुवनमय कद्रुपमुग्रं बहं नीजालावक्रावसानां नववसनय गंगील पाप्मासां कोनिः भूत्स्वद्विहं वहं नीजिनकरय
 गलेभक्तद्वैके दहासेयं प्रमंगिरासं स्यायतुरियेभिर्नमिर्नैवोभिर्चां १०७ अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं नितराजिका हुत्वा सिद्ध
 मसुमंत्रं प्रयोगं शुभं जपेत् १०८ महभूनादिका विष्टां संचेत्यं नैजपुत्रैः विनाशयेत्पुनरुक्तं नयं नमो आदिकुर्मणाम् १०९ मं
 त्रं विरोधशमकं प्रवक्ष्ये बोद्धव्याहर्षः केशवः सेंदुर्वगीद्याः पंच सेंदुर्वः ११० वियच्चंद्राच्चिर्नैरां नैरां सद्योजानः शशांकयुक्त
 मायात्रिकं एव द्वाढ्यो भूगुः सर्गां सर्वमपेकद १११ स्वाहा नैः बोद्धव्याणैर्धर्मं नैः शत्रुविनाशार्थः विधानां विचित्रैः ध्वं दः पर्वनां पदं
 निन्वायवः ११२ धर्मां कोशौ महापूर्वादेवनाः परिकीर्तिनाः इवीं जपेत्पर्वनीशानि मार्या नु यदशकं ११३ नानारत्नाधिनां कोनं दृष्ट्यां
 मः स्ववले पुत्रा व्याघ्रादिपशुभिर्व्यासं नैः पुत्रं गिरिस्मरेत् ११४ मत्स्यकृमादि विजाढं नवरत्नसमन्वितां धनच्छयसं कल्लोल
 मं ११५ ज्वालावनी सुमानो नैजगन्निनयमद्भुतं पीनवले म हावर्हिं सेंतुः स्मरेत् ११६ ॥ हापर्वन महासमुद्र
 महाविमहा वायु महापृथ्वी महाकाशाः षट् देवताः पावनी हीमा यया दीधा ल्या यद्वद्म वस्त्रा व्यानायाह नानेति ११७ अकृपारसमुद्र ११८ प्राणस्ते

॥ ११७ ॥ अकृपारसमुद्र ॥ ११८ ॥ प्राणस्ते

ਸੰ.ਦੀ.
ਜੀ.ਪੜ
੧੧

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

वसिष्ठम्

८० कुवेरमन्त्रमाह कारयति नगरं अतिप्रियास्ताहा ८१ कुवेरध्यानमाह धनेति रत्न करणोदसे ८२ प्र नमिषमाह दीर्घनि मरुत्पकारः दीर्घ
 युक् आविरुप नः यो ब्रह्माकः लोहितः यः तस्यंशमासंलः ल्यायं तिनोरयः कुरां कृत्वां वधूमिव नम्रसस्वरूपम् सदीर्घोऽणः श्रीकण्ठः अपानिर्गुदेति
 अष्टशतीर्वक्ता कंच विभक्ता कर्मज्ञा तथा वनमात्मा विभीषा विमालिका शंकरी पुनः ७६ पूर्वदिदि सुप्रयजे दहर्मा वसु मण्डिक्वं य
 न्मद्याना पुधैर्दुर्गा स्वस्मिन्सुसमर्चयेत् ७७ दह्यं सपरिवारे यो धातुस्तस्यै जपादिभिः आशयं तस्य भर्तृमहर्षीमन्मसंपदं ७८ आत्मा
 नैश्वा तिसैर्वक्त्रसमि द्विर्जुहयाच्छिपे सा येन पापसेना पिप्लवेऽनैश्वा त्वजै ७९ जपतीं मुंम स्रमं नंदेभुः कारोदिनिदिरे दशमं ८
 दैर्द कुवेरस्य मनुने धैर्वदिदकैः ८० तारो वे अवकायां निद्रिषा गोष्ठास्ये प्रभुः ८१ शेषकारे कुवेरं धितं भर्तृ निमप्य गा धनपूर्णे स्व
 र्त्तुं प्रतथा रत्नं करंडकं ८२ हस्ताभ्यां कित्त तं स्तवैकर पादं च तं दिक्षं वदा पसाद त्वयी शेष विष्टं सुसिमानतं ८३ एवं कृतं ह नो मं श्री
 तस्मा जयाति विसर्पं अर्धप्रमो गिरां वस्य परकृत्वा विमर्दिनीं ८४ दीर्घदृक् कर्मरत्नं त्रस्य मासं लोहितं संस्थितं यमि नैर्यय उच्चार्य कृ
 रां कृत्वां समुच्चरेत् ८५ वधूमिव पदं पश्चात् गोव्रं स्ताने सदीर्घोऽणः अपानिर्गुदस्य नैर्धनं कर्तौ स्मृत्वनं ८६ तारमायायुतो मं अः स्यात्स त
 शिंशादशरः त्रैस्ता नुषप मुनिः खंडो देवी प्रनमि रोरिनां ८७ ॥ वीजशक्तौ नारमाय कृत्वा नार्थे नियो जनमं ८८ रूपममं चैल कारेण सनि
 वस्य कर्तारम् च्छुत्तु स्वरूपं प्रणवमा यावीज सुपुटः ८९ ८७ षडङ्गमाह अष्टभिरिति तोयनिधिभिश्च नुभिः दीर्घमुक् पार्वतीमा यावी जपं य
 ८९ अमय न्यमि रोरयं चैव त्रैस्ता नुषप मुनिः अ त्रिषु पक्ष रैरपि प्रनमि रोर वना ९० किं जीही यतिः मजा किल वा भिजप विभि नो मः ११
 १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३

४ अथ मन्त्रादिना भक्त्यै चोपायः अथ भक्त्यै चोपायः अथ भक्त्यै चोपायः ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् प्रणवमा याजीजसुपुटः ८६ ८७ षडङ्गमाह अष्टभिरिति तोयनिधिभिश्चतुभिः दीर्घसुक् पार्वतीमा यावी जंपं देव

अनरमन्त्रमाह अथेति योमन्त्रः अनपूरणवराणपूजनेभूमिप्रियोः पूजनेति प्रमास्योदाविशस्यः पुरकथितः सेनदेमनुः अनंमसु चंनेदेश्वादि
 यतयेममान्नप्रदायप्रस्थेतिप्रप्रणवमूवीजसंप्रदोभिव्यतिवर्णः ६६ वदन्माह अन्नंमहीति षडंगमन्त्राः भुवादिकः प्रणवास्तदीर्घयुक्तेभू श्री वी
 जे अनेववांतेविनेचानेनहीचाः पञ्चैवपक्कानिमनोर्ध्वजननने नमनुम्यओदिसुक्तेः उंअन्नंमहिप्लां श्रीहत् उंअन्नंदेश्वादिप्लां श्रीचिरदमादि ६६
 नारभूषी पुटअयोपुनिरस्यचममसुः छंदोः निहृतिरस्यथानंदेधनेवसुधुं विधौ ६६ भूवीजं वीजमस्योक्तं श्री वीजं याति गीतां अक्षं
 हीतिहृदयमन्त्रं मेदेहि मेसर्कं ६७ प्रियवात्सल्यं विपतये ममान्नं च प्रदाय यं चर्मो तं स्वाहया त्वत्वं मंगमं चा ध्रुवादिकः षट्दीर्घास्तु
 मूमे श्री बीजांताः परिकीर्तिताः विनेनोअर्थादुपधाव्योस्य एष्ये तु न सारत् ६८ कल्पद्रुमाधो मणिवेदिकायां समारस्थितं वस्त्रविभू
 षणाढ्यं भूमिप्रियो वां छितवामदस्ये संचिनेये देवमुनींद्रवंदं ७० लस्य मेकं जये नमंत्रं तद्दृष्टां प्रोचनं नैः अने ह्रुत्वा यजेन्महि वैष्ण
 वे नमुधा प्रियो ७१ विमेलोक्तं किंलं सानां क्रियायोगाभिधातया प्रवृत्तिं स्यात्तथा नानुप्रां पीठयुक्तैः ७२ गार्नेमो भगवते वि
 छवे सर्ववर्णकः भूगर्तसंयोगपदयोगपदपदं गतः ७३ मीठी सने नमो तौ यं पीठस्य मनु शिरः दद्यात्स नमो ते नमले नावाहनादि
 कं ७४ अंगानि धाव्यं यादिसुभूदे हि जलं मारुतानं निवेति च प्रनिष्टं च विद्यां तां विदिसु च ७५ ॥ ७६ ॥ अन्नं सौम्यं प्रमस्य केमे देस्य नाधिपति
 ७६ ॥ अन्नं सौम्यं प्रमस्य केमे देस्य नाधिपति ७६ ॥ अन्नं सौम्यं प्रमस्य केमे देस्य नाधिपति ७६ ॥

देखवीपीठशक्तिराह विमलेति ७२ पीठमन्त्रमाह नस्यमिति उं नमो भगवते वि छवे सर्वभूतात्मसंयोगे पद्मपीठात्मने नमः ७४ ७५
 अस्मज्जपत्सु मीमं न स्यवस्थाः ७६ वि छति छंदः वसुधा श्री वेदे वना लो विजं श्री शक्तिः ममाभीष्टा तजये विनिधेयाः ७७ अं नमो भगवते वि छवे सर्वभूतात्मसंयोगे पद्मपीठात्मने नमः

अस्य ज्येष्ठस्य स्त्री मंत्रस्य ब्रह्माऽविः अष्टद्वन्द्वेष्टस्य स्त्री जुदेवना श्रीं यन्त्रिः हीं विजयमाभिष्टमि अथ जयविजययोगः ५५ अरकज्येष्ठस्य यरत्रा अष्टाय धीमार्त्तन्ता
 स्वयंभुवे स्वरसं शंभुजाया हीं ज्येष्ठये स्वरसं दृदयं नमः ५४ श्रीं यन्त्रिः हीं वीजं यदोन्मितिः पदवर्णसंख्याभिरुत्थादिवर्णैर्हीया ५७ ध्यानमाह उद्यदिति धीं
 स्वयंभुवे शंभुजाया ज्येष्ठये दृदयं नमः मनुः समदृष्टाणो यमुनिर्ब्रह्मास्य कीर्तितः ५४ संदोषि ज्येष्ठस्य स्त्री सुदेवता यन्त्रिः वीजं श्रीं
 मायमूलनो हस्तौ प्रमृज्यां समाचरेत् ५५ एमवेदं युगैकं श्रिं श्रीं श्रीं मनुसंभवेः पदानामष्टकं न्यस्ये छिंद्ये भूमे अथ वक्त्रं के ५६ दृष्ट्वा भ्यां
 धारके जनुपादयोः स्य दोन्मितिः मूचंद्रके चतुर्वदं भूमिं यो मां सुवर्णकेः ५७ उद्यद्भस्करस्य निभासितमुखी रक्तां च रात्रेयना मुखं
 भुवनभार्जनं सर्षि मूखाया शंकरौ वैभर्तौ यत्नस्थान्कमले स्थाप्य दृढकुचांसौ दूर्यवा रात्रौ धर्मो तेषां सकलाभिलाषकल्त्रा श्रीं ज्ये
 ष्ठस्य स्त्री रिपुं ५८ त्रसं जपे स्थाप्य सेनजुह्वानदृष्टां शतः आनामि नृजपे स्थितवस्य माणो महाश्रियं ५९ त्वाहिनां स्त्रीं विरूपाचक
 रस्त्री नीलेशो हिनां समुद्रां चारुणां पुष्टिरमोघा विभ्रमो हिनी ६० ननीठशक्तयः प्रोक्ता हि सुमध्यं च नापजेत् प्रयच्छेद्दांसनं न स्येण य
 त्वावस्थमाणाया ६१ प्रणवोरक्तज्येष्ठा ये विद्यहे पदमंततः नीलज्येष्ठा पदं यश्चान् यैधीमहिततः पदं ६२ तन्नीलस्य स्त्रीः पदं प्रोक्तं चोद
 यति चेत् चोदरेत् गायत्र्ये वा समाख्यातां केसरे वा गयूजतं ६३ मातरः पञ्चमध्यं पुत्रां स्थलो के शरहेतयः द्रव्यं जयादिभिः सिद्धे मनुर्दद्यात्
 भीसितं ६४ अथान्वदमनोर्वस्ये साधनं यः पुरोदितः अन्नपूर्णा च गौ भूमिं श्रीं यातो हि यमाक्षरः ६५ ९ पात्राङ्कुशौ दक्षिणे कुंभपाणि
 नामयो ५८ वीठशकीमाह त्वाहिना स्थिति ५९ गायत्रीमाह प्रणवदति स्थष्टमं त्रैके शारद्रादयः हेतयो वजाद्याः ६२ ६३ ६४ ६५ ॥

मं. टी.
नै. तट
४६

नमः प्रसाः ॥ कः रः कः रः ॥ श्रीः साः इदं वः रः नः ॥ जः मः रः ताः शिरः कः साः खेवं यः पिप्यः कः सं वः के। नः गः रोहिः णः माः नोः पः ताः पः तः सः सं वः सः को। भः मः हः वः तः ताः र्जुनः सः निः कः नः मः श्रीः रः वः वः कः कः सः रः कः
५५ ५६ अंगे मंत्रा यददीर्घं युक्त्वा यावीजं परं येषां रंदिशः ५७ मनोर्मनस्य सर्वजनमस्थाने सर्वजनस्थे निषदस्थाने साध्याभिधानकं साधना
मोक्षरेतरेव तस्य मुखमिच्छादि ५८ प्रयोगांतरमाह साधनस्थेनेति साध्यस्य यन्मस्तत्रं नमनस्तत्रं तत्संबंधी यो वदस्यते न साध्या कति साध्या प्रतिमां कु
र्वात् तत्र प्राणान् प्रतिष्ठाप्य तामंगने स्वात्मानं दृपर्यायिनि विधाय रक्तचंदनाकैर्जपापुष्पैः सह संहृत्वा गां निष्काप्य नदी तटे निखने तस्मिन् सः स्यात् तत्र

अधिष्ठंशे देवतासु पूर्ववत्परिकीर्तितः स्तुतौ द्वाभिः शोर्कं शिरः स्थानसमवर्णकैः ५५ शिरैर्वा कर्मो विवेदार्थः पंचभिर्नवमी
रितं अस्त्रं समदणार्थैः स्थानं ध्यानजाप्यादि पूर्ववत् अंगमंत्रासु दीर्घाद्यभुवने शीयतामताः एवं मुधं मनोर्मनो प्रयोगान् कर्तुं म
हति ५७ कुर्यात्सर्वजनस्थाने मनोः साध्याभिधानकं जपे होमे तर्पणे च वशीकरणे कर्मणि ५८ संसृष्टानां वृत्तं हृत्वा संहरत्वं सदा
वासरं संयानां ज्यंतुं साध्या प्रशितं वश्यकरं कर्म ५९ साध्या न स्य च तद्वै स एतं कुर्यात्तस्मात्साध्या कति न्मुभां तस्या ममून प्रतिष्ठाप्य प्रा
गनेति खने च गां ५० तर्वा नलं स माध्या रक्तचंदनसंयुतैः जवापुष्पैर्निशीथिन्यां जुहुयात्समवासरम् ५१ सहस्रं प्रत्यहं प्रश्नात्
गां निष्काप्य सारितरे निखने तस्मात् कर्मस्य साध्या दासो भवेद्भुवं ५२ ज्येष्ठस्य मही महामंत्रः प्रोच्यते धनवृद्धिदः वीथीजं भुवने शाना श्री

सुनहसाय या कारका रोप्य धात्री सा इदं वरतरुं पुनः जंबूत्वा दिरक स्यात् यो वंशपिप्यस्य संवृत्तौ नागरोहिण्यनामनौ पत्न्यस्य संवृत्तौ अंबवद्विंशत्वा
नास्य विकं कसमही रुहाः वकुलः सालः सर्जो वंजुलः पनसार्कजौ शमी कंदर्ब नवानमधूका वसाणस्विनः इति शारदोक्तः ज्येष्ठस्य मंत्रमाह वागिति वा
सर्जो वंजुलः पनसा कर्कश एतौ कंदर्बाना वमधूका वसा वासिना ॥ इति शारदोक्तानस्य नवस्थाः २ ॥ देहीं श्रीं यत्नां हि सयं भुवे दीं ज्येष्ठा ये नमः ५७ ॥

॥८६॥

मंत्रान्तमाह अयमिति अयं विश्वस्यः श्री कामहीनः षडंगमाह हीति २३ मंत्रान्तरमाह पूर्वोक्तिरिति विश्वस्यर्णमन्त्रवर्णचतुर्दशास्यत् माहे श्वरीत्यं
 नोममाभिमतमन्त्रेदृहिरिदृतिवर्णनञ्चारयेत् अन्त्यपूर्णेस्वाहस्यंतेऽस्येवततएकगुणार्णवान् एकत्रिंशदण्यः २४ षडंगमाह युगेति मन्त्रान्तरमाह
 ॐ ह्रीं श्रीं नमः भगवते नमो हे श्वरि मन्त्रमभिमतमन्त्रेदेहिरिदृतिवर्णनञ्चारयेत् ॥ ॐ श्री हीनमः भगवन्मो माहे श्वरि मन्त्रमन्त्रवर्णचतुर्दशास्यत् माहे
 रस्यजगदिभिर्मिस्त्रिभुवनं चोस्मिन्धुनसचयैः कुवेरसहस्रभुवनं चोस्मिन्धुनसचयैः २५ अयं मा कामवीजो हिनाष्टादश्यास्यः द्विनेत्रवेदं संसा
 द्विनेत्रात्तरंगमिरितम् २३ पूर्वोक्तमन्त्रेभ्यश्चार्णमन्त्रमभिमतमन्त्रवर्णचतुर्दशास्यत् माहे श्वरीत्यं
 इत्येतरंगकल्पनं प्रणवः कामलाशक्तिर्नमो भगवतीति च २४ प्रसन्नगारिजानेभ्यर्घ्यन्त्यपूर्णेन लंगनी चतुर्विंशतिवर्णत्वात् मन्त्रः सर्वेषु सप्त
 कः २६ रामा द्विवेदं नार्थिर्वेदं हरेः षडंगकम् गारं श्रीशक्तिरुदयं भगवन्मो माहे श्वरि मन्त्रमन्त्रवर्णचतुर्दशास्यत् माहे श्वरीत्यं
 अन्त्यपूर्णे द्विपुत्रातिथं च विंशतिवर्णत्वात् २८ रामवर्दयुगवद्वेदं नेत्रात्तः स्यात् षडंगकं एषां चतुर्णामन्त्राणां मन्त्रस्य सर्वतु पूर्ववत् २९
 त्रेत्येकमुपो ह नो गौरी मन्त्रः संकीर्त्यतधुनमाया नमो तेषु स श्रीगजिते राजपुजिते ३० जयं नैव जये गौरी गौ धारोति वदेत्यहं त्रिभुगैर्भयं
 वयं कुरिस्सर्वसमृद्धः ३१ कवशां कुरिस्सर्वस्त्रीपुरुषांते वयं कुरिस्सुदृढं दृढं यद्वैयुष्यायुमंहरवद्विभा ३२ ॥ प्रणव इति कामस्या श्रीशक्तिः
 हीनो वलभ्यो हिनेगजपुत्रिनेभ्यश्चिजये गौरी माया भिभुवनं कुरिस्सर्वकवशां कुरिस्सर्वस्त्रीपुरुषांते वयं कुरिस्सुदृढं दृढं यद्वैयुष्यायुमंहरवद्विभा ३२ ॥
 हीं २५ अन्तरंगनास्वाहा २६ षडंगमाह रामातिथियानवमन्त्रान्तरमाह गारोति गारं श्रीशक्तिः हीरुदयं नमः भगवत्सूर्यं अमोवः सह कृमिकाति २९

मन्त्रान्तरमाह अयमिति अयं विश्वस्यः श्री कामहीनः षडंगमाह हीति २३ मंत्रान्तरमाह पूर्वोक्तिरिति विश्वस्यर्णमन्त्रवर्णचतुर्दशास्यत् माहे श्वरीत्यं

अत्रोक्तम् २३ षडंगमाह चतुर्दशेति दीर्घवक्ष्यते श्वतुर्दशद्यसुरैः षडंग १७ ध्यानमाह गीर्वाणेति गीर्वाणदेवाससम्पूहैः पूजितं पादपद्मयुग्मं अं कुं

स्वाहा नैक वक्ष्यते मंत्राजः समीरितः प्रजो मुनिर्नवतुल्यं देवगैरी त्रैलोक्यमोहिनी ३३ देवता वीजशक्तौ माया साहाय्यदेवमात्रं च
तुर्दशदशाष्टदशैकादशावर्णकैः ३४ दीर्घाद्यमापयायुजैः षडंगानि समाचरेत् मूलेन व्यापकं कृत्वा व्यापयेत् त्रैलोक्यमोहिनीं ३५ गी
र्वणसंधा र्वितया दयं कर्त्तव्यं प्रभावात्तद्वर्णकं रोस्वरा रक्तांकरस्तेष्वन्यव्ययुज्जुदेसंस्थितं सैषां रधनीं प्रिं चासुंदरैः ३६ अयुतं
प्रजयेभ्यं नमस्कृतं धृतं संयुतैः पापसैर्जुह्यानीधेया गते गिरिजां यजेत् ३७ केसरे वंगमाराध्यावास्या ध्यायन्तमध्यागाः श्लोकैश्च
रातदस्त्राणि न दहतिः परित्यजयेत् ३८ इत्यमारा विना देवी प्रयच्छेत् सुरवसंपदः तंडलैश्च लज्जामिञ्जैर्लवंगैश्च योजितैः ३९ क
ह्यैरभैरुक्तैश्चैर्जुह्यावाहिना यं तस्या विधाया वरावया स्युर्मसमव्यतः ४० एविमंडलमध्यस्थादि कौंठ्याय न जयेन्ननुं अ
श्वेन रशानं ता वनतुल्यं बोधायकं जगत् ४१ नैमोहं सान्त्वयन्तमैकारं स्थं प्रशांकयुक्त्वा नौप्यं वार्धनिर्कं एतं द्युतं राजमुखातिचं ४२
एषा विमुखिवर्था तमुखिवर्मा पारमार्थिकैः ४३ विदेविमहादेवि देवा विदेवि सर्वे च ४३ जनस्यैव मुखं यथा नमव प्रदं कुं हे देव्यं वंदे
प्रियां नमो नमो वचना रिशब्दैर्विर्मितः ४४

इत्येवं द्युतं तेन ह्येनोपवः गत्वा दिक्रमयुः अनीरु कर्णः ३८ तंडविदः तैर्युतं कृत्वा स्वमग्नेषु माया हीरमाध्यां आत्मसुः अनेन तं स्वरुं ४३ ददति प्रिया सा हा ४५
तैर्भैरुभ्यस्त्वराज विमुखिवर्था तमुखिवर्मा पारमार्थिकैः ४३ विदेविमहादेवि देवा विदेवि सर्वे च ४३ जनस्यैव मुखं यथा नमव प्रदं कुं हे देव्यं वंदे
प्रियां नमो नमो वचना रिशब्दैर्विर्मितः ४४

ਸੰ.ਦੀ.
ਜੈ.ਰਣ

२२

三

मंत्रान्तरमाह अयमिति अयंविंशत्यर्थः श्री कामहीनः षडंगमाह हीति २३ मंत्रान्तरमाह पूर्वोक्तोति विंशत्यर्थे मन्त्रवर्णञ्चतुर्दशस्य त माहे श्वसितं
त्ये ममाभिमतमन्त्रे हि देहीति वर्णान् चारयेत् अन्त्यूर्ते स्थाहि संतेऽस्त्विवत्तत एकगणार्णवान एकत्रिंशदर्थः २४ षडंगमाह युगोति मन्त्रान्तरमाह
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं नमः भगवति नमो हे श्वरि मन्त्रमभिमतं अन्त्रे हि देहि अन्त्यूर्ते स्थाहि ॥ ॐ श्रीं हीं नमः भगवती माहे श्वरि प्रसन्नो वरदे प्रसी
दस्व जगदिभिर्मिष्टैर्मन्त्रास्मिन् धनसचयैः कुबेरसहस्रैर्मन्त्रा जायते जनवाहितः २५ अयं मा कामवर्जो हि नाष्टादशैः सारः द्विनेत्रवेदं दं
द्विनेत्रार्णं रागो रितं २६ पूर्वोक्तं मन्त्रैर्न्यर्णममाभिमतमुच्चरेत् अन्त्रे देहि युगं चाधिभवेत् करुणार्णवान् २७ युगार्णवेदं संसाध्यैव
इत्यैरंगकल्पनं प्रणवः कामत्याशक्तिर्नमो भगवतीति च २८ प्रसन्नपारिजाते श्वर्ष्यन्त्यूर्ते नलंगनां चतुर्विंशति वर्णान् कामन्त्रः सर्वेषु सप्त
कैः २९ रागास्त्रिवेदा नार्धभिर्वेदहैः षडंगकम् गोर् श्रीं शक्तिं ददयं भगाभिः कामिका सहे ३० माहे श्वरि प्रसन्नो त्रिवरेदं दयदमुच्चरेत्
अन्त्यूर्तो न्यप्रज्ञोति यं च विंशति वर्णवान् ३१ रागवर्दयुगवर्दवेदं नेत्रार्णैः स्थानं षडंगकं ९ बां चतुर्णामं चाणामन्यत्सर्वतु पूर्ववत् ३२
त्रैलोक्यमोहने गौरीमन्त्रः संकीर्त्य तदुन्मथाया नमो तं ब्रह्म श्रीं गजिने राजपूजिते ३० जयं तैविजये गौरिगो धारीति वेदस्य दं अभुर्गोपं मेव
वशां कुरिस्सर्वसमृद्धः ३१ कवशां कुरिस्सर्वस्वी पुरुषां तैवशां कुरि सुहृदं ददयं देयुषवा युगमं हरवह्निभा ३२ ॥ प्रणवरति कामस्था श्रीं शक्तिं
हीं नमो ब्रह्म श्रीं जिते राजपूजिते अभयविजये गौरि गार्थाशे भूय वनशं करिस्सर्वलोकवशां करिस्समृद्धं वैवर्वावा ही स्थाहि ३३
ही २५ अन्तरागना स्थाहा २६ षडंगमाह रागमिति धयो नवमन्त्रान्तरमाह गोरोनि तत्र ज श्रीः श्रीं शक्तिः हीं ददयं नमः भगवत्स्वरूपं अंगो वः सह क्वामिकाति २७
अभिकवली साहा स रूपमन्यत् २८ षडंगमाह रामोति अन्यतु ध्या न पूजा प्रयोगः पूर्ववत् २९ गौरीमन्त्रमाह मायेति माया हीं ३० गोयं वः भवोनमस्तस्य स्रः स्त्रे ३१

सुदुहेवाएबांयुगमसुश्दरघेरवारखवहमाहीखर

भूषणित्वं मेहेहिदरायपयस्वरूपं शुचिप्रियास्ताहा १३ नाणयणमंत्रमाह प्रणव इति लृदयं नमः नाणयणपयस्वरूपं वसुवर्णः छालः १४ धराधियोर्मंत्रमाह अ
 न्नमिति अन्नं मत्स्यन्नं मेहेत्स्यन्नाधिय १५ नयेमगानं प्रदायपयस्वरूपं अन्नसमुंदरी स्वाहा अयं मंत्रो भूमीधूमिपूजने भूमिवीजमसंपृक्तः श्रीपूजायां श्रीवीजसंपृक्तः १६
 भूवीजमाह स्मृतिरिति स्मृतिर्गिः त्रिमनुचंद्रसुक्लओविंदयुतः म्लोएतद्द वो वीजं श्रीवीजमाह वास्तुदक्षिणैरकशीर्वंदयुतो वक्रः शः श्रीइति ध्रियो वीजं १७ वेदास्ते
 भूषणित्वं च मेहेहिदरायपयशुचिप्रिया १८ त्रयस्त्रिंशद्वर्णमंत्रः प्रोक्तो च राहपूजने १९ प्रणवो लृदयं नाणयणपयवसुवर्णकः नाणयणार्चने मं
 त्रः षडंगानि नो वेषेत् १४ धरां वो मंस्वमनु नादस्य भागो भ्रियं तेषां अन्नं मत्स्यन्नमिंसुक्तामिहेत्स्यन्नाधियार्णकाः १५ नयेममोन्नं धा
 णं मेदापयानलसुंदरीं द्वाविंशत्यस्य रोमं चो भूमीधो भूमि संपृक्तः १६ लक्ष्मीपुटसि न पूजायां स्मृतिस्त्रिमनुचंद्रसुक् भुवो वीजं च न्हिंश
 निविंदयुक्तो वक्रः ध्रियः १७ मंत्रादिस्थचतुर्वीजपूर्विकाः परिपूजयेत् शक्तीं श्रुतं वेदास्ते परं च भुवने भूशे १८ कर्मसां शुभगां च
 तिवास्या धाअष्टपत्रगाः षोडशारे मृता चैव मानदा तुं धिर्पुष्टयः १९ श्रीगीर्तं द्वीं श्रीश्यापिस्वधा स्वाहा ददा मय्य ज्योत्स्ना हेमवती
 कृपा पूर्णिमा स ह नित्यया २० अमावास्या तिसृषु अमंत्रशेषार्णपूर्विकाः भूपुरेलो कया लाः सुखं दस्त्राणि न दघ्नतः २१ ॥ ॥
 अन्नमत्स्यन्नं मेहेत्स्यन्नाधिय नयेमगानं प्रदायपयस्वरूपं वसुवर्णः छालः २२
 वेदास्ते चतुरस्त्रमत्राष्टचतुर्वीजा धाश्चतस्त्रः शक्तीः पूजयेत् परावाहयेति ओं परायै नमः द्वीं भुवने भूयै २३ श्रीकमलायै कौसुभगायै मंत्रस्य शेषं प्राये
 वर्णाः चतुर्वीजव्यतिरिक्ताः न त्पूर्विका अमृता धाः षोडशार्दलेषु अः नमः अमृतायै नमः सोमानदायै इत्यादि २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ॥

स्वसमं त्रेतेति वटकाहीनामं अउक्ताः तद्वायवीमाह चाणीति वाणीरेषु कथिमाहे ताभ्यु कथिमायेमीनके तनः क्तिंस्वरूपं श्रेयं १३६ ९४० १४१॥

^{ह्यु कथिमायेमि वरे ह्को कमे चरिधीमदिननः श्यामाप्रकोदयते}

विह्युत्प्रभावलाकार्यामांर्ज्ज्ज्शिकटपूतनां अद्वाद्वासाकांमाह्युत्सर्वनीयाअभीष्टदां १३४ नश्यतिभूतशणकिन्यअसांनामश्रुते
रधि भूमंदिस्सकोणेषु चत्यादिषु यजेत क्रमात् १३५ स्वसमं त्रेते वटकंगलेष्टांस्तेन यालकं दुर्गोर्न हहिर्द्वादीनर्वज्जादीनधि पूजये
त् १३६ भृगुहस्य चतुर्द्विष्टु चतुर्वाद्या निपुजयेत् ततसं सं च विततुं वने च सुधिसाभिधमे १३७ द्वादश्या च रात्रौ रेचं लघुश्यामां यजेत्
यः सर्वासांसं यत्तं पात्रमचिराज्जायते सतां ३८ चाणीभ्यु कथिमाहे तां विद्युद्देहीनके तनः कामे चुरीधौमहीति तन्नः श्यामाप्र
चोदयात् १३९ एषोदितागुमातं गीगायत्री स र्वसिद्धिदा अनया पागवस्तु निमो ह्येन स्याः समर्चने १४० मातंगीमंत्रसंश्रोक्तः
प्रयोगाअत्र कीर्तिताः राजानेराजपुत्राश्च सुदशो मटमं व्यासः १४१ दास्यामनोवचः कायेर्मवंस्य स्याउपासितुः शणकिनीश्रे
तभूताश्च धार्विर्गुं न नश क्रयुः १४२ पूरिणा किमिहोक्तेने देवीयमस्वितेष्टदा यन्मनुस्मरणदेव नरो देवो यमो भवेत् १४३ देव्या
उपासकैः पुंभिः स्त्रिया निद्यानजानुचिन्तं देवीवन्माननीयास्तामनेभीष्टममीप्सुभिः १४४ ॥ ३६ ॥ इति श्रीमहीधरविरचितं
नेमं चम होदधौ बालालघुश्यामानिरूपणमष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥ इति नेमं चम होदधिनौकायां बालाश्यामानिरूपणमष्टमस्तरंगः ८ ॥

मलिकेति कीरखरय्यामस्यंशुकपिच्छनीलां १२१ रतिपूर्वकारतिथीतिमनोमवाः १२२ उर्वर्याद्याअष्टौकमाअष्टौपस्यादीनांन्यासवत्
त्रिकोणपंचकोणषट्फलबोडपपत्रके वेदद्वारधरागेहावनेयंत्रेविधानतः १२३ देव्याअग्नेयार्धयोऽष्टतिस्त्रिचंद्रानिपूर्विकाः
रक्षाज्ञानक्रियाशक्तिः कोणेधयादिषुत्रिषु १२४ त्राणनयंचसुकोलेषुकिशरेधंगदेवताः त्रास्याद्याअष्टपत्रेषुयन्त्रायेषुलिमा
टिकाः १२५ यजेतबोडपपत्रेषुर्वस्याद्याः कल्पकाअधि॥ प्रयोगान्नन्यासवनकुर्वाद्दस्यादीनांप्रयत्ने १२६ मृगहस्याचतुर्दिसुयोगिनीः
परिभ्रजयेत् गजाननासिंहमृगवीर्याणांकाकतुडिका १२७ उष्ट्रग्रीवाहयग्रीवावागर्हाग्रभानतां उत्सृज्यकाशिवारंवाभयूर्यविकटाननां
१२८ अष्टनक्षत्रकोटरासीकुड्मविकटलौचनं सममर्चयेद्विश्राम्यामेताः बोडशयोगिनीः १२९ शुक्रोदरीलज्जिह्वाभेदंष्ट्रावनरांननां
अस्यासीकेकरासीचंद्रहेतुंशसुराप्रिया १३० कपालहरसोरनोदरीभुकेत्येनीकयोतिर्को॥ पाशहता
दंडहस्ताप्रचंडेत्यपिबोडश १३१ पूज्याकीनायादिभागोप्रतीच्यांचंडविक्रैमाः शिशुसुद्रीपापहर्त्रीचकौलीरधिरपापिनी १३२ वसा
धरागर्भमंसीषाचहस्तांनमालिनीं स्थूलकेशीहहतकुक्षिः सर्पास्याधिनवाहनी १३३ दंडशूककराचौर्ध्वमंशीर्ध्वनिबोडशी सं-
पूज्याचनरस्यांतुबोडशेवहवानेना १३४ व्याजास्याधूमसिः श्वासाचोभैकचरणेर्दृढकं नापनीशोषणीहृष्टिः कोटरीस्थूलनासि
प्रयोगान्न न्यासेयद्याप्रयोगात्तद्यापूजायामपि २४ योगिनीराह मंजाननेस्यादि २५ प्रतिदिशंबोडश २ यथार्थनामन्यःसर्वाः २७ कीनायादिभागोदक्षिण

अप्सरान्वासमाह कामाद्या इति लीतिर्वशीकन्यकायै नमो मूढिरन्यादिनेत्रयोर्हर्कल्योर्हर् ११३ अप्सरस आह उर्वशीति १४ कन्यान्वासमाह यस्मिन्ति १५
नमो नामदनादिकाः कामवीजाद्या यस्यादीनां कन्यका अप्सरसिद्युन्यसेन असयोर्हसनयोर्ह एकैकान्यत्र स्त्री यस्य कन्यकायै नमो दक्षांसे स्त्रीर्गधर्वकन्या
ह्यौ स्त्रीकस्य कन्याये नमो दक्षांसे ॥ रन्यादि
ममोक्तं ललाट

कामाद्याः कन्यकाप्रानां अष्टावप्सरसो न्यसेत केमालेनेत्रयोर्वक्त्रैर्कल्योः ककुदेषि च ११३ उर्वशीमेनकां रंभो धूमवी युंजि कौस्थ
ली सुकेशीमंजु घोषा च महारगवतीतिताः ११४ यस्य गंधर्वा सिद्धेर्नां कन्यकानिरनंगयोः विद्या धर्म किंपुरुषा पिया चानभयी हनाः
११५ असेयोर्हृदये न्यसेत् नजनयोर्नरैर्कमात् गुह्येष्वाधारदेशे च नमो नामदनादिकाः ११६ गोराद्या न नमसा युक्ता नमूलवर्णन्यविंदु
कान् न्यसेत्संधिषु सप्रोषकरणोः पादयोरापि ११७ न्यासानेवं विधा भू कन्वामानं गीमनसा स्मरेत् सुशर्णवां तदी पस्थरत्नमंदिरमध्यगे
११८ माणि कृपाभरणान्वितां स्मितमुखी नीलोन्यलाभां वरां रम्या लज्जकालि सयादकमलानेन नयोल्लासिनीं वीणावादननम्रं रं
सुरनगां कीरल्लक्ष्म मलांभोतं गीष्वाशिरोस्वरा मनुभेजेतां वृत्तपूर्णननां ११९ लसंजवेनमधूको न्येर्जुर्हृयादयुतं धुभिः मानं गी
मोदिने श्रीहं लघुष्वा मां प्रयुजयेत् १२० ॥

॥ कायै नमो वामांसे रन्यादिप्रयोगः १६ वर्णन्यासमाह नारेति प्रणवाद्यान् नमो नाम नम
विंदु कान् मंत्रवर्णन करपादक्षांसे संधिषु सप्रोषु न्यसेत् जौं स्त्री नमो दक्षे से जौं जौ नमो दक्ष कूर्परन्यादि ११७ सुराणो वस्यां तदीयं ह्येवं नय इत्तम
॥ ११८ ॥ १२० ॥

द्विरं नम व्यगसिं हासनो स्थितां व्यायेन ११९ ॥ १२० ॥

॥

न्यासा नाह वागिति ऐरत्वेनमःमूर्द्धिहीप्रत्येनमोत्तदिक्किमनोभवायेनमःपद्मेः इत्येति ऐरत्वा प्रत्येनमोसुरे ही स्तनप्रत्येनमः कंठेक्किंक्रियाप्रत्येन
मोत्तिगे प वाणेप्रतीजानि द्वांहीत्किंस्त्रिंशंति नम्यर्वकानद्रावणाद्यान् वाणान्कास्यहृत्स्वपादन्यसेन द्वांद्रावणवाणायनमद्रादिकंशिरः आस्यंमु
खं ७ षडंगमाह रामेति मज्जकान्यासमाह ३ इति दीर्घस्वर आद्यायस्येदशां विलोमतो दीर्घस्यादीनामष्टकमाद्ययासां नामानरो मूर्द्धादिषु न्यस्याः न य
आसां त्रीणां के न्यकाये नमः एवमर्चयमर्थादौ नामा हेभ्यर्चयुं न्यकाये नमः वामायो
शक्तिरुक्तास्त्रिधाभीष्टसाधने विनियोजनं वाकपूर्वकारनिमूर्द्धिहीतिमायादिकोत्तदि ४ पादयोर्विन्यसेनमन्त्रीकामपर्वामनोभवां
इच्छाशक्तिंज्ञानशक्तिंक्रियाशक्तिं कमाल्यसेन प वाङ्मयाय कामवीजाद्याभुवे कंठे शिषे न य द्वां वलं शेष एं वा एं ता प न मो हे ना
मिधं १०६ उच्चारनं कमात्पंचवाणे प्रतीजपर्वकान् कास्यहृदगुं स्वपादेषु न्यस्य कर्षा न षडंगकं १०७ रामानिर्गुलं रामोर्गनेन व
लेर्मनुस्थितैः ३ नमोनाकन्यकांतात्रास्याद्याअष्टमानुरः ८ दीर्घस्वराद्यदीर्घस्याद्यष्टकाद्याविलोमतः विन्यस्यमूर्द्धिचौमांसवोमपार्श्वधुना
मिनः ९ दृष्टपार्श्वदक्षिणंसेकं कनं हृदयं पोरपि नारचागादिकोअष्टौसिद्धयः कन्यकांतिमाः १० चतुर्थीनमसायुक्ता न्यस्याः कालिका ११
चिह्नियु कंठे च हृदयेनाभार्वाधारे लिंगमूर्द्धनि १११ अंलिमार्गमहिमां चालिधिमार्गं रिमं र्द्रां वाणिनां चाषां प्राकं म्यं र्द्रां विरिष्यष्टसिद्ध
कीदृश्योमातरः ३ नमोनाकन्यकांताः चतुर्थीनमोनाकन्यकायदमंतेयासांताः यथा आस्यां त्रास्तीकन्यकायेनमोमूर्द्धिर्त्वामाहे च्युरीकन्यकायेनमोवामा
सि उं हां कौमारीकं वामपार्श्वं त्र्यं संधेष्टवीकः नाभौ लंघां वागहीकः दृष्टपार्श्वे ऐं षां द्वा एकीकः दृष्टां से औवां चा चामुं डाकन्यकाये ककुदि अः लां म हा ल
स्मी कन्यकाये लदिसिद्धिन्यासमाह नारेति ११० औं ऐं अं लिमासिद्धिकन्यकायेनमोमूर्द्धिस्त्रादिसिद्धय इति अनुपदं वद्वमाणाः अलिकंललादं विह्वि

ललिते मदीष्टि नां यो धि नं दं हि वां छिन कुरु स्वरूपं ज्वलनका मिनी स्था हा चतुर्दश माह मा मे नि का मप द्या दि पु श्री णां प्रत्निकं त्रयं स्तीं ३ श्री ३ ह्रीं ३ इन हयं
यं मम अनलंगना स्था हा स्वरूप मपरं एते चतुर्दश वाला मे राः ते वा मृष्या दा ह दक्षिणे ति ६० ध्यान माह पाशे ति अंकुषा स्रस्रं जै दक्षयोः ६८ हय
करवीरः सायकैः पुं च वा ए हि व ताभिः दि गधी णां द्वै रि नि दि श्वा भी शे स द ह्वै श्वे त्र्यर्थः १०० वाला मुक्ता लघु प्रया मा मा ह वा गवी ज मि ति वा गवी ज
रं नमः ३ की पूजा ललिते मदीष्टि नां यो धि नं दं हि वां छिन कुरु स्वरूपं ज्वलनका मिनी स्था हा चतुर्दश माह मा मे नि का मप द्या दि पु श्री णां प्रत्निकं त्रयं स्तीं ३ श्री ३ ह्रीं ३ इन हयं
अष्टा विंशति व लो यं म नु र ह प्रिया म दः का मये द्या दि पु श्री णां प्रत्निकं त्रि नयं व दे तं ६४ त्रिपु रा ने मुं द शी त स र्व ज ग द न ह यं व श कुरु ह
यं प्रत्नं वै लं दे स्ती न लो ग नां ६५ सर्वा भी ष प्र दो मं त्र ज्ञो वा ए गु णा स्रः चतुर्दश ना मे न वां म नू ना मृषि रा रि तः ६६ दक्षि ण मूर्ति स
रत्नं छं दे गा य त्र मृ च्य नं त्रि पु रा दे व नां वा लं ष डं ग मा त का स मं ६७ पां शं कु श्रे पु स्त क म स्रं सू त्रं क रै र्द धा नां स क ला म रा च्या र नां
त्रि ने त्रा षा शि शे स र्पं ध्यं पा रित्वा लं ह्यं त्रि पु रा त्रं वा लं ६८ जये त्व स्रं द शं शे न हो मः पुष्पे र्ह वां रि ज्ञेः पूजा पूर्व हि ते कृ ठि गै र त्या र्थे भ्र म्मा
य कैंः ६९ मा त भि र्दि ग धी णां श्वे प्र यो गः पूर्व व त्र नाः लघु प्रया मा म र्था व स्ये स रा णा द्वि ह द्या यि नीं १०० वा ग वी जं द द यं क र्ण क ने त्रं
स ने त्र कः व यो मु कं द मा र्क टा कू मा र्दी र्घ इ सं यु तः १०१ नं दी शे र्वा लि मां तं गि स र्वा नि ष्ठा हं र्क रं वै भ्वा न र धि र्वा नी य मं त्रो विं श ति व
र्ण वा नं १०२ म द नो स्य मु निः प्रो क्तो गा य त्री नि द द्या दि कां छं दो दे वी लघु प्रया मा वी ज वी ग व न्द्रि व ह्य भा १०३ ॥ १८ हयं नमः कर्तुं स ने त्र ए
त्रः इ पु न भ्रु छि मु कं द मा र्क टा व वः द स्थि तः यः ष्ट दी र्घं द स यु तः कुं भः चः चां १०१ दी र्वा निं दी डा लि मा तं गि स र्व व रां क रि त्व स्र स्रं वै भ्वा न र धि या स्था हा
१० श्री की श्री श्री श्री ह्रीं ह्रीं छि मु कं द मा र्क टा व वः द स्थि तः यः ष्ट दी र्घं द स यु तः कुं भः चः चां १०१ दी र्वा निं दी डा लि मा तं गि स र्व व रां क रि त्व स्र स्रं वै भ्वा न र धि या स्था हा

ॐ। दी.
जी. न. ८
७५

[illegible]

सप्तममाह कमलेति कमलाब्धीपार्वतीह्रीं कामः क्षेत्रस्वरूपमन्त्रत् अष्टममाह भुवि विति भृगुः सः ब्रह्मा कः क्रियालः वन्द्यैरः एतैर्धुनां प्रातिरीकारः
त्रिषासविंदुः स्त्रीदह्नोरः अंसः सः महाकालोमः भुजगीरः पुरुषोत्तमोयः एते मन्त्रवर्षांश्चंद्रसंयुक्ता औत्तविंदुयुगाः तेन दस्योऽवामवीजरे लहंत नमः स्व
शेषं वह्निप्रियासाहानवममाह लहोस्वतिहोस्वत्तितयं ह्रीं ३ अनंत आस्वरूपमपर ८८ दशममाह मायेति मायाहीमं श्रीमन्मथः क्षेत्रस्वरूपं

मस्य सुखं न ते हि हि साहास स दृष्टा सः भृशं ब्रह्म किं यावन् हि युक्ताश्रितं स रात्रि या ८५ दहनो न्यमहाकात् पुजं गपुरुषो जमाः म
न्वाद्योऽस्युक्ता हि नो यं बीजमीरितम् ८६ वागवीजं विपुरे सर्ववांछि नंदे हि दमतः वन्दे प्रिया स स दृष्टा वल्लोपं कीर्तिनामनुः ८७ दृष्टे
स्वान्वितयं प्रोदत्रिपुरे नं ते राग्य मे ध्वं देहि प्रिया वन्दे मं नृष्टा दृष्टा सः ८८ माया रमा मन्मथां नेत्रिपुरा मन्दने बंदं सर्वेषु भंसा धया मेने प्रि
यां स्तोषा दृष्टा सः ८९ दृष्टे स्वाक मस्तानं गोवास्तं त्रिपुरे पदम् मदाय नां न गोविदां कुरु ददं न्निवद्वभा ९० मं नो विद्या निवर्णे यं माया प
र्यामने भवः पुरा पुरं तीत्रिपुरे सर्वमीप्सितं मुच्यतां ९१ साधया नैल को नाय मन्मो वा चैति वल्लोपः को महेन्द्र मायुर्मन्मार्थ सुकत्रिपुरे पदं
९२ स्वस्ति नो ते मदीयानि नाम ते योषित पदं देहि वांछितं भित्तु त्वा कुरु ज्वलन कामिनी ९३ ॥ ९४ ॥ एका दृष्टा माह दृष्टे रवेति दृष्टे स्वाही क

[illegible]

१३ ओं ओं श्रीं श्रीं निवणन्त्रिपदी किमपेक्षितं दृष्टिं कृतं कठसारा २८॥

गायत्री॥ त्की त्रिपुर देवि त्रिपुरासुरकामेश्वरी धीमहि नमः ॥ त्की ने प्रचो यान् २४॥ श्री त्कीं हीं ऐं त्कीं सों ह्रीं त्कीं श्रीं ८॥ ऐं त्कीं सोः चाल त्रिपुरे स्वाहा १॥

भूपुरद्वयं चनः कोणद्वयं कीदृशं परस्परं व्यभिचिन्नं एकं विदि गानकोणं आपरं दिक्कानकोणं मिमर्षः ७६ संपानसाधिनं आहुनि शेषधुनेन संयोगि
नं ७७ गायत्रीमुदरानि कामोनि कामः त्कीं भगि एयुनं विषमः मेवकः शः स्वप्नीशं वकारमारुढः श्वसनेनः अग्निः रिस्वरुषमन्यन् ७८ चालाभेदे प्रथमं
चानरमाह मायेनि माया हीं कामः त्कीं नार्त्तयसौः अंबारुढं द्युनं ह्यौः प्रथमः ८० मंत्रानं रमाह अनुलोमेति ऐं त्कीं सोः सोः त्कीं ऐं द्वितीयः मंत्रानं रमा

वाहिर्मनकपावे ह्यनदहिर्भूपुरद्वय कामवीजलसनकोणव्यभिचिन्नपरस्परम् ७६ यंत्रं त्रैपुरमारव्यानं जमं संपानसाधि
नं बाहुना विधुनं दद्याद्वनं कीर्त्तिसुखं सुगान् ७७ कामानं त्रिपुरादेवि विद्वहेका विषमं भवकः स्वप्नीशमारुढः सनेनो निश्चयी
महि ७८ ननु त्कीं ने प्रचो दांते यादना कीर्त्तनादधैः गायत्री त्रैपुरी सर्वसिद्धिदासुरसेविता ७९ अथ च ह्युगमि चालायाभेदागान
मगोपिमानं भाषा कामो वारुढं नार्त्तयस्य सरोमनुः ८० अनुलोमप्रतिश्लोमाभ्यां चाला मंत्रः ८३ स्वरः चाला श्री कामदेवैर्वा संदि
पुदोयनवासरः ८१ चालाने चाल त्रिपुरे स्वाहा मोदरावर्णवान् वा कीमो व्योमभविदुपगमनुर्दोर्धधरः ८२ विनो की त्रिपुरे सि
दिदेहि देवमनुवर्णवान् माया लक्ष्मीर्मनोजन्मा त्रिपुरातेनुभारति ८३ कोविन् देहि देहदं बोद्धाणो मनुः स्पृनः कमलार्णव
ह-चलेति श्री त्कीं हीं ऐं त्कीं सोः हीं त्कीं श्री प्रितिनगीयः ८४ मंत्रानं रमाह चालेति ऐं त्कीं सोः चाला त्रिपुरे स्वाहेति चतुर्थः पंचममाह वागिति वा कुरे कामः ॥ गी कामसिद्धि
त्कीं व्योमभविदुपगमनुहसविंदुयुतओ ह्यौ दीर्घधरः वापिना कीलास्वरूपमन्यन् षष्ठमाह मायेति माया हीं लक्ष्मीः श्रीमनो जन्मा त्कीं ८५ द्वयं स्वाहा स्वरूप
५ ऐं त्कीं सोः चालपुरे सिद्धिदेहि नमः १५ ॥ ६ हीं श्री त्कीं त्रिपुराभारति कविन्देहि स्वाहा १६ ॥ ७ श्री हीं त्कीं त्रिपुरमालिनिमस्यं मुखं देहि स्वाहा १७ ॥

कामवीजस्य दीपनीमाह त्रिनेत्रनि स्वरूपं वैकुण्ठमः दीर्घसंज्ञाऽङ्गिमः सः सधगः ओगमः स्तोमचंद्रानिद्राभं कुरु स्वरूपं शिवावा एणं एकादशव
 एणं मध्यवीजस्य दीपनी इह गारत्रनि गारः प्रणवः मोक्षकुर्विनि स्वरूपं अंनस्य वीजस्य दीपनी ७ क्रो दीपनी अंतं राविना आशु धिना पिवा लानसि धमि
 स्त्रिनेत्रे दिनि वैकुण्ठे दीर्घस्य सधगं निमः निद्रासचंद्रा कुर्वना शिवा एणं मध्य दीपनी इह गारो मोक्षव कुर्वना पचा एणं मस्य दी
 पिनी दीपिनी मंतस्य वा स्या धिना पिना सिध्यापि इह रं रं हस्यं नाख्ययं कृतं कृतं वेष्टाहं परीक्षिना यदा न व्यमन्यया दा नृदेष्टदं
 इह वागान्य कौमो न प्रजयेदरी एणं स्तोमहेतवै कौमवागान्य वीजानि त्रैलोक्यस्य वशीकृतौ इह कौमो न्यवा एणी वीजानि भुक्तये निपमो
 जयेत् प्रजाविधौ कुंवा लया सविधानं च यद्गुरुत्वं ७ दिव्यो षंश्चेति सिद्धो यो मानवो षडनिविधा परप्रकाशः परमेष्ठानः परशिवसं
 या ७१ कामे भूरसतो भोक्षः षष्ठः कामो मृतोतिमः एते सप्तैव दिव्यो वा आनंदपदपञ्चिमाः ७२ ईशानाख्यस्तनपुरुषो योगारब्धो नाम
 देवकः सद्योजानं रमेयं च सिद्धो वाख्याः स्मृतावुचैः ७३ मानवौघः प्रविशेयः स्वगुरोः संप्रदायतः नव योन्यात्मकेयं त्रैविलिखे न्मध्य
 यो निनः ७४ प्रादृष्टि एतेन वीजानि त्रिवारं साधको नमः त्रींस्त्रीं नव एणं सिंगा यथाः अष्टपत्रेषु संलिखेत् ७५ ॥ ८॥ इह जपमेदानकममे

इनाह वागिति ऐसौ त्रीभि नमरे नाया पक्षि ऐसै रिति वशीकरणे इह त्रीं सैः ऐमिति मुक्तै ७ दिव्यो वा नाह परप्रकाश इति ७१ आनंदपदपञ्चिमा इ
 निवस्यमाणत्वात् परप्रकाशानंदायनमद्रयादिप्रयोगः ७२ सिद्धो वा नाह ईशानाख्य इति ७३ यन्त्रमाह नवेति गा यथा सविष्टरागा यथा वस्यमाण
 त्रिनेत्रे दिनिमहा स्तोमं कुरु १ मध्या ॥ परप्रकाशानंदायनमः ॥

शाकेदारप्रकारमाह योजयेदिति आयेत्तान् योजयेत् वराहोदः भृगुः सः पावकोरः तेन इहैद्वितीयस्यादौ नभोदंसौ हसौ अनिरेकः तेन हसकच
 शिमिकुट्टं हनीय स्वादौ खं हः अंते धूमकेतनो रेकः तेन हसौ एवमौ वीजाना अस्यां शनं जमायां बालाया पहीनास्यात् पहात्रैवाधेने च वीजैरेक
 योगाभावात् तेन हसौ हसौ मध्यमं तदेव दृष्टायो ह्यरे प्रकाशं तरन वार्त्तजमाह आद्यमिति एह सौः त्कोर एह सौः एव न जमः शायमिव
 योजयेदादिमे वीजवराहभृगुपावकान् मध्यमादौ नभोहसौ मध्यमानेन पावकम् ५८ आदावंते च तार्त्तये क्रमान् खं धूमकेतनं एव
 जमायां तं विद्याया पहीना फलप्रदा ५९ यद्वाद्यं च रेमे वीजैरेकं नियोभ्येत् शायो ह्यरे प्रकाशे न्योपहायं कीर्तिनो वृषः ६० आद्यमा
 ह्यं च तार्त्तये कामः कामो धौ वापमव अंत्यमं त्यमनं गंचन वार्त्तः कीर्तिनो मजः ६१ जसोयं दौत वाषा यं बालायां विनिवर्तयेत् च न न्या
 हादि नो मं चो जसौ नि कीलता करौ ६२ त्रिसराश्चेतनी मं चो धरः शान्तिरनुग्रहः तादादि ह्यदयांतः स्यात् कामु आत्मादिनी मजः ६३
 तथा न यार्त्तं वीजानां दीपनेर्मनुमिद्विभिः सुदीप्तानि विधाया दौ जपेता निष्ठसिद्धयं ६४ वदयुग्मं सदीर्घां वृत्तुं स्मृतिं वाचा वने नैगं सन्य
 सुते नैगं स्नाह कुक्कुरा न वार्त्तं यदीपनी ६५ ॥ ८ नैकः चेतनी मं च माह कौत्सिधरेणां तिर अनुग्रह औ एतेन यः सुखः केमस्तं येन नी
 मं नः यमं जमे बालानि कीलता करौ ति आत्मादिनी मं च माह तादादि शिति अंस्ते नम रते अपमप्युक्ती लनकरः ६३ वागीजस्य दीपनी विद्यामाह व
 दिति सदीर्घां वृत्तुं अर्नतगोस्मृतिं बालौ आस्थितौ गवो मेन वा सनेत्रः सत्यः दिनादकः निः वाकरे इयमा वस्य वीजस्य दीपनी प्रकाशक र्त्तौ ६५ ॥

मं. टी.
नो. नं. ८

५२
५३

वशीकरणाभ्यानें कथेदसे ५६ बीजानामिनित्रयाणामि मर्थः ५७ तावोजभ्या नमाह विवेचि अस्मत्ताज्ञानमुद्रादस्योः ५८ कामबीज ध्यानमाह ॥
सुखेण वा यथा देवी रत्नालंकारभूषितां प्रसन्तामरुणां ध्यायेत्तवशीकरणासिद्धये ५६ अथ प्रत्येकमंत्रस्य जप ध्यानविधिं ब्रुवे यथा
कोट्यप्रकारं च बीजानां दीपिनो रपि ५७ विद्यासमास्तमुक्तया लमुद्राज्जलं कुंक्षममानक्यं तिं मुक्तफलस्य त्वं कति श्रेणिभिर्गोपी देवी त्वां
स्मरेद्वाक्यमसिद्धिहेतोः ५८ ध्यात्वेवं काम वंस्तस्य त्रयं भुक्ता वरा वरतः शुक्ल चंद्रनालितं गोमौक्तिकभरणान्वितः ५९ जपित्वा न द्वा
षां शो नयात्वा यकुसुमैर्नवैः जुहयान्मधुरानैर्धर्मसकविर्गुचनिद्रियः पूं भजेत्कल्पवृक्षा ५९ ह्रीं सरत्नासने सन्निवृण्मं लघूर्त्तगास्मीं
करैर्बीजमूरं कपालेषु चापं सपाशां कुंक्षं च वरुणं देवानां ५९ ध्यात्वा देवीं जपेत्सस्य त्रयं यो मध्यबीजकर्त्तुं च स्वाह तैरन्तभूय एवेतं त्रा
लेयनः ५२ द्वांशं मालनीपुष्पैश्चंद्रं दनलोत्तिगैः जुहयान्मधुरायाः स्मृत्तिस्तोकीजननाः स एतत् ५३ आस्थानमुद्रां मुनिकुंभं
विद्यां अलसं जं स दधनीं करोगैः चिद्रूपिणीं शारदं चंद्रकांतिं चोत्तमोक्तिकभूषितां ५४ ध्यात्वेवं च त्रैलोक्यं जपेत्सस्य त्रयं सुधीः
सिने कस्तूरुलेपाद्यमाना नं देवतां स्मरेत् ५५ मालनीकुसुमैर्हस्ता चंद्रनामैर्दशांशानः लक्ष्मीविद्यासुकीर्तिनामा धारो जायेते विशान् ५६
देव्यां शक्तीं कोलिनां च विद्येयं नन्वसिद्धिदां शायो हारमयो न कीलं विधाय जपमाचरेत् ५७ ॥

कपालचापपाशावामेषु निवृण्मस्थितं ५९ तृतीयबीज ध्यानमाह आस्थाने निवृण्मना मुद्रास्य जौदस्यो ५४ ५५ ५६ ५७ ॥
५२

विदिष्टासु आग्रादिषु वखादयः वसुभ्योनमदस्यादिनं द्यावर्त्तसगरः चंद्रः कर्पूरः पुरंगणुत्तु अपराजितापोऽप्यकारपुष्पावह्नौ तदीयान्यपराजितानि नैः
 ३६ सारद्यं मधुः ३८ तिलकमाह रक्तेति मांसीजदामासी ३९ भागानाह भूमिरेकः नंतानव अथयश्चत्वारः दिष्टोदया निगमाश्चत्वारः रक्तचंद्रनेमिकभागम
 अपमृत्युं जयेर्कं नीगुडुच्चादुपधयुक्तया पयोक्तर्वाहोमानुनिरोगायुः समश्नुते ४० सानं कवित्वं लभते च द्रागुरुपुंरुनैः द्विजेंद्रावस्थ
 नां यांति कुसुमैरपराजितैः ३६ कल्हारैः स्यान्निपाः कर्णिकारजैः शिनिपिंगानाः कोरंदकुसुमैर्वैष्णवादजाः पादलैर्हृनैः ३७ पालपापुष्पैर्वा
 कसिंहिरज्यासिरज्जहोमतैः सारैः सखीरदध्यात्तान् लाजान् हत्वारुजो जयेत् ३८ रक्तचंद्रनकर्पूरकर्तुः शगुरुभुक्त्वा चंद्रनैके सरं मां
 सीकमाद्गौर्नियोजयेत् ३९ भूमिचंद्रैकनेंद्रोर्द्वैर्कैः सप्तनिर्गोत्तमैः स्मसानेकलभूनस्य निशिनी हारपायसा ४० कुमाय्या
 पेषयेत्तानि मंत्रेण यामिमं चयेत् ॥ विदधानि त्रिकंते न दर्शना हशये जनान् ४१ गजसिंहादिभूना निरास्मान् यत्किनीरपि ॥ श्रयो गोक्षिपु
 कथ्यते न कमाद्यानां सिद्धये ४२ मां नीलिंगपयो जन्म हस्तो कनकसन्निभां पद्मासनगतां चालोत्सहस्रीयासौ विचिंतयेत् ४३ वरणीयवकल
 शपुस्तकाभीनिधारिणीं सुधां स्रवंतीं तानां स्थे वस्त्रं धाविचिंतयेत् ४४ भुक्तो वरं प्राणां कामो रोगनाशो स्मरं द्विर्वं अकारादिस्तका
 न्यादि एतां च कीकृत्य कलषचतुर्दश्याचौ ४ कुमार्पासपेष्पमूत्रेणाभिमंत्र्य तिलकं कुर्यात् वशयेदिति ॥ याकिं न्यता ॥ ऐनवर्णवैद्यवरुणिणी ४५
 निस्वर्कः ४५ ॥ ४२ ॥

मानुस्त्रिंशतिमानुस्त्रिंशतीजपूरं नदसे ४३ रोगनाशध्याने कस्मृतकुंभोदक्षयोः ४५ ॥ रामचंद्राय नमः ॥

अणपूज्याह यो नीति मध्ये यो निमये एवा निनी श्रीति वा धीशाने सुहृच्छिरः शिरवावर्मो लि संपूज्याग्रे नेत्रादि ह्रस्वसंयजेन २४ मध्यं यो नेर्वहिर्भोगे दिष्टु च
 नृगः पंचममग्रे एवं कामान्यजेन वा एदेवी द्राविण्या दासाहन कामवनादि ह्रस्वे च शर्कोः सुभगा वाः २५ दीर्घाद्यामानरः आं ब्राह्मेन मरत्या दिह्रस्वा द्याभैर वाभ्यं
 वेतपद्मास नंदः नंदमोतिः पीठमंत्रकः षोडशा एकातो मूर्तोल्लासायां मूलमंत्रतः २६ आवात्पूजयेद्देवीं मुपचारैः षड्याविधैः देवीमिष्टामध्य
 यो नैत्रिको एर निष्पूर्विकाः २७ वामको एर निंद ह्रे श्रीति मग्रे मजो मवां यो न्यंत्रर्वहिको एण द्वावंगानि पारिपूजयेत् २८ मध्यं यो नेर्वहिः पूर्वो दिष्टु
 चाग्रे सगानधि वा एदे वीसाह देवशर्को रष्टसु यो निष्ठु २९ शुभगो रव्या भर्गा पश्चात्तनी या भर्गा सर्वा एतां भगमां स्तोत यानं गानं वा कुसुमां परा २८
 अनंगमेव लपे नंगमर्दने सष्टशक्तयः पद्मके सरगा ब्राह्मी मुखार्थे च सुभैरवाः २९ दीर्घाद्यामानरः पूज्या ह्रस्वा द्याश्चाष्टभैरवाः दक्षगो षष्टयोरग्नौ
 कार ह्योरव्यमादि मं ३० मत्स्यं को ह्यगि र्प्याख्यं चो हारो र्व्यं कुलां नकं आलं धरं नृयो ह्ये नं को र्दयो र्ठमथाष्टमं ३१ भृगुहेदशादि ह्रस्व चैर्नुकं
 त्रिपुरां नकं वेतालं मनि जिह्वं च कालां नकं कर्णालिनौ ३२ एकपादं भीम रूपं मत्स्यं हाटकं श्वरं शक्राद्यानायुधैः सार्द्धं स्वस्वादिष्टु समर्चयेत्
 ३१ नद्वहिर्दृष्टवदुकं योगिनी ह्येनया लकं गणेशं विदिशा स्वर्च ह्रस्वर्न सूर्यो न्प्रोवांस्ततः ३२ भूतांश्चै न्यं भजेद्दीप्तां ननीशः स्याद्वनवि
 द्योः रक्तो भोजेर्ह नैना र्थो वश्याः सुः सवधैर्नृपाः ३३ नंदो र्वर्तै र्ना प्रवृहसिः कुंदैः पाटल चंपकैः पुष्पोर्विस्व फलै र्वापि होमां ह्यदमीः स्थिरा भवेत् ३४
 अतिनां मायन मरत्यादि २८ दशादिष्टु हेतु कादयोगाः ३० शक्राद्यान् स्वस्वादि ह्रस्व नृकोः पूर्वा चरणा नि कल्पि नदि ह्रस्वे च एवं सर्वत्र ३१ ३२ ३३ ३४

वालायं न मा ह दा मो द र श ति दा मो द र ए चं द द यु तो विं द यु तः एं बा गि नि सै स्त्रा स्य वि धिः कः वा स व णां तीं इ यु तः ल र्द विं द यु तः कीं २ मृ गः सः सं क र्ब ए ओ ने न वि स
 ने न ८ गो ए च यु तः सोः ३ म ध्या ने म ध्या ण किः अं तं बी जं ४ ना भिः पा दां त मा दं बी जं न्य से न ए व म ये पि ५ द द्य क र्द न्य न हि ती यं प रं त नी यं त म योः क र यो र्म से न क ए
 अ स्य बा ला मं अ स्य द ह्य ल म् नो क्ति अ क्ति क र्दः पि उ र य बा द व न म् अ स्तो य क्ति अं तं सोः सै त्र न मा नि धि वि ६ ध्य क र्ज यो वि षो गः
 अ ष्य बा ला मं व द ह्या मि मं नो स से व यं दु नं व ह स्य निः क वे र अ न्या य न वि द्या ध नेः १ दा मो द र अ द यु त आ दं वा वी ज मी मि दं किं ध र्वा स व शं
 नो इ मु क्त का मा मि धं प रं म २ स क र्ब ए वि स र्गो द्यो मि गु तार्तो य मो रि तं त्रि वी जो ग दि तां वा ल्जं ग त्रि न य मो हि नो ३ द ह्य ए ण मूर्ति पं क ति मु
 नि भृं दः क मा त स्य तं द व ता त्रि पु री वा ला म ध्या नि ण किं बी ज के ४ ना भे रा पा द मा ध्यं तु ना भ्यां तं द द या त रं मूर्ति हि दं तां ती यं क मा हे हे
 अ वि न्य से मं ५ आ दं वा म क र्द द द्य क र न्य द म योः प रं म पु न र्बी ज त्र यं न्य स्ये न्मूर्ति हि दं स च व द्या स ६ न व यो अ भि धे न्या से न व ह्मो म नुं
 न्य से त क र्ण यो अ वि व क र्म से न शं स यो र्मु ख पं क र्जं ७ ने त यो र्ना सि क र्पो र्वा च र्कं ध यो र्द रं तं ८ न्य से त क र्प र यो र्ना भो जा न नो स्ति ग म क र्क
 ८ पा द यो र पि ग र्दो च र्पा र्थ यो र्द र ये पु नः सु न योः कं ठ र्दो च र्वा मां गा दि प्र वि न्य से न ९ वा यं वा द्या र ति ग र्दो च र्वा नि म न्मो दि का द्दि का
 म्भीं जा दि कां न्य स्ये न्मूर्ति म ध्या तुं म नो भ वा १० पु न र्वा रं ग न्य का मा द्या स्ति स ए व्वा वि न्य से न अ म र्ते यो वि भु यो नि न्नी यि कां ११ ॥ ३० ॥
 कैः वे गे स्ते त मः की वि अ यो अ न्य मः

जन्ममासकुसुमागुरा अंनमाकुसुमेत्यर्थः १३ संसर्गानं आहतिशेषस्य पात्रानं प्रक्षेपः संघातः नद्युनं हुत्वा संघाताभ्यां स्त्रियैर्दद्यात् किं भूमायै विधाति न भ्रिय
 दत्तदक्षिणायै दक्षिणमादावप्यभ्याराजं दद्यादित्यर्थः अन्यथा फलाभावात् कभिशीमाह माया हीमन्मयः त्रींवासीर्जं ऐह्यं स्त्रीस्वरूपं ध्यानामाह पा
 न् अन्नं गं दीपिके न्यहौ प्राक्काद्या आयुधान्यापि एवं सिद्धमनुमंती काप्ययुतिनो जयेत् १३ दक्षिणैरेणो कस्य पुण्यैर्यो दिवसत्रयं सर
 स्वं जुहुयात् तस्य वप्याः स्युः प्राणिनोऽस्वित्वाः १४ त्वजैर्दक्षिणैर्होवात् मंती कन्यामुवाभ्यात् कन्यापिवरमायो निमासमहितयमभ्यानि १५
 गव्याज्येन ससंघातं हुत्वा साष्टशतं नरः आर्ज्यं संघातिनं दद्यात् न द्विष्ये विधाति न द्विष्ये १६ स्मानदाभ्यां निजं कांतं भोजयित्वा वशं नये
 न सुगंधकुसुमैर्हुत्वा धनमाशो निचां छितं १७ मीयामन्मेषवो जीवे कूर्दीपंचाष्टरो मतुः श्वेधिः छंदस्सुपूर्वो नो कौभेरी देदनास्पृजा १८
 पाशं कुशं विस्तु स रासवा ऐकैर्वहं नो मरुणं मृकाढ्यां उपत्यतं गाभिरुचिं मनोऽं काप्रैर्ध्वं शैरन्नाचिनां प्रलेणभि १९ भूतलसंघात्
 पितृनामर्हलसं पलाशजैः कुसुमैर्जुहुयात् पीठपूर्वो के पूजयेदिमां १९ आदावंगा नि संपूज्या द्दक्षु मध्ये मनोर्भवं मकरध्वजकर्द्वयो
 मन्मथं कौमदेवकम् १९ न नोऽस्य नगरुणा घादं द्राक्ष्या लिन हृदिः एवं सिद्धमनुमंती पूर्वो न योगमाचरेत् १९२ ॥ इति मंत्रम
 हादधौ याष्टिएयादि मंत्रक यानं नाम सप्तम सतरंगः ७ ॥ ॥ इत्येष्टु चाये वामयोः उद्यत्यः सह आगुरादित्यस्तन्यमाकतिं रत्नैश्चिनां व्या
 सां प्रलेणभि प्रकुर्वेच्छोभि १९६ भूतलसंघं च लसं १९० कामदेवं मध्ये योगं प्रयोगं ॥ इति मंत्रम हो दधिनो कायां याष्टिएयादिक यनं सप्तम सतरंगः ७ ॥

मं. दी.
नौ. त. ७
३६

इंद्राणि विंशत्यो ब्रह्माल ईविंदुयुतः कत्ती वसुधा र्वा शत्रु ब्रह्माल त्रु विंदुयुतो भूधरो वः क्षुसंर्गसः ६४ व्यस सर्वेण पंचवीजैः पंचागानि सर्वेण खं
 द्रोस्की ल्पुसः ५ अस्य मंत्रस्य मंत्रो ह नः अक्षिः गायत्री छंदः बाले शि है व ताम मा मि ॥ को को द ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 शास्त्रिषु प्रमयी ना तु भस्य न रत्नी वशी कृतो कृत्स्नभूत निशि व्या ह्यो दरो हि स्या समुद्रज ६० नीलसूत्रेण सवेष्टु चिनाग्रौ प्रदहेदमुं
 सरस्य जस नद्गम्य यस्मै दद्यात्सदा सवत ६१ सैन्यो नित्यं युक्तो न तं दुसंयुक्तो बीजमादिमं एतस्या नंत संस्था ने शो नित्यं को द्वितीयकं
 ६२ इन्द्राणि विंशत्यो ब्रह्माल त्रु विंदुयुतो भूधरो वः क्षुसंर्गसः ६३ सर्गिहंसैः पंचमः स्यात्पंचवीजान्तर
 कोमनुः अक्षिः सप्तोहनः छंदो गायत्री देवता पुनः ६४ बाले शि है व ताम मा मि ॥ को को द ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 ६५ व्यस व्याः पंचवीजा द्या विष्णो ह्येभि र्णीपुनः वशी क र एया क र्कत्यो संमो द्विच्यपि यंचमी ६६ उद्यद्वा स्वत्सं निभार क चस्या
 नानाभला लंक तां गी व हं गी र तैः पाशं चां कुशं चापवाणे चा ले श्रीनः कामयुर्न विधुजं ६७ एवं ध्यात्वा जपे ह्यस्य पंचकं त दृशं शतः
 रुचां बाले भूरी देवीं पूजयेद्विधिपूर्वकं ६८ मोहिनी स्यो भिरणि आसी संमि न्यां कौर्ष णि तथा द्वा विरया द्वा दिनी क्ति न्ना क्ते दिनी पीठरा
 नयः ६९ बाले शो योगी ठाय नमो भूत्वा दि कोमनुः दत्त्वा ने च स नं मं नी न स्मि न् देवीं प्रपूजयेत् १०० आदौ षडंग म्परा ध्यदि हवयेत्
 विष्णो मुखः दत्ते षडंग रक्षा खादं नंग मदन बा ११ अनंग मन्मथानंग कुसुमामदनुरा अनंका ध्यातव्या नं मर्षि शिरा नंग मेखकं
 ६५ पंचवीजा द्या विरया द्या देवता मूर्त्तौ दोम्यस्याः द्वां द्या विलेने नमो मूर्ध्नि नादि ६६ ध्यानमाह उवादि निवा एणं कु रौ द स्योः ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

३६
३७
३८
३९
४०

७० ध्रुव इति आचरण देवतानामाहो ध्रुवादीन् अनेमानं गोपदं च योजयेत् त्रीं हीं तं श्रीं दत्तेषामनेये नमस्तदादि ७२ अमृतमवडैर्गुडिचो
 त्रिकोणे ध्वजं यन्निस्तो रानि श्रीं निमनोर्मेवाः कोट्यस्त्रे येन चामात्मनो जेष्ठा हो द्वीपशान्तिके केशव सुषुप्तं गतिमान् श्वदलमध्यागाः ७६ हि
 मयेष्टदले पञ्चा अस्मिन्नांगादिभेदवाः ७७ अर्द्धमाह चंष्टिः अर्द्धिर्किं या यानि अस्मत्पत्नी सुतंष्ट्याः स्रष्टिर्मोहिचौ प्रमथ्या च्वासिनी तंथा ७८
 विद्युज्जना च चिन्ना यानिः सुंदरी नंदया सह चंदशुद्धिः कोट्यस्त्रे तु प्रजन्मिष्य प्रयत्नतः ७९ चतुरस्रचतुर्दंष्ट्रभोगी सामसादिकेः म
 हास्त्रीका यानि सिद्धयुर्नर्वत्सादिको एतः ८० विमेषादुर्गावदुक्तेने यष्टिर्गधवातकं वजापाः पूजनीयाः सुखिखं सिद्धमनुभवेत् ८१
 ध्रुवमक्षानो जगदीजं रामो दो प्रयोजयेत् सर्ववरा देवानां मां गीपदमंतः ८२ मल्लिका कुसुमैर्हो मात भोगोऽयं च विल्वैः प
 त्रैः कर्पूरा वप्राः स्याज्जनना नृसुहृदस्यैः ८३ रोगनाशो मनासं देवि वै श्रीस्तं दुर्लभपि आकृष्टिर्वक्त्रे विद्यानगरेर्वतसिर्भूलं ८४
 लवहैर्निर्वर्गैः स्यात्तैः शत्रुनाशो वसायानं निष्पावार्थं युनैर्लक्षैर्हो मानस्यानखं भनंतृणां ८५ रक्तचंदनकर्चुरं मां सीकुं कुमसे वनाः ८६
 चंदनागुरुं कर्पूरं गंधाष्टकमुदीरितं ८७ एतद्देवाज्जगदृष्यं जायते भञ्जिते ध्रुवं एतत्पिष्ठाशानं जन्मनिलकेन जगन्प्रियः ८८
 कदलीफलहो मे न सर्वं पंसमवाप्नुयान् किं वदन्ते नमानं गीपति मा कामदा नृणां ८९ मधुकलो एरचिनां पुनस्तौ दक्षिणां द्विनः ९०
 एकलैः अंधसानेन नृनेनाशनमन्नं प्राप्यते वा एषीमाह सप्तदशिसन्नेदः अग्निपुत्रो रेफयुतः अननेदुसंयुत आविंदयुत श्वनेन इमिम्यादि वीजं

१०० अमृतमवडैर्गुडिचो त्रिकोणे ध्वजं यन्निस्तो रानि श्रीं निमनोर्मेवाः

भानमार्त्तवरेनिचरोदस्य त्रिदण्डं द्रव्यः मानंभीमार्त्तवारयति नारजोमायाद्भेवाकरंलक्ष्मी श्रीत्वेनमन्नेद्रभस्सुतिर्गः लांतिमोवः सनेत्रोहरिः तिअछिष्टचांडास्वरस्यनेत्र
अंहीरेभीनमः भगवतिउच्छिष्टकांडाहिश्रीमानगे पयि सवजनवप्रकरिस्वाहा ३२ ॥ अस्ममन्नस्यमने केः अकिः अत्रुष्टुप्रबुद्धः मानंगेदेवगाममापिष्टसिध्यर्कजपेविनियोगः ॥

एतौसंपृज्यदेवशीमसुतपुत्रो जयेन् शयीतत्रसचय्यणभूमोदर्भास्थिताजिने ६४ देवानिवेद्यस्वहाद्सास्वप्रवदतिभुवं यष्टिएषाद्यार
निगोच्यमातंगीगद्यनेधुना ६५ नमोमायाचर्वाकलक्ष्मीद्विनिद्रस्मृतिंलांतिमाः सनेत्रोहरिर्दुच्छिष्टचांडानिजयुगार्किया ६६ श्रीमांतगेभू
रिपदंसर्वभूत्वा नैजानेका कश्चिद्विशिश्रयांममोर्कोनिप्रहर्तवानयं ६७ मतंगोमुभिरस्थितो नुष्टपृच्छंदसुदेवता मानंभीस्वर्जननावशीकस्
एतनमया ६८ चतुर्भिः यष्टिरेगेवयुंनैमैयष्टि मंत्रोस्यवर्तौरेगातिन्यस्यदेवांविचिंतयेत् ६९ वनस्यामलांगीस्थितांरत्नपीठं शुक्ल्योदितं
भूत्वगीरकवत्यां सुशयानमतोसरोजस्थितां ध्रुमजेवत्वकींवाद्यंगीमंनमी ७० जपोयुनंसहस्रं तुहेमः मुच्येर्मयूकनैः यष्ट्यैः पूजयेत्
मीरेवस्यमानविधानतः ७१ त्रिकोणपुष्टलठहंकलस्रचतुरस्रकं पीठं कत्वा यजेतस्मिन् पीठशक्तिनिवेष्टंदाः ७२ विभोतिरुन्नातिः को
तिः सृष्टिकीर्तिभ्यः सन्नातिः व्युष्टिरुन कंष्टिः अहो चमानं यंताः समीरिताः ७३ सर्वशक्तिः सर्वशक्तिकमाणैर्नेत्रासनायह्दंति कः नोर्
मायावागेशमाधः पीठमंत्रः कक्षाएकः ७४ विश्राण्यासनमेतेनपाद्यादी निष्प्रकल्पयेत् मूलेनयुष्यपूजातेकुर्प्यादावराणा चर्चनं ७५ ॥

युगाक्रियास्त्रि श्रीमातंगे भूविसर्वनिस्वरूपं भूस्तीजः नस्वरूपंलांगोवः शंस्वरूपंकरिस्वरूपवद्विष्टिप्रियास्वाहा ६९ मातंयंतादमाः विभूत्यैमातंयेनमदत्ता
७० हीरे श्रीसर्वैर्नेकमद्या स नपजमभादि ७१ पीठमंत्रमाह सर्वेति ओं ह्रीं श्रीं सर्वशक्ति कमत्या सनायममदति ७४ विष्टाष्ट्यदत्ता ७५ ॥

१८ पीठमंत्रः

सद्व्योदयनोविनि कर्त्तव्येस्वरसंविधिः कः रंटीयः द्योयः ४ हयंखा हा वडंगमाह एकेति अंगानिषट् अयमप्यस्योराणाम् ५१ क्षीणलाभाह शुचदति
धुवजोविवाहीरमा श्री श्रीनला येस्वरसं हार्दनमः ५६ वडंगमाह कडिति शंभर्त्तन ही श्रीशिरदति ध्यानमाह दिग्गानि शर्भवीरसेस्यं वामे ५७ स्वमे

अद्वि श्री शानलायेनमः

प्रमाणस्यः शवस्थो वाजये ह्यसं समाहितः दशांशं जुहयाह त्रैविभीन कसमिदरैः ५२ यजेत पूर्वोदिते श्री ठेव डंगमपर हेमिभिः
सिद्धे भजे जपं कुर्वा दधस्ताद्ररीनरोः ५४ अशुचिर्ह्यसं युज्या नैनन जुष्टा पियविनी परस्मिन् स्थिवां चार्गभा विनी चवरेभ्यः
नो ५५ धुवः शिव रसा श्रीनला ये हार्दन चा ह्यरः उपमम्य भव हही श्रीनला भूमिपुर्विका ५६ वडदीर्घपु कश्चिन्नास्मी वीजभा
स्थानवडंगर्क दिगच्चामसमा र्जनीर्का चसूर्य करद्वये सं दधाती यनाभां श्री ध्यान ल्पसर्व रुजार्ति न होर नांगे राग स्वजमर्चयामि ५७
अयतं यजये ज्ञं त्रेपाय सेनसहस्रकं जुहवा पूर्ववभी ठे सुगोचार्नां नादिनी त्रियं ५८ नमिमा केन स्वे स्थिजामः सहस्रं जयेन्न नु
नेन संगार्जिता सी च स्फोटान् स्थानि नन स्थानात् ५९ प्रणवः कर्मला स्वमे भूमि कार्य चपि वेदास्वा हावयोदण्डोयं भं चोष्ठ्या
दिपुर्ववत् ६० अस्मि वेदसिद्धे भूयं भजे नार्त्त रंगकं मनोः विम्यस्य देवतां ध्यायेत् स्वये श्रीमिष्टसिद्धये ६१ वरांभये पद्मपुगां दधा
नो करे चतुर्भिः कनकासनस्थं मितां वसं श्वर दचंद्रको निस्वमे धरी नो मि विभूषणार्त्ता ६२ लसं जपे हिल्वय नैर्जुह्या नंदरां

१३३० श्री स्वने चार काय भवे दला हा १५

श्रीमाह प्रणव इति प्रणावजो कमला श्री स्वरूपमयान् ६० ६१ ६२ ६३ ॥ (प्रतः पूर्वोदिते यजे भविषडंगविद द्यापु धैः ६३

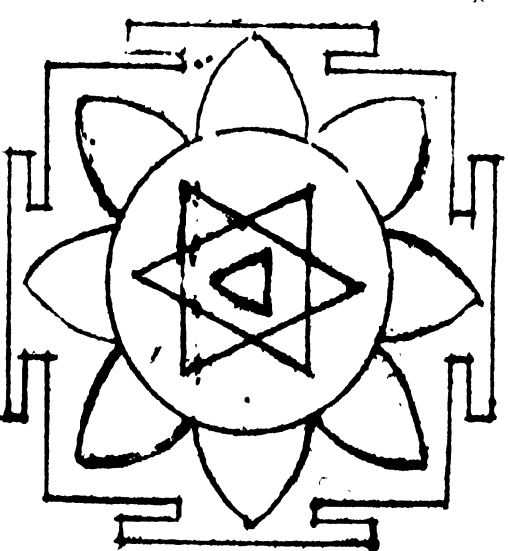
नाराही माहवागिनि मनस्थितौ चंद्रशेखरौ प्राप्तिं पिनाकीशो औ विंदुयुगो गत्से म्लो संदुलांगलि नयमं ३ दीर्घवर्मह भुवि प्रिया स्वाहा व्यानमाह विद्युस्तिषया मुद्रये
 हस्ते रं रं रं रं दाधमस्य मं न स्य प्रभु प्राति नः कपितो नः कपिः प्रभु पक्षः कपि हेवान् तेषु वेवान् ममाभिषिष्य भूजये वे निमग्नः ॥
 मुन्यादि प्रजापत्यं न पूर्ववत्समुदीरितं चिं चातुरो रवः स्थिता भुवि तस्य जये ननु २८ या नयचै र्दशांश्च ननु इत्या गोष्ठिनागतः रसं ददा
 नित्येन सौमिरेणा युरवा प्रभातं २९ चौकचंद्रशेखरौ प्राप्तिं पिनाकीशो मी नु स्थितौ लांगलि निनयं सेंदुवर्मदीर्घभुवि प्रिया ३० वसु
 क्षरमनोः शत्रुं प्राति नः कपितो मृनिः छंदो नुष्टुप च वाससीवर्गो स्त्री देव नो दिना ३१ दिवं दं भूमिं चैवैकमुमेकां रंग कस्य ना वासा हीचि
 नसि ध्यायेच्छत्रु निग्रह करिणी र्वा विद्युद्रोचि र्दसपथै र्दधाना या शशानि मुद्रं चां कुशं च नेत्रोडनेर्वा निहां नैस्विनेवा वा राक्षसं ३२ रात्रु
 वर्गस्थिते सु ३३ कसु सस्यं जपि स्वातिं विव्यपनै र्दया र्जिः वात्री फले र्भुग रज्जिः कुशै र्दया र्दशांशान् ३४ पूर्वार्द्धे दिने यजेत्परीठय डगी दिगि
 नायकैः एवं सिद्धं मनुं मंदी योजयेत्तस्मिन् निग्रहे ३५ सौ तिना या तु मानी यव द्वापयिन नं रं दं मुद्रं एण मी मुद्रं नो मस्मय नं जयेत् ३६
 जुहवा द्युतं भुवै र्बेन भुवे सुगो मयेः प्रक्षिपे होमं मस्मवा पी कृपा दिपायसि ३७ तन्मानी यस्प या नरो क्रिय ने रिष्य वोष्ठुवं निष्पी
 ति हि त्वा स्या नं वा विद्विषं क परस्परं ३८ शत्रु निग्रह ए र्दसां सार एण दपि मं त्रिणं प्रकीर्तयेत् वासा ही धूमा वन्यं तु नो ज्यते ३९ ॥
 ॥
 सान्ततन्नि तय र्दो विनत्वा दीचं दशेखरौ वैकुंठो र्बन संसु त्तो जलने च युगो र्दशिः ४० ॥ १८ दस्योः अंकुश शस्ती चामयोरु र्वाधोनयोः तेन
 निर्वति होत्रै रमि रस्मा क मरि स म हं ना सा यतु वसु त्वा स्य म छद्म ह्यारि जैः कसवीरैः इत्यादि नाश्री छिद्रं दिगि नादि क्पालः ३५ सौ तिनां कुशेन ३६

यद्येति पद्यादयं श्री २ पक्षिणीस्वरूपं मचंद्रगगनत्रयं हं १८ वे श्रानरप्रियास्त्राहा १९ चंपकांतांकांतारेवने २० मंआंनरमाह कोधीशेति मच्चिदु
 श्री श्री पक्षिणी इति स्त्राहा २० मंमनेत्यवश्रवकृषिः प्राज्ञः कंदः पक्षिणी इति नममाभिष्टाभ्यर्थः जगदिति कागः
 मृष्टेति न पुंशरावमशीगिगिध्वनिगतः श्रुतिव प्रजयेन्मन्वीवीनत्रासम्यनोस्मरन् १६ ननः प्रत्यक्षतो देवीमीक्षने सुरतार्थिनीं न
 त्पामप्राणान्मानुदं दामीष्टानिमंत्रितो १७ किं वदते न सर्ववप्राणी वदयस्त्रिणी यद्यौदयं पक्षिणीति सर्वे द्रगगनत्रयं १८ वे श्रान
 न्नेदिप्राणोयं दर्शवर्णमनुर्मनः त्रैविः पूर्वोदितः छंदः पंक्तिर्देवी न पक्षिणी १९ वे श्राने के श्रि विं युमेन सर्वेणां गच्छिमा मतां स्मरेत्त्रयं
 ककोनरं रजसिं हसन्नस्थितां २० सुवर्णप्रभां रत्नभूषाभिरामां ज्ञेयायुष्यसन् त्रयवा सोऽप्याख्यां चतुर्द्विदुदासीगतेः सेवितां धिंभने
 सर्वसौख्यप्रदां पक्षिणीनां २१ एवं ध्यात्वा जयेत्त्रयं जयायुर्वैदं प्राणान् जुह्यान्पूर्वमन्त्री ठे पूर्वोक्ते प्रयजति मां २२ कोधी प्रावं
 न्दीमीन्वंदुमुक्ते मर्दमेव ले स्त्रदया निदिप्रांतां यो नो राद्यो ह्यदृष्टा २३ अस्मै ज्ञाप्य सर्ववत्सर्वाभिरवल्गायस्त्रिणीभियं चतु
 र्दशौदयं नमधूक्ता अनिरुदतले २४ प्रजयेदयुगं निभं स हस्तं हवनं चरेत् मधूकयुक्तेर्मन्त्रैस्तनकाष्टैश्च हुताग्ने २५ संनुष्ठेवं
 कर्ते देवीं प्रयच्छेदं जनं शुभं येना कनयनो मन्त्री निधिं पश्येद्दरागतं २६ प्रणवो वा गा विष्णोस्ते च मायाया द्यौर्मनोभवं २७
 यो नो दर्शयते यं विष्णोऽप्यस्त्रिणीमनुः २८ ॥ १९ नौभौ विंदुयु कोकोधी प्रवन्दी करे कोनेन कोमदन मेखलेस्वरूपं स्त्रयं नमः अनिदिप्रा
 यस्त्राहा २३ मधूक्ता अनिरुदतले मधूकवद्वाधत्वात् २४ मंआंनरमाह प्रणवदति काकरो विष्णोस्ते स्वरूपं माया हीपद्या श्री मनोभवः कीठदयं स्त्राहा २५

वल्लभस्यार मयजसि नेअवेहि आसक कर्षमस्यार्य कट्ठरुजं वा जानमणिवं धहसेवुहे हो अन्यत्रेकः शिवं लिगं ६ ध्यानमाह अरु लेनि क
 र्त्तुं इह भिं शो एणो यं मं ओरि विस्रममहि दः कथिः स्यादि श्रवां छे दो नु पुपदे वी गुणसिणी ३ वान्हेभिः शुनिभिर्वहैर्वसुभिः सं
 मभीरसैः प्रकुर्वीत मयं गा विमं त्र कर्त्तव्यं न च सेतको ४ मसे केने नेयो र्व के ना सौ कर्णे सेय समतः केनेयोः पार्थवो हं हि र्ना भो धि
 वेदरे ५ कंठ्यूरुत्ता भिज बोसु आवे नेर्मणि वं पयोः हसं यो र्भो हि विन्यस्य व्यायेद वी वटस्थिताम् ६ अरुणं चंदन व खवि भूषितां
 सज्जतो यदनुत्पन्नं रुक्मं स्मर कुं राह प्रांचटयसिणी कं मुं के ना गत्त ना रत्न मुक्तयां ७ सस्य हय जये नमं नैवं धुं के का दृष्टा गतः दु
 न्नायोरे मज्जेद वी मुच्यते पीठशक्तयः ८ कामस्यमानदा नैना मधुं य मधुं गनना नैर्मदा भोगात्वा न दा प्राण दा पीठशक्तयः ९ मनो ह
 राय पासि एया यो गयी ण यत्तु नैः पीठस्थोक्त स्रवदे वी पूजयेद दृष्टासिणी १० कर्णिक्यं पदं गम नियने खे ना यजेत्तु नः सुनंदं च
 हिं कर्त्ता सा मुलं पा मदे विहृत्तां ११ आद्यो दा च प्रमो दा पि वसु देत्यष्टशक्तयः दं द्रा दीन यवजा दी नु संपूज्य त्रभने सुखं १२ एवमासा
 धितो मंत्रः प्रयोगेषु स्य मो मवेत्त निर्मनुष्यवने गत्वा प्रयोधा धसले जयेत्त १३ प्रतिष्ठितं तमस्त्रिभ्यो सहस्रं नियने द्विषः सप्त
 मं दिवसे प्राप्ते कृत्वा चंदन मंडलं १४॥ तत्राज्य दीपं कत्वा सिन पुजयेद हयं पक्षिणी न दये प्रजये कर्मत्रमो निष्पिद्यं समाहितः १५
 ममुकं पृथीक लंदस्ते ७ मंत्रांतरमाह ८ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

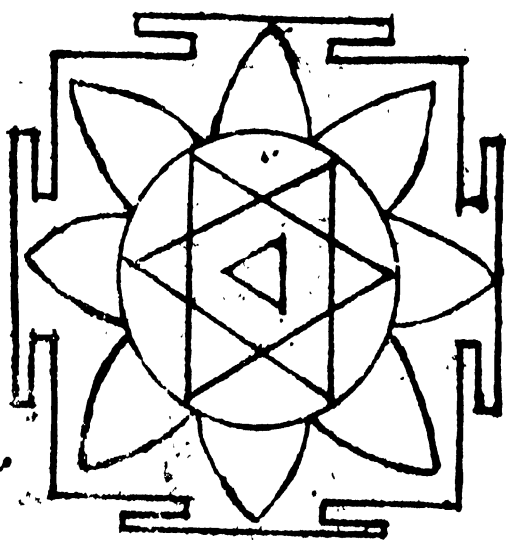
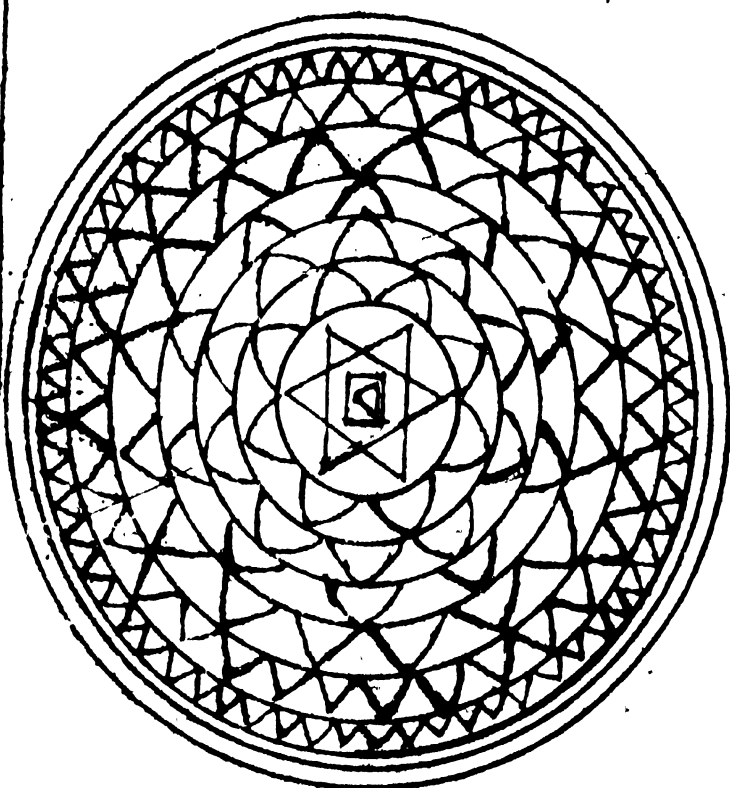
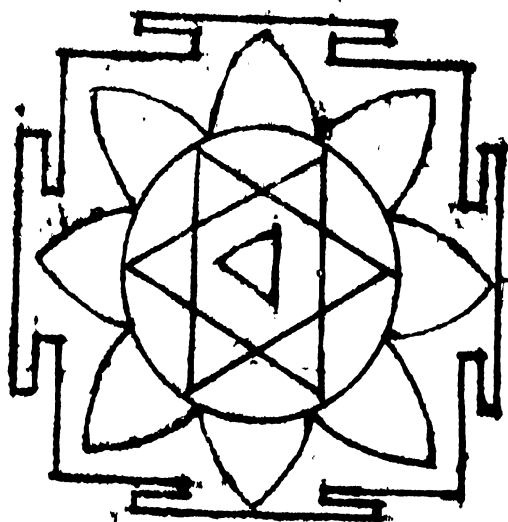
आश्वधादिकालः ८२ ८३ ८४ अश्विदमाह मायेति ३६८ स्त्राहा ८५ वदीनन्महा नारदनि ३६९ २ वदादयेनमदनि ८७ व्यानमाह सतायेनि सजलमेव एणमांकीपुं
 ३६६ हिद्विद्विद्वेदेवेनमः मयमन्वस्यभैरवमविधि ३६८ २ वदीनन्महा प्रमापि

रसलसंजयेन्मन्त्रं द्रष्टुं शक्तुं दृष्टुं नैषु नयेत्पीठे यदा गायथाय वा युधैः ८२ निर्जनेकाननेरा
 अत्रयुक्तं नियतं जयेत् स हस्तं या यसां केन हन्ता यनमाचरेत् ८३ त्रिसेधदिवसं यावद्देवमाचरतो नि
 श्चिं देवीदृष्टो वरीभूय दद्यादिष्टानि संनिरो ८४ माया प्रमोदक दंडयदूर्ध्वमनुरुत्तमः शृण्वा य
 र्वनपर्यन्तं प्रमदावदृष्टिर्न ८५ सति नो निर्जने नो र्मंडले चंदनैः कृते जय होमौ विधा यो नैः प्रमोदां
 पृथगिधुवं ८६ नो र्मोहं हृत्पुगं च दीर्घा ८७ नानमो नैकः एका दृष्टा ह्येभ्यो भैरवो त्रिषु भौ पुनः ८८
 वदी मुन्यादयः शोक्ता एकेन दंडं दृष्टो गकं विधाय संस्मरे दंडं रत्नसिंहासनस्थितां ८९ सतो यथा यो
 दसमानकान्तिमं भोजनीयं कर्तव्यं दृष्टो ग सुगं नासे विनया दयशो भजा मिवं दीभं ववं धमुक्तये ९० ल
 लस्युमं जयेन्मन्त्री पाय सा ज्वेदं शां नः इत्वा पूर्वो दिने यरे पूजयेदं धमुक्तये ९० अंगजो केयरे
 पुंशक्तया यत्र मध्यगाः काली नारायण वेगो कुंजा ह्याशी नैला धिक् ९१ त्रिपुरा भौतकां लक्ष्मीं देवीं शायुधान्यपि एवमावधिना
 वंदी प्रयच्छेद्दृष्टिं नैला ९२ एकै विंशति सत्त्वां नमयुतं प्रमदं जयेत् वस्तु चर्य रजो मन्त्री गच्छेत् च न पूर्वकं ९३ ॥ एष करिषे मृतकुंभम् ॥



॥ ३६६ ॥

स्वाहनाप्रवेनास ७२ ध्यानमाह महीतिनागवह्नीदलंदसि ७३ नीलपद्मवामे मन्त्रानामाह लोमेति लोमोदरएकारः ७४ प्रमदमंत्रमाह माये ७५
 मनोरस्यमधुच्छंदोत्रिष्टुप्मधुमतीतिच मुन्याद्याः पचभिर्वीजेः पचागानिप्रकल्पयेत् ७६ अस्त्रस्वाहातनोरेणकृत्वा देवीस्मरेद्
 धः नानादुमलनाकीर्णैकैलासगतकानने ७७ अहिलनादलनीलसरोजपुकरपुगांमणिकोचनपीठगां अमरनागवधूग
 णसेवितांमधुमतीमारविलार्थकरीभजे ७८ प्रजप्यवसुलक्षणहृष्टांशंजुहुयादहैः विल्वेत्थैः पूजयेन्मीडेजपादिनवशक्ति
 कै ७९ कर्णिकायांषडंगानिप्रक्तयोचमुपत्रके निद्राछायांक्षमातृह्मांकांतिराश्यांशुर्निस्सुनिः ७९ प्रक्लप्यसदस्त्राणिपू
 ज्यान्यतेसुखासये यद्वन्यसेवनेदेवीसप्तमूढेः पदंभवेत् ७९ रक्ताभ्यैर्हृत्तैर्मन्त्रैर्भूषणीन्वक्ष्यतांनयेत् नानाभोगान्यायसेननां
 वलैर्वामलोचनां ७८ दामोदरोविंदुयुक्तोमधुमत्याः परोमनः पूर्ववक्ष्यनं चारुमध्यायेद्देवीकुमारिकां ७९ कोटरहंजयंकुर्वन्नि
 द्यापारंगमोभवेत् मधुमत्यासमानाभ्यानाभोगसुखप्रदा ७८ मायावन्त्यासनः प्रसोमदेपावकसुंदरी षडणोमनुरस्या
 नोमुनिः शक्तिः समीरितः ७८ गायत्रीछंद आख्यानेदेवताप्रमदाभिधा षडंगानिप्रकुर्वीतदीर्घषट्काक्षमायया ८० के
 पूरमुख्याभरणभिरमौचराभयेसंदधनीकराभ्यां संकंदनाद्यामरसेव्यपादां सत्कांचनाभां प्रमदांभजामि ८१ ॥ ८॥ निवस्वासनः प्रसू
 रकयुतः पः प्रमदेस्वरूपं पावकसुंदरीस्वाहा ७८ ध्यानमाह केपूरमंगादोवरौदस्येसंकंदरदः नदीर्घद्वैः सेचोपादौपस्याः ८१ ॥ ॥



प्रयोगांतस्मात् उषसीति कविशुक्ताचार्य ३० तारपुटांमायांजोहीजोमिति ३१ रेणुकाश्वरीमाह प्रणवरति कमलाश्रीं मायाहींसृष्टिः कोटंदुयुनोऽधर
सस्मितांमुक्तवरींभूषदानप्रगोवितां विवस्त्रां पूजयित्वेनामयुतं प्रजयेन्मनुं ३२ वल्लिंदत्तानिशानीत्वासंप्रेष्यधनगोवितां भो
जयेद्विविधैरनैर्वास्त्राणैरेवताधिया ३३ अनेनविधिनान्नस्योपुनःन्योन्यामयःसुखा॥नारीमायुःश्चिरंधर्ममिष्टमन्यत्वाप्रुयात्
३४ तस्यारात्रौव्रतकार्यंविद्याकामेनमंत्रिणा॥मनोरथेषुचान्येषुगच्छेतांप्रजयन्मनुं ३५ किंवहृत्तेनविद्यायाअस्याविज्ञानमात्रनः।
शास्त्रज्ञानंपापनाशःसर्वसौख्यंभवेत्तद्वत् ३६ उषसुष्टाप्रशय्यायामुपविष्टोजयेच्छतं॥षण्मासाभ्यंतरेमंत्रीकश्चित्तेनजयेन्कवि
३७ शिक्वेनकीलिनाविद्यातदुत्कीलनमुच्यते मायातारपुटांमंत्रीजयादृष्टोत्तरंशतं ३८ मंत्रस्याशेतथैवांतिभवेत्सिद्धिप्रदानुसा ए
षमूनंविधिर्गोप्यःसिद्धिकार्येनमंत्रिणा ३९ उदितास्त्रिभुवमसेयंकलौषीष्टमभीष्टम्॥रेणुकाश्वरीविद्यानादृश्येवोत्पन्नेधुनां ४०
प्रणवःकमला^{श्री}माया^{हं}सृष्टि^{कौ}रिदुयुनोधारः॥पंचाक्षरीमहाविद्याभैरवोस्यमुनिर्मनः ४१ पङ्क्तिःषष्ठंदोरेणुकाख्याप्रवरीदेवतगोदिक्ताः
पंचवर्णैःसमसेनकुर्वीतसनुनांगकं ४२ ह्रीं^{श्री}रिसानावृष्टानेनानादुममनोहरे रत्नमंडपमहत्स्यवेदिकायांस्थितांस्मरेत् ४३
गुंजाफलाकल्पितहारस्यांशुभोःश्विखंडंश्चिरिवनोवहंती कोटंडवाणोदधनीकशभांकिंश्च्यवत्क्रोशवरीस्मरेयं ४४ ॥

४५ उषडेगमाहपंचेति समसेनास्त्रं ४६ ध्यानमाह हेमाद्रीति मरुशिखरे ४७ शिखिनोमयूरस्यपिच्छंकर्णकोटं धर्मोत्तरेणं धनुर्कमि वाणोदृष्टे ४४ ॥ ३२

करवीरसकुसुमैः पुष्पैः प्रसूनं कुसुमं सुमन रम्यमरोक्तेः २१ रक्तेः करवीरैरिति पूर्व एण संबंधः तत्संख्यया लक्षं २२ गोमायुः शृगालः गोमे वलक्ष्मीमे वपाय
 संहरिण्यष्टमी चेति षट्कोले षण्णमूर्त्यः त्रिकोणागच्छिन्नमलाया र्थ्योक्तुसखीद्वयम् २३ इति नीवलिनीसंज्ञा रावाण्यां प्रपूजयेत् २४
 वं पूजादिभिः सिद्धे मंत्रे मन्त्री मनोरथान् २५ प्राप्नुयानि स्थित्वा तस्य द्योदुर्लभास्तत्प्रसादनः श्रीपुष्पैर्लभते लक्ष्मी नक्तैः स्वसमीहितं २६
 कैः वास्तुसिद्धिमात्रनीपुष्पैश्च परं वनात्सुखं द्यूनात्कल्याणमांसं योजुह्यात्तद्वत्प्रशन्नं मासमेकं तु वस्त्राणां सत्यसुः सर्वपाथि वाः ॥
 करवीरसकुसुमैः श्वेतैर्लक्षं जुहोति यः २७ रोगजालं पराभूय सुखी जीवेच्छ न संभाः रक्ते स त्संख्य ॥

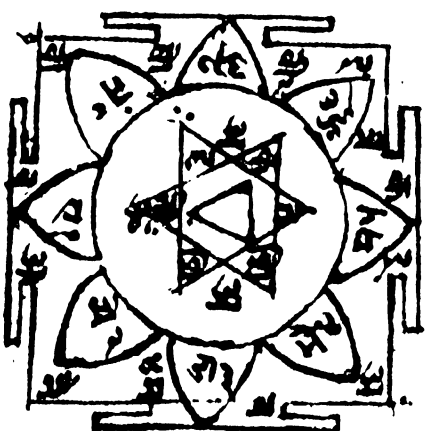
॥

याहुन्नावशयेनान्त्रिणोनूयान् २८ कलैर्हृत्वा प्रयाह्य क्ष्मीमुद्वरपत्न्यशब्देः ॥ गोमायुमसैस्तामेव कविनां प्रसाधसा २९ वंधूककुसुमै
 र्भाग्यकर्णिकारैः समीहितं त्रिलोतं तु क होमेन वशयेन स्थित्वा ज्ञाने २९ नारीरजोभिरा कृष्टिर्मणमांसैः समीहितं संभनं माहि वैर्भा
 सैः पंकजैः सद्यैरपि २५ चित्तमौ परमं नृपस्यैर्जुह्यादरिमुन्मये उन्मत्तकाष्टीमेतौ तत्फलं वायसकदैः २६ द्यूनेवनेनृपहारे सम
 रैवैरिसंकटे विजयं लभने मन्त्री ध्यायन् देवीं जपन्मनुं २७ भक्तौ मुक्तौ सितांध्यायेदुच्चाटे नीलशेचिवं रक्तौ वश्ये मृत्तौ धूमांस्तंभनेक
 नैकप्रभां २८ निश्चिदादलितस्यै सिद्धये महिरादिना गोपनीयैः प्रयोगो यद्यो व्यने सर्वसिद्धिदः २९ भूनाहेकस्य पक्षस्य सध्याय
 नेन भो धने स्वात्मारक्तो वरधरो रक्तमात्मानुलेपनः ३० आनीय पूजयेन्नादीं चिन्नमकां सखिणिं सुंदरीं द्यौवनाक्रांतां नरपंचकगमि
 त्वां पायसाग्नेन २९ नार्यारजोभिर्ऋतुकालनिर्गतरुधिरैरकर्षणं सद्यैः पंकजैरपि संभनमेव २९ परभुको किलः उन्मत्तौ धनूरः तज्ज्वलितेनैकैक

॥

मं. दी.

१०॥ ४०॥ ३०॥ २०॥ १०॥ ०॥ १०॥ २०॥ ३०॥ ४०॥ ५०॥ ६०॥ ७०॥ ८०॥ ९०॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥



ॐ सर्वबुद्धिप्रदेवत् गोपे सर्वसिद्धिप्रदेवत् कि गोपे ॐ नन्देव गोपे एको हि नमो १४ पीठदानमंजु

三

五

—

विवासान्नमविशिखेमुक्तकेशः कृष्णभूताहे कृष्णपक्षचतुर्दश्यां ८४ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिगोकायानारामे होनामपञ्चमस्तरंगः ५ ॥ छिन्नमस्तामं
न्महाह पद्मासना श्रीं शिवाहीं भौतिकदेसविदुः १ पद्मनाभयुतः सदागतिः एयुगेयः यथा ऊँ श्री श्री २ ऐं वज्रवैरोचनीये ही ३ फट् स्वाहेति २ अस्त्रमंत्रमा
रसी चालितदेशलायामारुढां सुस्तिमानां पुन्नागचंपकण्योकरं भाक्षिपिनसंस्थितां ८२ एवं व्यायन्मगवनीं बलिंदद्यान्नपांतनः ८३ कुर्व
न्तरुसर्वमभीष्टं स्वभतिचिह्नान् ८३ निर्वाणविशिखः येन भूमिस्थो योजयेत्तनुं ॥ अयुगं कृष्णभूताहे सवाक् सिद्धिमवाप्नुयान् ८४ विद्यां सौ
ख्यं यनं युष्टिमायुः कीर्तिवत्संस्थियः ॥ ४२ ॥ स्वकामयमानेन तारासेव्यातिरंतरं ८५ इति श्रीमन्मंत्रमहोदधौ नारायणमंत्रभेदकथनं नाम पञ्चमः
रंगः ५ छिन्नमस्तामनुं च ह्यंष्ट्रिप्रसिद्धिविधायिनं पद्मासनां शिवायुगं भौतिकः शशिदेवरः १ कर्तुं वैरोचनीं पद्मनाभयुक्तः सदागतिः ॥
संयुगास्वदेहनां प्रथमः २ मंत्रः सप्तदशालोपमेरवोऽस्युनिर्मिताः सप्तोद्वेष्टं छिन्नमस्तान् देवनाभुवने भेदी ३ आं स्वज्ञाय
वराख्यातं मोक्षनाय शिरः स्मृती ॥ उं वज्रमशिरस्वाघोक्तोऽप्राशायननुवृत् ४ औं मं कुणायनेने स्याद्वै सगो वसुरस्य युक्तामी पायुगं चार्त्त
मंगलनकः प्रणवादिताः ५ स्वाहां ताः प्रोदिता एवमंगे विन्यस्य तां स्मरेत् ॥ भास्वमंडलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णं लकं स्फारास्यं
छिन्नवर्जं लस्तरुधिरेवामेकं वैभनती ॥ यौभासक्त रतिस्मरणपरिगतां सत्त्वोभिजेडाकिनीवर्णां त्योपरि दृश्यमोदकलिनो श्री छिन्नमस्तो
ह विस्मरति अः वसुरस्य २ हीं २ अस्त्राय फट्तिनि ५ सर्वे स्वाहां ताः व्यानमारुमास्यति नि यामो मे युनंतदासक्त रती कामोपरि स्थितां ६
ॐ श्रीं हीं ऐं कंजवैरोचनीये हीं फट् स्वाहा अस्त्रसिरश्छिन्नमं नमस्य भैरवकाशिः संक्रोदं छं छिन्नमस्तामुवने भेदे वनाममग्निषसि धर्षयन्त्ये

ॐ श्री ह्रीं ऐ क्ज वै रो च नी यं ह्रीं ह्रीं क ट् सा ह

अकसिरुत्तिनामंत्रस्य भैरवकाविः संमोदछन्दस्त्रिन्मसाभुवनेष्वेव नाममापि षडसिधयै ज्ञये

© 2000 Blackwell Science Ltd

मं-क्षी-
नौ-न-
३

अष्टमालावरोदस्योः अत्ययोरके ७८ ताम्रसं ध्यानमाह कल्पेति ७९ परं शुद्धं खड्गमुग्रलक्ष्मीं भूलवज्रपाशादादसिषुरेवालिवासेषु ८० क्रूरुमारलेनामसं ध्या
अष्टमालां नयानमभयं वरमुत्तमं चेतदीपस्थितां ध्यायेत् स्थितिं ध्यानमिदं सूतं ७८ कृष्णं वराण्यं नौसंस्थं मस्य भरणं भूषितां न
वक्त्रं भुजैः पादस्थभिर्द्विगोचरं ७९ अभयं परं मुदं धिस्त्रिगुणं श्रुयते हंलं भिदिं भूलं च मुसलं कर्त्रा शक्तिं धीर्वकं ८० सुहासं चित्रं च
शैलं द्रुमां गद्यासह रक्तां भिषो स्थितां ध्यायेत् सुहासं ध्यानमीदृशं ८१ कर्म सुक्रसौम्येषु ध्यायेत् मन्त्री तथा तथा एव सिद्धिं मनोमन्त्री गिरा
वाचस्य निर्भवेत् ८२ र्कस्येयानुलेखन्यारोचनारस्युक्तया चालस्या छिन्ननालस्य जिह्वायां विहिते नमनं ८३ संयाने चाष्टमे वर्षे सर्वथा
खस्त्रिगुणमिषान् अमुत्तमं त्रसं जमां च चां चालस्य कंठनः ८४ वधीयान् पूर्वसंशोक्तं च लिङ्गं विधानतः द्वादशे वत्सरे प्राप्तिं भसि सास्त्रक
विनक्तं ८५ ज्योतिष्मती भवति त्रेक कर्ममात्रं सुमं चितं उपरमे जलस्थो योगः श्रीयाद्वा चर्या निर्भवेत् ८६ चतुष्षष्टे यमश्चने वा क्षिप्तं च ज्ञा
भयं तथा जपेन शक्यं सुखाविद्यां तत्परममनसः ८७ मृणेन स्यात्तु यद्वं निशीथे जपतत्परः पाणो भवति विद्यानां सर्वसिद्धिर्भवति ८८
विद्वत्कुलसमुद्भूतमष्टवर्षं शिशुहृद्यं उपवेश्य तयोर्मूर्द्धिकरोदत्ता जपेत्तमं ८९ वेदां तन्मायसंयुक्ता विवरे ते उभावपि यः कौतुकैः
आश्चर्य्यं विद्यायाः पश्यतु भुवं ९० विधाय वेदिरक्षरण्यां विजने कदलीवने तत्रासीनो जपेद्विद्यामर्कस्य विधानतः ९१
नं उच्चाटनवप्या होतुं यो नौ पुष्टो भवेत् ९२ उभावपि शिष्युने पायिकवेदांति नो भूत्वा विवेकं कुर्वति ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥

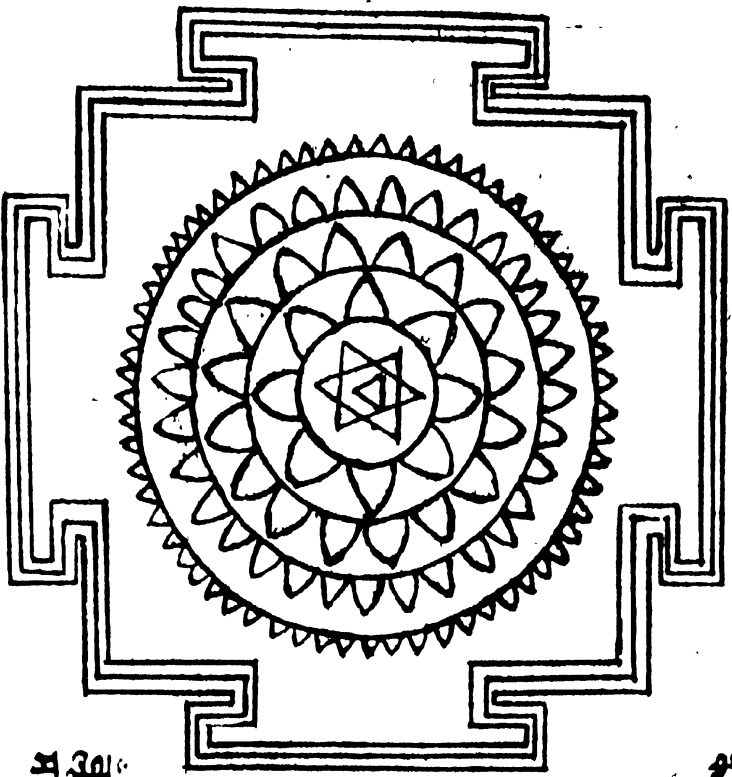
एवं स रत्नमष्टकं त्वं प्रज्यप्सीममुद्रार्थं न तत्र क्षणं मध्यमा मध्यगो कृत्वा कनिष्ठां गुह्ये धिते तर्ज्यौ दंडवत्कृत्वा मध्यमे पर्यन्ताभिके क्षोभाभिधानामुद्देयं सर्वसंज्ञिभका
 रिण्यनि ६६ उक्तं न्यायाः पूर्वोक्ताः शक्तिनीराकिनीत्वाकिनीत्वाकिनीराकिन्यः शक्तिनीराकिनीराकिन्यः शक्तिनीराकिन्यः शक्तिनीराकिन्यः शक्तिनीराकिन्यः
 सरस्वत्ये पदं किमुने पुरमे शानिद्रा विणीमतेति ७० परावात्ताभिरवीनिसस्वसमं चैः शीघ्रया नमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः
 मंत्रे ले शानिद्रा विणीमतेति ७० परावात्ताभिरवीनिसस्वसमं चैः शीघ्रया नमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः
 शेषे द्राविणीमुद्रांषष्ठा वरणा पूजने ७० परावात्ताभिरवीनिसस्वसमं चैः शीघ्रया नमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः रंकोसोः वात्स्येनमः
 रेशीमनोभीष्टमत्वा मुद्यात् गणेशे नवात्ताभ्यं योगिभ्यो भैरवाय च ७१ जगये चापि विनो हस्तिनि न्यं च नुष्य वे मां समाया न्नया कां ज्यया
 सप्तपक्षादिकं ७२ वस्तिद्रव्यं समाख्यातं नेने छंसा प्रयच्छति ॥ तस्या ध्यानं विधावच्छिन्नं तद्दिगुणभेदतः ७४ भेदां वराढां हं सस्थां मु
 काभरणभूषिणां च गुर्वकाममष्टभुजैर्दधानां कुंडलैर्बुजैः ७५ वैभवे पांशुशक्तौ अक्षस्तं कृपुष्यमालिके ॥ पादपायोनिवौ ध्यायेत्सुहि
 ध्यानमुदीरितं ७६ रत्नां वरां कसिं हासं नस्याहे मभूषिणां एकवक्त्रां वेदसंख्यैर्भुजैः संविभगीकमान् ७७ ॥ ८८ लस्यं पद्यामध्यमा तर्जनी
 भ्यानुकनिष्ठानाभिके समे अंकुशाकाररूपाभ्यां मध्यमे परमे स्वरि द्यमा कर्षिणी मुद्रा नैत्येका कर्षणे स्येति ७९ ८२ ७३ सात्त्विक ध्यानमाह च्चेनेति कर्म
 उद्युवराक्षस्तं कृपुष्यमालादसेषु दत्तरास्त्रिवासेषु ८६ एजसं ध्यानमाहरन्नेति ७९

कुलजीमंत्रमाह वागिति ऐंकुलजे ऐं सरस्वति स्वाहेति ६० कीर्त्तौ शरीमंत्रमाह वागिति ऐं ह्रीं श्रीं वर २ कीर्त्तौ शरी स्वाहेति वसुरादिः अंगरि स्रसरस्वती मंत्रमाह वागिति
ऐं ह्रीं अंगरि स्रसरस्वती स्वाहेति ६२ छंदसरस्वती मंत्रमाह एवं विधा यो निरेकारः कीदृशी वा राह संसा चं दी प्रजनार्दन कृष्ण नृपुह्र सख फ्र युजा सेंदुः सविंदु
कृदमिदं मनुरौ कारः कीदृशेन कुलीभृगुवं हीदुय कृह सरा विंदुयतः ६३ एणंतिरी अरुणादि युगा अरुणाहः भृगुः सः शिखी फ्र अमीरः ऐर्नेयुता सविंदु श्रवाकरे
अं कुलजी मंत्रमाह वाक् च स्रस्वती मन्त्रागनी ॥ एकादश्या ऐं मनुना कुलजां दुक्षि ले च येन ६० वाक्काया श्रीवदं दं कीर्त्तौ शरी वसुभि
वाक् वीजं कुलजे वाक् च स्रस्वती मन्त्रागनी ॥ एकादश्या ऐं मनुना कुलजां दुक्षि ले च येन ६० वाक्काया श्रीवदं दं कीर्त्तौ शरी वसुभि
या न यो दशा ऐं न यजे नैऋत्ये कीर्त्तौ निनायिका ६१ वाक्काया चानारि स्थानि सुरस्वति च र ह यं ऐं न यजे न यत्तय गं रिस्रसरस्वती ६२ कृष्ण
हरं सै चं दी प्रजनार्दन क र्ण नृपुह्र ॥ सेंदु यो निः श्रुल कुलिभृगुवं हीदुय मनुः ६३ अर्द्धा भृगु शिख्या नि संयुता यो निरेदुय कृष्ण वाक्का
या श्री कुलीजानि द्यौ वीदो ने सरस्वती ६४ वदेवदं नृहं हं रुद्रा इन्द्रा सुनाममा ॥ अभिलाष कुरु हं देये यसी कुरुते नः ६५ गुण वेदा ऐं
न यजे द्यौ वीद सरस्वती भूधरे इंदु तो र्वा श्रो विं द्यौ वी वदेवदं ६६ श्री हं कवनवलेन नीत्ता मर्च इदं कृदिषि वाक् वीजमधरा कोनो न
कुली विंदुमानयनः ६७ शानि चं द्या कुमाकायां कि ऐं हं स हं कुजत्तौ ॥ कर्म हं हं भगा को नं न वा ऐं ना मुना यजेत् ६८ ॥ माया हीं श्रीः श्रीदुषुवीज
निवी एवीजानि द्रां हीं श्रीं सु स दति द्यौ भि प्रस्ररूप ६४ द्यौ नानुनी याना रुद्रा इन्द्रा सुनाममा ॥ अभिलाष कुरु हं देये यसी कुरुते नः ६५ गुण वेदा ऐं
सरस्वती वदेवदं २ नर २ रुद्रा इन्द्रा ममा भिस्त्रा वं कुरु २ स्वाहेति ६५ गुण वेदा ऐं वि चत्वारिंशदसुतः वीत्ता मंत्रमाह भूधरे नि अर्वाष्ट उभूधरो वः इंद्रेलः गाभांयु
न विंदुयत श्रुते वेवदं २ श्री हं फ्र डिनि ६६ कि एमं न माह वा मवीजमिति अधरा कोनो लकुली ऐं यु तोरः ६७ एणंति चं द्या कृष्ण कायां दी विंदुय तोरः स हं कुजत्तौ विमय
हं कुलजी ऐं हं की ऐं ह्रीं श्रीं द्रां हीं श्रीं वं सः श्रीं वद सरस्वती पदे वद वदन रर रुद्रा इन्द्रा ममा भिस्त्रा मंत्र कुरु स्वाहा ॥ अं वेवद वदी हं क र्ण नीत्ता पुजन मंत्रः ॥

कुलजी मंत्रमाह वागिति ऐंकुलजे ऐं सरस्वति स्वाहेति ६० कीर्त्तौ शरीमंत्रमाह वागिति ऐं ह्रीं श्रीं वर २ कीर्त्तौ शरी स्वाहेति वसुरादिः अंगरि स्रसरस्वती मंत्रमाह वागिति
ऐं ह्रीं अंगरि स्रसरस्वती स्वाहेति ६२ छंदसरस्वती मंत्रमाह एवं विधा यो निरेकारः कीदृशी वा राह संसा चं दी प्रजनार्दन कृष्ण नृपुह्र सख फ्र युजा सेंदुः सविंदु
कृदमिदं मनुरौ कारः कीदृशेन कुलीभृगुवं हीदुय कृह सरा विंदुयतः ६३ एणंतिरी अरुणादि युगा अरुणाहः भृगुः सः शिखी फ्र अमीरः ऐर्नेयुता सविंदु श्रवाकरे
अं कुलजी मंत्रमाह वाक् च स्रस्वती मन्त्रागनी ॥ एकादश्या ऐं मनुना कुलजां दुक्षि ले च येन ६० वाक्काया श्रीवदं दं कीर्त्तौ शरी वसुभि
वाक् वीजं कुलजे वाक् च स्रस्वती मन्त्रागनी ॥ एकादश्या ऐं मनुना कुलजां दुक्षि ले च येन ६० वाक्काया श्रीवदं दं कीर्त्तौ शरी वसुभि
या न यो दशा ऐं न यजे नैऋत्ये कीर्त्तौ निनायिका ६१ वाक्काया चानारि स्थानि सुरस्वति च र ह यं ऐं न यजे न यत्तय गं रिस्रसरस्वती ६२ कृष्ण
हरं सै चं दी प्रजनार्दन क र्ण नृपुह्र ॥ सेंदु यो निः श्रुल कुलिभृगुवं हीदुय मनुः ६३ अर्द्धा भृगु शिख्या नि संयुता यो निरेदुय कृष्ण वाक्का
या श्री कुलीजानि द्यौ वीदो ने सरस्वती ६४ वदेवदं नृहं हं रुद्रा इन्द्रा सुनाममा ॥ अभिलाष कुरु हं देये यसी कुरुते नः ६५ गुण वेदा ऐं
न यजे द्यौ वीद सरस्वती भूधरे इंदु तो र्वा श्रो विं द्यौ वी वदेवदं ६६ श्री हं कवनवलेन नीत्ता मर्च इदं कृदिषि वाक् वीजमधरा कोनो न
कुली विंदुमानयनः ६७ शानि चं द्या कुमाकायां कि ऐं हं स हं कुजत्तौ ॥ कर्म हं हं भगा को नं न वा ऐं ना मुना यजेत् ६८ ॥ माया हीं श्रीः श्रीदुषुवीज
निवी एवीजानि द्रां हीं श्रीं सु स दति द्यौ भि प्रस्ररूप ६४ द्यौ नानुनी याना रुद्रा इन्द्रा सुनाममा ॥ अभिलाष कुरु हं देये यसी कुरुते नः ६५ गुण वेदा ऐं
सरस्वती वदेवदं २ नर २ रुद्रा इन्द्रा ममा भिस्त्रा वं कुरु २ स्वाहेति ६५ गुण वेदा ऐं वि चत्वारिंशदसुतः वीत्ता मंत्रमाह भूधरे नि अर्वाष्ट उभूधरो वः इंद्रेलः गाभांयु
न विंदुयत श्रुते वेवदं २ श्री हं फ्र डिनि ६६ कि एमं न माह वा मवीजमिति अधरा कोनो लकुली ऐं यु तोरः ६७ एणंति चं द्या कृष्ण कायां दी विंदुय तोरः स हं कुजत्तौ विमय
हं कुलजी ऐं हं की ऐं ह्रीं श्रीं द्रां हीं श्रीं वं सः श्रीं वद सरस्वती पदे वद वदन रर रुद्रा इन्द्रा ममा भिस्त्रा मंत्र कुरु स्वाहा ॥ अं वेवद वदी हं क र्ण नीत्ता पुजन मंत्रः ॥

तदीयाचरणं संप्रज्वली जमुद्रां दर्शयेत् प्रमत्तं तत्र स एषा परि वर्त्मकरी स्याष्टावर्हचंद्रा कृती प्रिये तर्जयां गुह्यगलं युगपत्कारयेत् ततः अधः कनिष्ठावष्टभ्ये मध्यमे विनियोजयेत्
 नखैव कुटिले योज्ये सर्वा धरा दनामिके वीजमुद्दिश्य मुदिता मवी सदिप्रदायिनी ति कोट्यपत्रं संप्रज्व ५३ सुष्ठिमद्रमं कृणुमद्र्शयेत् स्यात्पूर्वमन्त्रा ५४ अष्टपत्रे सरस्व
 त्पष्टकं स्वमंत्रैः योजेत् सुक्तं तासां भञ्जानं क्रमेण वदन्ता ह्येवां सौ क्रमं क्रमाह तां संनि लोहितः ५५ चैकं तासां संयुक्तं सत्यः आश्रयतोद्दा ५६ भृगुः सः स्युष्टमन्त्रान् य
 किं एता यो गिनी वीरा चेना ल्याप्यसि एते ह्य उर्वर्के शुभं च मानुगे मोहिनी वंशवर्हिनी ५० मासि नीललिता दती मने ता पद्मिनी यरा ॥ व र्षे सि च्च
 नरसा चरानेना विचैर्विका ५१ मानका द र्शयेत् वसेत्तेश्च यमो नदी यानि दार्ता वनरसा धूमा भेगा सुमंगला ५२ दृष्टानती या वर
 एं वीजमुद्रां प्रदर्शयेत् ततः कोट्यपत्रे संप्रज्वलाः स्युः स्युः ५३ मुध्या मीः कुरु कुरु ह्यच निपुणो बलं क्रिया रतिः प्रीति स्यात्वा कला
 सुमुखी स्यामला विस्तु ५४ पिशाची च विदारी च यी त्रया वज्र योगिनी ॥ सर्वे भूरी निमुपस्युष्टि मुद्रां प्रदर्शयेत् ५५ अष्टपत्रे स्वस्वमंत्रै
 र्यजेत् दृष्ट सरस्वती या गोरोरु ह्यो हितः सत्यो वै कुशानुज संयुताः ५६ भृगुर्नेषा वरुणो कर्माया कामो वरुण ॥ वाग्वादिभ्यां यज्जं कां गो मन्त्रो वे
 दस्य वर्णकान् ५७ अनेन मनना पूर्वपत्रे चामी भूयै यजेत् ॥ वराहस्य च क्रीडसंयुता भुवने भूरी ५८ वदये मन्त्रं चित्रे भूरी वागी जानल ५९
 या जेनमः पद्मसने शस्युः परं ह्रीं की वर २ तपवादिनी स्या हेति वेदास्थि वर्णकान् चतुर्धन्यार्थः ५९ ॥ ५९ प्रिया ॥ द्वादश्या एतेन मन्त्रा व त्तै चित्रे भूरी यजेत् ३
 चित्रे भूरी मन्त्रमाह वराहे निवराहं स च क्रीडसंयुता भुवने भूरी तस्य कलसी ५८ वद चित्रे भूरी एं स्वाहेति प्रथमं षट्कटं यथा दृष्टं विद २ चित्रे भूरी एं स्वास्व
 स्तु विद वराचे भूरी एं स्वाहा ॥ २७ ॥ अनेनमः पद्मसने शस्युः परं ह्रीं की वर वरा वाग्वादिनी स्या हा ॥ वागी भूरी पुजनमन्त्रः ॥
 चित्रे भूरी पुजनमन्त्रः

चतुःषष्टिरत्नेनावनीः शक्नोत्यर्चयेत्स्वेच्छेति मुद्रां दशयेत् तत्र हस्तं यथा स चंद्राद्विणहसेत्तु स व्यहसेत्तु दक्षिणं बाहू कृत्वा मस्त्यदे विहसौ संपरिवर्त्य च कनिष्ठा
भृगुहस्याधरेखा यामेति मोलद्विमतयो ॥ महिमा चैशितो पूज्या वशिंतो कामपूरणी ३६ गारिमा प्राचिरित्येताः पूज्याः पूर्वोदितिक्रममाध
रागहस्यरेखा यां द्वितीया यां तृतीया चः ३७ अक्षितो गोरुश्च ३८ कौर्धो नमनैक परास्ति नः ॥ भीषणं श्वाथं संहारं नेष्टो भैरवाः स्मृताः ३९ ॥
भूमिगे हेतुनी या यो रेखा यां मानतः पुनः ॥ ब्राह्मो माहे भ्वरी चैव कोमरी चैस्त्वं तया ३९ वा राही द्राणि का चैव चा मुद्रां समीप्सुता ॥
महा लक्ष्मी स ये ज्यासा पूर्वाद्विषयथा क्रमं ४० इत्यमाद्या हतिं चेष्टा यो निमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ चतुःषष्टिरत्ने पश्येत् शक्नोति चैव तावतीः ४१
कुंलेशी कुल नंदा च वोगी शी भैरवी तया ॥ उमा श्रीः शांतया चंडी धूम्रा काली करिनी ४२ महा लक्ष्मी भवैक काली रुद्र कालि स्मरस्वनी
वाग्वाहिनी च नृकाली मद काली प्राप्ति प्रभा ४३ प्रत्यंगिरा सिद्ध लक्ष्मी रमते शी चं चंडिका ॥ स्वे च री भू च री सिद्धा कामा सौ हिं गुली वल्ग ४४ ज
या चैव जया चो यं जिनी तिस्रो परा जिनी ॥ विल्लासिनी तया चोरा चिंता मूर्धा धने भ्वरी ४५ सोमेश्वरी महा चंडा विद्या हर्षा विनायिका ॥ वे
दगर्भान्ति यो भीमा उग्रो वैद्यो च सुदृतिः ४६ उग्रेश्वरी चंद्रगर्भा ज्योत्स्ना सत्यप योवनी ॥ कुलिका कामिनी काम्या ज्ञानवन्मथं डा किनी ४७ ॥
राकिनी लोकिनी चो यं का किनी प्राकिनी तया ॥ हा किनी निचतुःषष्टि शक्तयः सिद्धिदायिकीः ४८ दर्शयेत् त्वचरी मुद्रां द्वितीया वरणे चिंता ह्यति
नामिके देवि युक्ता तेन केमेण तु नर्तनी भांसमाक्रान्ते सर्वो ध्वमपि मध्यमे अंगुष्ठे तु महादेवि सरत्ना वपि कारयेत् द्रुपं सारवे चरी नममुद्रा सर्वो नमो नमिति ४९



कामवीजं क्रीं मां सार्धा विदुः गः ल ऊ विदुः युक्तः फातो वः ह्यं सार्गा भगुः सद्विरेखा हीं यथा ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं सौं ह्रीं सौं ह्रीं
 सार्गा भिं भुवने शर्नी स्वा दी ह्य विं शर सार्गा ॥ म हा वि वा स मा स्वा ना से वि ना भि ग मो स्वा दी २८ अस्ना
 नुष्टु ध स र स्व ना मु ष्या र्धा अंग क ल्प ना पंच धं चा ष्ठ पंच बु यु गार्त्ते मंत्र सं भवैः २९ श वा स न्तं स र्प
 वि भू ष ण ळ र्वा क र्वा क पा लं च वृ क्वा वि भू लं भ क र्दै र्द धा नां न र मुं ड मा लां च स्यां भ जे नी ल स र स्व
 भां तां ३० चतु र्स्सं ज ये दि र्धा किं भु क र्म धू र्गा न्वे नैः ॥ द शां धां जु ह या ह त्सै भ द्वा पूर्व भ तं दि तः
 ३१ पूर्वो क्ते पू ज ये मी दे व स्य मा ले न च र्त्त नो ॥ आ हो वि को णं च द् को ण म षु बो ड या प त्त के ३२ ह
 विं श त्प त्त म जं स्या च्चतुः ष ष्ठि द लं त नः त्रि रे खा ळं ध रा गे हं च नु र स्त भे नः परं ३३ ए वं पंचं स
 मा लि स्य वा रा नः पू ज नं च रे नं च नु र स्त स्या दि को ले वि श्रे ष्ठं परि पू ज ये नं ३४ वा यु को ले स्ते
 त्र पा स र्मै श ना भे र वं त था ने र्त्त नि यो गि नीः स र्वा वा म भा गे ग रं यु जे नं ३५ ॥ ३६ ॥
 अस्य मंत्र स्य वस्त्रा क्तः अ नु ष्ठ प च रः स र स्त नि रं च ना म मा भि ष्ठ मि थ्य र्त्त ज ये वि नी को गः
 वृं ह्रीं नी ल ना रे स र स्व नि द्रां श्रीं क्रीं वृं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं सौः सैः ह्रीं स्वा हे ति २७ ष डं ग मा हं पंचे ति २८ ध्या न
 मा ह या चे ति क र्मा त्रे भू त र स्य याः ३१ किं भु क र्मैः प त्ता या यु क्तैः ३२ या नि मु द्रे क्ता ४० ॥

सं. ही प्रथा जे श्री हारोः इन्द्र नीलसरस्वये स्वाहा मनुवर्णं चतुर्दशार्णः १८ षडंगमाह नेत्रेति नेत्रप्रवेगार्णं हयं चंद्रकः अगानिषद १६ ध्यानमा
जौनध ह वंदामिति सूलासीदक्षयोः २० मंत्रोत्तरमाह माधेति सामाया अनं गंत्युना आकारसंत्युता ह्रीं दे. युताग रागारथे सामहायदाद्यामहागारथे भृशः संः प्र

प्रणवाद्योमनुःसर्वसिद्धिदोमनेवर्णकः॥ मृद्व्याद्योव्रतगायत्री नयानीलसरस्वती १८ नेत्रं चंद्रं नेत्रार्गे नेत्रौ लिंगकल्पना मं
त्रोत्थितैर्यो ध्यायेद्देवी सर्वसिद्धिदा १९ पंढरीश्वरः शूलमसिंकराग्रैः संविभर्गो चंद्रकलावतसां॥ प्रमथ्यानीपादतले पशुनां भजे
मृदानीलसरस्वतीया २० जपपूजादिकं सर्वमस्याः पूर्ववदीरितं विशेषाज्जपदावादे विद्येयसाधितानृणां २१ मीयासीनं संसृजना
वर्महृत्तरे पुनायनः नारायणदाद्या सोमगुर्वसो नल्लो निमः २२ दुमरांतीरं धरं हरं पुंभं चरुदयं द्वात्रिंशदं लोनीयां योपज्जुष्टाः पूर्वव
नना २३ विद्यादीमखोवह्ये सुरेद्रस्यापि दुर्लभा लब्ध्यां मानवाः खेपं साधयेत्सर्वनेराः २४ वाङ्मयी श्रीमन्नो जन्माहं सो नुग्रहं वंद
युक्तं॥ कामैः शक्तिश्च वाक्वीजं फो नो लो धीशं विंदयुक् २५ स्त्रीवीजं नीलनारे स्यात्संवृध्यं नो सरस्वती॥ श्रीमत्सरे कौकमर्गः शैवार्चमाक्षि
संयुक्तो २६ सानुसारैर्कौमवीजं फो नो मां सो धीविंदयाः॥ सर्गभृगुर्वोक्ते हरेः स्वरमाका मोप्यसौ हयं २७॥ « स्त्राकः अनसंति मोलः स्यष्टमभ्यर
ण नारायणी वीजाद्या यथा उज्जीहा इ नमसाराय प्रहानाराये सकलदुखरांस्तारय २८ २९ स्त्रीवीजं स्त्रीसरे फोरे फयुक्तौ शैवतामाक्षि संयुजैः क्रमन आर्द्रसंयुक्तौ श्री
अनुग्रहविंदयुक् हंसः सः सौंलार्धी प्रविंदयुक् फातः लज्जुविंदयुक्तो वः ३० ३१ स्त्रीवीजं स्त्रीसरे फोरे फयुक्तौ शैवतामाक्षि संयुजैः क्रमन आर्द्रसंयुक्तौ श्री

५८६ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

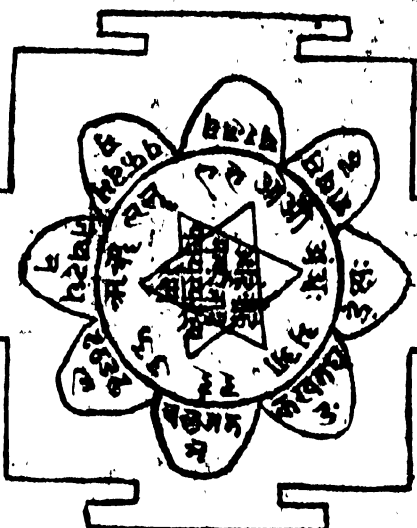
दकारोसानखशिदांटीमिति २६॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अहं नंदनासक दानिक स्याप्यग्रे भयकाशयेन १२२ ॥ ५० ॥ दानि श्रीमं चम हो दधि नौ कायां गारा मंत्र निरुपणं चतुर्थ सारां ५४ ॥ ५१ ॥ नारा भेदाना ह अस्मि यासि तां वरु
नौ न
ह व न ही रिति रे क धं ड मु ना का भि का न कारः श्रीं १ व र्म रू द्वा भु व ने षो व र्म ह य म ध्या ग ते न र्पः प था ओं श्रीं हीं हुं हीं हुं क इति २ विष्णु या सिता मा ह वा गि नि क मः स्त्रीं अ नु य
२५ द स र्पा क न हं सः औ वि स र्ग यु तः सोः पार्त्त हीं श्रीं श्रीं सोः हुं उ ग ना रं हुं क इति ३ हि मी यां वि ष्णु या सिता मा ह गा र्गे ने त्रे वा हीं भृगुः सः य था ओं हुं हीं श्रीं सोः हुं क

[illegible]

कोटशर्लमाह नारयनि नंदीमः दीर्घविषयतहा लोहितः पः विषमगारुढो निःस्पृगोदः द्वे अनिलो हिं दीशालः यत्पुनः ये पक्षा ओंपक्षे २ महापक्षे पक्षावनी

निवा सोभार नीलस्थोर्जननारंजनस्यमः ॥ शनाभिजसांयोमंजीरोचनामलिकेधरेन १३ सयंपययतिनस्यासौदासवज्रायने क्षणान



यशनांगारमाह न्यशर्वयो कुजवावासरे १४ कक्षांकरेण संवेष्टयनि वदंरक्तं ननुमिः ॥ शनाभिज
समूले ननिक्षिपेद्वैरिरेष्यनि १५ उच्चाटयति सताहात्सकुटवाच्चिरोधिनः ॥ क्षास्त्रयानि शामं वं
लिखित्वा पौरुषस्य नि १६ एविवारे निशीथिन्यां सरस्वतीं प्रपन्नं तस्य मूले साध्याच्चिनेके
भवेत् १७ क्षेत्रेक्षितं सस्य हाभ्येजवदत्तुरगात्रये ॥ षट्कोणमधो प्राचि लिख्य मूले साध्याच्चिनेके
सरगास्त्राढ्य ॥ कायष्टवर्गाच्चि तपत्रमङ्गलिखेत्तद्विर्भूमिपुराणीन १८ पंचमेतानि लिखेत्तद्विर्भूमि
जनुजन्मना ॥ पीतांबरेण संवेष्टय वधीयात्पीनसूततः १९ शिष्टानां कंठ गोवदंरक्षकं भूतभातिनः ॥
वामबाहोतु नाशीणां पुनरं सुभगत्वं कर्त २० दक्षबाहौ त्रुणां वदं विद्वानां धनमदं ज्ञानं रं ज्ञानमि

मेसाहेति अलिके ललाटे धरे निलकं कुर्यादित्यर्थः १३ विरोधिनः शत्रुत्वाटयति निष्काशयति स्त्राढ्ययनिष्ठा संधवयुक्तया हरिदशा १७ पंचमाह षडभि
षट्कोणे साध्या त्वनं मूलं अमुं कारक्षरक्षिति युक्तं मूलमंत्रं विनिख्याष्टलके सरेषु अं आमिनादिस्रराण्युपपन्नैषु कवतनपय प्रालिनिवर्गनं विलिख्य वदि

श्वपुः कोलेन वेष्टयेत् जनुजन्मना लाक्षो न्ये नरसेन २१ ॥

ॐ श्रीभूभदे कजटे नीलसरस्वतिमहोयगारे देवि खखसर्वभूतपिशा चरसमानग्रसप्रयममजाङ्गो देवपछेदय श्रीहीनं दस्साहा १

मंटीः
नौः नभः

३५

नारदति नारभैमायाहीवालोवः सनेत्रयुतः विगादीसः कूर्मश्चकारः दीवोनिः एमेरुः सः भृगुः सः रमा श्रीमाया ही अस्त्रं फट् अनिप्रियास्वाहा स्वरुधमन्यु
नयथा ओं ही श्रीमदेकजटे नीलसरस्वतिमहोयगारे देवि खखसर्वभूतपिशा चरसिमानग्रस २ समजाङ्गो देव २ श्रीहीनं दस्साहे निदिप्रचाणदणः १५
पुत्रा नौ नान्मुखं कीर्तितभने जनवश्यतां ॥ नारो माया श्रीमदेकजटे नीलसरस्वति १०० महेगुनारे देवार्तः सुनेनो गदिपुमर्क ॥ स
वभूतापिशाकर्मोदीर्घो निर्मर्कसान्ग्रस ११ श्रीभृगुर्ममजाङ्गो देव २ श्रीहीनं दस्साहे निदिप्रचाणदणः १२ अने
नानेयप्रजां नः च हं देवो वलित् हरेन ॥ एवं सिद्धं मर्तो मन्त्री प्रयोगान्चिदधीने च ३ जानमानस्य बालस्य दिवसविनयादधः जिह्वायां वि
लित्वेत्तं त्रैमध्याज्याभ्यां प्रज्ञाकया ४ सुवर्णकृतया यद्वा मन्त्री धवलदर्वया गनेष्टमे व्वा नौ सौ जायने कविराट् शुक्लं ५ नवापरैरजेयो
पिभूय संघोर्ध्वाना चर्चनः उपरागे दत्ता नीय नरद्वारं सरोजले ६ निर्माय कीलकनेने तैलमध्वमृगैर्लखिन ॥ सरोजिनीदलं मंत्रं वेष्टयेन्मान
काष्ठैः १०० निभापनदलं कुंडं च नरस्त्रे समेखले ॥ संस्थाप्य पावकं नैजुहया नमनर्ता मुना १०८ सहस्रं रूप द्वा नां ये नुदुष्य च यास्तु तं ॥ स
होमो नैव च धे रनैः पलेरपि वलित् हरेर्न १०९ वलितं नैव विवद्वलितं त्रैः प्रकाशयते ॥ नारः पद्मैः पुगां तद्दीविष दीर्घं च लोहिनः ११० अत्रिर्व
धमगारुढो वेदेन स्या चर्तय दं ॥ किं दीयाद्यो नितः स्वाहा बोडणार्णवलेर्मनुः १११ नरो निशीथे पिवस्त्रिपूर्वात्ममनुना हरेन ॥ एवं कृते पंडिना
प्रयोगान्तरमाह उपरागादति ग्रहणे तजगोनरत्न काष्ठं दत्ता दंते नानीयने नलेखनीं कृत्वा तैलमधुसुराभिः ११२ नोपनेत यामनुगालिख्य वर्तः संवेष्ट्य कुंडे
निखायनदुपर्यपि प्रतिष्ठाप्य गोदग्धा केन रक्तपद्मसहस्रेण न च हत्वा बोडणार्णवमांसैर्होमांते वरं ११३ त्वा मध्वरे नैव पूर्वात्मने एवावस्ति दद्यात् एवं कृते उक्तं

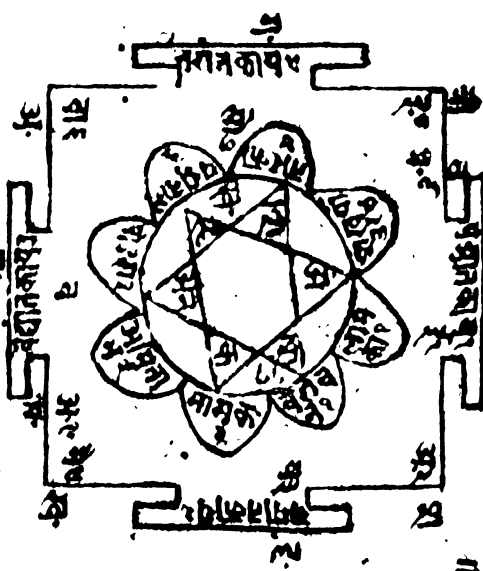
॥ ३५ ॥

गणेशदिभ्यानामाह पाथेति अंकुशचिभूलेदक्षयोः अलंकाशणं सयः सभूहसद्युतं वदुकस्यदक्षेभूतं स्नेजपालस्यासिभूलेदक्षयोः योगिनीनां पाणलिंगे दो
स्योः ६२ अक्षोभ्य रजपुष्पं प्रगीच्छन्ना स्तिमुनिमंक्र ६५ स्थिति सविंदनामादि वर्त्तुअसोयासां ईदक्ष्यः संयोगनांगाः प्रणवाद्यावज्जाद्यंता अभिधानाभ्य
वैरोचनादिमंन्ताः यथोत्तिवैरोचनयजनपुष्पं प्रगीच्छन्ना हाउं अंअमिताभयज्ज औपपद्यनाम औं शंस्वपांडर औं लांलामके औं मांमामके व ६६ वज्र
पाशाकुशेकायास्तत्राग्निभूलेदधनंकरैः अलंकारचपापनागलेषा प्राक् समर्चयेत् ६७ कपालभूलेदक्षमाभ्यादधनं सयभूषणं
शुभ्रध्ववेष्टितं मयं वदकदक्षिणे चयेत् ६८ अग्निभूलेकपालानंदमरुदधनंकरैः कल्लांश्यां वरं कुरंस्तेन यथाश्चमेयजेत् ६९
कपालं दमरुयांश्यां लिंगं संविभगीकैरे अंताकल्पारक्तचक्रायोगिनी रंतेरयजेत् ७० अक्षोभ्य प्रयजेन्मुद्दिरेक्यमंत्रच्युत्तुभं अक्षो
भ्यसप्तपुष्पं च प्रगीच्छन्ना लं वदभ्या ७१ अक्षोभ्य पूजने मंत्रः षट्कोणे सुषडंगाकम् वैरोचनं चांमिताभं यदनाभा मिधं तथा ७४ शंस्वपां
उत्संजं च दिग्दक्षेषु प्रयजेत् लोभकं प्रामकां चैव योऽरागं रकोतया ७५ विदिमाताम्रपने पुपूजयेद्विष्टसिद्धये सविंदनामाधर्माद्या
संयुधं नास्त्राभिधाः ७६ वज्रैपुष्पं प्रगीच्छानिप्रियांगाः प्रणवादि काः वैरोचनादि पूजायां मनवः परिकीर्तनाः ७७ मणदस्ववतुर्दा
दिपुष्पांतकयमानको विद्यांतका विधं पश्चात्प्रानकाभिधं यजेत् ७८ शम्भादींश्चापि वज्रादीं पूजयेन्नदनंतरं एव संपूजयेद्विदीपा
इमादिपदानाकादिपूजाया मयेवमंन्ताः निम्नपूजांतेव लिखानमंन्तामाह ७९ ॥ ८० ॥
८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

五

मं.सं. २५
दी.जो. २५

हौं मूलमंत्रः पूर्वोक्तः पंचार्णः हंसमन्त्रसर्गसमन्तिनं विपन्न स औ वि सर्ग यु तो हः सौः शी पिकं द्वा द्यौ वरा हः ऊ विं दु यु तो हः हं यथा रं हीं श्रीं हें ओं हीं त्रीं ह फट् हौं
हमिति न तो हीं वीं जिन तो ये सु रां प्रसि प्य शं स्व पो नि मु दे र्श ये न न यो त्स ल य था वा मा गु ष तु सं ग त्वा द स ह स स्य मु षि ना क त्वा ना नं त था मु षि मं गु षं तु प्र सा र य

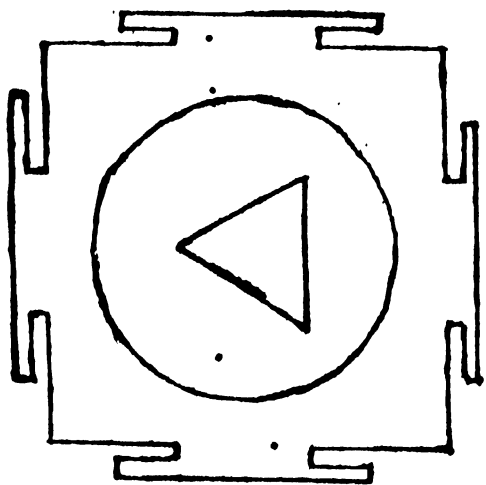


न चामां गुत्पलया शिष्टाः संयुताः सुप्रसारिताः दक्षिणगुहके लनाम द्वा शं स्वस्य भूति देति शं स्वमुद्राल्लक्षणं मिथः
अष्टवारं
अष्टकचो मुनामं त्रीं मंत्रयेत्ययतो जलं॥ मा ययामरिणं सिद्धां शं स्वपो निषद र्शयेत् ८२ न त्रवता ष्व
दकोणं ध्यात्वा देवीं विचिंतयेत्॥ पूर्वोक्तं पूजयित्वैनां मूलेनाथ प्रनर्पयेत् ८३ न र्जनी म ध्वा ना मा
कनिष्ठाभिर्मुहिश्वरी॥ सां गुष्ठाभिश्च नुर्वारिमहा शं च स्थिते जले ८४ स्वैरेक मनु विंदा द्यं भृगु मन्त्रिं दु
युक्तं तथा॥ धुवां देन नमो नै न त र्प्या द्दानं दमै रवं ८५ न त से ना र्ध ना ये न प्रो से न्मू ज न सा ध नं॥ यो नि मु
द्रां प्रदर्शय प्रणमेद्भवतारिणीं ८६ वि धा न म र्ध स प्पो कं स र्व सि हि प्र रा य कं॥ पूर्वोक्ते पूजयेन्भी रये ष्व
दकोणकार्तिके ८७ धरा गृहा व ते र म्पे दे वी र म्पो प चार कैः॥ मही गृह च तु र्दि सु ग णे ण दी न्म पू जयेत् ८८

कनिष्ठिके वध्वा न र्जनी भ्या म ना भिके अना भिको र्ध्वं स शिष्ट दी र्ध म ध्वा म यो र धः अं गु ष्ठा य ह यं न स्ये चो नि मु द्रे य मी र ने नि यो नि मु द्राल्लक्षणं ८९ न चार्ध जले
वना ष्व द को ण रू पं यं त्रं विं स ध्या नो ज्ञो दे वी च स्मृ त्वा मु ले ना र्चयेत् न नो गु ष्ठ यु ता भि स र्ज न्या यं गु ल्मी मि र र्ध्व जले पू जे न नां त र्पयेत् स्व गि ति स्वं हः म नु रौ
भृगुः सः न धा र का र ए व भृ ग वा दि यु नः धु व जे य था औं हौं हौं न म र म्मा न द मे र वं त र्पयेत् र त्प र्वा विं क त्वा पूर्वोक्ते मे धा दि न व शान्ति के पी ठे नां पू जयेत् ९०

33

204
25
1/2
1



四

सलः ला पवनीयः हर्य नमः सां सां

नृत्तंस्त्रीस्वतारिणीकपालायनमरतिद्वितीयः ७४

जैमलिधारचजिलिखितरिलि सर्ववपंकारिलि हंफदस्वाहेति शिखा वंधमंनः प्रणव इति दीर्धवर्म हं अखं फदठ दयं स्वाहा उं मस् २ हफदस्वाहेति भू
 शोधनमंनः गारेति ओं सर्वविघ्नानुत्सारय हं फदस्वाहेति विघ्नवारणमंनः ५८ भूतशुद्धिमाह मायेति तुरीयभिनिहं ६० गारइति अर्धांशं द्रुक् विघ्न
 उधं द्रुगोहः हं ओं पविश्वजन्म हं स्वाहेति भूमिनिमंत्रणमंनः ६२ गारइति अनंत आकर्णभूगः सुपद्मनाभयुगोवस्ती गयुगोपः २ कोधवीजहं ओं अ
 हं फदस्वाहा गुं एं हरेण भूनुर्विघ्ननिवारणे ॥ अनेन विघ्नानुत्सार्य भूतशुद्धिमया चरेत् ५८ मायावीजं जपापुष्पानि भूनाभौ विघ्नमन्त्रः
 ॐ सर्वविघ्नानुत्सारय हं फदस्वाहा विघ्ननिवारणमन्त्रः

चिंतयेत् ॥ गृहस्थेनापि नोदहं दहेत्सा ईक्ष्वाप्यना ६० गारौ वीजं सुवर्णमोचं तये हृदि मंत्रविना पवनेन न गृहस्थेन पापमस्याक्ष
 यदुवि ६१ तैरीषं चंद्रकंटाभं वीजं ध्यात्वा ललाटतः १ गृहस्थसुधयदि हं रचयेद्देवतानि भं ६२ अनुयाभूतशुद्ध्या गुं देवसादृश्यमा ७
 पुयात् ॥ गौरः पवित्रजन्म भूमेर्धांशं द्रुक् विघ्नं ६३ वह्निप्रियाभूतः प्रोक्तो रदाले भूमि मंत्रले ॥ गारैर्नो भूगः १ कर्णियर्भूनाभयु ७
 नोर्वस्ती ६४ स्वर्वजरेस्वको धाख्य वीजं पावकवल्गभा ॥ द्वाट्णयोर्नो मंत्रेण रचयेन्मंडलं शुभं ६५ गारो यथी गगानि द्वा स ई कृषक भू ७
 गुर्विषा ॥ सदीर्घं स्मृतिरौ साक्षो महा कालो भूगान् चिंतः ६६ कोर्धास्त्रं मनुवले पंमनुः पुष्पादिशोधने ॥ गारः पीषार्पणं स्वाहा पुंचार्थं चिं ७
 ॐ अर्धे सा हो

सुरस्ववजरेस्व हे स्वाहेति मंडलमंनः ६५ गारइति सदकुनिद्रा द्रुगोभः भिभूगः सः विषं मः सदीर्घमायुमं स्मृतिरौ गकारे को साक्षो द्रुक् वै वि भूगान् चिंतो महा
 काल एव गोमः को धो हं अक्षं फद ओं यथा गता भिक्षुसमा निमो हं फडिति यथा शोधनमंनः गारइति पाश आपण हीं ओं आ ही स्वाहेति चिंतयेद्य नमंनः ६७ ॥

स्वाहा स्वरूपमन्यत् ५६॥

अंगुष्ठाभ्यां नमः ९

तर्जनिभ्यांस्त्राहा२

मध्यमायां वषट् ३

अनासिकाभ्यां हं ४

कनिष्ठाकाशं औष २५

महाशंखकण्ठं ४२ श्रीरामचन्द्रमुनि ७० मुखविभागजिह्वान्तं ३१
कानहोकोभाबोधदय

क्रीटिकामुद्रयाकुर्व्यादिवं धं देवतांस्मरन् ॥ विधायानां गुह्यापकं समधाचरेत् ॥ उपगारांततो ध्यायेत्सद्यो वाकिरिदित्वा यिनीं
 ३२ विभुव्यापकवारिमध्यवित्सं ज्जेतां वृजन्मस्थितां कर्त्तुं स्वर्गं कपालं नीत्वा नितिनैराजत्करां नीत्वा भां कीचीकुंडलं हाकं क
 एत्सत्किं पूरमंजीरतां भासे निर्गावर्दे विभुवननत्मारक्तनेत्रत्रयां ३३ त्रिमूर्तौ कजटां स्त्र्यस्तु सनादं हाक एत्थाननां चर्मद्विवि
 कदौ विदधन्तौ स्थिता स्त्रिकोऽभस्ते ये एव विराजमाना द्वा रसंसे शननां भोर हां तां श्वा वत्ससर्पदं कुक्कामं च निश्लेभ्याः स्मरे
 न् ३४ एवं ध्यायन् नरभस्त्रमनेकं दधि मध्यापि मधुमं सं च मां कूत्सं जयेत्तस्य चतुष्टयं ३५ द्वा शं शं शुद्धया दत्तं यदौः क्षीरं ज्यले लिङ्गे
 स्थपयित्वा मराशं खं जपस्थाने जपंचरेत् ३६ त्रापि यस्तस्य शान्तां कृत्वा निश्चिद्विदं नमः नमः सुभुवां देवैर्वा यज्ञाग्नाः पूज
 येत्सदा ३७ जपेन कस्ताने यमो न स्थितां सर्वदा जयेत् ॥ द्वा शाने भूत्य सदने देवागरे यन्निर्जने ३८ पर्वते च नमो यैर्वा पुत्रवर्मा रुद्र
 मन्त्रा विना ॥ समरे शत्रुनिहतं यद्वा व्याप्यासि कं शिखुं ३९ विद्यां सुंसाधयेत्सीधं साधयेत्सिधं वं प्रसिध्यति ॥ मन्त्रा प्रदोषं भीतिं वा चीचुं निस्पृ
 कुदयः ४० विद्येभ्योति सं प्रोक्ताः पीठस्य न वां कथयः ॥ मन्त्रमन्त्रिदं सदा कसे द्दं नृभिः ॥

॥ नमस्ते ॥ ७० ॥

हो ना हां पि गो गै क ज द ये अ स् वा य क द

ह्रीं नो ह्रस्व एक व भ म का ल्य न मा र ह ॥ ह्रीं नो ह्रस्व ए य र ल व स र सि न्न मा नो भ ॥ ह्रीं नो ह्रस्व आ पा र ष स र काम भू द न मा ल भ म भू त ॥ ह्रीं नो ह्रस्व अ अं अल्लि चामु उ द न मा ल ग भू त ॥

ध्यानमाह विभ्येति सद्गोतस्य जेदस्योः कर्त्तौ कयलेकामयोः भवेत्तौ स्थपदुक्तलेकैकल्लोदयस्यासा अस्याभामचदद्यामुनिः तेनयोभेनमस्तका र्द

त्स्यात्पूर्वं भूमध्ये संस्थिते निमनो हरे ॥ गोरादिपंचमं व्यासंकुर्मा भवैष्टसिद्धे २५ अष्टौ वर्गान्स्वरद्वंद्वपूर्वकान्भीजसंयुतान् पु
 वं प्रयोज्य नास्यान्यस्या अष्टमूर्त्यः २६ गोराउग्रौ महौर्गापि वज्राकाली सरस्वती ॥ कामे भवरी च चाभुष्टा रम्यो नादिकाः स्म
 ताः २७ वत्सरं धेनव्यं दैव भूमध्ये कंदे सान्नं हृदि नैभो लिङ्गमूत्ते मूलधारैकमा न्यसेत् २८ षष्ठं व्यासं तनः कुर्यान्नीराभयं
 सर्वसिद्धिदं ॥ आधारे कामरूपास्त्वपीठं हस्तात्पूर्वकं २९ हृदि ज्ञास्य धरं पीठं दीर्घपूर्वं प्रविन्यसेत् ॥ ललाटे पूर्णगिर्यार्व्यं कव
 र्गाथं न्यसेत् सुधीः ३० उड्डियानं च वर्गाथं केयूरसंघी भविन्यसेत् ॥ भूर्वो र्वा रा ए धी पीठं टवर्गाथं समाहितः ३१ नवर्गाथं विर्कां न्यस्य
 दत्तं ग्रीनयन हये ॥ पवर्गाथं पूर्वकं मायायुगी पीठं मुखे न्यसेत् ३२ कंठे मुमयुसा पीठं यवर्गाथं प्रविन्यसेत् ॥ अयोध्या पीठकं गभीराव
 गोदिकमुत्तमं ३३ कवोः कांचिपुसी पीठं दंष्ट्रां मनुप्रविन्यसेत् ॥ खोढा न्यसं कुतारायाः प्रोक्ता भव प्रदायकः ३४ हृदि श्रीमदेकै नवं
 नास्तिं शिरसि न्यसेत् ॥ वज्रोदकां शिखायां तु उग्रगारां तु वर्मणि ३५ महापरिसरे नेत्रे ऐंगो धैकं जटेस्त्रको ॥ षट् दीर्घयुक्तमाया
 द्या एना न्यस्याः षडंशके ३६ अंशुष्ठादिषु शुस्त्रिषु पूर्वविन्यस्य यत्नतः नर्त्तनीमध्यमाभ्यां तु कृत्वा तात्तत्र यत्नतः ३७ ॥

[illegible]

[illegible]

रंलंवल्लारिशान्दशिश्नमनमः॥हीनीहंशंषंसंहल्लारिशान्दशिश्नमनमः॥हीनीहंलंसंल्लारअधोरिशान्तापनमः

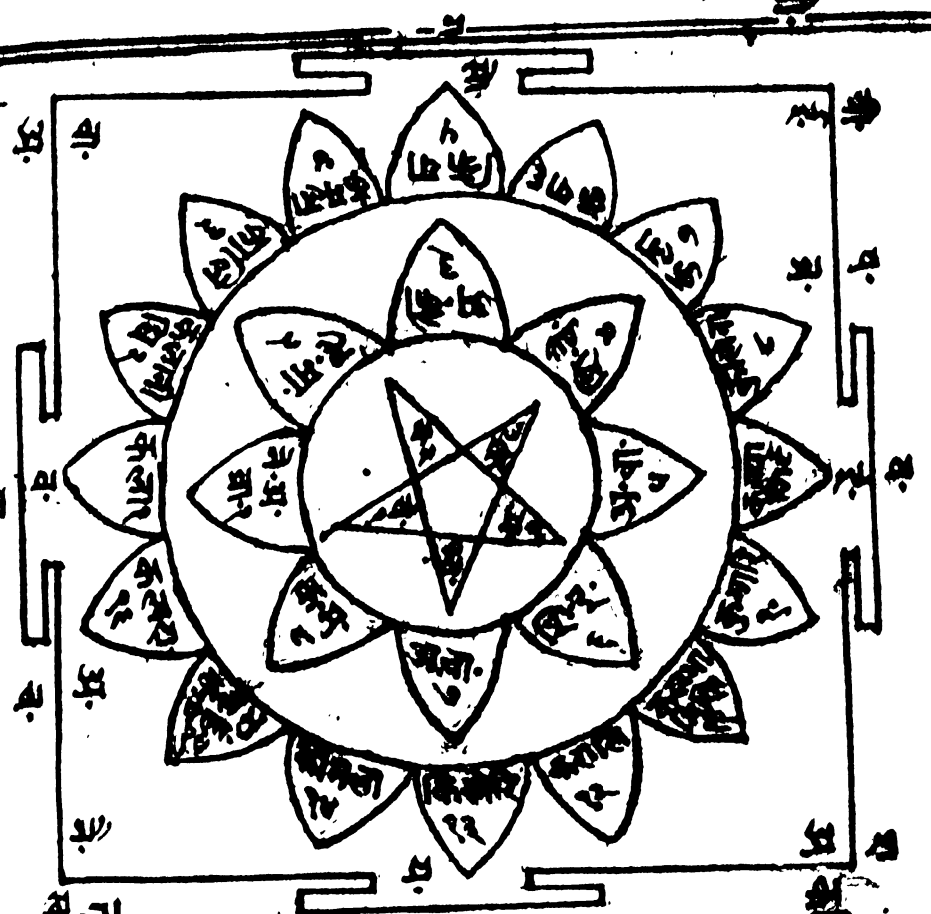
अस्य तारमंत्रस्य अक्षोभ्य श्रीविः वरुणी छंदः तारदेवकीं श्रीजीजं ह्यक्षिः मन्त्राभिर्बुधसिध्दये जपि न योगः॥ श्रीवीरं अं आं ईं उं ऊं ऋं लृं एं ऐं ओं अं अः रक्तवर्णयसूर्यपद्वि
तारं वक्रमुपक्रमते कीर्त्तनं इति मंत्रमुद्धरति १ अय्यायनीति सरञ्जीष्ण अय्यायनी संविंदुरोकारः ओं अं अनोदुष्टं निष्कविद्यनरे फविंदु ईयुगोहः श्रीपाव
कगोविंद चंद्रमोभिर्बुधं कौहरीः रेफ ईविंदुयनस्तकारः श्रीगोविंद ईकारः २ अर्धं प्राशं काठयत्वं उविंदुयुगोहः हं अस्वफट् ओं श्रीवीरं ई फटिनिपंचा
उं कीर्त्तनं सिद्धिदा तारं रायामनबोधुनः॥ एखदेष्टान्ज्ञानैर्यैः कृतार्थः सु नरेभुवि १ अय्यायनीस्य श्रीष्णविषदभ्योदुष्टां
निष्क॥ हरिः पावकगोविंद चंद्रमोभिर्बुधं कृतः २ स्वमर्धं प्राशं काठयत्वं पंचाक्षरोमनुः॥ आदिवीजविद्युनैषाप्रोदितैकजटा
दिभिः ३ आद्यं तवीजराहिनाप्रोक्तानीलसरस्वती॥ तारासर्वामनोरेस्य मुनिरेसोभ्यसंज्ञकः ४ छंदस्तु वृहती तारदेवनायरिकीर्त्ति
ताद्विगीयतु र्यक्रमतो वीजं शक्तिश्च सिद्धिरे ५ यद्वा कौधो वीजमुक्तमस्त्वशक्तिरुदाहृता॥ वट् दीर्घयगद्विगीयेन षडंगविधिरी
रितः ६ बोढान्मसं नतः कुर्यादेव तामावसिद्धये॥ देयं भक्ताय शिष्याय न देयं तु दशमने ७ श्रीकंठादीन्पक्षेद्दृष्टान्मान्काषण
पूर्वकान्॥ मान्कोक्तस्थले मान्तीर्थको धर्पुर्वकान् ८ चतुर्थानमसायुक्तान् षष्ठमो न्यास ईरितः॥ श्रवणीं षट्समासीनां नील
कोर्त्तित्रिलोचनां ९ अर्द्धे इष्टे स्वरां नानाभूषणान्यां स्मरन्त्यसे न॥ द्विगीयं तु ग्रह न्यासं कुर्यान्नां समनुस्मरन् १० ॥

एः मंत्रांतरमाह आदीति इयमेव विद्या आदिवीजेन ओं कोरेण विद्युत्कारहिना समी आदिभिः पूर्वचायैरेकजटाप्रोदिता श्रीवीरं फटिनि ३ आद्यं नक्षी
जाभ्यां ओं फट्भ्यो राहिना नीलसरस्वतीसै च हीर्वां ईदति सर्वां तु तारा ४ द्विगीयतु र्यहीं हं मिनिक्तमाहीजं शक्तिश्च ५ षडंगमाह षडिनि हीं श्रीमि न्यादि

श्रीकंठासैनमानौ एकविंशतिमं देवदेवमन्त्रं त्रिंशद् अं श्रीकंठा यजमः तल्लोके॥ द्वितीहं आ अंतं तयजतः मखेयवं सर्वत्र॥

[illegible]

मं. श्री. नौ.
नं. ३
१६

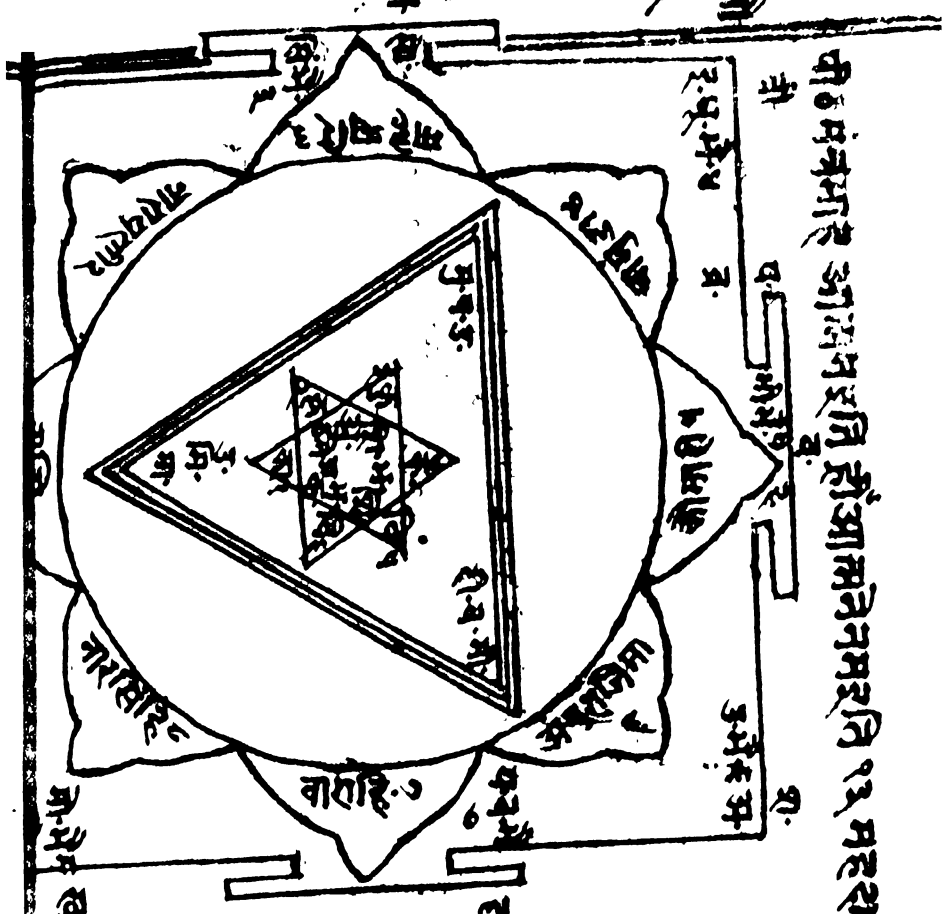


कालिकायां च कोऽयं उक्तः पञ्चमं तदुपरि बोधशब्दं तदुपरि चतुः कोणमिति पूजापत्रम् ६०॥
 तस्य मेकं जपे नमोऽं दशां किं शुकोद्भवैः। पुच्छेः समिद्धैर्वीषिजुह्वानमंत्रसिद्धये
 ५५ कोलीपीठं यजेद्देवीपंचकोणस्य कालिकां अष्टपत्रेणोदधत्ते तं भूपुरसंयुते
 ५६ मूले नमूनि संकल्पयाद्या दीनि प्रकल्पयेत् चंद्रां चंद्रो नमो चार्कमुखी चामीकर
 प्रभां ५७ चतुर्णां पंचकोणेषु केसरे धंगरे वनाः आस्याद्या अष्टपत्रेणोदधत्ते कल्पा
 दिकाः ५८ कर्षकस्तोत्रादिः कालिका मूलं चार्कियां कर्षकां कल्पां कुलां कुलीनां कल्पां
 कुमांशिकलैर्भाषिणीं ॥ कर्षकां स्वर्गां कर्षां च कोमलं कुलं मूलां ॥ कर्षकां मूलां
 रेपुज्याद्वाद्याहेन योपि च ६० इत्यंजयादिभिः सिद्धिमनौ काम्या निसाधयेत् ॥ भु
 क्तौ दर्शनं ताचम्य जपे नमो नमः ६१ उच्छिष्टेषु नमो कयः समवेत्सं पदाप
 दं उच्छिष्टे नैव भक्ते न च सिद्धिर्वाप्नुते ६२ ॥ ६३ प्रयोगात्ताह भुक्तेति ६४ उक्तमोऽथ
 नृच्छदैः पक्षैः उच्छिष्टे स्य वासिंस्तेति पूर्वोक्तं नमः ॥ इति मंत्रमहोदधि नैकायां मणीयकरं ७३

मंजांनरमाह कालीकौ कूर्चं हं दक्षिणार्धं चन्द्रि वधुः स्वाहा कौहं हीं दक्षिणे कालिके कौहं हीं स्त्री हे नि च त र्दशाणः ४१ मंजांनरमाह कूर्चं हीं र्दक्षी
३ हीं दक्षिणे कालिके पुनर्बीजानि स्वाहे नि द्वा विंशत्यार्यः वशी कर्तुं समुद्र नि शेषः ४३ मंजांनरमाह मंत्राजिनि कौहं र्दक्षीं दक्षिणे कालिके स्वाहे
असृजा मदिवादीनां कालिका यस्तु न पयन्तानस्य स्य परिगृह्य करस्याः सर्वा सिद्धयः ३४ यो लक्ष्मण जयन्तु मंत्रावधार स्वमन्त्रा वि
नष्टनस्य स होम नुः सद्यः सर्वा सि न फल प्रदः ३५ तेना भयमे ध प्रमुखै य गी र ह सुजन्मना द न दानं तं पक्ष स मुया तं पक्षं कालिकां
३६ ब्रह्मा विष्णुः शिवो गौरी लक्ष्मी गणपती रावि पूजिताः सकला देवायः काली पूजयेत्सदा ३७ अथ काली मंत्र मे द्वादश च्युते
सिद्धिदायिनः प्रमाया युगं कूर्च युगं करणा नि विधु त्रयं ३८ दक्षिणे कालिके पूर्व वीजानि सुर्विज्ये म नः १८ कर्षि यानि वर्णानि मा ना
एकः पूर्व वद्यजिः ३९ विल्वमूले रावारु टो वट मूले न धै व चाल स्यं मनुभि मंज स्वा सर्वा सिद्धी भूरो भवे मं ४० कौली कूर्चं च द
ह्येवा दक्षिणे कालिके पठेत् पुनर्बीज त्रयं चन्द्रि धूर्म च सरो मनुः ४१ यज नं पूर्व वन्मोक्त मस्य मंत्रस्य मंत्रिभिः वि शेषात्
सुगदीनां प्रथमा कर्षणे सप्तमः ४२ कूर्चं द्वा यं त्रयं काल्या मा या युगं नु दक्षिणे कालिके पूर्व वीजानि स्वाहा मंत्रो वशी कृती ४३
मंत्राजि पुनः प्रोक्तं बीज सम क मुत्स जे न ति वि धि व र्णे भवे न्मंत्र उपा सिः पूर्व वन्मना ४४ ब्रह्मैको कर्म नेत्रं च द्वादश हीं मनुर्मन्य ८
नियं च द्वा णः ४४ मंजांनर ब्रह्म नि ब्रह्मा कः वाम नेत्रं र्दक्षी षड् र्दमा ह वीज मि ति बीजं कौ दी र्य पुन भुक्ता का स्य र्दो म हा का त्याः सर्वा सिद्धि प्रदा य कः ४५
कौनेत्र पुनः विना कालि भगं रा का र सा य क्तः को वी शः

मदनावासंभगं अधियाप्रितिरात्री त्रिशुलां वंचाः कोणायसेदशेपीठे महाकाहे नमर्त्तमारुहं कुर्वती प्रित्यर्थः ३७ कात्मी मंत्रमेव ग्राह माया
 नतः प्रयोगान्कुर्वीत महाभैरवभाषितानां॥ आत्मनोर्थे परस्यार्थे स्थिप्रसिद्धिप्रदायकानं २८ स्त्रीणां नंदीं प्रहारं च कौटिल्यं च
 प्रियं वचः॥ आत्मनो हितमभिबुद्धं न कस्ती भक्तो विवर्जयेत् २९ सुदशे मदनवासां परायणं च प्रजयेत् ननु॥ अशुभं सोचिरेव का
 क्यतेः समतामियां नं ३० दिगंबरो मुक्तकेशः प्रमथानस्यो धिया प्रिति॥ जपे चोद्यते नमस्तुभवेयुः सर्वकामनाः ३१ शिवं दृश्यमा
 रुत्या निर्वर्त्तमानः शतभूगताम् अर्कपुष्पसहस्रेणाभ्यर्त्तयेत् सो यदेतस्यां ३२ देवीयः पूजयेद्गन्थां जपन्नेकैकशो मनु॥ सोचिरेणैव
 काहे न परं एतद्भुतां ब्रजेत् ३३ राजः कीर्त्तयेत् नारायणार्थाय न्येयु नमजयेत् ॥ सकवित्ते नरमेव लज्जना को हयनिधुवं ३० त्रि
 पंचरेमहापीठं शक्यं स्तुतिं संस्थितां महाकाहे नंदे नमो रघुर्द्रवकुर्वती॥ ३४ ॥ गोंध्याय नमस्ते च रत्ना विदधन्सुरतं स्वयं॥
 जपेत्सहस्रं पापं संश्रंकरं समो भवेत् ३५ अस्थितो मत्तवायुक्तमासं मज्जारमेययोः ॥ उष्ट्रस्य महिषस्यार्थं वल्लिं यस्तु समं
 धयेत् ३० भूताष्टयोर्मध्य एते व शस्यं सस्यं जंतवः विद्यालक्ष्मी यथाः पुनैः साचिरे सुखमेधते ३१ गोहविष्याणामरतो दिक्क
 देवीं स्मरन् जयेत् ॥ नक्तं निधुवनमासकोत्सवं स्याद्दण्डपतिः ३२ रत्नां भोजेन हृते मन्त्रो धनैर्जयति कितपि ॥ क्लृपयेन्नेर्भवेद्वाज्यं रक्त
 हीं कुर्वेद्दंकरस्वरूपं शान्तिपीठं धुविंदुः कौं ३३ कवी जातिव्यक्ते एस्वरूपमन्यते ३० हीं ३२ हीं ३३ इत्येकं विप्रत्यर्थः ३४ नारायणं

मं दी नो
सं ३
९९



की ० मं न म ह आ न ह ति ही आ त ने न म ह ति १३ म ह द

छांतां महाभैरवीं सिंहाद्यां सिंह भैरवीं धूमपूर्विकां धूमभैरवीं भीमोन्मत्तादिकां भीमभैरवीं उन्मत्तभैरवीं
 आदौ षट्कोणमारच्य त्रिकोणश्चित्रयंततः॥ एतन्महदलं चास्तेभूयुरतत्र पूजयेत् ११॥
 यास्त्वा विजयेत्पापश्चार्जिता चापराजिता॥ नित्यं कृत्वा सिनीचापि देव्यधोराचमं गत्वा
 १२ पीठशक्त्यं यत्तस्युः कौलिको योगपीठतः॥ आत्मने हृदयांते यं मायादिः पीठमंत्रकः
 १३ असिन्धीठं यजेद्देवीं शक्य शिवस्थितां महाकालरतां सत्तां विवाभिर्हृद्यवेष्टितां
 १४ अंगानि पूर्वमाराध्य षट्पत्रेषु समर्चयेत्॥ कौलिकं यो लिनीं कृत्वा कुरु कुल्यं विरोधिनीं
 १५ विप्रचिंतां च संपूज्य नवकोणेषु पूजयेत्॥ उग्रामुग्रप्रभां दीप्तां नीलपद्मां वलाकिंकां १६
 मां त्रामुद्रां तथा मित्रां पूज्याः पत्रेषु मानरः॥ एतस्याष्टमुपपन्नं ब्राह्मीं नारायणीं त्र्यम्बिकाम् १७
 महेश्वरीं च चामुंडां कोमलाम् च पराजितां॥ वंशीं हीनारं सिंहं च पुनरेतास्तुभूयुरे १८ भैरवीं
 महेशाद्यानां सिंहार्धाधूमपूर्विकां॥ भीमोन्मत्तादिकां चापि वशीकरणाभैरवीं १९ मोहना
 द्यां समाराध्य शंकादीनां शुधान्यपि॥ एवमाराधितां कालीं सिद्धाभवादिभिराणैः २०॥ एवीं च

वास्मिन्मन्त्राच्चक्रं प्रतिजानीते अथेति १ मंत्रमुदरति कोधीधेति कोधीशः कः तस्य त्रयं वन्रिवा मासि विधुभिः २ फर्कमा नुरादैरुतनेन चैव राशिहः वा मकारे
उदरसि लसकं सृष्टिः कः दीर्घाकारः पुना किं पालः सदकं द्युतः लिचक्रीकः किं दीशमा रुदः एतत् कमागतं आरावुक्तं वीजानां समकं वन्रिषिषस्त्राहाय
अथ काली मन्त्रं दृष्ट्वा सद्यो वा कसि हि दायकान् ॥ आराधितैः सर्वं हं प्राप्नुवन्ति जन्तुभिरु १ कोधीशान्नितयवन्ति वामासि विधुभिर्मु
नो वराहं दिनमवामं कएचं दसमन्वितं २ बायायुर्मंदरसि लेचं दीर्घासि हिः सहं क्रिया ॥ चर्कं किं दीशमा रुदः मागुक्तं वीजसमकं ३ मंजो
वन्ति शिषागौ यं हं विंशमस्य रोमतः न चान्रसि हि साध्यादिशो धनं मनसा पित्तं ४ नयत्पानि शयः कश्चि नुरव्ययानि भिनक्तं विद्याराशि
सुतो रे वसिष्ठा क मवा मुपान् ५ भैरवो स्यात्मा विभुर्दृडः शिक्काली तु देवता ॥ वीजं माया दीर्घवर्मणा किरुता मनीषीभिः ६ षट् दी
र्घाब्जस्य वीजेन विद्याया अंगमीरितं ॥ मनुकापंच धा भक्ता वर्णा न्द्रशदशक्रमान् ७ त्रदेये भुजेयोः पादौ द्वये मंजीषा विन्यसेत ॥ व्यापकं
मनुना कृत्वा ध्यायेच्चैनसिं कालिकां ८ सद्यः क्लृप्ता शिरः कृपाणामभयं दक्षैर्वदं विभवीं वीरास्यां शिरसां स्रजामुखं चिरामुक्तकेया
वलिं ॥ सुकोसकप्रवहां श्यशान्निलपां शुभोः शवालं कृतिं प्रयासां गीकतमे स्वकोशकुरैर्द्वीभिर्भुजे कालिका ९ एवं ध्यात्वा नये
ह्यसंजुह्या नंदशान्तः ॥ प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायं जमद्यो च्यते १० ॥ अथ काली मंत्रस्य नैव कुंभे अभिः अक्षि च दयाती देवता ईश्वरः ईश्वरः ईश्वरः
स्वाहेति ४ दीर्घवर्मदू ६ वडंगमाह वडिति का कीं मिमादि मानकांमिति अं आं ईं उं उं ऊं क्लृप्तं १० नमो ददिह १० दस्य भुजे उं १० वामभुजे एं १० दस्य पदे
मं ११ वामपादिति धा ८ ध्यानमाह सद्यसति खड्गवरीदस्योः सद्यः क्लृप्ता शिराभये वामयोः सुकिं एणो रोषर्मानयोरसुजोर शिरस्य प्रवाहो यस्यासो मुनोः क

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लोकप्रियता का सिद्धांत ८५

公使

五

एतन्माह गतेति गताचीजपूरभूतवक्रपद्मानिदसेषु अन्त्यायेषु धान्याप्रक्षिप्तं जरी ११६ किंभनयापन्मासरोजन्मनापयेनभूषणसमूहेनचक्रमात्तज्वलन
 शिष्यमाजोहस्त्रो जलंतीगतुश्चयस्याकम्पा १० दीर्घाद्यामानरः आवाहिसमः ईमाहृष्वर्धिरत्यादि १२० सचलदलोत्थसस्यसमिद्धिरागुणान्विप्रानवप्रयेत्सह
 वेदसंज्ञयेन्मंनमष्टद्वयेर्दशांशतः॥ इत्थं पूर्वोदिनेषीर्पूजयेद्गुणनायकम् ११६ अङ्गाच्चापर्ववत्प्रोक्ताप्रक्तिः पत्रेषु पूजयेत्॥ वार्मा
 ज्येष्ठेष्वर्शोऽस्यात्कर्त्तृकत्वं पुरादिका ११० विर्केष्वित्याद्यानादहहलाद्याः प्रमथिन्यापि सर्वभूतदमन्याख्यामनोन्मन्यपि विज्ञात ११८ दि
 क्षुप्रमोदः सुमुखाविघ्ननाशकः॥ दीर्घाद्यामानरः पूज्यादंदाद्यां आयुधान्यापि ११८ एवं सिद्धिमनौकृत्यासयोगानिष्ठसिद्धये॥ वप्रये
 त्कमहेर्भूयान्मच्चिणः कुमुदं ईनेभ्यः समिद्धरे च्चलदलसमुद्रगैर्दण्डसुरान्॥ उदुम्बरोत्थेर्दृपनीस्यस्यैर्वाधैर्वशोनिमान् १२० स्त्री
 देणकनकप्रापितोप्रापिः पयसायवामभक्तुद्धिर्दधौदनैरन्ध्रैः श्रीर्वनसैर्जलं १२० नारीकर्मगतीशोभूहरिद्रीगणलोहितः॥ आ
 षादीयेवरवरसर्वास्वर्जतर्जनी १२३ हृदयलम्भयद्वद्वेद्यभास्वणैरतसः॥ द्वात्रिंशदसुरोमन्त्रोसदन्तोमुनिशिरतः १२४ च्चद्रेज
 पुष्टदेवनातु हरिद्रागणनायकः॥ वेदादृशरससाङ्गनेत्राणैरङ्गमीरितम् १२४ पार्थोङ्गद्वौमोहकमेकदन्तकैर्दधानं कनकासनस्थम्
 हरिद्रसख्यप्रतिमुनिनेत्रपीतोन्मुकस्यैर्गणैरशमीडि १२६॥ अथ हरिद्रागणनायकमंत्रेण समदत्तं अक्षिः अनुष्टुप् छन्दः हरिद्रागणनायकोद्देवतामममिह
 अङ्कगामोदकेरस्योः प्रत्येकामयोः २
 ॥ समिद्धिर्वेषान् वदजाभिरंनिमान् १२७ ॥ १२४ हरिद्रागणनायकस्य
 हरिद्रस्यैः नारजैर्वर्माङ्गणैश्चोगंभूः स्त्रिंशो हिक्रमः अष्टषाटीतः सत्योदः गर्जनीनः सलितरसो वल्लभास्वहा स्वरुधमन्त्रं यथा औङ्गं र्द्वैत्यैः हरिद्रागणनायकस्यैव

॥ समिद्धिवशान्न वटजाभिश्चिमान्प्रदोष १२४ हाहाहाहाहाहाहाहा

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५.२.१
५२
५५

वड्डमाह रमेति श्रीगंहर श्रीगंहरिः श्रुंयंश्चिन्वादि ध्यानमाह दन्तेति दन्तप्रहोदस्योः अभयचक्रैकामयोः भुवः प्रेस्वर्णकुम्भः १०४ नावन्ति
लसंनकलं धनवृद्धिः १०६ त्रैलोक्यमोहनगणेशमन्त्रमाह चक्रेति स्वरूपं एतद्वक्त्रः कर्त्तुं युक्तं अविदुतः मन्त्रयः क्लीं माया हीरमा श्रीगजमुखो गंभीरी
वक्त्रं तु ईकं दृष्ट्वा ईकं ईकं गणेशं वरवदसर्वजनमेव प्रणमय स्वाहा
प्रसवपद्मनिधीपूज्यो पार्थिवो दक्षवामयोः ॥ लोकाधिपानदस्त्रा लितद्वहिः परिपूजयेत् १०५ एवं सिद्धिमनौ मन्त्री प्रयोगान्कुरु म
हति ॥ उरुमाने जले स्थित्वा मन्त्री ध्यात्वा कर्म एतले १०६ एवं त्रिलोक्यं जपतो धनवृद्धिः प्रजायते ॥ विल्वमूलं समाख्याय गावज्जपेत्
लं हिनत् १०७ अशोककाष्ठे ज्वलिते वस्त्रावाज्या त्त एतले ॥ होमो वृषा यो हि भूमर्क काष्ठे शुचावपि १०८ खादितो नरपुत्रिलस्मी
पायस होमतः ॥ वक्त्रं कर्त्तुं युक्तं लोकोद्देशं प्राप्य मन्त्रयः १०९ मीयारमागर्जमुखो गणेशो भगीरथः ॥ वरवाल्मीकिर्निसन्तः सेरफारु
दंजलं स्थित्वा ११० संदुर्मर्षो मे वशाने मानयोः धनं प्राप्नोति ॥ त्रिंशदण्डो मनुर्वैलोक्यमोहन १११ गणेशोऽस्य भूषणं भूषणं
यन्त्री देववायुनः ॥ त्रैलोक्यमोहनकरो गणेशो भक्तसिद्धिः ११२ विवेदप्ररोदं च दसनैः वड्डकमागदादीजपूरं धनुः भूलं च कं
रोजो नैले पाशान्माघदं नो न ११३ करैः संदधानं स्वशुंजय एजन्मणी कुम्भमङ्गाधिरुदं खपन्त्या ११४ सरोजं नमना भूषणानां भरे
लो ज्वलद्वसतन्वा समातिङ्गि गाङ्गां ११५ करीन्द्रानं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं जगन्मोहनं रक्तकान्तिं भजेत् ११५ ॥ ६८ हरिः सयुतस्तः सलो व
अमौ रः सन्तोदरे कारुण्यं जसं वं स्थितः सः दुर्मर्षः नः उषर्धुधिया स्वाहा स्वरूपमन्त्रयः पञ्चावकतुंडैकं दृष्ट्वा यत्कीर्त्तौ श्रीगणेशपते वरवरसर्जनं मे वशमा
अस्य त्रैलोक्यमोहनकरो गणेशमन्त्रस्याणकोः ऋषिः गावदीर्घः त्रैलोक्यमोहनकरो गणेशो देवता ममाभिष्टुतिं ध्येयं जपेत् श्रीयोगः ५

नयस्वाहेतित्रयस्त्रिंशद्वर्णः ११२ षडंगमाह रवीति
३ उदन्वैश्वत्वारः ११४॥

المبر

ॐ श्रीगणेशाय नमः । सर्वत्र नमो वक्ष्यते । नमः ।

五

१। २
३। ४
५। ६
७। ८
९। १०
११। १२
१३। १४
१५। १६
१७। १८
१९। २०
२१। २२
२३। २४
२५। २६
२७। २८
२९। ३०
३१। ३२
३३। ३४
३५। ३६
३७। ३८
३९। ४०
४१। ४२
४३। ४४
४५। ४६
४७। ४८
४९। ५०
५१। ५२
५३। ५४
५५। ५६
५७। ५८
५९। ६०
६१। ६२
६३। ६४
६५। ६६
६७। ६८
६९। ७०
७१। ७२
७३। ७४
७५। ७६
७७। ७८
७९। ८०
८१। ८२
८३। ८४
८५। ८६
८७। ८८
८९। ९०
९१। ९२
९३। ९४
९५। ९६
९७। ९८
९९। १००

2

सत्ययज्ञिनम् ६३ पुत्रान् पुत्रान् ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

॥२॥

[illegible]

प्रा. वि. १९९९

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥

अथ ३
१ ३४

१०१ चतुर्लज्जयेन्नत्रसमिद्विवल्लणसिनः १०२ दयांशज्जुदयान्तीरेद्वौकेनेद्वपुज

पुनर्वि

येना आदाव कविमय नृणां विमायते २३ वलकी विमलयश्चालु मलयनमालिका विभीषिकामालिका चण्डिका

2015

[illegible]

1. The first part of the document is a title page. It contains the title of the document, the author's name, and the date of the document. The title is "The First Part of the Document". The author's name is "John Doe". The date is "1/1/2023".

आत्मभूः स्त्रीमाया हीवर्महृदं नागनासाहासरूपमनयथा ओं हस्तिमुखपलम्बोदरापउच्छिष्टमहात्मने ओं नोहीं हृदये उच्छिष्टाय स्वाहा ह्यन्निशदर्यः
 ८७ षडंगमाहरसि ८८ उच्छिष्टपणेषाउक्ताः स्मृतिविनायकसंस्तमन्नागरमाह मायेति माया हीं पञ्चानकहनाशनौगकारकोनिर्भर्त्तिचन्द्रस्थो रक्ता
 ॐ हस्तिमुखपलम्बोदरापउच्छिष्टमहात्मने ओं हस्तिमुखपलम्बोदरापउच्छिष्टमहात्मने

ससाहमेधेनश्चानि सर्वद्योरापदवाः ॥ ध्वजवोवशाया निवहन्त धनसपदः ८० दुष्टस्त्रीवामपादस्य रजसा निजदेहजैः ॥ मलैर्भुव
 पुरीषाद्यैः कुंभकारमुदायिव ८१ एतैः कृत्वा गणेषास्य प्रतिमां सधर्मांङगाम्। संपूज्य निखने दूभौ हस्ताहं पूरिते पुनः ८२ संस्थाप्य वा
 निहंज्या कुसुमैर्हयमास्यैः सहसंसाभवे द्वासी नत्वा च मनसा धनैः ८३ एवमादिप्रयोगाणां नृत्वा एनपि साधयेत् ॥ गणेशसि
 मुखीया षडङ्गोलम्बोदराया ८४ उच्छिष्टाने महीत्मा देया शीङ्गुः शोभात्मभूः ॥ मायावर्त्मचेष्टयेत् उच्छिष्टाय सहनान् ८५
 द्वात्रिंशदक्षरोमं चोपजनं पूर्ववन्मतमा ॥ रसेषु सप्त षट् षट् कर्त्तव्यं चैतरेभ्यः शीर्षेण ८६ उच्छिष्टगजवर्कस्य मन्त्रे स्वेष्टेन शोधनम्
 सिद्धादिचक्रं मासाहैः प्रासादो सिद्धिरागुरोः ८७ मन्त्रवोमीसदा गोप्यं न भ्रकाश्याय नः कुतः परीक्षिता यश्चिन्मायप्रदेया निजसूत्रे ८८
 नार्थाचर्मनि चंद्रस्थोपंचीनं कदौ प्रनो ॥ तारीं दिशो किं वीजानो मं चोपचतुरक्षरः ८९ मूर्ध्नि वस्य मुनि भुंदे विराटशक्तिगणधियः ॥
 एतस्वारयुक्तो तेन ग्रीवादिशक्तिवीजानः प्रणवादिर्मया वीजानः यथा ओं हीं श्रीं हीं ३ ॥ ९० ॥
 ॥ द्विंशं ओं हं निचतुर्वर्त्यः ८८ वेदेति पूर्व ए सन्त्यः मायाशक्तिः द्वितीया वीजम् षडङ्गमाह षडिति उं ग्राहत् उं श्रीं शिरदन्मादि ॥ ९० ॥

अस्य शक्तिगणधियः पञ्चनस्य भर्गवः शक्तिः विराट् चंद्रशक्तिगणधियो रचना हीं शक्तिः प्रविजं अभिषिष्य र्थं जयेति नीयोगः ३

वृत्तं शुक्रं तं प्राण प्रतिष्ठा ७३ वृत्ती सुही ७४ अरिष्टो निमः ८१ हयमारजैः करवीरोत्थैः ८६ मन्त्रान्नरमाह गोरेति नारः उँमाहात्मा ३ महाकनेनाम्
 पंध्यात्वादासवत्सोपि वश्यो भवति निश्चितम् ॥ नदीजलं समादाय सप्तविंशति संस्य या ६६ मंत्रयिन्नामुखं तेन प्रस्थाप्यैश्वर्यं
 ब्रजेत ॥ पश्येद्यं दृश्यते येन सवश्यो भवति तस्य ६७ चतुःसहस्रं धनं १५ व्यालमनु नार्पयेत् ॥ गणेशाय नमः ॥ यथा नो जनां वश
 नाकते ६८ सुंदरी वामपादस्य रेणुमादाय न चतुः ॥ संस्थाप्य गलनाय स्य प्रतिमां प्रजयेन्मनुम् ६९ नो धर्मत्वारविद्याहसं समासा
 यानि दत्तः ॥ चोत्कर्षेण यानि मेन कृत्वा मूर्तिं धनामुक्ताम् ७० चतुर्थ्या पूजयेद्वाचौरजैः कुसुमचंदनैः ॥ जस्वा सुहस्रं नामुनिशि
 येद्वाचौ सरिते ७१ स्रष्टुं कार्यं समाचरेत् स्रष्टे तस्य गणविपः ॥ सहस्रं निमकाष्टा गोहोमादुच्चाटयेदरीन् ७२ वृत्तिणः सप्तविंश
 होमादिपुण्यं पुरं ब्रजेत् ॥ वानरस्यास्थि संजग्राहि स मुच्चाटयेद्गृहे ७३ जसं नरास्थि कन्याया गृहे हि प्रोतदासि कृतम् ॥ कुलार
 स्य मुदा स्त्रीणां वामपादस्य रेणुना ७४ कृत्वा पुनरिहिकं तस्यं स्त्रिस्त्रीनामसंलिखेत् ॥ निखने नमं च संजगैर्निमकाष्टिः हि
 नाविमाम् ७५ सो नमना भवति स्त्रिप्रमुधनायां सुखं भवेत् ॥ शत्रोरेवं कता सा तुल्यं न सप्तमन्विता ७६ प्रसावान्मर्गनासप्त
 कपूजिता इति विद्विषः ॥ निखानापक्षमात्रेण प्राचृच्चाटनकृत्स्मता ७७ विसेमे सप्तनु प्रासे सिता की निमदा रुजमगणपं
 जिने सप्त कुसुमैरक्तचंदनैः ७८ मद्यमाण्डं स्थितं हस्तमात्रेण निखने न स्थले ॥ तत्रोपविष्य प्रजयेन्मन्त्री नक्तं दिवा मनुम् ७९

अं भगो भगने एक दहाय हसिमुखा मत वेदराय उच्छिष्टमहा भगने अं कौं हि गं वे वे स्वाहा ३

धनुषा प्रवामयोः अये दक्षिणयोः

मं दीनो

न. २

१२

नारायणाय नमः ॥ अं हसिपिणचिलिसेखाहा गलेण घोषया गं हसिपिणचिलिसेखाहा होदणालो ५० मन्त्रान्तरमाह ध्रुवेति ध्रुवः प्रणवः दृन्ममः स्वरूपमन्त्रे
मन्त्रः ॐ नमश्छिष्टाण्यहसिपिणचिलिसेखाहा इत्येकोनविंशतिवर्णः मुन्यादिनां किः छंदो देवताः नवात्मनः ५८ षडङ्गमाह त्रिभिर्दिशि अर्चनपूजा
नार्त्तनो भगवते किं दीश्वराननं नंदं द्वाय हसिस्वायस्वोदराय च ५० उच्छिष्टमविषदीर्घानने पाशां कुक्षेयराः सेंदुः धर्म
भगवते हे मेधे वन्दि कामिनी ५८ उच्छिष्टाण्यहसिपिणचिलिसेखाहा गं हसिपिणचिलिसेखाहा गं हसिपिणचिलिसेखाहा गं हसिपिणचिलिसेखाहा
इत्येकोनविंशतिवर्णः ॥ समादिनां सप्तविंशत्येवमर्चनोः ६० शान्धनः पाशसूणीस्वहमे ईधनमारक्तसरोरुहस्थं विषय
यत्नां सुरतप्रवृत्तमुच्छिष्टमन्त्रां सुरतमांश्वयेहम् ६१ लसंजयेह नैर्हृत्वा तदृणां प्रपूजयेत् ॥ पूर्वोक्तयोरेखाभिषिष्टये पूर्ववदि
भुजम् ६२ हृदयाष्टम्यादिततद्गतं यावता वक्ष्ये न्मुत्तम ॥ प्रपूजं साष्टाहसं जुहयान हृदयं सक्तः ६३ तप्येदयि नं चोयं सिद्धिमे
वंप्रयच्छति ॥ धनं धान्यं सुगान्धैवात्सौ भाग्यमनु लंपसः ६४ मूर्ध्नि कुर्वा न लेणस्य शुभाहे निम्बदरुणा ॥ प्राणयानि धां कृत्वा
अप्यमंत्रवत्तगलकं भविः नयनीकं दं जहि हं लपति देवता अक्षिज्वाले ज्योतिर्भूयः ॥ १८ एतदप्येवं न माजयेत् ६५
वदित्यर्थः ५८ मन्त्रान्तरमाह नारेति किं दीश्वः एचतुराननः कः दीदीवियन् हयाया उमा अकुप्राः कोपराही सेन्दु ॥ एतदप्येवं न माजयेत् ६५
स्वाङ्गी गं भगवते हे मेधे एकास्य तव हृदयम् कन्दे कामिनी स्वाहा अन्यस्वरूपम् उँ नमो भगवते एक दं द्वाय हसिमुखा यत्नवोदराय उच्छिष्टमहा भगने
अं कौं हि गं वे वे स्वाहा अदिगुण्यहा सप्तविंशदक्षरः ६१ षडङ्गमाह सप्तेति ६३ ध्मन्माह शरानिति धनुः पाशौ वामयोः चरं कुक्षौ दक्षयोः ६४ नन्दनं

१३

वल्मीकमृत्तिकप्रतिमैवंधृष्टिमात्राभेदेति ४८ अधिष्टाप्यम् शय्यायाम् कटुनैलं सर्वपतैलम् ५० अनरिष्टात्रहीनम् ५२ नेनेनताम्रल्लादिना ५३
वस्त्रिभंश्चमाह स्मृतिर्गः सेतुस्सानुस्वारः आकाशं हः तथासानुस्वारः सध्विक्कैककारलकारौ काटणे मन्त्रिहा लोः स्त्रीं उच्छिष्टगस्वरूपं भगवन्मित्रउक्त
नैर्हैः क्ता उच्छिष्टगलेष्टपम सायक्षपापवतिः ॥ अनुस्वारः

सुतोधिष्टाप्यमुच्छिष्टोजयनस्वरूपं नयेत् ॥ कटुनैलान्वितैराजीपुष्पैर्विह्वयेदरीन् ५० दूनेविवादे समरेजसोयज्यमावहेत् ॥
कुव्रेरोस्पमनोर्जापान्निधीनांस्वामिनामिषात् ५८ लेभातेराज्यमनरिचानरेष्टाधिभीषलेण ॥ रक्तवस्त्रां गृह्णाद्यसां वृत्तिं प्रयत्नं न
येत् ५८ पट्टानिवेष्टितं तस्मै मोदकं भक्षयज्जयेत् ॥ पिशितं चाफलं चापितेन तेन वस्त्रिं हरेत् ५० सेतुः स्मृतिस्तथा काशं मन्त्रिहा चोचसु
हिस्त्रौ ॥ पंचांतकश्चोतद्वद्विष्टगभगान्वितः ५९ उमाकांतः शायमांते रायस्याया सविदुषः ॥ वस्त्रिं जेष कश्चिनो न वेदते क्वचिर्भुजः
५२ ध्रुवो मायासेदुष्टाभिः वीजाढ्यो न ववर्णेकः ॥ ह्यादरण्ये मुक्तः प्रोक्तः सर्वमस्य न चार्णवत् ५२ तासां सध्वगणे शायो न चार्णवत् ५२
एकं प्रोक्तो हि बोधासन्नं तत्रोक्तमस्य न चार्णवत् ५४ ध्रुवो ह्येव हि विष्टगलेष्टायां ते तु न चाक्षरः ॥ एको न विष्टगलेष्टो मनुर्मुखादि
पूर्वकः ५५ त्रिभिर्भेदाभिस्त्रिभ्यां त्रिभिर्द्वाभ्यां द्वयेन च ॥ मंत्रोत्थितैः सुधीर्बलेः कुर्यादंगपुरा च न ५६ ॥ ९० को न रक्तमयनेष्टे स विदुषः

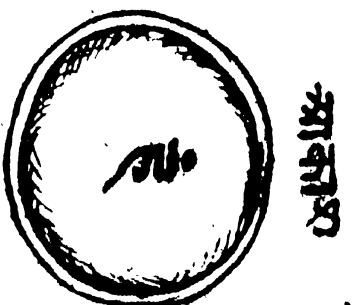
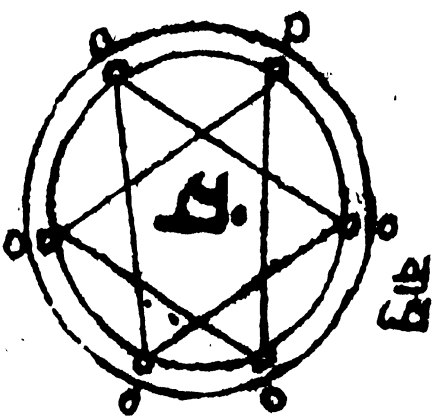
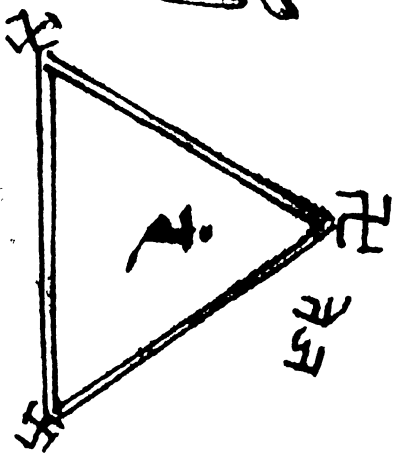
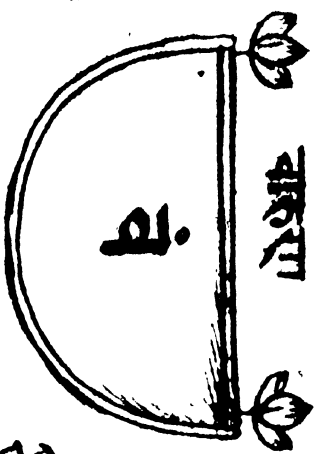
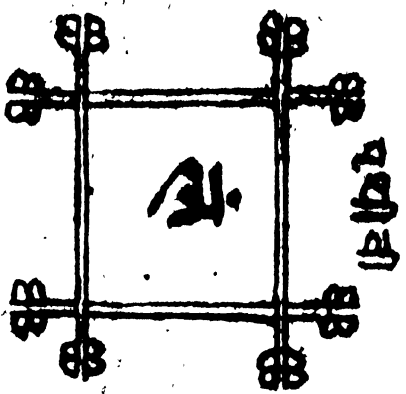
सांस्त्रिष्टोपकारः अन्यत्सस्वरूपम् मन्त्रेष्वप्य गं हं त्रैः स्त्रैः उच्छिष्टगलेष्टपम सायक्षपापवतिः रत्नेको न विष्टगलेष्टो मन्त्रः ५५ मन्त्रांतरमाह सुवेदि
ध्रुवः उमायाहो धार्मी गः सेतुः अनुस्वारसहितः गं विवीजाक्षः स्पष्टं यथा उच्छिष्टं हस्तिपिष्टाच्चिलेस्त्रिस्त्रोहरेति ह्यदृष्टार्णः ५६ ॥ ५७ ॥

षडङ्ग-माह ह्यभ्यामिति हसिहृदयाय नम इत्यादि ३५ ध्यानं माह चतुर्भुजमिति अंकुशमोदकपात्रे दक्षयोः अन्ययो रन्य ३५ प्रयोगानाह सेनि अ-
 न्युक्तं नैव नैव
 पंचांगान्यस्य कुर्वीत ध्यायेत्तं प्राप्तिशेखरं ॥ चतुर्भुजं रक्ततनुं विनेत्रं पाशकुर्ये मोदकपात्रदत्तौ ॥ करैर्दधानं सरसीरुहस्थमुन्नतमु-
 छिष्टगले प्रसीडे ३५ लक्ष्ममेकं जयेन्मन्त्रं दशांशं जुह्यान्निलैः ॥ पूर्वोक्तेषु जयेत्सीठे विधिनो छिष्टविष्टं ३५ आदावंगानि संपूज्य ध्या-
 न्स्याद्यादिषु पूजयेत् ॥ दासीमाहेश्वरी वैवकी मारी वैष्णवी परा ३६ वाराही चतुर्थं द्राणी चामुंडा रम्यां सिंहं ॥ कर्तुं सुवक्तुं ज्ञाद्यान्
 दशसुप्रतिपूजयेत् ३७ वक्तुं देकं दक्षिं चतुष्टालं बोदराभिधः ॥ विकटो धूम्रवर्णश्च विद्वश्चापि गजाननः ३८ विनायको गणप-
 तिर्हसिदंताभिधो निम्भः ॥ दद्राद्यान्पि वज्राद्यान्पूजयेत्तद्वति हये ३९ एवं सिद्धिमनोमंजी प्रयोगान्कतुं मर्हति ॥ स्वांशुष्यमिनां क-
 त्यां कपिनां सिनभानुना ४० गणेशप्रतिमां रम्यामुक्तलक्षणलक्षितां ॥ प्रतिष्ठाप्य विधानेन मधनास्त्रापयेच्च मां ४१ अग्रभूतं
 सभूमादिषा वहुक्त्वा चतुर्दशी ॥ सगुंडपापसंतस्यै निवेद्य प्रजयेन्मनुं ४२ सहस्रं प्रत्यहं नवजुह्यात्सप्तैकैः ॥ गणेशे सभ-
 ति ध्यायन्नुच्छिष्टो नाह नैव हः ४३ पद्माद्राज्यमवाप्नोति नृपजो न्योपि वानरः ॥ कुलालमुत्ताप्रतिमापूजितैर्वंसुराज्यदा ४४ वल्मी-
 कमुत्तनालाभमेव मिष्टाप्रयच्छति ॥ गोडी सोभायदासैवं लावणीं स्तोभयेदरीन् ४५ निष्कजमाशयेच्छत्रुभ्यनिर्भवं समीर्चयाम् ४६
 सांभवेका
 ध्यानारक्तचंदने नशितभातुनास्तेनार्केण वा प्रतिमाकार्या ४४ अनाहतो निस्त्रिः ४६ ॥ ॥ कैर्होमनोलाजैर्वशापेदखिलं जगत् ४६ ॥
 धनमधुशर्करा

धीमंत्रमाह गंसर्वशक्तिकमलसनायनमः एतेनासनंदत्वामूलेनमूर्तिर्नकल्पयेत् १२ अथोगानाह ब्रह्मणि १८ मउत्तरकानयचाशादनमध्वरुह
 तीव्राचज्वालित्तीर्नदभोगादाकामरूपिणी ३ ग्रातेजोवतीसत्यानवमीविघ्ननाशिनी १० विनायकस्यमंत्राणामेताः स्फः पी
 ठशक्तयः ॥ सर्वशक्तिकर्मातेतुलासनायैहं दंतिकः ११ पीठमंत्रसदीयेनवीजेनाशैसमन्वितः ॥ प्रदायासनमेतेनमूर्तिमूलेनकल्पये
 त् १२ तस्यांगशमावाख्यपूजयेदासनादिभिः ॥ अभ्यर्च्यकुसुमैर्धौंकर्षादावरणार्चनं १३ आग्नेयादिषुकोणेषुहृदयंचक्षिरेऽग्नि
 रत्वा ॥ वर्माभ्यर्च्यप्रतोनेत्रेदिह्रस्वत्वेपूजयेत्सुधीः १४ द्वितीयावरणेपूज्याः प्रागाद्यष्टैवशक्तयः ॥ विद्यादिमाविधात्रीचभोगादाविघ्नघा
 तिनी १५ निधिप्रदीपापापघ्नीपुण्यापश्चाच्छशिप्रभा ॥ हलाग्रेषुवक्रतुंडएकदंष्ट्रामहोदरः १६ गजास्यलंबोदरकोविकटोविघ्नराज
 कः ॥ धूम्रवर्णसंद्रेषुप्रक्ताद्याआयुधैर्युताः १७ एवमावरणैः पूज्यः पंचभिर्गणनायकैः ॥ पूर्वोक्ताचपुरश्चर्याकार्यार्मनस्यसिद्धये १८
 तत्तत्सिद्धेमनोकाभ्यान्प्रयोगात्साधयेन्नजान् ॥ ब्रह्मचर्यरतोभंजीजयेद्भविमहत्त्वकं १९ वराभासमध्यादिरिज्येनाश्रययेवनिश्चि
 तं ॥ चतुर्थ्यादिचतुर्थ्यंतजपेद्दशसहस्रकं २० प्रत्यहं जुहयादष्टोत्तरं शतमनेदिनः ॥ पूर्वोक्तं फलमाप्नोति षण्मासाद्भक्तितत्परः
 ॥ २१ ॥ अज्याक्ता न स्पृशेमे न भवेदहनसमृद्धिमान् ॥ पृथुर्केनारिकेलैर्वा मरिचैर्वासहस्रकं २२ ॥ ॥ शुभान् मंत्रांतरमाह एषस्योषेतिस्व
 रूपभृगुः सः पादयोपकारयुतः मेघोनः सात्वतगोधः गोमदक्षौरयुतौ गगनंहः रतिर्णः ससद्याओयुता शार्ङ्गगः खंहः अन्यत्वरूपं षडक्षरः पूर्वोक्तः पद्यागय

आहोसकलविधानिवर्तकस्य श्रीगलेप्रसमं जानवक्तुं प्रणिजानीते गलेप्रस्येतिमन्त्रं जानमन्त्रे सर्वथैरिति मन्त्रमुद्धरति जलं चः चकीकः वहिरः न
नयुक्तः तेनैक कामिका नः कर्णेष्टुत्वा प्रविष्टयुगानेन तुं दीर्घात्तेन युगोत्तरकोऽ बायुर्धः कवचं पश्चिममने यस्य स तथा वक्तुं जायहमिति साविधु
गलेप्रस्यमन्त्रवस्थे सर्वो भीष्टप्रदायकान् अलचकीचहिरयुक्तः कर्णेष्टुत्वा च कामिका १ शीरको दीर्घसंयुक्तो वायुः कवचं पश्चि
मः ॥ षडस्य मन्त्रं जीमजगामिष्टासिद्धिः २ भार्गवो मुनिरस्योक्तं भूदो नृपुत्राहृतं ॥ विप्रेशो देवता कीजं वंशतिर्यामितीति न
३ षडस्यैः साविद्युभिः प्रणवाद्यैर्नमो नमैः ॥ प्रकुर्याज्जातिसंयुक्तैः षडंगविधिमुत्तमं ४ भूमध्यकंठदृष्टयनाभिलिङ्गपदेषु च
मनोवर्णकमान्यस्य व्याप्यायोसरेभ्यः ५ उद्यदिनेभ्यरुचिनिजहसपद्मैः पाशांकुशाभयवरात् ६ धतंगजास्यं ॥ रत्नं व
रं सकलदुःखहरं गलेषां ध्यायेन्मसन्मरित्वभरणभिरामं ६ न्तुलसंजयेन्मन्त्रमष्टद्वयैर्दशांशतः ॥ जुहुयात्तन्मन्त्रं संसि
द्धे वाडवान्भोजयेच्छुचीन् ७ इत्येवः सक्तं चोर्भाषत्तानि चिपिदासिलाः ॥ मोदकानादिकेला निस्त्राजादव्याधुर्कं स्मृतं ८ श्री
ठमाधारशक्त्यादिपरतन्त्रां तमर्चयेत्तन्मन्त्राष्टदिषु मध्ये च संपूज्या न वशक्तयः ९ ॥ १० भिः सानुस्वरीः औवनमः हृदयानमः दंष्ट्रादि
व्याप्य सर्वमन्त्रं सर्वशरीरे न्यस्य न्यर्थः ५ ध्यानमाह उद्यदिनि पाशाभये वा मयोः वरांकुशा वन्ययोः ६ वाडवा विप्रात् ७ द्रव्याष्टकमाह इत्यवशति ८ म
ॐ नमः हृदयाय नमः ॐ कं नमः शिरसास्त्रादादमादि ॥ नमः स्वाहा वषट् हुं वौ षट् फट् ६

ॐ नमः हरणाय नमः ॐ कं नमः शिवाय नमः ॥ नमः स्वाहा वषट्कार ॥



प्रलीनाम्बुभित्तिस्त्रात्रस्येदस्त्रियांदिरेत॥उविधिंविस्मज्जचन्ति तं प्रोक्षं तं प्रोक्षणी जज्ञे १

नर्पणमंत्रमाहमूलमंत्रांते कृष्णं नर्पयामि नमस्त्वित नर्पले कृष्णमभिषिञ्चामीत्यपि वे के २०० ज्याहृष्टांष्टमेः तदृष्टांष्टेन नर्पणं तदृष्टांष्टेनापि वे के तदृष्टां

उभितोवौषडंतेनमूलेनजुहयाहसौ॥तदभ्येणहनीनांचजुहयादाहुनिंष्टयक् ६० देवांसुज्यसत्सद्विकन्तेर्जिह्वांगमूर्तिभिः
जुहयाद्याहृगीर्हृत्वाप्रोक्षेत्तं प्रोक्षणीजज्ञेः ६८ संप्राप्यानेनमनुनानत्वातं विसृजेद्दृष्टि॥आभोचन्तेमहाशक्तैः सर्वकर्मप्रसाध
क ६६ कर्मन्तरेपि संप्राप्तेसावित्र्यं कुरुसाह॥चन्तेपवित्रेतिस्त्रिष्यप्रणीतां वभुविस्त्रिष्य २०० विधिं विसृज्यसकृदष्टान्यपि
त्रिभ्यसेहसौ॥एवं होमं समाप्याथ तर्पयेद्देवतां जज्ञैः १ आवात्य तदृष्टांष्टेन तर्पणदपि वे चक्रां नर्पयामि नमश्चेति द्वितीयां
नेष्टपूर्वकं २ मूर्त्तं तदुपदं देयं सिञ्चामीत्यपि वे चने॥ततोनाताविधौ रक्षेत्सर्वयेहि जसन्माव ३ दृष्टरूपान्समाष्टयनेभ्यो दक्षा
चदस्त्रियां॥नूनं संपूर्णो जायते ब्राह्मणराधना च्छां ४ देवताभ्यु प्रसीदति संपद्यंते मन्त्रे रथाः २०४ ॥ ॐ ॥ ७ ॥
॥ इति श्रीमहोद्यरविचिते मंत्रमहोदधौ भूतशुभ्यादिकथनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॐ ॥ मंगलमूर्ति येभ्यः ॥

येन विप्रतो जनमिति पंचांगपुराण्यभिनि कनीयान् पक्षः अभिवेकवर्जो मध्यमः तर्पणमिवेकवर्जस्त्रयांस्तममः पक्षः होमदृष्टांष्टां द्विजभोजनमि
ति किंचद्वहनावड्वाह्यलभोजने देवताप्रसादो भवति॥ इति श्रीमंत्रमहोदधौ नाथरचिते प्रथमोऽध्यायः १॥

रणसहितान्वसावर्गो १८५

तस्मिन्मदतिमं श्रेण अमये स्वाहेति दसने त्रे सो माय स्वाहेति वामे न ददुति चतुष्टये जने नैत्रमुख प्रकाशे भवतीत्यर्थः १०४ ऊं अस्यानेर्भिधानस

अभयस्य ६

अमये यमि प्रिया सो माय स्वाहेत्यप्येनेत्रयोः ॥ जुहवा दानीषो माभ्यां स्वाहेत्यष्टिगततीपके ७४ यानये ददुतेः शेषमाह निप्रह
एष्यते ॥ भूबोह ददस्मभ्या ददाया ज्यमुसेयवेत् ७५ अमये स्विष्टकृते न त्रे वासो ह्वादनं मतम् ॥ न दसिंहं विना विषमं त्रेनेत्र
द्वयपजेत् ७६ नरासिंहं च देवेषु च देवैर्नम्रयं स्मृतम् ॥ महा व्याहृतिभिर्व्यक्तं समम् ॥ भिभ्यः पुष्टयम् ७७ आहुतीनां त्रयं च नैर्मन्त्रे
लो वत नभ्यै तस्माद्दुनिमिश्रणमिरेकैकां संस्तुतिं चरेत् ७८ ओमस्यापेरमुसंस्कारं करोम्यमिव हवामा ॥ इत्यमन्त्रं जपन् गर्भाधा
नंपुंसं धनेत नः ७९ सीमं नो नम्यन्तं जातकर्म कत्वा ततश्चरेत् ॥ वक्ष्ये पंचसमिद्धे मा ॥ इत्यमन्त्रं जपन् गर्भाधा
नेन पूर्ववन्मात्रं शुक्लैः ॥ नामान्नमेतस्य पितरौ सेवयेत् ६१ अन्नमादां न च्छाये लोपन् यो दारयोजनं ॥ संस्कारः सप्तविं
वाहं तापमूर्धनाः कुरु कर्मणि ८२ एकैका गृह्यं कुर्याद्देवैर्ज्योताभ्यर्च्यभिः ॥ इन्द्रादिभिश्च वज्रादिर्हृतांतिर्नृणां जनः ८३ स्तुते

स्वादिभिः

एषा ज्यं चतुर्वर्णिधाय स्तुतिं सां सुधीः ॥ अग्निधाय स्तुते तैर्वैष्णवीणा गतकरमुपमानः ८४ ॥

८५ स्कारं करोमि स्वाहेत्यदि १०६ पंचसमि

धं होमादहो रनेर्न सपनयनात्म्यः संस्कारः देवाभिधानेन देवनाम्ना भुक्मणेनैर्नामपूज्यं चतुष्टयं गृह्यते नृकुर्यात् एवमग्निः कृष्णाग्निर्दित्यादि ७८
एतस्याग्नेः पितरौ वा यथा यथा शौकं द्यास्व ददित्यसेत् उपनयनं उपवीतं द्वायोजनं च चाहं १०६ द्वायस्य लेन विभक्तं न १०७ ॥

विदेति स्वरं ना नाम न्युपसृप्तार्त्तं ४

मं. टी. चै. नं. १

शक्तित्रयमह रत्नेति दीर्घत्रयं आर्द्रत्रयोमहः ननु पूर्वकां संदृष्ट्वा यन्नै नमो मूले हीं स्तनशक्तये मध्ये हं क्रियाशक्तये अंति १६२ नोमद्रायेन मुद्रा १६६
 संयोगोऽस्य लीनो यैः प्रतप्य पूर्ववत्पुनः नस्यायोगो मार्जनं नान्दुर्भक्तयोः शक्तित्रयं न्यसेत् १६२ इच्छाज्ञानक्रियासंज्ञा चतुर्थी नमः सु
 नमसा विना दीर्घत्रयं दुष्टं क्वेयमपूर्वकं स्थानकत्रये १६३ दृष्टा श्रुतिचिन्त्यसेच्छक्तिं श्रुवेष्टा भुगतस्तु नो सूत्रत्रयेण संवेष्टय संप्रज्ज नमः सु
 कुसुमादिभिः १६४ कुशोपश्रित्यसेद होतयोः संस्कार ईरितः अस्त्रोक्षिनाया माज्यस्य स्यात्सामाज्यं विनिक्षिपेत् १६५ वीस्येण
 दिक् संस्कार संस्कृतं भूतमं नत गोमुद्रया मृगीकृत्य षट्संस्कारान्नतन श्वरेन १६६ कुंडो हते चायुकोणे स्थिते गारे विनिक्षिपेत्
 दृष्टेति नाप नं प्रोक्तं दर्भयुग्मं प्रदीपितं १६७ दृष्टं त्रेण क्षिपेत् तज्जपे वित्री करणं मतं आ ज्ये क्षिपेद् दृष्टा मं श्रीपवित्री करणं चिस्
 ॥ १६८ आज्यं नैराज्ये दीप्त दर्भयुग्मेन वर्मेण अभिघोतनमुक्तेन न दीप्तं दर्भं न्यपवृत्ते १६९ दर्शयेदस्त्रेण चो नो गृहीत्या धुन
 यां त्रिंकां संयोग्या नो त्रदंगाशन सलिलं संस्पृशेत् सुधीः १७० अंगुष्ठानां मिकाभ्यां त्रिदर्भा दद्यात् निक्षिपेत् त्रिशिनसं मुखे
 नाज्यमस्त्रेण न्यव नं चिदस् १७१ दृष्टा त्वसंमुखं न हृदा ज्यक्षेप सुसंक्ष्वः नीराजनादिसंस्कारे षट्पौ दर्भान् विनिक्षिपेत् १७२ द
 र्भद्वयं क्षिपेत् तं घनमभ्ये विनिक्षिपेत् वामदक्षिणयोः पक्षे स्मृत्वा नाडीत्रयं स्मरेत् दक्षिणाहम नो मध्याह्नादस्य घृतं सुधीः ७३
 नदीत्रयमिडापिं गला सुषुम्णा ख्यं नृमीयामभ्ये चिन्ता १७३

॥

॥

॥

दक्षिणस्तम्भे

॥ १५३ ॥ गीर्धमंत्रेण गंगे च यमुने चैव मोदा वरिसरस्वति नर्मदे सिंधुकावेरि जले स्निग्धं निधिं कुर्वन्नेन स एषां कृपा मुद्रया क
 रितवानाह असिनां गरति ॥ १५३ ॥ गीर्धमंत्रेण गंगे च यमुने चैव मोदा वरिसरस्वति नर्मदे सिंधुकावेरि जले स्निग्धं निधिं कुर्वन्नेन स एषां कृपा मुद्रया क
 ईशानादिषु वायं न कोलेषु षट्सममर्चयेत् ॥ हिरण्याद्या निरक्तो नाम ध्ये तु बहु रूपिणं ॥ ५० ॥ कैसेरं घागूजा स्यादलेषु सुसुमूर्तं
 मानरे हिरालांतेषु भैरवाः स्युस्तदग्रतः ॥ ५१ ॥ धरापुरे तु शक्रो घावज्जावायुधसंयुतः ॥ एवमावरलेयुर्नैतं समभिः पावकं यजेत् ॥ ५२ ॥
 असिनां गोरु रश्मिः कोऽथ उक्ता तसंश्रुतः ॥ कपाली भीषणश्चापि संहराश्चाष्टभैरवाः ॥ ५३ ॥ वागे कुण्डलान्वासीर्यनत्र वस्तु नि निहि
 येत् ॥ अष्टाणि ताम्रो स्यात्तान्त्रे आञ्ज स्यात्तान्त्रे च सुव ॥ ५४ ॥ अधो मुखानि चैतानि हिमद्रव्यं घृतं कुण्डलान्वासीर्यनत्र वस्तु नि निहि
 द्युपयोगि पद ॥ ५५ ॥ कत्वा पवित्रे मूलेन श्रोत्रे स्नातुं शुभं भस्मा ॥ उक्ता नानि विधाया यत्राणि तां पूजयेत् ॥ ५६ ॥ गीर्धमंत्रेण गोप्या
 नि स एषान्नादयेत्सुधीः ॥ पवित्रे भस्मा तं त्रिंशद्विंशति यो न वनं चरेत् ॥ ५७ ॥ अथोदीर्घां निधायेत्तां श्रोत्रेणान्नं त्र्यम्बकं हविषेन ॥ ५८ ॥ अष्टा
 दीर्घं द्रव्यं जानतु स्त्रियोः पवित्रं गीः ॥ ५९ ॥ मूलेन मूलागायत्र्या पद्यत्तदयमंत्रतः ॥ हस्तिणे वीरमासाद्य नत्र त्रस्तान्नादयेत् ॥ ६० ॥ अष्टा
 णां सित्तिद्वयो ह्येव स एः वीरदेवताः ॥ नारदमूर्ध्वकोऽङ्गो वस्यामं चोत्पन्नं ॥ ६१ ॥ हस्ताभ्यां सुकृत्तु वौधत्या नाययेत्तिरयो मुखे चामह
 र्द्विभक्तं भिक्तं त्वानर्जनी मध्य पर्वणि संयोज्या कुंचयोक्तं चिन्तयेत् ॥ ६२ ॥ कुशसंहिके मिलित्वा ॥ ६३ ॥ अष्टिमाद्या अष्टमे व स्यंते त्रसमं त्रमुद्रयति नारे नि ॥

॥ १५३ ॥ गीर्धमंत्रेण गंगे च यमुने चैव मोदा वरिसरस्वति नर्मदे सिंधुकावेरि जले स्निग्धं निधिं कुर्वन्नेन स एषां कृपा मुद्रया क

मंटी-^१ नारीणि प्रणवानयेपदपूर्वः ३ नमोः ॥ औं अमये जातवेदसे नमो मूर्ध्नि स्मृदि ४० हृदकरेन सेवनेः वह्निमंडलपथं न एव पीठदेवताः पूज्याः नतः पीतश्याः
 पीठशक्तयः १५२ बीजमिति रं व ह्यसनाय नमः इति पीठमंत्रः १५४ ध्यानमाह त्रिनेत्रमिति वरसुखिकौदस्योः अभिनिशक्ती वामयोः आकट्या आ
 धम्यादि

धूम्रां नेत्र्याणि नेवर्मसमं जिह्वायने नं कं ॥ अस्त्रं धनुर्धरायो निषडगा निस्माचरेत् ३८ मूर्ध्नि वामे सके पार्श्वे कटौ स्त्रिंशे कटौ पुनः ॥ द
 शैषार्धसके न्यसे न्मूर्तौ रहौ विभावसोः ३९ नौ एव यथा दद्यात्ताभ्युर्ध्वान्मसाच्चिताः ॥ जातवेदः समं जिह्वाहृदयवाहनं रत्नमपि ४० ॥
 अभ्योदरमसं हो न्यसया वै भवानराह यः ॥ कौमारनेत्राः स्याद्विभ्यमुसो देवमुखसया ४१ नतो न्यसे न्निजे देह पीठं हृदकरेन सभ्य
 त्रिमंडलपथं तं मंडकादि पद्यादिनं ४२ पीतान्धे नारुणा कृष्णधूम्रानां चासुखि मितौ ॥ रुविशज्वा सिनी चेति कृष्णानोः पीठशक्त
 यः ४३ बीजं वन्त्यासमायेति रंदनः पीठमंत्रक आरं विन्यस्य पीठोत्पथवकं धनयेनेनौ ४४ त्रिनेत्रमारक्तगतं सुशुक्लवस्त्रं सुवर्ण
 समजमं विमोड ॥ कर्णभयसंस्तिकशक्तिरं संयत्तस्य माकल्पसमूहयुक्तम् ४५ एवं ध्यात्वा च नं कुर्यान्मानसं विधिवद्गतोः ॥ पश्चि
 वेत्ततलोदैः कुंडस्थं ह्रिदमेव वा ४६ दग्धैः पश्चिरेदनिं प्रागग्नेरुदगप्रकैः ॥ प्रत्यदक्षिणसोप्या सुन्यसे श्रीनृपरीधीनक्रमान् ४७
 पादाण्यन्विक्वमांसेषु च सविष्णुश्चिवा न्यजेत् ॥ व ह्रीतन्पीठमभ्यर्च्य चारयेत्स्वहो नलं ४८ गंधादिभिः समभ्यर्च्य पूजये
 रं व ह्यसनाय नमः ५
 भरणानितत्सपुनं १५२ १५२ ॥ एवमवद्रायनमः ॥ ॥ मावकावनीः ॥ वदसुकोलेषु मध्ये च जिह्वा सदेवमायजेत् ४९ ॥
 आवर्त्तं

पुनो कृत्वा प्रसंगां गलिको करो कनिष्ठां गुणगले मिलित्वा नः प्रसारिते ज्वालिनी नाम मुदये वै भ्यानरप्रियं कशीति १२८ श्लोक रूपं न माह अग्निमिति
 १२९ अभिमं न माह वै भ्यानर जातवेद इहा वह तो हि ना स्म सर्व कर्माणि साधय स्वाहेति १३० ऋदय स्वाहा १३१ ३ ना श्वतु र्यं ना १३२ जिह्वा बीजानुद्वरति
 वै भ्यानर जातवेद इहा वह तो हि ना स्म सर्व कर्माणि साधय स्वाहेति १३३
 अग्निमं ज्वलितं वेदं जातवेदं हुता एव ॥ सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विष्वजो मुखं २९ अथाग्निमं नं विन्यस्ये त्रिदधानमुदीरयति वै ॥
 भोनरां ने जातेति वेदां ते स्यादिहा वह ३० लोहिता स्य स्य स्य सर्व कर्मा एयं ते तु साधय ॥ वह्निप्रियां गोषं नो यं यद्विदुः स्य स्य स्य न्वितः ३१
 ऋषिभ्यं देवना स्य भृगुगमय न्यावकः ॥ रवी जं ह द्यं शक्तिर्ह वेन विनियोजनं ३२ स्तिषेया यो मुद्गिर्वक्त्रे न सन्ने त्रिस्त्रिंशत्के ॥ व
 नेर्जिह्वाः स्वकी जाह्या न्यसे न्हेतानं मोक्षिताः ३३ हिरेण्या गगनारक्ता कृष्ण सुप्रभया चिता वदरुपातिरक्ते निजिह्वा रसुभे
 मजाः ३४ दीर्घिका नल वायु स्याः सा घावर्ण्य विलेपनः ॥ सेंदवः सप्त जिह्वानां सप्तानां बीजानां गताः ३५ गीर्वाण पिनुराधर्वय
 सना गपिशा च काम स स्या श्वेति जिह्वानां देवताः न स्य ले न्यसे न् ३६ सहस्रा र्दिवे द्दयं स्वसिष्णु र्णय मर्षकं ॥ अनिष्ठशु र्वाये
 दीपिकेति दीपिक्व उ अनलो रः वायु र्धः एते बु स्थिताः सका एवा विलेपवर्णः स ष प्रवत्तरयेति सेंदवो न स्याद्या ॥ निशि स्वामं चोपमीरितः ३७
 रभे सप्त हिरेण्या र्जिह्वानां बीजानां मर्षः न त भू स्मृति र एया ये न मः भृंग ग ना ये न मः भृङ्ग क्लये कृक् स्या ये न मः त्र्यसु प्रभाये र्ध्वं बहु रूपा ये ध्रुव
 निरक्ता ये १३५ गीर्वाण द्यो जिह्वा छिदे चा जिह्वा स्या न भु न्य स्याः सुरेभ्यो न मः तिगे र न्या दि प्रयोगः १३६ मस्तकं शिशो मं नं १३७ ॥
 ह्यं भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं हरेण्या ये न मो तिगे भ्रूं ग ग ना ये न मः पादौ र म्पादि ५ न्या से र्वे ने कृक् मः स्या द्दु रूपा निरक्तयोः नेत्रेति रक्ता न्यक्त व्यास र्वा ने वद रुषि का ५

चनम

१२१

१२० सुधयावंवीजेनयेनुमुद्रालस्यएवंवस्थते

१२१

१२०

कथासंश्रितिसंसाशिनोवन्नेर्यसन्नभगसंअखिलसजेन ११८ वह्निवीजातरमितिबीजान १२० सुधयावंवीजेनयेनुमुद्रालस्यएवंवस्थते १२१

न०

६

सूर्यकोतादरलिनः श्रीत्रिधागारतोपिवा॥ पात्रेणपिहिनेपात्रेवह्निमानाययेन्नतः ११८ सुधयावंवीजेनयेनुमुद्रालस्यएवंवस्थते १२१

अस्त्रमंत्रेणैर्भूति कथासंश्रितिसंसाशिनोवन्नेर्यसन्नभगसंअखिलसजेन ११८ वह्निवीजातरमितिबीजान १२० सुधयावंवीजेनयेनुमुद्रालस्यएवंवस्थते १२१

परमात्मानलेनाथजाठरेणपिवह्निना॥ स्मरन्नेकंवह्निवीजात्रैर्नम्यो जयेन्नतः २० नारेणचाभिमंन्यानिं सुधयायेनुमुद्रया॥

अमृतीकृत्य संरक्षेदस्त्रमंत्रेणमंत्रवित्॥ मुद्रयात्त्ववगुं न्याकद्वेत्तावगुं दयेन॥ कुंडोपरि नोवह्निं भामयेच्चिधु वंपठन् १२३

दाय्यागतामृनुस्नानां नीलेदीवधारिणीमा॥ देवेनभुज्यमानां तां स्मृत्वा तद्योनिमंडले २३ ईश्वरेनोधिपावह्निं स्थापयेदत्मसंसृष्टं

मूलं नवां च पठन् ज्ञानसमृद्धयस्तुलः २४ ईश्वरीं श्रेष्ठं संयुक्तं गगनं वह्निं चैतनः॥ तन्या पट्टपां तोयं नवां शिनिधापने २५ वि

श्रीं चैव नंदे वीदेव यो ज्वालयेदहं सु चतुर्विंशतिवर्तेन मंत्रेण प्रयत्नादिभिः २६ त्रिभिर्गलह नंदं दं दहं सुभ्यं पचदहं सर्वज्ञां

पयस्वाहामंत्रो वेदभुजाक्षरः २७ प्रदर्श्यास्त्रिबीजं मुद्रायुग्यविहितां जालिः॥ श्लोक रूपेण मंत्रेणैव निष्ठितुं शक्यं २८

अवगुं हि न्या अपि वक्ष्यक वचेन हं वीजेन धुवं प्रणवं १२२ नवां मुद्राति अर्धां श्रुत्वा गगनहः शेषस्वरूपं दद्यात्तो नमोतः तेन हं वह्निं चैव न्यापनमदत्तनि

व्यापने नवाक्षरो मंत्रः १२५ वि आण्यदत्ता १२६ चतुर्विंशतिवर्तमुद्राति चिदिति चिदिं गलह न २६ दहं पच २ सर्वज्ञा पयस्वाहा वेद ४ भुजा २ क्षरश्चतुर्विं

१२० सुधयावंवीजेनयेनुमुद्रालस्यएवंवस्थते १२१

पूर्वादिकोष्ठेषु कचटनयप्रार्कानलस्रस्रमष्टमेविस्त्रिस्त्रयमध्यकोष्ठमपिनवधाविष्यतत्रपूर्वादेषुस्वरदंडंस्त्रेचनामादिवर्णपञ्चकोष्ठिनदेवजपस्थानंस्त्रिदं १०५ पुरश्चरणधर्मानाह आमध्यान्मिति उपांशुशनेवर्णैश्चरणं मानसंमनस्सेवन्निःस्त्रायीविषयवर्णान्श्रीलः १०६ अन्धैःसंभाषणमन्यभा

स्त्रीमादिअन्मभाषयस्त्रेवपञ्चइतिनकोनरुक्तं १ नि कलंस्त्रायी

अन्धेनसरसभाषणंअन्धेतिश्वादीनामपुपलस्यैभिभिभाक् ३

सोचन्मायादिमोचर्णोपञ्चकोष्ठेभवेत्ततेथा उपविष्यजपंकुर्यान्मान्यसिन्दुःस्वदेस्त्रले ५ आमध्यान्नेजपकुर्यादुपाशुंवाप्यमानसं ५५ हविष्यंनिश्चिभुंजीनञिःस्त्राय्यभंगवर्जितः ६ व्यसनलस्यनिषीवकोधपादप्रसारणं अन्मभाषांनजेसेचजपकालेन्यजेन्मुधीः ७ स्त्रीभूद्भाषणंनिरांनंवलंशयनंदिवा ॥ प्रतिग्रहंनृजगीतेकोदित्वंवर्जयेत्सदा ८ भूश्यांनृजसचवर्ण्यचञ्चिकाहंदेवनाचनम ॥ नैमि
निकाचनेदेवसुनिविध्यासमाभयेन ९ प्रमहंप्रमहंतावन्वैन्यूनाधिकंक्वचिन ॥ एवंजपंसमाप्यांनेदृशंश्रुहोममाचरेत् १० न
नक्त्योदितैर्द्वैस्तद्विधानमुदीर्यते ॥ प्राणायामंषडंगंचक्रत्वामूलेनमंचविन ११ कुंडेवास्थंडिलेकुर्यात्संस्काराणांचतुष्टयं मू
लेनेष्टाणमह्निष्ठेणोष्टाणंनडनेकुंशैः १२ चूर्मणमुष्टिनासिंच्यस्त्रिवेद्यंनंदनरे चन्त्रिकोणषडस्ताष्टदलभूमंदिशामकं १३ म
ध्येतारयतामायांस्त्रिस्तत्वापीठमचयेत् मंडूकान्तरान्त्वांनंपीठशक्तौर्जयादिकाः १४ वागीशीवागीभूदयेयोर्गपीठान्मनेनमः
मायादिकःपीठमंत्रस्तयास्त्रेनासनंदिशेत् १५ पूजेनौतास्त्रायाभ्यांगंधाद्यैरुपचारकैः तस्मीनारायणोत्तुर्वैहैस्त्वदेहोमकर्मलि १६
वा अंत्यजानामीसादर्शनंतन्यजेत् १७ होमविधिमाहा प्राणायाममिति ११९ अस्त्रकद्वर्मणाहुकोरेणभूमदिरचतुःकोण ११३ १३

अंहीलस्मीनारयणभ्यांनमः

होवागीश्वीवागीश्वरकोर्वामीपीठीत्यनेनमः

मूर्ध्नि नादिप्रतिमो जय पूर्वोक्तस्थानोपलक्षणं १ अं सं सं सं सं १ श्रीं श्रीं वसमवये मूर्ध्नि गायत्रां वंदसे व के सरस्वती ॥ १८५६ वात्रभ्यो गुह्यस्वरशोक्तभ्यः पादकस्तु ॥ १८५७ ॥

ध्यानमाह पंचाष्टादिनि वर्णैरंगरचनाया सो हो ध्यावशस्तु जौ दक्षयोः पुस्तकाभये चामयोः गिरं सरस्वती ८९ पूर्वमीरितामंडकाद्याः ८३ आसनमंत्रमाह विष्णु ।

मूर्ध्ववक्त्रे हृदि न्यसेदध्यासीनसाधको नमः पंचवर्गैर्यादिभिश्च षडंगानि समाचरेत् ७८ जीवहीनप्राणाकायहस्तदीर्घांगरस्थिनैः सा चि वे पाद

७९ नुसारेर्जानि युक्तै र्ध्यायेद्देवी हृदं वुजे ८० पंचाष्टादर्थै रचितंगभागं धृते दुस्वडां कुमुदावदातां ८१ वराभयपुस्तकं मस्तु च भज गिरं सं द

धनीं त्रिनेत्रां ८२ ध्यात्वे वंपूजयेत्पीठे देवताः पूर्वमीरिताभा पीठशक्तीं स्रुगुं सिरस्वत्पानका च्वयेत् ८३ ध्यात्वा प्रसादप्रभा विच्चां ध्या

धृतिस्तुतिवृद्धयः ॥ विधेयशरीरितं प्रोक्ता मातृका पीठशक्तयः ८३ विधेयद्रुगस्थमनुयुक्तविसर्गा लोपं च मातृकायोगपीठाय नत्वं नो म

नुरासनदेशने ८४ मूर्ध्नि संकल्पमूले न तस्यां वा एते प्रपूजयेत् ॥ आदावंगानि संपूज्य हि तीये पूजयेत्स्वरौ ८५ हो हो नतीये वर्गं ध्व

वर्गशक्तीं धृतुर्थके ॥ अपि नीपालिनी चापि पावनी क्ते रनी पुनः ८६ धारिणी मालिनी पश्चादं सिनी णा खिनी न ध्या ॥ वर्गशक्तयश्च

क्तः पंचमेतद्विमानरः ८७ बहुशक्तादयो देवाः सममेव न्न पूर्वकाः १ इत्यं संपूज्य देवै र्शीन्यस्येदृणां निजो गके ८८ ललाटे मुखे च

ने हि श्रवो नासा सुगंडयोः ॥ ओ ह्रयो दे नै प्रको धमूर्ध्ववक्त्रे न्यसेत्स्वरान् ८९ वाहोः सं छिद्युमाग्नेषुकचवर्गो न्यसेत्सुधीः ९०

नवर्गे ॥ शो सः ॥ गायत्रीः ९१ एष्टदेशतः ९२ वा भौकुक्षोपवर्गं च हृदं सककुदं सनः ॥ न्यस्य पादि चतुर्वर्णान् पादि चतुर्वर्णान् ९३

नहः मृगं ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

मानुका योगपीठाय नम इति ८४ हृदसी निकर पादोदरमुखेषु संवध्यंते ८९ ॥

मं. टी. कै. मं. नमो हरति पासते नि आं ह्रीं कोयं रं लं वं शं धं सं गा ए च्चि तं न भः हे स म व र्णे व ह्य मा एः अ ज पा हं सः ६८ ६९ ७० ७१ स मा र्त्त मु ह रा नि स वि र व द
 नि मे रुः सः हं सः सः आ का र्त्त हे मं गुः स म्मा पा हीं गा र्त्त हः प्र ए व यु टि नः ने न उ ह्मं स हं सः ह्रीं उ मि नि स मा र्त्तः ७६ मा नु का मा रु अ का रा वा र नि
 व जं श कि ई उ र व ह्यै पा शं कु य रा दे अ यि ॥ त्रि भू ल च क प द्वा नि द श टि क्ता ल हे न यः ६८ ए व मि त्तां प्रा ण द्वा किं पं चा व रा ण सं यु
 नां ध्या य न र ह रि कूर् ध त्वा नि र्ज वे न न्म नुं सु धीः ६९ व ह्ये धु ना म नो र त स्यो ह्य रं ध्या नु सु र वा त्म हं ॥ पा र्श्व मां प्रा सृ णिं प्रो च्य या दी न्म स
 दु सं यु ना न् ७० गा रा चि तं न भः स म व र्णे मं चे न नोऽ ज पा ॥ म म प्रा ण र ह प्रा ण म म जी व र ह स्ति नः ७१ म म स र्वे दि या ए य न्का म म
 वा ऊ न र र ये न ॥ च ह्मः श्रो त्र प्रा ण प दा त्मा ण र ह स मी र्प च ७२ आ ग म्प मु र व मु च्चा र्प चि र नि षं त्चि दं प हे न ॥ च हि जा वा च स सा
 र्त्त मं न मं ते पु न र्व हे न ७३ प्रा ण प्र ति ष्ठा मं नो यं स्मृ तः प्रा ण नि धा प ने ॥ म मे न्म स्य प र स्या ह्यै प्रा णा दी नि स मु च्चे न ७४ यं चे यु प्र ति ष्ठा
 दी वा प्रा ण स्था पु न मा च र न ॥ म म स्था ने न स्य न स्य व र्ध न म मि धां व दे न ७५ स विं द वो मे रु ह सा क र्त्त णः स र्वा भू गुः पु नः ॥ मा र्थे नि
 गा र ह्ये यं मं नः स मा शिरा म तः ७६ ए वं प्रा ण न प्र ति ष्ठा प्य मा नु का म्प स मा च रे न ॥ अ का रा द्वाः स का रा ना व र्णः प्रो क्ता गु म्ना न्क
 ७७ प्र जा प ति र्मु नि स स्या गा य त्री षं र र्ति तं ॥ सर स्व गी र व नो क्ता चि नि यो गोऽ स्ति त्वा म ये ॥ ह त्ते वी जा नि चो क्ता नि स्वरः श क्त य र्ति
 प्र सि ह्य र्त्त म र्थः ७८ ष डं ग मा ह पं चे नि क्ती वा च्म चू ल चू त ही नाः सा नु सार ये र स्व दी र्घा क रं तः स्थि तैः स विं दु भिः जा न यो र्त्त द पा य न म र स्या द प स धु कैः व द्

भाष्यधत्तेः पूजा निवर्त्तयेत् रक्तकपासां कुम्भवा एतद्विषु ४

पीठदेवतानां सस्याना निवर्त्तयेत् च पूजास्याना निवर्त्तयेत् रंगे वस्त्रं ते तामंडकाद्याः सेव्यदार्णयुताः सानुस्वारमथमा सारयुताः मंमं
पूजानं रंगे वस्त्रं ते सेव्यदार्णयुताः ॥ प्राणशक्तैः सतः पूजा अष्टौ पीठस्य शक्तयः ५७ दृढाभां भोजयन्नेषु नवमी न्वधिकं
रिक्तं जयस्वा विजयैषां स्वादं जिने चापराजिता ५८ निर्यावर्त्तासि नीदो रधी न्वचो एमंगत्वं निमा ॥ पांशुदिवी जकिं
षष्ठो च्यवीरं दिशे ततः ५९ एवंदे ह मये पीठे ध्याये देवी म सुप्रदा ॥ नवयौवनगर्वाढ्या पी वरत्न नरोभिर्ना ६० यार्थापासु क
पाले भूलीषु न भूतं ह सिर्वभर्गो रक्तवर्णं ॥ रक्तोदन्वन्मोतरक्तां वृजस्या देवी ध्यायेन्मा एषा किं विनेत्रां ६१ अष्टपञ्चस्य पदो
एध्या नैव पूजयेत्तु तां मायसो वायुको एषु ब्रह्मविस्तु शिवान्मजेत् ६२ अपि वारुणशैवेषु वारुणस्य हिमहिमः ६३
रेषु वडंगा निपन्नेषु ह्येनुमातरः ६४ ब्राह्मी माहे श्वरी चापिको मा एवैस्मवीनया ॥ चारुही चतयं द्राणी चमंडसप्तमी ममा ६५
अष्टमी तुमहा लक्ष्मीः प्रोक्ता वि श्वस्य मातरः ॥ देवता पूजने प्राची मध्ये पूजक पूजयोः ६५ दंडादयः सादित्वे वपूजनीया दि
गी श्वराः ॥ दंडैः दृष्टानुः कीना प्रो निर्वर्त्तयेत् रक्तवर्णं निरुक्तं ६६ सोमदर्शानना माधो नन ऊर्ध्वं चतुर्मुखः ॥ गतं दंडादि काष्ठा सुपूज्या
कोपना ॥ य नि ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अथानुष्ठानम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

मं. प्र. कथय नमः कंता तापिरुद्रायः सं. ओ. जामने. रं. प्राणामने. सं. जी. जामने. एवं सर्वत्र ॥ धर्मदेव चतुर्भुजस्तस्मात्सः अं. अ. धर्मप. अं. अ. ज्ञानाय. अं. अ. विष्णवे. अं. अ. नमः

मं. दी. न. शक्तिं ह्यंशुलिङ्गो ॥ ४८ ॥ आत्मने इति आत्मने नमः इत्यन्तं नित्यमादीति इति न्यस्येत् यदि वत्पूर्वाणि यं दृष्ट्यात्मने नमः इत्यदि स धूर्तकारसद्विनिआकाशो हत

न. २

३

सं. वि. न. लोप नमः

नाभ्यं नन्दे दया ह्यंशुलिङ्गं इदं नमस्तकाष्टुलिं ॥ त्वमसत्त्वा समे दो स्थिमञ्चा भुक्ताणि विन्यसेन ॥ ४८ ॥ आत्मने इदया नानि प्रादिसमादि
कान्यथा ॥ रं. ज. सद्या चित्ताकाशपूर्वप्राणं सुखदिकं ॥ ४९ ॥ भूव्यादिकं न्यसेज्जीवैर्मनानन्ददयदृष्टिः ॥ यकाराद्या आद्यवर्णः सव
सुखं दभूषिताः ॥ ४८ ॥ ततः समस्तमूले नमस्त्वादिवरणावधि ॥ विधाय र्थापकन्यासं विन्यसेत्पीठदेवताः ॥ ४८ ॥ मंडक व्याख्या
लाभिरुद्र आचारशक्ति युक्ता ॥ कर्मो धरा सुधासंघुः स्वैरही पंसुसंघिपाः ॥ ५० ॥ मणिहर्मदिसपीठं धर्मोत्तानं विरागता ॥ ऐश्वर्यं
धर्मपूर्वा सुवचारसेनकादिकः ॥ ५१ ॥ धर्मादयः स्मृताः पादाः पीठगात्राणि चेतरे ॥ मध्येनंतस्तत्पदं ज्ञानं दमयकंदकः ॥ ५२ ॥
संचिन्नालगतः योक्ता विकारमयकं सरोः ॥ प्रकृत्यात्मकपत्राणि पंचाष्टादिकं कर्णिकाः ॥ ५३ ॥ सूर्यस्येदोः पावकस्य मंडलं त्रिजयं
नतः ॥ सत्त्वरजसमः पञ्चादात्मा युक्तो नरात्मना ॥ ५४ ॥ परमात्मा यज्ञात्मा तत्त्वे माया कल्पादिके ॥ विद्या तत्त्वं परतत्त्वं कविनाः
पीठदेवताः ॥ ५५ ॥ पूजने सर्वदेवानां पीठे ताः परितः पूजयेत् ॥ न्यासस्थानानि चैतासां शरीरे वा हिरर्वने ॥ ५६ ॥

राद्यमेजः सं. उ. ज. आत्मने नमः सं. हः. तदादिकं प्राणं हं प्राणामने नमः ॥ ५० ॥ भृगुः सं. तदादिकं जीवं सं. जी. वात्मने नमः पादयो वर्णाश्वं द्रेणुनुस्वारेण
भूषिता युताः कार्याः ॥ ४८ ॥ मंडक द्यादि पीठदेवताः सुधासिंधुरित्यत्र सप्तदशविशेषवद्व्यति विरागता वैराग्यं न जादिका अर्धमायनमदस्यादि ॥ ४८ ॥

मं. म. म. न. ता. प. क. त. न. न्या. प. ४

कं. लं. लं. व. कं. रं. स. च. द. म. ३

३. योऽसुदं कं संघं गनभो वस्वमिवाभ्युपगमने हृदयानमदसादि वमेवाशेषि सुसजानि युक्तं यस्मै ॥ न चं कं जं हृदयार्थं यस्मात्तं धामने शिरसे स्थात्मा एतद्वद्व्यो न तद्भूय न तत् ॥
 फालाभ्येति स्तुते वदं नं नं घं दं का कया शिणदणपुपस्थाने कवचायुर्भूयं भवं कया दमयमनविमर्गं नरात्मने नेत्रत्रयापदीषद्वयपंचकं हं वसिष्ठो हं काश्चिन्मने अस्यापद
 पाशुओं नपाही असु संस्थितौ प्राणस्थायने विनियोगः ३८ कवरीणि कुमनः पंचमभिनिप्रयोगः ३९ कं संघं आकाशवायुने जो जलपृथिव्यात्मने द्वौ ॥
 ननु जीव्या पणिना भेजमा भेजय स ज्ञा कवयः स्य यजसा माति कुं दं सि फाला कं देवता अं वी नं ही वा नि कं कीलकं मृदु स्या पृथ्वी नि गो ३

कुडलींजीवमादायपरसगानसुधामय संस्थापददयाभीजेमूलाधारगतास्सत्त ३४ भूतशुद्धावधायवधारेणस्थाय
नमाचरेत् प्राणप्रतिष्ठाभंनस्यमुनयेजेप्रयत्नजाः ३५ छंदःकृगयजुषंसामप्राणशक्तिसुदेवता पाणेवीजत्रैपाश
निर्विनियोगःसुसंस्थितौ ३६ कृषीनशिरसिवक्त्रेगुहंदांसिहृदिदेवतां गुह्येवीजंपदः शक्तिंमस्यकुर्यात्ति वृडंगक ३७
कवर्गनभआद्यैर्हृत् चप्रव्याद्यैःशिरःसूतं दुश्रोत्राद्यैःशिराप्रोक्तातुवागाद्यैस्तनुहृदं ३८ पुक्लव्यादिभिर्नैत्रमखंये
नमतरंदिदैः आत्मनेतानमनूनागान्विन्यसेहृदयादिषु ३९ पंचभंप्रथमंपश्चान्द्वितीयंचतुर्थकम् तृतीयमिभ्यं क
मनोवर्गवर्णस्वमुच्चरेत् ४० पवर्गेष्वेवमुच्चार्यनभः श्वेतोनिमोभृगुः विमलश्चेतिचोच्चार्याः क्रमाद्वर्णैः सावंदवः ४१
नभोवाक्किंवाभीमिर्नभंआदयर्हरिताः शब्दस्यार्थरूपरसगंधाः शब्दादयोमताः ४२ ओन्नत्तगलनयनंजिह्वाघ्राणंश्रोत्रा
वाक्पाणीपादयायुचोपस्थोवागादयः पुनः ४३ वक्त्रव्यादानगमनंविस्मर्गनंदसंज्ञकाः वक्त्रव्यादावुद्धि
श्चित्तसंपुत्ताः ४४ अनरेन्द्रियसंज्ञाःसुरेवमुक्तंषडंगकं नाभेरारभ्यपादानंयाश्वीजंप्रविन्पसेत् ४५

天

—

—

$$=$$

二

मन्त्रः कर्म
विश्वमासं
नमः कर्म
मन्त्रः कर्म

वर्गमिच्छिच्छः कोऽस्य कर्म रंशूरीनाम्नल्लक्षणं परमपदं कुरुक
 मयैरुत्तमं तन्नेगएवमेवमिच्छेत्तु चित्तिभाषः ३

मं दीनो रसस्य सखरसखरसविस्तु प्रनिष्ठो दानाः नेजसिपायुविसर्गसिर्जनीय च सूरस्यो विविधानाः वायावुपस्थानंदस्त्रीस्य दर्शनस्य र्शेष्टानशंभ्य

न० १

२

विस्मिन्वप्रतिष्ठापिदियाशोतिव्यनुर्विक्रं श्रान्तनीनेतिपंचैवकलाधेयाध्यादिभाः २२ सप्तानोक्षनव्यनाभ्यापानया
 ऐववायवः धरादिमंडलगताः पंचधेयाः क्रमादिमे २३ एवंभूतानिसिद्धिंनम्यमेकं प्रविशत्यपयेत् भुवजलेजलं वन्हौव
 त्रिकदौनभस्यसुं २४ विलाप्यस्वमहंकोरिमहान्वेप्यहं कृतिं महानं प्रकृतौ मायामात्मनि प्रविशत्यपयेत् २५ अहसवि
 न्मबोभूत्वा विनयेन्यापयूतं दसकुक्षिस्थितं कृत्स्नमंगुष्ठपरिमाणकं २६ विप्रहत्या शिरोयुक्तं कनकसौ यवाहुकं म
 दिरास्यनदुदयेगुरुतल्पकटीयुतम् २७ पापिसंयोगिपट्टदस्य पातकरोमकम् स्वहचर्मधरं दृष्टमधोवर्कं सुदुः
 सहं २८ वायुवीजंस्मरन्वायुसंपूर्णं न विप्रो वयेत् स्वपरीर्युतं मंत्री चक्रवीजेन निदहति २९ कुंभके पृष्ठिजसेन
 नतः पापनरोद्वं वहिर्भस्मसमुत्सार्य वायुवीजेन रेचयेत् ३० सुधावीजेन हेतोऽयं भस्मसंस्त्रावयेत् सुधीः भूवीजे
 नवनी कृत्य भस्मान्न कनकाडवन् ३१ विपुष्टमुक्तुकारं जपन् वीजं विहाय सः मूर्खदिपादपथं नान्यं गानिरचये
 त्सुधीः ३२ अक्काणादीनि भूतानि हनन्त्या दधेत् चित्तः सौहर्म्येण चात्मानमानयेद्ददयात्तुजे ३३ ॥

यानि नमसि वायव्या नवद्वन्धौ तस्य दसहा शिवशंभ्यनीना प्राणः २३ वायुवीजं वन्हिवीजं २९ सुधावीजं नमो वीजं हनेन शरीरं
 सावयवं कुर्यात् ३१ चित्तोन्नतः सकाशात् ३२ ॥ किं रति विज्ञापनमुक्तमेतद्विद्वद्विज्ञेयमादिप्रादुभावेकैर्हंकारदि

नमो काशा विज्ञापनमुक्तमेतद्विद्वद्विज्ञेयमादिप्रादुभावेकैर्हंकारदि

२

मूलाधारस्थितां देवीं कुंडलीं परदेवतां विसर्जयितुं भाविष्यन् प्रभां ध्यासेत्समाहितः १० मूलाधारस्थसु म्यापसंगतां ह
 दयावुजं सुषुम्णमार्गमाश्रित्वा हृदयजीवहृदवुजान् पक्षीपकालिककारं वृक्षं ध्वजां स्मरेत् जीववृक्षालिसें योज्यं हं
 समंत्रेण साधकः ११ पादादि वृक्षं ध्वजां स्थितं भूतगणं स्मरेत् स्ववर्णवीजाकृतिभिर्गुणैर्न द्विधिरुच्यते १२ पा
 दादिजानुपयं न चतुः कोणं संवज्जकं मूर्ध्ववीजाढ्यं सर्ववर्णस्मरेत् दशनिमंडलं १४ जान्वाद्यानां भिचंद्रार्द्धनिमं पद्मद
 र्पाकं न वंदी जयुक्तं भवेत्तममं सोमं डलं स्मरेत् १५ नाभेर्हृदयपयं नं चि कोणं स्वस्तिकां चि नमः रं वीजेन पुनरं स्मरेत्
 न्यावकमंडलं १६ हृदयं मध्यपयं नं वंदितं ध्वजं यं वीजयुक्तं धूम्रममं नमस्त्वमंडलं स्मरेत् १७ अत्र वृक्षं ध्वजं
 मध्याह्नं स्वच्छमनो हवी जयुक्तमाकाशं मंडलं प्रविचिं नयेत् १८ पद्मसपायूपस्था वाक्कमाक्षेयाधरा दिक्काः
 स्वकीयविवर्धयेत्तु नागभनग्रहणादिभिः १९ घ्राणं चरसना चक्षुः स्पर्शनं श्रोत्रमिंद्रियम् कर्माक्षेयं धरादिस्थानं धादि
 गुणसंपन्नं २० अस्वविष्णुश्चि वृक्षानाः सदाश्चि वरनीरिणाः धरादिभूतसंघेयाश्च यस्तु न्मंडलेषु ते २१॥

देवादि
 खली पदविष

ब्रह्मानि हतिः समानः गंतव्यो देवेण पृथ्वमष्टौ पदार्थाश्चि न्याः २२ जलमंडले २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२
 मेधमुक्तादस्यार्थः विष्वक्पुनः न च देवशासकलुकिमर्जीय विद
 ।मानात्मकाः । नमनादयस्तु नमनं ग्रहणादिसर्वस्वीयैः निस्पर्धे च नानंदं नदनरुणादति संप्रदायिकाः ३

मं-दी-नी ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीभवा नीशं कएभ्यां नमः नत्वा लक्ष्मीपतिं देवं स्वीये मंत्रम हो दधौ नावं विरच्ये रम्यां तरुणाय गुणैर्गुणां १ तत्र तावन्मंत्रम हो दधि
नमः कर्तव्यं विधीर्गुणैर्वाचार्दः शिष्टाचारपरिपालनाय निर्विघ्नं यत्समाप्तये चेष्टे देवता नमनपूर्वकं यथाकारणं प्रणिजानीते मरणम्येति लक्ष्म्याय नो नृह
१ रत्नलक्ष्मी नृहरिः मध्यमपद्मलोकी समस्तभगुरर् श्रीनृसिंहश्रमं मंत्रा एवमहान्यदकानि धीयंतैस्मिन्निति मंत्रम हो दधिमर्क- १ नत्वा लक्ष्मीपतिं देवं स्वीये मंत्रम हो दधौ नावं विरच्ये रम्यां तरुणाय गुणैर्गुणां १ तत्र तावन्मंत्रम हो दधि

शंखनिधय
नमःपुष्पनि
धयै नमः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीभवाभीशंकणभानमः नत्वा लक्ष्मीपतिं देवं स्त्रीये मंत्रमहोदधेः नावतिरचं येरस्यां नरणा यगुलैर्धुनां १ नत्रनावन्मंत्रमहोदधि
नामकतचं चिकीर्षुता चार्दः शिष्टाचमपरिपास्तनायनिर्विघ्नग्रंथसमाप्तये चेष्टदेवतानमनपूर्वकं ग्रंथकरणे धनिजानीते प्रणम्येति लक्ष्म्याय नमो नृह
र्लक्ष्मीनृहरिः मध्यमपदलोपी समस्तः गुरुं श्रीनृसिंहराश्रमं मंचा एवमहानुरकानि धीयंते स्मिन्निमित्तमहोदधिर्ग्रंथः १ नत्रागतारभम
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॐ नमो भगवते नमः प्रणम्य लक्ष्मीनृहरिं महागणपतिं गुरुं १ नंचाष्टयनेका
न्यालोक्षवस्थेमंत्रमहोदधिं १ प्रातरन्यायशिरसि ध्यात्वा गुरुपदां वुज आवश्यकं विनिर्वस्य त्वागुं यायानस्मिने दे २
श्रीने न विधिनस्वात्तामंत्रस्नानं समाचरेत् स्नानं संध्यामंत्रसंध्यां कृत्वा देवं विचिंतयेत् ३ गृहद्वारमध्यागत्य द्वारपू
जं समाचरेत् द्वारमखां वनामोभ्यागलेधां चोर्ध्वतो यजेत् ४ महालक्ष्मीं दक्षभागो वामभागे सरस्वतीं पुनर्दक्षे यजेद्दि
घां गायत्र्यमुनामपि ५ पुनर्वागसिं जपात्वं स्वः सिंघुयमुने अपि पुनर्दक्षे तु धातारं विधातारं वामतः ६ नहन्निधीं
द्वयं योजीत नोऽर्द्धं द्वारपालकान् द्वारपूजां विधायेत्यप्रविश्या च नमोदिरम ७ उपविश्या सनेन त्वागले शशुरदेवताः प्रा
णनायक्यगारेण पूजुं भकरचक्रैः ८ द्वात्रिंशत्तत्तुः षष्ट्या क्रमान् षोडश संख्यया देवा चार्चयिष्यतां प्रास्य भूतभु
चिणः कृत्यमाह प्राप्तिरिति स्पष्टं गुरुपादां वुजगालिनामृते धारयामान संस्तानं कुर्महेत् २ अस्त्रां वुजा अस्त्राय फडिमभिर्मं
निजनेन ४ प्रां स्वयं योजीत धीनदहस्य वामयोः द्वारपालं कर्तुं देवानां वक्ष्यमाणानां ७ द्वात्रिंशद्वारं प्रणवजपन्नायं पूरयेत् ततः षष्टिचारं जपन् कुंभयेत्

॥ श्रीकृष्णविष्णुनाथपुरोमन हस्तशिवालेखादवादणहगजमेआनंदवनखापाखनेमे
अनन्यामअगरवादिभक्तियोगीश्वरमेवमेवदधिटीकार्त्तिकायनसहिनखापागपदिसा
महेस्वामी कृष्णनेवनामकारिगाढ जिमकोलिनहोयसेचादनीचो कमे बालकीस
नकटकानमेमिलेगा ॥ संभन २८ २५ श्रीसुवनवरी ८ वारसोमारना ॥

